आदि श्री

गुरु ग्रंथ साहिबजी

दूजी सैंची

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सब तों शुद्ध

आदि

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी

पन्ना १४३०

इहनां दी सुधाई उस महान पवित्र श्री दमदमा साहिब
वाली बीड़ नाल कीती गई है जो
गुरगद्दी पर सुभाइमान है

ਸ੍ਰੀ
ਦਮਦਮੀ
ਬੀੜ

* प्रकाशक *
भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले,
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर

गुरबाणी प्रेस, अमृतसर में छपा।

रागु तिलंग

पन्ना

(महला १)
यक अरज गुफतम ३३ ७२१
भउ तेरा भांग खलड़ी ३४ ७२१
इहु तनु माइआ ३५ ७२१
इआनड़ीए मानड़ा ३५ ७२२
जैसी मै आवै खसम की ३७ ७२२
(महला ४)
सभि आए हुकमि ३८ ७२३
नित निहफल करम ३८ ७२३
(महला ५)
खाक नूर करदं ३९ ७२३
तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ४० ७२३
मिहरवानु साहिबु ४१ ७२४
करते कुदरती ४१ ७२४
मीरां दानां दिल सोच ४२ ७२४
(महला १)
जिनि कीआ तिनि ४३ ७२४
हरि कीआ कथा ४४ ७२५
(महला ९)
चेतना है तउ चेत लै ४७ ७२६
जागि लेहु रे मना ५/४७ ७२६
हरि जसु रे मना गाइ ४८ ७२७
५ (भगत कबीर जी)
बेद कतेब इफतरा ४८ ७२७
५ (स्री नामदेव जीउ) ५
मै अंधुले की टेक तेरा ४९ ७२७
हले यारां हले यारां ५० ७२७

रागु सूही

पन्ना

(महला १)
भांडा धोइ बैसि धूपु ५० ७२८
अंतरि वसै न बाहरि ५१ ७२८
उजलु कैहा चिलकणा ५२ ७२९
जपु तपु का बंधु बेड़ा प/प/५३ ७२९
जिन कउ भांडै भाउ डै/५४ ७२९
भांडा हछा सोइ जो ५५ ७२९
जोगी होवै जोगवै भोगी ×५६ ७३०
जोगु न खिंथा जोगु न ५६ ७३०
कउणु तराजी कवणु ७/५७ ७३०
(महला ४)
मनि राम नामु ५८ ७३१
हरि हरि नामु भजिओ ५९ ७३१
हरि नामा हरि रंङु है ६० ७३१
हरि हरि करहि नित ६१ ७३२
गुरमति नगरी खोजि ६२ ७३२
हरि क्रिपा करे मनि क्र/६२ ७३२
जिहवा हरि रसि रही ६३ ७३३
नीच जाति हरि जप ६३ ७३३
तिनी अंतरि हरि ८/६४ ७३३
जिथै हरि आराधीऐ ६५ ७३३
जिस नो हरि सुप्रसंनु ६७ ७३४
तेरे कवन कवन गुण ६८ ७३४
तूं करता सभु किछु ६८ ७३५
जिन कै अंतरि वसिआ ६९ ७३५
कीता करणा सरब ७० ७३६

सूहै वेसि दोहागणी ੧੮੯

		पन्ना
अबिचलु नगरु	੧੮੭	७८३
संतां के कारजि आपि	੧੮੮	७८३
मिठ बोलड़ा जी हरि	੧੯੦	७८४

(वार सूही की म० ३)

~~आपे तखत रचाइओनु~~		७८५

(स्री कबीर जीउ)

अवतरि आइ कहा	੨੧੦	७९२
थरहर कंपै बाला	੨੧੧	७९२
अमलु सिरानो लेखा	੨੧੧	७९२
थाके नैन स्रवन सुनि	੨੧੨	७९३
एकु कोटु पंच सिकदारा	੨੧੩	७९३

(स्री रविदास जीउ) की

सह की सार सुहागनि	੨੧੪	७९३
जो दिन आवहि सो दिन	੨੧੪	७९३
ऊचे मंदर साल	੨੧੫	७९४

(सेख फरीद जी) की

तपि तपि लुहि लुहि	੨੧੬	७९४
बेड़ा बंधि न सकिओ	੨੧੬	७९४

—०—

रागु बिलावलु

(महला १)

तू सुलतानु कहा हउ	੨੧੭	७९५
मनु मंदरु तनु वेस	੨੧੮	७९५
आपे सबदु आपे	੨੧੯	७९५
गुरबचनी मनु सहज	੨੨੦	७९६

(महला ३)

धृगु धृगु खाइआ	੨੨੧	७९६
अतुलु किउ तोलिआ	੨੨੨	७९७
साहिब ते सेवकु सेव	੨੨੩	७९७
पूरा थाटु बणाइआ	੨੨੪	७९७
गुरमुखि प्रीति जिसनो	੨੨੫	७९८
पूरे गुर ते वडिआई	੨੨੬	७९८

(महला ४)

उतम मति प्रभ अंतर	੨੨੭	७९८
हम मूरख मुगध	੨੨੮	७९९
हमरा चितु लुभत मोहि	੨੨੯	७९९
आवहु संत मिलहु	੨੨੯	७९९
खत्री ब्राहमण सूदु वैसु	੨੩੦	८००
अनद मूल धिआईओ	੨੩੧	८००
बोलहु भईआ राम	੨੩੨	८००

(महला ५)

नदरी आवै तिसु सिउ	੨੩੨	८०१
सरब कलिआण कीए	੨੩੩	८०१
सुख निधान प्रीतम	੨੩੪	८०२
मै मनि तेरी टेक मेरे	੨੩੫	८०२
बिखै बनु फीका तिआगि	੨੩੬	८०२
एक रूप सगलो	੨੩੭	८०३
आपि उपावन आपि	੨੩੮	८०३
भूले मारगु जिनहि	੨੩੯	८०३
तनु मनु धनु अरपउ	੨੩੯	८०४
मात पिता सुत साथि	੨੪੦	८०४
गुर पूरा वडभागी	੨੪੦	८०४
गुर का सबदु रिदै	दे/੨੪੧	८०४
सगल मनोरथ पाई	੨੪੧	८०४
मोहि निरगुण सभ	੨੪੨	८०५
कवनु जानै प्रभ तुम्हरी	੨੪੨	८०५
मात गरभ महि हाथ दे	੨੪੩	८०५

		पन्ना
मात पिता सुत बंधप	२४३	८०५
स्रब निधान पूरन	२४४	८०६
कवन संजोग मिलउ	२४४	८०६
चरन कमलु प्रभ	२४५	८०६
सांति पाई गुरि सति	२४५	८०६
ममता मोह ध्रोह मदि	२४५	८०६
सगल आनंद कीआ	५ कु / २४६	८०६
जिसु ऊपरि होवत	२४६	८०७
मन महि सिंचहु हरि	२४७	८०७
रोगु गइआ प्रभि	२४७	८०७
सतिगुर करि दीने	२४७	८०७
ताप संताप सगले	२४७	८०७
काहू संगि न चालही	२४८	८०७
सहज समाधि अनंद	२४८	८०७
म्रित मंडल जगु साजि	२४९	८०८
लोकन कीआ वडिआ	२५०	८०८
लालु रंगु तिस कउ	२५१	८०८
राखउ अपनी सरणि	कु २५१	८०९
दोसु न काहू दीजीऐ	२५२	८०९
मिरतु हसै सिर.ऊपरे	रे/२५२	८०९
पिंगुल परबति पारि	५/२५३	८०९
अहंबुधि परबाद	नीत / २५४	८१०
चरन भए संत बोहिथा	२५४	८१०
बिनु साधू जो जीवना	२५५	८१०
टहल करउ तेरे दास	२५५	८१०
कीता लोड़हि सो करहि	२५६	८११
साध संगति कै बासबै	२५७	८११
पाणी पखा पीसु दास	२५७	८११

		पन्ना
स्रवनी सुनउ हरि हरि	२५८	८१२
अटल बचन साधू	२५९	८१२
माटी ते जिनि साजिआ	२६०	८१२
एक टेक गोविंद की	२६०	८१२
महा तपति ते भई	२६१	८१३
सोई मलीनु दीनु	२६२	८१३
जलु ढोवउ इहु सीस	२६२	८१३
इहु सागरु सोई तरै	२६३	८१३
बंधन काटे आपि प्रभि	२६४	८१४
भै ते उपजै भगति प्रिअ	२६४	८१४
तृसन बूझी ममता	त्रि/२६५	८१४
हरि भगता का आसरा	२६६	८१५
बंधन काटै सो प्रभू जाकै	२६६	८१५
कवनु कवनु नही	२६७	८१५
उदमु करत आनंदु	२६८	८१५
जिनि तूं बंधि करि	२६८	८१६
खोजत खोजत मै फिरा	२६९	८१६
जीअ जंत सुप्रसंन भए	२७०	८१६
सिमरि सिमरि पूरन	२७०	८१६
हरि हरि हरि	२७१	८१७
अवरि उपाव सभि	२७२	८१७
करु धरि मसतकि	२७२	८१७
चरन कमल का	ण/२७२	८१७
मनि तनि प्रभु आराधी	२७३	८१७
जीअ जुगति वसि प्रभु	२७३	८१८
सिमरि सिमरि प्रभु	२७४	८१८
दास तेरे की बेनती	२७४	८१८
सरब सिधि हरि गाई	२७५	८१८

		पन्ना
अरदासि सुणी	२७५	८१८
मीत हमारे साजना	२७५	८१८
गुरु पूरा आराधिआ	२७६	८१९
धरति सुहावी सफल	२७६	८१९
रोगु मिटाइआ आपि	२७७	८१९
मरि मरि जनमे जिन	२७७	८१९
ताती वाउ न लगई	२७८	८१९
अपनै बालक आपि	२७८	८१९
मेरे मोहन स्रवनी इह	२७९	८२०
प्रभ जी तू मेरे प्रान	२७९	८२०
सुनीअत प्रभ तउ	२८०	८२०
संतन कै सुनीअत प्रभ	२८०	८२०
राखि लीए अपने जनु	२८१	८२१
ताप लाहिआ गुर	२८१	८२१
सतिगुर सबदि	२८२	८२१
बिनु हरि कामि न	२८२	८२१
हरि हरि नामु	२८३	८२२
गोब्रिंद गोबिंद	२८४	८२२
किआ हम जीअ जंत	२८४	८२२
अगम रूप अबिनासी	२८५	८२२
संत सरणि संत टहल	२८५	८२२
मन किआ कहता हउ	२८६	८२३
निंदकु ऐसे ही झरि	२८६	८२३
ऐसे काहे भूलि परे	२८७	८२३
मन तन रसना हरि	२८७	८२३
गुरि पूरै मेरी राखि	२८७	८२३
सदा सदा जपीऐ	२८८	८२४
मन तन अंतरि प्रभु	२८८	८२४
धीरउ देखि तुमारे	म/२८९	८२४
अचुत पूजा जोग	२८९	८२४
सिमरति नामु कोटि	५ २९०	८२४
सुलही ते नाराइण	२९०	८२५
पूरे गुर की पूरी सेव	२९१	८२५
ताप पाप ते राखे आप	२९१	८२५
जिस ते उपजिआ तिस	२९२	८२५
दोवै थाव रखे गुर पूरे	२९२	८२५
दरसनु देखत दोख	२९३	८२६
तनु धनु जोबन चलत	२९३	८२६
अपना प्रभु पाइआ	अ/२९४	८२६
गोबिंदु सिमरि होआ	२९४	८२६
पारब्रहम प्रभ भए	ए २९५	८२६
मू लालन सिउ प्रीति	२९५	८२७
हरि के चरन जपि	२९५	८२७
राखि लीए सतिगुर	२९६	८२७
मै नाही प्रभु सभ किछु	२९६	८२७
तुम समरथा कारण	म्हा २९७	८२८
ऐसी किरपा मोहि	न २९८	८२८
ऐसी दीखिआ	२९८	८२८
जिउ भावै तिउ	२९९	८२८
राखु सदा प्रभु	२९९	८२८
अपनै सेवक कउ	५ मे/२९९	८२९
आगै पाछै कुसलु	३००	८२९
बिनु भै भगती तरनु	३००	८२९
आपहि मेलि लए	३०१	८२९
जीवउ नामु सुनी	३०१	८२९
मोहन नीद न आवै	३०२	८३०

पन्ना
मोरी अहंजाइ दासन ३०३ ८३०

(महला ६)
दुख हरता हरि नामु ३०३ ८३०
हरि के नाम बिना दुखु ३०४ ८३०
जा मै भजनु राम को ३०४ ८३२
(म० १ असटपदीआ २)
निकटि वसै देखै सभु ३०५ ८३१
मन का कहिआ मनसा म/३०६ ८३२
(म० ३ असटपदीआ) ५
जगु कऊआ मुखि चुंच ३०८ ८३२
(म० ४ असटपदीआ)
आपै आपु खाइ हउ ३०९ ८३३
हरि हरि नामु सीतल ३११ ८३३
गुरमुखि अगम ३१२ ८३४
सतिगुरु परचै मनि ३१४ ८३५
अंतरि पिआसि उठी ५ ३१५ ८३५
मै मनि तनि प्रेमु ३१७ ८३६
(म० ५ असटपदीआ) ५
उपमा जात न कही ३१८ ८३७
प्रभ जनम मरन ३१९ ८३७
(म० १ पिती)
एकम एकंकारु ३२२ ८३८

(महला ३) वारसत इन्हि
आदित वारि आदि ३२७ ८४१
आदि पुरखु आपे ३३० ८४२

(महला १) छंत
मुंध नवेलड़ीआ ३३३ ८४३
मै मनि चाउ घणा ३३५ ८४३

पन्ना
(महला ४) छंत
मेरा हरि प्रभु सेजै जै ३३६ ८४४
मेरा हरि प्रभु ५ ३३७ ८४५

(महला ५) छंत
मंगल साजु भइआ ३३५ ८४५
भागि सुलखणा हरि ५ ३३९ ८४६
सखी आउ सखी वसि ३४२ ८४७
सुख सागर प्रभु ३४४ ८४८
हरि खोजहु वडभागी हे ३४६ ८४८

{ बिलावल की वार
महला ४ } ०।
~~तू हरि प्रभु आपि~~ ३४७ ८४९
हरि उतमु हरि प्रभु

(स्री कबीर जीउ) ५
ऐसो इहु संसारु ३६१ ८५५
बिदिआ न परउ बाद ६६२ ८५५
गृहु तजि बन खंड गृ ३६३ ८५५
नित उठि कोरी ५ ३६४ ८५६
कोऊ हरि समानि नही ३६४ ८५६
राखि लेहु हमते ३६५ ८५६
दरमादे ठाढे T ३६५ ८५६
डंडा मुंद्रा खिंथा ३६६ ८५६
इन माइआ जगदीस ३६६ ८५७
सरीर सरोवर भीतरे ३६७ ८५७
जनम मरन का भ्रमु ३६७ ८५७
चरन कमल जा कै ३६८ ८५७

(श्री नामदेव जीउ) की ५
सफलु जनमु मोकउ ३६८ ८५७

(स्री रविदास जीउ) भगत की ५
दारिदु देखि सभ को ३६९ ८५८

पन्ना
जिह कुल साधु बैसनौ ੩੬੯ ८५८

सधने की (~~स्री सदना जीउ~~)

नृप कंनिआ के कारनै ੩੭੦ ८५८

--o--

रागु गौंड

(महला ४)

जे मनि चिति आस ੩੭੧ ८५९
ऐसा हरि सेवीऐ नित ੩੭੨ ८६०
हरि सिमरत सदा ੩੭੩ ८६०
जिसने साह पातिसाह ੩੭੪ ८६१
हरि अंतरजामी सभ ੩੭੫ ८६१
हरि दरसन कउ मेरा ੩੭੬ ८६१

(महला ५)

सभु करता सभु भुगता ੩੭੭ ८६२
फाकिओ मीन कपिक ੩੭੭ ८६२
जीअ प्रान कीए जिन ੩੭੮ ८६२
नाम संगि कीनो ੩੭੯ ८६३
निमाने कउ जो देतो ੩੮੦ ८६३
जाकै संगि इहु मनु ੩੮[illegible] ८६३
गुर की मूरति मन महि ੩੮੧ ८६४
गुरू गुरू गुरु करि ੩੮੨ ८६४
गुरु मेरी पूजा गुरु ੩੮੩ ८६४
राम राम संगि करि ੩੮੪ ८६५
उन कउ खसमि कीनी ੩੮੪ ८६५
कलि कलेस मिटे हरि ੩੮੫ ८६५
गुर के चरन कमलु ੩੮੬ ८६६
धूप दीप सेवा गोपाल ੩੮੭ ८६६
करि किरपा सुख ੩੮੭ ८६६
पन्ना
हरि हरि नामु जपहु ੩੮੮ ८६७
भव सागर बोहिथ ੩੮੯ ८६७
संत का लीआ धरति ੩੯੦ ८६७
नामु निरंजनु नीरि ੩੯੦ ८६८
जा कउ राखै राखणहारु ੩੯੧ ८६८
अचरज कथा महा ੩੯੨ ८६८
संतन कै बलिहारै ੩੯੩ ८६९

म० ५ असटपदीआ

करि नमसकार पूरे ੩੯੪ ८६९

(श्री कबीर जीउ)

संतु मिलै किछु सुनीऐ ੩੯੫ ८७०
नरू मरै नरु कामि ੩੯੬ ८७०
आकासि गगनु ੩੯੭ ८७०
भुजा बांधि भिला करि ੩੯੭ ८७०
ना इहु मानसु ना इहु ੩੯੮ ८७१
टूटे तागे निखुटी ੩੯੯ ८७१
खसमु मरै तउ नारि ੩੯੯ ८७१
गृहि सोभा जा कै रे ੪੦੦ ८७२
जैसे मंदरि महि ੪੦੧ ८७२
कूटनु सोइ जु मन ੪੦੨ ८७२
धंनु गुपाल धंनु गुरु ੪੦੩ ८७३

(श्री नामदेव जीउ)

असुमेध जगने ੪੦੩ ८७३
नाद भ्रमे जैसे मिर ੪੦੪ ८७३
मोकउ तारि ले रामा ੪੦੫ ८७३
मोहि लागती ताला ੪੦੫ ८७४
हरिहरि करत मिटे ੪੦੬ ८७४
भैरउ भूत सीतला ੪੦੬ ८७४

पन्ना

आजु नामे बीठलु ੪੦੭ ८७४

(स्री रविदास जीउ) की

मुकंदु मुकंदु जपहु ੪੦੮ ८७५
जे ओहु अठिसठि ੪੦੯ ८७५

—०—

राग रामकली

(महला १)

कोई पड़ता सहसा ੪੧੦ ८७६
सरब जोति तेरी ੪੧੦ ८७६
जितु दरि वसहि ੪੧੧ ८७७
सुरति सबदु साखी ੪੧੨ ८७७
सुणि माछिंद्रा नानक ੪੧੩ ८७७
हम डोलत बेड़ी पाप ੪੧੪ ८७८
सुरती सुरति रलाई ੪੧੪ ८७८
तुध नो निवणु मंनणु ੪੧੫ ८७८
सागर महि बूंद बूंद ੪੧੬ ८७८
जन हरि प्रभि किरपा ੪੧੭ ८७९
छादनु भोजनु मागत ੪੧੭ ८७९

(महला ३)

सतजुगि सचु कहै सभु ੪੧੮ ८८०

(महला ४)

जे वडभाग होवहि वड ੪੨੦ ८८०
राम जना मिलि ੪੨੧ ८८०
हरि के सखा साध जन ੪੨੧ ८८१
जे वडभाग होवहि वड ੪੨੨ ८८१
सतिगुरु दइआ ੪੨੩ ८८२
सतगुरु दाता वडा ੪੨੪ ८८२

पन्ना

(महला ५)

किरपा करहु दीन के ੪੨੫ ८८२
पवहु चरणा तलि ੪੨੬ ८८३
आवत हरख न जावत ੪੨੬ ८८३
त्रै गुण रहत रहै निरा ੪੨੭ ८८३
अंगीकारु कीआ प्रभि ੪੨੮ ८८४
तू दाना तू अबिचलु ੪੨੮ ८८४
कर करि ताल पखा ੪੨੯ ८८४
ओअंकारि एक धुनि ੪੩੦ ८८५
कोई बोलै राम राम ੪੩੧ ८८५
पवनै महि पवनु ੪੩੨ ८८५
जपि गोबिंदु गोपाल ੪੩੩ ८८५
चारि पुकारहि ना तू ੪੩੩ ८८६
तागा करि कै लाई ੪੩੪ ८८६
करन करावन सोई ੪੩੫ ८८६
सेवकु लाइओ अपनी ੪੩੬ ८८७
तन ते छुटकी अपुनी ੪੩੭ ८८७
मुख ते पड़ता टीका ੪੩੮ ८८७
कोटि बिघन नही ੪੩੮ ८८८
दोसु न दीजै काहू लोग ੪੩੯ ८८८
पंच सबद तह पूरन ੪੪੦ ८८८
भेटत संगि पारब्रहमु ੪੪੧ ८८९
तेरे काजि न गृह ग्रिहु ੪੪੧ ८८९
सिंचहि दरबु देहि ੪੪੨ ८८९
करि संजोगु बनाई ੪੪੩ ८९०
जो किछु करै सोई सुखु ੪੪੪ ८९०
कोटि जाप ताप बिस्राम ੪੪੫ ८९०
बीजमंत्र हरि कीरतन ੪੪੬ ८९१

पन्ना
संत कै संगि राम रंग ੪੪੬ ८९१
गहु करि पकरी न ੪੪੭ ८९१
आतम रामु सरब ੪੪੮ ८९२
दोनो नामु कीओ पवितु ੪੪੯ ८९२
कउडी बदलै ੪੪੯ ८९२
रैणि दिनसु जपउ ੪੫੦ ८९३
तेरी सरणि पूरे गुर ੪੫੧ ८९३
रतन जवेहर नाम ੪੫੨ ८९३
महिमा न जानहि बेद ੪੫੩ ८९४
किछहू काजु न कीओ ੪੫੩ ८९४
राखनहार दइआल ੪੫੪ ८९४
सगल सिआनप छाडि ੪੫੫ ८९५
होवै सोई भल मानु ੪੫੫ ८९५
दुलभ देह सवारि ੪੫੬ ८९५
जिस की तिस की करि ੪੫੭ ८९६
मन माहि जापि ੪੫੮ ८९६
बिरथा भरवासा स ੪੫੮ ८९६
कारन करन करीम ੪੫੯ ८९६
कोटि जनम के बिनसे ੪੬੦ ८९७
दरसन कउ जाईऐ ੪੬੧ ८९७
किसु भरवासै बिचरहि ੪੬੨ ८९८
इह लोके सुखु पाइआ ੪੬੨ ८९८
गऊ कउ चारे सार ੪੬੩ ८९८
पंच सिंघ राखे प्रभि ੪੬੪ ८९९
ना तनु तेरा ना मनु ੪੬੫ ८९९
राजा राम की सर ੪੬੬ ८९९
ईंधन ते बैसंतरु भागै ੪੬੭ ९००
जो तिसु भावै सो थीआ ੪੬੮ ९००

पन्ना
ऐसा पूरा गुरदेउ ੪੬੯ ९००
गावहु राम के गुण ੪੬੯ ९०१
गुरु पूरा मेरा गुरु ੪੭੦ ९०१
नर नरह नमसकारं ੪੭੦ ९०१
रूप रंग सुगंध भोग ੪੭੧ ९०१

(महला ९) नामा

रे मन ओटि लेहु हरि ੪੭੧ ९०१
साधो कउनु जुगति ੪੭੨ ९०२
प्रानी नाराइनि सुधि ੪੭੨ ९०२

(म० १ असटपदीआ)

सोई चंदु चड़हि से तारे ੪੭੩ ९०२
जगु परबोधहि मड़ी ੪੭੫ ९०३
खटु मटु देही मनु ੪੭੬ ९०३
साहा गणहि न करहि ੪੭੭ ९०४
हठु निग्रहु करि काइ ੪੭੮ ९०५
अंतरु उतभुजु अवरु ੪੮੦ ९०५
जिउ आइआ तिउ ੪੮੨ ९०६
जतु सतु संजम साचु ੪੮੪ ९०७
अउहठि हसत मड़ी ੪੮੫ ९०७

(म० ३ असटपदीआ)

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी ੪੮੭ ९०८
भगति खजाना गुर ੪੮੮ ९०९
हरि की पूजा दुलंभ है ੪੮੯ ९१०
हम कुचल कुचील ੪੯੧ ९१०
नामु खजाना गुर ते ੪੯੪ ९११

(म० ५ असटपदीआ)

किनही कीआ परविरत ੪੯੭ ९१२
इसु पानी ते जिनि तू सम ९१३

੪੯੮

सिखहु सबदि पिआरिहो ५०५

पन्ना
काहू बिहावै रंग रस वै /५०० ६१३
दावा अगनि रहै हरि ५०१ ६१४
जीअ जंत सभि पेखी ५०३ ६१५
दरसनु भेटत पाप ५०४ ६१५
~~मनु तनु राता राम~~ ५ ६१६
मन बच क्रमि राम नामु /५०६ ६१६

(म० ३ अनंदु)

अनंदु भइआ मेरी ५०७ ६१७

(सदु)

जगि दाता सोइ ५२१ ६२३

(म० ५)

साजनड़ा मेरा साजन ड़ /५२५ ६२४
हरि हरि धिआइ /५२५ ६२४
रुणझुणो सबदु अनाहद ५२७ ६२५
चरन कमल सरणा ५२८ ६२६
रण झुंझनड़ा गाउ ५२९ ६२७
करि बंदन प्रभ पार ५३१ ६२७

(महला १)
(दखणी ओअंकार)

ओअंकारि ब्रहमा उत ५३१ ६२९

(सिध गोसटि)

सिध सभा करि ५५८ ६३८

र (रामकली की वा० म० ३)

~~सचै तखतु रचाइआ~~ ५६७ ६४७
सतिगुरु सहजै

र (रामकली की वा० म० ५)

~~थटणहारे थाटु आपे~~ ६५७

पन्ना

(१ [रामकली की वार] २
राइ बलवंडि तथा
सतै डूमि आखी)

नाउ करता कादरु ६३० ६६६

१ (श्री कबीर जीउ)

काइआ कलालनि ६३५ ६६८
गुड़ु करि गिआनु ६३७ ६६९
तूं मेरो मेरु परबतु ६३८ ६६९
संता मानउ दूता ६३९ ६६९
जिह मुख बेदु गाइत्री ६४० ६७०
तरवरु एकु अनंत ६४० ६७०
मुंद्रा मोनि दइआ ६४१ ६७०
कवन काज सिरजे ६४२ ६७०
जिह सिमरनि होइ ६४२ ६७१
बंधचि बंधनु पाइआ ६४३ ६७१
चंदु सूरजु दोइ जोति दु ~~६७२~~ ६४४
दुनीआ हुसीआर ~~६७२~~ ६४४

१ उ (श्री नामदेव जीउ) की

आनीले कागदु ६४५ ६७२
बेद पुरान सासत्र ६४६ ६७२
माइ न होती बापु न ६४६ ६७३
बानारसी तपु करै ६४७ ६७३

१ (स्री रविदास जीउ) की

पड़ीऐ गुनीऐ नामु ६४८ ६७३

१ (श्री बेणी जीउ) की

इड़ा पिंगुला अउर ६४९ ६७४

—०—

जैसा सतिगुरु सुणीदा ६०७

पन्न।

रागु नट नाराइण न

(महला ४)

मेरे मन जपि अहिनिसि ६५१ ९७५
राम जपि जनि रामै ६५१ ९७५
मेरे मन जपि हरि ६५२ ९७६
मेरे मन जपि हरि हरि ६५३ ९७६
मेरे मन जपि हरि ६५४ ९७६
मेरे मन कलि कीरति ६५४ ९७६
मेरे मन सेव सफल ६५५ ९७७
मन मिलु संत संगति ६५६ ९७७
कोई आनि सुनावै हरि ६५६ ९७७

(महला ५)

राम हउ किआ जाना ६५७ ९७८
उलाहनो मै काहू न ६५८ ९७८
जाकउ भई तुमारी ६५९ ९७८
अपना जनु आपहि ६५९ ९७९
हरि हरि मन महि ६५९ ९७९
चरन कमल संगि ६६० ९७९
मेरे मन जपु जपि ६६० ९७९
मेरै सरबसु नामु ६६० ९७९
हउ वारि वारि जाउ ६६१ ९८०
कोऊ है मेरो साजनु मीतु ६६१ ९८०

(म० ४ असटपदीआ)

राम मेरे मनि तनि ६६२ ९८०
राम हम पाथर निर ६६३ ९८१
राम हरि अंम्रित सरि मि ६६४ ९८१
राम गुर सरनि प्रभू ६६५ ९८२

पन्न।

राम करि किरपा लेहु ६६७ ९८२
मेरे मन भजु ठाकुर ६६८ ९८३

--०--

रागु माली गउड़ा

(महला ४)

अनिक जतन करि ६७० ९८४
जपि मनु राम नामु ६७० ९८४
सभि सिध साधिक मुनि ६७१ ९८५
मेरा मनु राम नामि ६७२ ९८५
मेरे मन भजु हरि हर ६७३ ९८५
मेरे मन हरि भजु सभ ६७३ ९८६

(महला ५)

रे मन टहल हरि सुख ६७४ ९८६
राम नाम कउ नमस ६७५ ९८६
ऐसो सहाई हरि को ६७६ ९८६
इही हमारै सफल स ६७६ ९८७
सभ कै संगी नाही दूरि ६७७ ९८७
हरि समरथ की ६७८ ९८७
प्रभ समरथ देव ६७८ ९८८
मनि तनि बसि रहे ६७९ ९८८

(भगत नामदेव जी) की

धंनि धंनि ओ राम बेनु ६७९ ९८८
मेरो बापु माधउ ६८० ९८८
सभै घट रामु बोलै ६८० ९८८

--०--

रागु मारू

R R (महला १)

~~साजन तेरे चरन~~ ६८१ ९८९
मिलि मात पिता पिंडु ६८२ ९८९

पन्ना
करणी कागदु मनु ६८२ ९९०
बिमल मझारि बससि ६८३ ९९०
सखी सहेली गरबि ६८४ ९९०
मुल खरीदी लाला ६८५ ९९१
कोई आखै भूतना कौ ६८६ ९९१
इहु धनु सरब ६८६ ९९१
सूरु सरु सोसि लै सो ६८७ ९९१
माइआ मुई न मनु ६८८ ९९२
जोगी जुगति नामु ६८९ ९९२
अहिनिसि जागै नी ६९० ९९३

(महला ३)

जह बैसालहि तह ६९१ ९९३
आवणु जाणा ना थीऐ ज/६९२ ~~९९३~~
बिछले गुनह बखसा र ६९३ ९९४
सचि रते से टोलि लहु ६९३ ९९४
मारू ते सीतलु करे ६९४ ९९४

(महला ४)

जपिओ नामु सुक जन क/६९५ ~~९९५~~
सिध समाधि जपिओ ६९६ ९९५
हरि हरि नामु निधानु ६९७ ९९६
हउ पूंजी नामु दसाइ ६९८ ९९६
हरि हरि कथा सुणाइ ६९९ ९९६
हरि भाउ लगा ६९९ ९९७
हरि हरि भगति भरे ७०० ९९७
हरि हरि नामु जपहु ७०१ ९९८

(महला ५)

डरपै धरति आकासु ५स/७०२ ९९८
पांच बरख को अनाथु ७०३ ९९९
पन्ना
वित नवित भ्रमिओ व ७०४ ९९९
कवन थान धीरिओ है ७०५ ९९९
मान मोह अरु लोभ र/७०५ ~~१०००~~
खुलिआ करमु क्रिपा ७०६ १०००
जो समरथु सरब गुण ७०७ १०००
अंतरजामी सभ बिधि ७०७ १०००
चरन कमल प्रभ राखे ७०८ १००१
प्रान सुखदाता जीअ ७०८ १००१
गुपतु करता संगि सो ७०९ १००१
बाहरि ढूंढन ते छूटि ७१० १००२
जिसहि साजि निवाजि आ/७११ ~~१००२~~
फूटो आंडा भरम का ७१२ १००२
बेद पुकारै मुख ते ७१२ १००३
कोटि लाख सरब को ७१३ १००३
ओअंकारि उतपाती ७१४ १००३
मोहनी मोहि लीए त्रै ७१५ १००४
सिमरहु एकु निरंजन ७१६ १००४
कत कउ डहकावउ ७१७ १००५
मेरी ठाकुरु अति भारा रे ~~१००५~~
पतित उधारन ७१९ १००५
तृपति आघाए संता त्रि/७१९ १००६
छोडि सगल सिआणप पा/७२० १००६
जिनी नामु विसारि आ/७२१ १००६
पुरखु पूरन सुखह दाता/७२१ १००६
चलत बैसत सोवत ७२१ १००६
तजि आपु बिनसी ७२२ १००७
प्रतिपाल माता ७२२ १००७
पतित पावन नामु जा ७२३ १००७

पन्ना

संजोगु विजोगु धुरहु ੭੨੩ १००७
वैदो न वाई भैणो न भाई ੭੨੪ १००८

(महला ६)

हरि को नामु सदा सुखु ੭੨੪ १००८
अब मै कहा करउ री माई ੭੨੫ १००८
माई मै मन को मानु न ੭੨੫ १००८

(म० १ असटपदीआ)

बेद पुराण कथे सुणे ੭੨੬ १००८
बिखु बोहिथा लादिआ ੭੨੭ १००६
सबदि मरै ता मारि ੭੨੮ १०१०
साची कार कमावणी ੭੩੧ १०१०
लालै गरबु छोडिआ ੭੩੩ १०११
हुकमु भइआ रहणा ੭੩੪ १०१२
मनमुखु लहरि घरु ੭੩੬ १०१२
मात पिता संजोगि ੭੩੮ १०१३

(महला १ काफी)

आवउ वंञउ डुमणी ੭੪੧ १०१४
ना भैणा भरजाईआ ੭੪੨ १०१५
ना जाणा मूरखु है कोई ੭੪੩ १०१५

(म० ३ असटपदीआ)

जिसु नो प्रेमु मंनि ੭੪੪ १०१६

(म० ५ असटपदीआ)

लख चउरासीह भ्रमते ੭੪੫ १०१७
करि अनुग्रहु राखि ੭੪੭ १०१७
ससत्रि तीखणि काटि ੭੪੮ १०१७
चीदना चादनु आंगु ੭੪੯ १०१८
आउ जी तू आउ हमा ੭੫੦ १०१८
जीवना सफल जीवन ੭੫੧ १०१८

ਮਿ (म० ५ अंजुलीआ)

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ੭੫੨ १०१६
बिरखै हेठि सभि जंत ੭੫੩ १०१६

सोलहे (महला १)

साचा सचु सोई अवरु ੭੫੫ १०२०
आपे धरती धउलु ੭੫੭ १०२१
दूजी दुरमति अंनी ੭੬੦ १०२२
आदि जुगादी अपर ੭੬੨ १०२३
साचै मेले सबदि ੭੬੫ १०२४
आपे करता पुरखु ੭੬੮ १०२५
केते जुग वरते गुबारै ੭੭੦ १०२६
हरि सा मीतु नाही मै ੭੭੩ १०२७
असुर संघारण रामु ੭੭੬ १०२८
घरि रहु रे मन मुगध ੭੭੮ १०३०
सरणि परे गुरदेव ੭੮੧ १०३१
साचे साहिब सिरजणु ੭੮੪ १०३२
काइआ नगरु नगर ੭੮੭ १०३३
दरसनु पावा जे तुधु ੭੮੯ १०३४
अरबद नरबद धुंधू ੭੯੨ १०३५
आपे आपु उपाइ ੭੯੪ १०३६
सुंन कला अपरंपरि ੭੯੭ १०३७
जह देखा तह दीन ੮੦੦ १०३८
हरि धनु संचहु रे जन ੮੦੨ १०३६
सचु कहहु सचै घरि ੮੦੫ १०४०
कामु क्रोधु परहरु पर ੮੦੭ १०४१
कुदरति करनैहार ੮੧੦ १०४२

सोलहे (महला ३)

हुकमी सहजे स्रिसटि ਸਿ ੧ ~~१०४३~~

੮੧੨

पन्ना
एको एकु वरतै सभु ੮੧੫ १०४४
जगुजीवनु साचा एको ग/੮੧੭ १०४५
जो आइआ सो सभु को ੮੨੦ ~~१०४७~~
सचु सालाही गहिर ੮੨੨ १०४८
एको सेवी सदा थिरु ੮੨੫ १०४९
सचै सचा तखतु रचाइ ੮੨੭ १०५०
आपे आपु उपाइ ੮੩੦ १०५१
आपे करता सभु जिस ੮੩੩ १०५२
सो सचु सेविहु सिरजणु ੮੩੫ १०५३
सतिगुरु सेवनि से वड ੮੩੮ १०५४
हरि जीउ सेविहु ੮੪੦ १०५५
मेरै प्रभि साचै इकु ੮੪੩ १०५६
निहचलु एकु सदा ੮੪੫ १०५७
गुरमुखि नाद बेद ੮੪੮ १०५८
आपे सृसटि हुकमि स्रि/੮੫੦ १०५९
आदि जुगादि दइआ ੮੫੨ १०६०
जुग छतीह कीओ ੮੫੫ १०६१
हरि जीउ दाता अगम ੮੫੭ १०६२
जो तुधु करणा सो करि ੮੬੦ १०६३
काइआ कंचनु सबदु ੮੬੨ १०६४
निरंकारि आकारु र ੮੬੫ १०६५
अगम अगोचरु र ੮੬੮ १०६७
नदरी भगता लैहु ੮੭੦ १०६८

सोलहे (महला ४)

साचा आपि सवारण ੮੭੩ १०६९
हरि अगम अगोचरु ੮੭੫ १०७०

सोलहे (महला ५)

कला उपाइ धरी ੮੭੮ १०७१
पन्ना
संगी जोगी नारि ੮੮੦ १०७२
करै अनंदु अनंदी ੮੮੨ १०७३
गुरु गोपालु गुरु ੮੮੬ १०७४
आदि निरंजनु प्रभु ੮੮੭ १०७५
जो दीसै सो एको तू है ੮੯੦ १०७६
सूरति देखि न भूलु ੮੯੨ १०७७
सिमरै धरती अरु ੮੯੫ १०७८
प्रभ समरथ सरब सुख ੮੯੭ १०८०
तू साहिबु हउ सेवकु ੯੦੦ १०८१
अचुत पारब्रहम ੯੦੨ १०८२
अलह अगम खुदाई ੯੦੬ १०८३
पारब्रहम सभ ऊच ੯੦੮ १०८४
चरन कमल हिरदै ੯੧੧ १०८५

(मारू की वार म० १) २

~~गुर ते गिआनु~~ ੯੧੨ १०८७
बिणु गाहक गुणु

(मारू की वार म० ५) डखणे

तू ~~सचा साहिबु सचु~~ ੯੨੨ १०९४
चउ सजण

(श्री कबीर जीउ) की

पंडीआ कवन कुमति ੯੫੪ ११०२
बनहि बसे किउ ੯੫੪ ११०३
रिधि सिधि जाकउ ੯੫੫ ११०३
उदक समुंद सलल ग ੯੫੬ ११०३
जउ तुम मोकउ दूरि म ੯੫੬ ११०४
जिनि गड़ कोटि कीए ੯੫੭ ११०४ ੯੫੭
देही गावा जीउ धर ੯੫੭ ११०४
अनभउ किनै न देखि ੯੫੮ ११०४
राजन कउनु तुमारै ੯੫੯ ११०५
गगन दमामा बाजिओ ੯੫੯ ११०५

(कबीर जीउ)

पन्ना

उ (स्री नामदेव जीउ) की

चारि मुकति चारै सिधि ९६० ११०५
दीनु बिसारिओ रे ९६१ ११०५

(स्री जै देव जी) उ । उ की

दुः चंदुसत भेदिआ ना ९६२ ११०६
कबीरु
रामु सिमरु पछु ९६२ ११०६

(स्री रविदास जीउ) की

ऐसी लाल तुझ बिनु ९६३ ११०६
सुख सागर सुरि तरु ९६३ ११०६

--०--

राग तुखारी ३२

छंत # (महला १)

तू सुणि किरत करंमा ३३ ११०७
मै पहिलै पहरै रैण ४१ १११०
तारा चड़िआ लंमा ४३ १११०
भोलावड़ै भुली भुलि ४५ ११११
मेरे लाल रंगीले हम ४६ १११२
ए मन मेरिआ तू सम ४८ १११२

छंत (महला ४)

P अंतरि पिरी पिआरु ५० १११३
हरि हरि अगम ५२ १११४
तू जगजीवनु जग ५३ १११५
नावणु पुरबु अभीचु ५५ १११६

छंत (महला ५)

घोलि घुमाई लालना ५८ १११७ मि

--०--

पन्ना

राग केदारा ६०

(महला ४)

मेरे मन राम नाम ६० १११८
मेरे मन हरि हरि गुन ६१ १११८

(महला ५)

माई संत संगि जागी ६१ १११९
दीन बिनउ सुनु ६२ १११९
सरनी आइओ नाथ ६२ १११९
हरि के दरसन को मनि ६३ १११९
प्रिअ की प्रीति पिआरी ६३ ११२०
हरि हरि हरि गुन ६४ ११२०
हरि बिनु जनमु ६४ ११२०
हरि बिनु कोइ न ६४ ११२०
बिसरत नाहि मन ते ६५ ११२१
प्रीतम बसत रिद महि ६५ ११२१
रसना राम राम ६६ ११२१
हरि के नाम को अधारु ६६ ११२१
हरि के नाम बिनु ध्रिगु ६७ ११२१
संतह धूरि ले मुखि ६७ ११२१
हरि के नाम की मन ६८ ११२२
मिलु मेरे प्रीतम ६८ ११२२

५ (स्री कबीर जीउ) की

उसतति निंदा दोऊ ७० ११२३
किनही बनजिआ ७१ ११२३
री कलवारि गवारि ७१ ११२३
कामु क्रोध त्रिसना के त्रि ७२ ११२४
टेढी पाग टेढे चलि ले ७३ ११२४
चारि दिन अपनी ७३ ११२४

पन्ना

੫ (स्री रविदास जीउ)
खटु करमु कुल संजु ੭੪ ११२४

--०--

रागु भैरउ ੭੫

(महला १)

तुझ ते बाहरि कछू न ੭੫ ११२५
गुर कै सबदि तरे ੭੫ ११२५
नैनी द्रिसटि नही द्रि ੭੬ ११२५
भूंडी चाल चरण कर ੭੭ ११२६
सगली रैणि सोवत ੭੮ ११२६
गुर कै संगि रहे ੭੮ ११२६
हिरदै नामु सरब धनु ੭੯ ११२७
जग न होम पुंन तप ੮੦ ११२७

(महला ३)

जाति का गरबु न करी ੮੧ ११२८
जोगी ग्रिही पंडित ੮੨ ११२८
जा कउ राखै अपणी ੮੨ ११२८
मै कामणि मेरा कंतु ੮੩ ११२८
सो मुनि जि मन की ੮੩ ११२८
राम नामु जगत ੮੪ ११२९
नामे उधरे सभि जित ੮੪ ११२९
गोविंद प्रीति सन ੮੫ ११२९
कलजुगि महि राम ੮੫ ११३०
कलजुग महि बहु ੮੬ ११३०
दुबिधा मनमुख रोगि ੮੬ ११३०
मनमुखि दुबिधा सदा ੮੭ ११३०
दुखि विचि जंमै दुखि ੮੮ ११३०
सबदु बीचारे सो जनु ੮੮ ११३१

पन्ना

मनमुख आसा नही ੯੦ ११३१
कलि महि प्रेति जि ੫ ੯੧ ११३१
मनसा मनहि समाइ ੯੧ ११३२
बाझु गुरू जगतु ੯੨ ११३२
हउमै माइआ मोहि ੯੩ ११३२
मेरी पटीआ लिखहु ੯੩ ११३३
आपे दैत. लाइ दिते ੯੪ ११३३

(महला ४)

हरिजन संत ੯੫ ११३४
बोलि हरिनामु सफल ੯੬ ११३४
सुक्रितु करणी सारु क्रि ੯੭ ११३४
सभि घटि तेरे तू ੯੭ ११३४
हरि का संतु हरि की ੯੮ ११३५
ते साधू हरि मेलहु ੯੮ ११३५
संत संगति साई हरि ੯੯ ११३५

(महला ५)

सगली थीति पासि ੧੦੦ ११३६
ऊठत सुखीआ बैठत ੧੦੧ ११३६
वरत न रहउ न मह ੧੦੧ ११३६
दस मिरगी सहजे ੧੦੨ ११३६
जे सउ लोचि लोचि ੧੦੨ ११३६
जीउ प्राण जिनि ੧੦੩ ११३७
आगै दयु पाछै नारा ੧੦੩ ११३७
कोटि मनोरथ आवहि ੧੦੪ ११३७
लेपु न लागो तिल का ੧੦੪ ११३७
खूबु खूबु खूबु खूबु ੧੦੫ ११३८
साच पदारथु गुरमुखि ੧੦੫ ११३८
सतिगुरु सेवि सरब ੧੦੬ ११३८

पन्ना
अपसे दास कउ कंठि १०६ ११३८
स्रीधर मोहन सगल १०७ ११३८
बन महि पेखिओ त्रिण १०७ ११३९
निकटि बुझै सो बुरा १०८ ११३९
जिसु तू राखहि तिसु १०९ ११३९
तउ कड़ीऐ जे होवै ११० ११४०
बिनु बाजे कैसो निरत १११ ११४०
हउमै रोगु मानुख कउ ११२ ११४०
चीति आवै तां महा ११२ ११४१
बापु हमारा सद ११३ ११४१
निरवैरु पुरख सति ११४ ११४१
सतिगुरु मेरा बे मुह ११५ ११४२
नामु लैत मनु परगटु ११५ ११४२
नमसकार ता कउ ११६ ११४२
मोहि दुहागनि आहि ११७ ११४३
चितवत पाप न आ ११८ ११४३
अपणी दइआ करे सो ११९ ११४३
नामु हमारै अंतर ११९ ११४४
तू मेरा पिता तू है मेरा १२० ११४४
सभ ते ऊचा जा का दर १२१ ११४४
रोवनहारी रोजु बना १२१ ११४५
संत की निंदा जोनी १२२ ११४५
नामु हमारै बेद अरु १२३ ११४५
निरधन कउ तुम १२४ ११४६
संत मंडल महि हरि १२५ ११४६
रोगु कवनु जां राखै १२५ ११४६
तेरी टेक रहा कलि १२६ ११४७
प्रथमे छोडी पराई १२७ ११४७

पन्ना
सुखु नाही बहुतै धनि १२८ ११४७
गुर मिलि तिआगिओ १२८ ११४८
सभ ते ऊचा जा का नाउ १२९ ११४८
जिसु सिमरत मनि १३० ११४८
लाज मरै जो नामु १३१ ११४९
गुर सुप्रसंन होई भउ ए १३२ ११४९
करण कारण समरथु १३२ ११४९
मनु तनु राता राम १३३ ११५०
नामु लैत किछु बिघनु १३४ ११५०
आपे सासतु आपे बेदु १३५ ११५०
भगता मनि आनंदु १३६ ११५१
मै कउ भउ पड़िआ १३६ ११५१
पंच मजमी जो पंचन १३७ ११५१
निंदक कउ फिटके १३८ ११५१
दुइ करि जोरि करउ ५ १३८ ११५२
सतिगुर अपुने सुनी १३९ ११५२
परतिपाल प्रभ १४० ११५३
(म० १ असटपदीआ)
आतम महि रामु राम १४१ ११५३
(महला ३)
तिनि करतै इकु १४२ ११५४
गुर सेवा ते अंम्रित १४५ ११५५
(म० ५ असटपदीआ)
जिसु नामु रिदै सोई १४६ ११५५
कोटि बिसन कीने अभ १४८ ११५६
सतिगुर मोकउ कीनो १४९ ११५७
(श्री कबीर जी)
इहु धनु मेरे हरि के १५१ ११५७

पन्ना
नांगे आवनु नांगे १५१ ११५७
मैला ब्रहमा मैला इंदु १५२ ११५८
मनु करि मका किबला १५२ ११५८
गंगा के संग सलिता १५३ ११५८
माथे तिलकु हथि १५३ ११५८
उलटि जाति कुल १५४ ११५८
निरधन आदरु कोई १५४ ११५९
गुर सेवा ते भगति १५४ ११५९
सिव की पुरी बसै बुधि १५५ ११५९
सो मुलां जो मन सिउ १५६ ११५९
जो पाथर कउ कहते १५७ ११६०
जल महि मीन १५८ ११६०
जब लगु मेरी मेरी १५८ ११६०
सतरि सैइ सलार है १५८ ११६१
सभु कोई चलन कहत १६० ११६१
किउ लीजै गढु बंका ढु/१६० ११६१
गंग गुसाइनि गहि १६१ ११६२
अगम द्रुगम गड़ि १६२ ११६२
कोटि सूर जाकै १६३ ११६२

५ (श्री नामदेव जीउ) ३/ की

रे जिहबा करउ १६४ ११६३
परधन परदारा पर १६४ ११६३
दूध कटोरै गडवै पानी १६५ ११६३
मै बउरी मेरा रामु १६५ ११६४
कबहू खीरि खांड घीउ T/१६६ ११६४
हसत खेलत तेरे देहु १६७ ११६४
जैसी भूखे प्रीति अनाज १६८ ११६४
घर की नारि तिआगै १६८ ११६५
पन्ना
संडा मरका जाइ १६९ ११६५
सुलतानु पूछै सुन बे १७० ११६५
जउ गुरदेउ त मिलै १७२ ११६६

५ (स्री रविदास जीउ) की

बिनु देखे उपजै नही १७४ ११६७

५ (स्री नामदेव जीउ) ५

आउ कलंदर केसवा १७५ ११६७

--o--

राग बसंतु १७६

(महला १)

माहा माह मुमारखी १७६ ११६८
रुति आईले सरस १७७ ११६८
सुइने का चउका १७७ ११६९

(महला ३)

बसत्र उतारि दिगं १७८ ११६९

(महला १)

सगल भवन तेरी १७९ ११६९
मेरी सखी सहेली १८० ११७०
आपे कुदरति करे १८१ ११७०

(महला ३)

साहिब भावै सेवकु १८२ ११७०

(महला १)

सालग्राम बिप पूजि १८३ ११७१
साहुरड़ी वथु सभु किछु १८४ ११७१
राजा बालकु नगरी १८५ ११७१
साचा साहु गुरू सुखु १८६ ११७१

(महला ३)

माहा रुती महि सद १८७ ११७२
राते साचि हरि नामि १८८ ११७२

पन्ना
हरि सेवे सो हरि का १८८ ११७२
अंतरि पूजा मन ते १८९ ११७३
भगति वछलु हरि १९० ११७३
माइआ मोहु सबदि १९१ ११७३
पूरै भागि सचु कार १९२ ११७४
भगति करहि जन १९३ ११७४
नामि रते कुलां का १९४ ११७४
बिनु करमा सभ १९५ ११७५
कृपा करे सतिगुरू १९६ ११७५
गुर सबदी हरि चेति १९७ ११७५
तेरा कीआ किरम जंत १९८ ११७६
बनसपति मउली १९९ ११७६
सभि जुग तेरे कीते १९९ ११७६
तिन बसंतु जो हरि २०० ११७६
बसंतु चड़िआ फूली २०० ११७७
गुर की बाणी विटहु २०१ ११७७
(महला ४)
जिउ पसरी सूरज २०२ ११७७
रैणि दिनसु दुइ सदे २०२ ११७७
राम नामु रतन कोठड़ी २०३ ११७८
तुम वडपुरख वड २०४ ११७८
मेरा इकु खिनु २०५ ११७८
मनु खिनु खिनु भरमि २०५ ११७९
आवण जाणु भइआ २०६ ११७९
(महला ५)
गुर सेवउ करि नमस २०७ ११८०
हटवाणी धन माल २०८ ११८०
तिसु बसतु जिसु प्रभ २०९ ११८०
पन्ना
जीअ प्राण तुम पिंड २१० ११८१
प्रभ प्रीतम मेरै संगि २११ ११८१
मिलि पाणी जिउ हरे २१२ ११८१
तुम बडदाते दे रहे २१२ ११८१
तिसु तू सेवि जिनि तू २१३ ११८२
जिसु बोलत मुखु २१४ ११८२
मन तन भीतरि लागी २१५ ११८२
राम रंगि सभ गए २१५ ११८३
सचु परमेसरु नित २१६ ११८३
गुर चरण सरेवत २१७ ११८३
सगल इछा जपि पुनी २१८ ११८४
किलबिख बिनसे २१९ ११८४
रोग मिटाए प्रभू २१९ ११८४
हुकमु करि कीने २२० ११८४
देखु फूल फूल फूले २२० ११८५
होइ इकत्र मिलहु २२१ ११८५
तेरी कुदरति तू हैं है/२२२ ११८५
मूलु न बूझै आपु न सूझै २२३ ११८६
(महला ९)
साधो इहु तनु मिथिआ २२३ ११८६
पापी हीऐ मै कामु २२४ ११८६
माई मै धनु पाइओ २२४ ११८६
मन कहा बिसारिओ. २२५ ११८६
कहा भूलिओ रे झूठे २२५ ११८७
(म० १ असटपदीआ)
जगु कऊआ नामु नही २२५ ११८७
मनु भूलउ भरमसि २२७ ११८७
दरसन की पिआस २२८ ११८८

पत्रा
चंचलु चीतु न पावै २३१ ११८६
मतु भसम अंधुले २३२ ११८६
दुबिधा दुरमति अंधु २३४ ११९०
आपे भवरा फुलु बेलि २३४ ११९०
(महला १)
नउ सत चउदह तीसि २३५ ११९०
(महला ४)
काइआ नगरि इकु २३७ ११९१
(महला ५)
सुणि साखी मन जपि २३८ ११९२
अनिक जनम भ्रमे २४० ११९२
(बसंत की वार म० ५)
हरि का नामु धिआइ २४१ ११९३
(श्री कबीर जीउ)
मउली धरती मउलि २४२ ११९३
पंडित जन माते पढ़ि २४३ ११९३
जोइ खसमु है जाइआ २४३ ११९४
प्रहलाद पठाए २४४ ११९४
इसु तनु मन मधे २४५ ११९४
नाइकु एकु बनजारे २४५ ११९४
माता जूठी पिता भी २४५ ११९५
(श्री रामानंद जीउ)
कत जाईऐ रे घरि २४७ ११९५
(श्री नामदेव जीउ) ३/#की
साहिबु संकटवै सेवकु २४८ ११९५
लोभ लहरि अति २४८ ११९६
सहज अवलि धूड़ि २४९ ११९६
(स्री रविदास जीउ) की
तुझहि सुझंता कछू २४९ ११९६

पन्ना
(श्री कबीर जीउ)
सुरह की जैसी तेरी २५० ११९६
--०--

रागु सारग २५१

(महला १)
अपने ठाकुर की हउ २५१ ११९७
हरि बिनु किउ रहीऐ २५१ ११९७
दूरि नाही मेरो प्रभु २५२ ११९७
(महला ४)
हरि के संत जना की २५३ ११९८
गोबिंद चरनन कउ २५४ ११९८
हरि हरि अंम्रित नामु २५४ ११९९
गोबिंद की ऐसी कार २५५ ११९९
मेरा मनु राम नामि २५६ ११९९
जपि मन राम नामु २५७ १२००
काहे पूत झगरत २५८ १२००
जपि मन जगंनाथ २५८ १२००
जपि मन नरहरे नर २५९ १२०१
जपि मन माधो मधुसूदनो २५९ १२०१
जपि मन निरभउ २६० १२०१
जपि मन गोविंदु हरि २६१ १२०२
जपि मन सिरी रामु २६१ १२०२
(महला ५)
सतिगुर मूरति कउ २६२ १२०२
हरि जीउ अंतरजामी २६३ १२०२
अब मोरो नाचनो रहो २६३ १२०३
अब पूछे किआ कहा २६४ १२०३
माई धीरि रही -२६५ १२०३

		पन्ना
माई मति सति सति	२६६	१२०४
मेरे मन बासिबो गुर	२६६	१२०४
अब मोहि राम भरोसउ	२६७	१२०४
ओइ सुख का सिउ	२६८	१२०५
बिखई दिनु रैनि इव	२६८	१२०५
अवरि सभि भूले भ्रमत	२६९	१२०५
अनदिनु राम के गुण	२७०	१२०६
बलिहारी गुर देव	२७०	१२०६
गाइओ री मै गुण	२७१	१२०६
कैसे कहउ मोहि जीअ	२७२	१२०६
रे मूढ़े तू किउ सिमरत	२७२	१२०७
किउ जीवनु प्रीतम	२७३	१२०७
उआ अउसर कै हउ	२७३	१२०७
मनोरथ पूरे सतिगुर	२७४	१२०८
मन कहा लुभाईऐ	२७४	१२०८
मन सदा मंगल	२७५	१२०८
हरि जन सगल	२७५	१२०८
हरजन राम राम	२७६	१२०८
मोहन घरि आवहु	२७६	१२०९
अब किआ सोचउ सोच	२७७	१२०९
अब मोहि सरब	२७७	१२०९
अब मोहि लबधिओ है	२७८	१२०९
मेरा मनु एकै ही प्रिअ	२७८	१२०९
अब मेरो ठाकुर सिउ	२७९	१२१०
मेरै मनि चीति आए	२७९	१२१०
हरि जीउ के दरसन	२८०	१२१०
अब मेरो पंचा ते संगु	२८१	१२१०
अब मेरो ठाकुर सिउ	२८१	१२१०
मोहन सभि जीअ तेरे	२८१	१२११
अब मोहि धनु पाइओ	२८१	१२११
मेरै मनि मिसट लगे	२८२	१२११
रसना राम कहत गुण	२८२	१२११
नैनहु देखिओ चलतु	२८२	१२११
चरनह गोबिंद मारग	२८३	१२१२
धिआइओ अंति बार.	२८४	१२१२
गुरि मिलि ऐसे प्रभू	५ २८४	१२१२
मेरै मनि सबदु लगा	२८५	१२१२
हरि हरि नामु दीओ	२८५	१२१२
रे मूड़े आन काहे कत	२८६	१२१३
ओअं प्रिअ प्रीति चीति	२८६	१२१३
मन ओइ दिनस धंनि	२८६	१२१३
अब मेरो सहसा दूखु	२८७	१२१३
प्रभु मेरो इत उत	२८७	१२१३
अपना मीतु सुआमी	२८८	१२१४
ओट सताणी प्रभ जीउ	२८८	१२१४
प्रभ सिमरत दूख	२८९	१२१४
मेरो मनु जत कत	२८९	१२१४
मन ते भै भउ दूरि	२८९	१२१४
अंम्रित नामु मनहि	२९०	१२१५
बिनु प्रभ रहनु न	२९०	१२१५
रसना जपती तूही	२९१	१२१५
जाहू काहू अपुनो ही	२९१	१२१५
झूठो माइआ को मद	२९२	१२१५
अपुनी इतनी कछू	२९२	१२१६
मोहनी मोहत रहै	२९२	१२१६
कहा करहि रे खाटि	२९३	१२१६

		पन्ना			पन्ना
गुर जीओ संगि	उ/ २९३	१२१६	धूरतु सोई जि धुर कउ	३०५	१२२१
हरि हरि दीओ सेवक	२९४	१२१६	हरि हरि संत जना की	३०६	१२२२
तू मेरे मीत सखा हरि	२९४	१२१६	हरि के नाम हीन	३०६	१२२२
करहु गति दइआल	२९५	१२१७	मनि तनि राम को बिउ	३०७	१२२२
ठाकुर बिनती करन	२९५	१२१७	हरि के नाम हीन मति	३०७	१२२२
जाकी राम नाम लिव	२९५	१२१७	चितवउ वा अउसर	३०७	१२२२
अब जन ऊपरि को	२९६	१२१७	मेरा प्रभु संगे अंतरि	३०८	१२२२
हरि जन छोडिआ	२९६	१२१७	जा कै राम को बलु	३०८	१२२३
मेरै गुरि मोरो सहसा	२९७	१२१८	जीवतु राम के गुण	३०९	१२२३
सिमरत नामु प्रान	२९७	१२१८	मन रे नाम को सुख	न/३०९	१२२३
अपुने गुर पूरे	२९८	१२१८	बिराजित राम को पर	३१०	१२२३
बिनु हरि है को कहा	२९८	१२१८	आतुरु नामु बिनु	म/३१०	१२२३
ठाकुर तुम सरणाई	२९८	१२१८	मैला हरि के नाम बिनु	३१०	१२२४
हरि के नाम की गति	२९९	१२१९	रमण कउ राम के	३११	१२२४
जिहवे अंम्रित गुण	२९९	१२१९	कीने पाप के बहु कोट	न्रे/३११	१२२४
होती नही कवन कछु	३००	१२१९	अंधे खावहि बिसू के	३१२	१२२४
फीके हरि के नाम बिनु	३००	१२१९	टूटी निंदक की अध	३१२	१२२४
आइओ सुनन पड़न	३०१	१२१९	तृसना जलत बहु	त्रि/च/३१३	१२२५
धन वंत नाम के	३०१	१२२०	रे पापी तै कवन	३१३	१२२५
प्रभ जी मोहि कवनु	३०२	१२२०	माई री चरनह ओट	३१३	१२२५
आवै राम सरणि वथ	३०२	१२२०	माई री मनु मेरो	३१४	१२२५
जाते साधू सरणि गही	३०२	१२२०	माई री आन सिमरि	३१४	१२२५
रसना राम को जसु	३०३	१२२०	हरि काटी कुटिलता	३१५	१२२५
वैकुंठ गोबिंद चरन	३०३	१२२०	पोथी परमेसर का	३१५	१२२६
साचे सतिगुरू दातारा	३०४	१२२१	वूठा सरब थाई मेहु	३१६	१२२६
गुर के चरन बसे मन	३०४	१२२१	गोबिंद जीउ तू मेरे	३१६	१२२६
जीवनु तउ गनीऐ	३०४	१२२१	निबही नाम की सचु	३१७	१२२६
सिमरन राम को इकु	३०[illegible]	१२२१	माई री पेखि रही	३१७	१२२६

पन्ना
माई री माती चरण ३१७ १२२७
बिनसे काच के बिउ ३१८ १२२७
ताते करण पलाह करे ३१८ १२२७
हरि के नाम के जन ३१९ १२२७
माखी राम की तू माखी ३१९ १२२७
माई री काटी जम की ३२० १२२७
माई री अरिओ प्रेम ३२० १२२८
नीकी राम की धुनि ३२० १२२८
हरि के नाम कीमति ३२१ १२२८
मानी तूं राम कै दरि ३२१ १२२८
तुअ चरन आसरोई ३२२ १२२८
हरि भजि आन करम ३२२ १२२९
सुभ बचन बोलि गुन ३२३ १२२९
कंचना बहु दत करा ३२४ १२२९
राम राम राम जापि ३२४ १२२९
हरि हरे हरि मुखहु ३२५ १२३०
नाम भगति मागु संत ३२५ १२३०
गुन लाल गावउ गुर ३२६ १२३०
मनि बिरागैगी ३२६ १२३०
ऐसी होइ परी ३२६ १२३०
लाल लाल मोहन ३२७ १२३१
करत केल बिखै मेल ३२७ १२३१

✓

(महला ९)

हरि बिनु तेरो को न ३२८ १२३१
कहा मन बिखिआ ३२८ १२३१
कहा नर अपनो जनमु ३२८ १२३१
मन करि कबहू न हरि ३२९ १२३१

पन्ना

म० १ असटपदीआ

हरि बिनु किउ जीवा ३२९ १२३२
हरि बिनु किउ धीरै ३३१ १२३२

म० ३ असटपदीआ

मन मेरे हरि कै नामि ३३२ १२३३
मन मेरे हरि का नामु ३३२ १२३३
मन मेरे हरि की अकथ ३३२ १२३४

म० ५ असटपदीआ

गुसांई परतापु ३३६ १२३५
अगम अगाधि सुनहु ३३७ १२३५

~~(महला ५)~~

सभ देखीऐ अनभै का ३३८ १२३६

सारंग की वार

(महला ४)

आपे आपि निरंजना ३४१ १२३७

(स्री कबीर जीउ)

कहा नर गरबसि ३७६ १२५१
राजासम मिति नही ३७७ १२५२

(स्री नामदेव जीउ)

काएं रे मन बिखिआ ३७८ १२५२
बदहु की न होड माधउ ३७८ १२५२
दास अनिंन मेरो निज ३७९ १२५२

(परमानंद)

तै नर किआ पुरान ३७९ १२५३
छाडि मनु हरि बिमुख ३८० १२५३

(स्री सूरदास जी)

हरि के संग बसे हरि ३८० १२५३

(स्री कबीर जीउ)

हरि बिनु कउनु साह ३८१ १२५३

--०--

रागु मलार ३८२

पन्ना

(महला १)

खाणा पीणा हसणा ३८२ १२५४
करउ बिनउ गुर ३८२ १२५४
साची सुरति नामि न ३८२ १२५५
जिनि धन पिर का ३८५ १२५५
परदारा परधनु पर ३८६ १२५५
पवणै पाणी जाणै ३८७ १२५६
दुखु वेछोड़ा इकु दुखु वि/३८८ १२५६
दुखु महुरामारण हरि ३८९ १२५६
बागे कापड़ बोलै वैण ३८९ १२५७

(महला ३)

निरंकारु आकारु है ३९० १२५७
जिनी हुकमु पछाणिआ न/३९१ १२५८
गुरमुखि कोई विरलें ला/३९२ १२५८
गुरु सालाही सदा सुख ३९३ १२५८
गण गंधरब नामे ३९४ १२५९
सतिगुर ते पावै घरु ३९५ १२५९
जीउ पिंडु प्राण सभि ड/३९६ १२६०
मेरा प्रभु साचा दूख ३९७ १२६०
हउमै बिखु मनु मोहिआ ३९८ ~~१२६०~~
इहु मनु गिरही कि ३९९ १२६१
भ्रमि भ्रमि जोनि मन ४०० १२६१
जीवत मुकत गुरमती ४०१ १२६२
रसना नामु सभु कोई ४०२ १२६२

पन्ना

(महला ४)

अनदिनु हरि हरि ४०३ १२६२
गंगा जमुना गोदावरी ४०४ १२६३
किसु जन कउ हरि ४०५ १२६३
जितने जीअ जंत प्रभि ४०५ १२६३
जिन कै हीअरै बसिओ ४०५ १२६४
अगमु अगोचरु नामु ४०७ १२६४
गुर परसादी अंम्रितु ४०८ १२६५
हरि जन बोलत स्री ४०९ १२६५
राम राम बोलि बोलि ४१० १२६५

(महला ५)

किआ तू सोचहि किआ ४१० १२६६
खीरि अधारि बारिकु ४११ १२६६
सगल बिधी जुरि ४१२ १२६६
राज ते कीट कीट ते ४१३ १२६७
प्रभ मेरे ओइ बैरागी ४१३ १२६७
माई मोहि प्रीतमु देहु ४१४ १२६७
बरसु मेघ जी तिलु ४१४ १२६८
प्रीतम साचा नामु ४१५ १२६८
प्रभ मेरे प्रीतम प्रान ४१५ १२६८
अब अपने प्रीतम ४१६ १२६८
घनिहर बरसि सगल ४१६ १२६८
बिछुरत किउ जीवे ४१७ १२६८
हरि कै भजनि कउन ४१७ १२६९
आजु मै बैसिओ हरि ४१७ १२६९
बहु बिधि माइआ मोह ४१८ १२६९
दुसट मुए बिखु खाई ४१८ १२६९

पन्ना
मन मेरे हरि के चरन ४१९ १२६९
प्रभ को भगति बछलु ४१९ १२६९
गुरमुखि दीसै ब्रहम ४२० १२७०
गुर के चरन हिरदै ४२१ १२७०
परमेसरु होआ दइआल ४२२ १२७१
गुर सरणाई सगल ४२२ १२७१
गुर मनारि प्रिअ ४२३ १२७१
मनु घनै भ्रमै बनै ४२४ १२७२
प्रिअ की सोभ सुहावनो ४२४ १२७२
गुर प्रीति पिआरे ४२५ १२७२
बरसु सरसु आगिआ ४२५ १२७२
गुन गुोपाल गाउ ना ४२५ १२७२
घनु गरजत गोबिंद ४२६ १२७३
हे गोबिंद हे गोपाल हे ४२६ १२७३
(म० १ असटपदीआ)
चकवी नैन नींद नहि ४२६ १२७३
जागतु जागि रहै गुर ४२८ १२७३
चातृक मीन जल ही ते ४२९ १२७४
अखली ऊंडी जलु भर ४३० १२७५
मरण मुकति गति ४३२ १२७५
(म० ३ असटपदीआ)
करमु होवै ता सतिगुरु ४३३ १२७६
बेदु बाणी जगु वरत ४३४ १२७६
हरि हरि क्रिपा करे ४३५ १२७७
छंत (महला ५)
प्रीतम प्रेम भगति के ४३८ १२७८
(मलार की वार म० १)
~~आपीनै आपु साजिआ~~ १२७९

त्रि ल द क्रि

गुरि [illegible] ४३९

पन्ना
(श्री नामदेव जीउ) की
सेवीले गोपाल राइ ४७२ १२९२
मोकउ तूं न बिसारित ४७३ १२९२
(स्री रविदास जीउ) की
नागर जनां मेरी जाति ४७४ १२९३
हरि जपत तेऊ जनां ४७४ १२९३
मिलत पिआरे प्रान ४७५ १२९३

—o—

राग कानड़ा ४७६

(महला ४)

मेरा मनु साध जनां ४७६ १२९४
मेरा मनु संत जना ना/४७७ १२९४
जपि मन राम नामु ४७७ १२९५
मेरै मनि राम नामु ४७८ १२९५
मेरै मनि हरि हरि ४७९ १२९५
जपि मन राम ४८० १२९६
मन जापहु राम गुपाल ४८० १२९६
हरि गुन गावहु जग ४८१ १२९६
भजु रामो मनि राम ४८२ १२९७
सतिगुर चाटउ पग ४८२ १२९७
जपि मन गोबिंद माधा ४८३ १२९७
हरि जसु गावहु ४८३ १२९८
(महला ५)
गाईऐ गुण गोपाल ४८४ १२९८
आराधउ तुझहि ४८५ १२९८
कीरति प्रभ की गाउ ४८५ १२९८
ऐसो मांगु गोबिंद ते ४८५ १२९८

		पन्ना
भगति भगतन हूं	४८९	१२९९
तेरो जनु हरिजसु सुन	४८९	१२९९
संतन पहि आपि उधा	४८९	१३९९
बिसरि गई सभ	४८९	१२९९
ठाकुरु जीउ तुहारो	२/४८९	१२९९
साध सरनि चरनि	५ ४८९	१३००
हरि के चरन हिरदै	४८९	१३००
कर्थीऐ संत संगि प्रभ	४८९	१३००
साध संगति निधि हरि	४९०	१३००
साधू हरि हरे गुन	४९०	१३००
पेखि पेखि बिगसाउ	४९०	१३००
साजना संत आउ मेरे	४९१	१३०१
चरन सरन गोपाल	४९१	१३०१
धनि उह प्रीति चरन	४९२	१३०१
कुचिल कठोर कपट	४९२	१३०१
नाराइन नरपति	४९२	१३०१
न जानी संतन प्रभ	४९३	१३०२
कहन कहावन कउ	४९३	१३०२
हीए को प्रीतमु बिसरि	४९४	१३०२
आनद रंग बिनोद	४९४	१३०२
साजन मीत सुआमी	४९५	१३०२
बिखै दलु संतनि तुम	४९५	१३०३
बूडत प्रानी हरि जपि	४९६	१३०३
सिमरत नामु मनहि	४९६	१३०३
मेरे मन प्रीति चरण	४९६	१३०३
कुहकत कपट खपट	४९७	१३०३
जीअ प्रान मान दाता	४९७	१३०३

		पन्ना
अविलोकउ राम को	४९८	१३०४
प्रभ पूजहो नामु	४९८	१३०४
जगत उधारन नाम	४९९	१३०४
ऐसी कउन बिधे दर	४९९	१३०५
रंगा रंग रंगन के	५००	१३०५
तिख बूझि गई	५००	१३०५
तिआगीऐ गुमानु	५०१	१३०५
प्रभ कहन मलन दह	५०१	१३०६
पतित पावनु भगति	५०२	१३०६
चरन सरन दइआ	५०२	१३०६
वारि वारउ अनिक	५०२	१३०६
अहं तोरो मुखु जोरो	५०३	१३०६
तांते जापि मना हरि	५०४	१३०७
ऐसो दानु देहु जी संत	५०४	१३०७
सहज सुभाए आपन	५०४	१३०७
गोबिंद ठाकुर मिलन	५०५	१३०७
माई सिमरत राम	५०५	१३०७
जन को प्रभु संगे	५०६	१३०८
करत करत चरच	५०७	१३०८

म० ४ असटपदीआ

जपि मन राम नामु	५०७	१३०८
जपि मन हरि हरि	५०८	१३०९
मनु गुरमति रसि	५०८	१३०९
मनु हरि रंगि राता	५११	१३१०
मनु गुरमति चाल	न ५१२	१३१०
मनु सतिगुर सरनि	५१३	१३११

छैत /

(महला ५)

पन्ना
से उधरे जिन राम ५२५ १३१२

(कानड़े की वार म० ४)

~~तू आपे ही सिध साधि~~ १३१३

(श्री नामदेव जीउ) की

ऐसो राम राइ अंतर ५२८ १३१८

--०--

राम नामु निधानु ५२९

रागु कलिआन ५३०

(महला ४)

रामा रम रामै अंतु ५३० १३१९
हरि जनु गुन गावत ५३० १३१९
मेरे मन जपु जपि ५३१ १३२०
मेरे मन जपि हरि ५३२ १३२०
हमरी चितवनी हरि ५३३ १३२०
प्रभ कीजै क्रिपा निधान ५३३ १३२१
पार ब्रहमु परमेसुरु ५३४ १३२१

क्रि

(महला ५)

हमारै एह किरपा ५३५ १३२१
जाचिकु नामु जाचै जा ५३५ १३२१
मेरे लालन की सोभा ५३५ १३२२
तेरै मानि हरि हरि ५३६ १३२२
गुन नाद धुनि अनंद ५३६ १३२२
कउनु बिधि ताकी ५३७ १३२२
प्रान पति दइआल ५३७ १३२२
मनि तनि जापीऐ ५३७ १३२२
प्रभु मेरा अंतरजामी ५३८ १३२३
हरि चरन सरन ५३८ १३२३

(म० ४ असटपदीआ)

पन्ना
रामा रम रामो सुनि ५३९ १२२३
राम गुरु पारसु परसु ५४० १३२४
रामा रम रामो रामु ५४१ १३२४
रामा रम रामो पूज ५४२ १३२५
रामा मै साधू चरन ५४४ १३२५
रामा हम दासन दास ५४५ १३२६

--०--

परभ

रागु प्रभाती ५४७

(महला १)

नाइ तेरै तरणा ५४७ १३२७
तेरा नामु रतनु ५४८ १३२७
जै कारणि बेद ब्रहमै ५४८ १३२८
जाकै रूप नाही जाति ५४९ १३२८
ताका कहिआ दरि पर ५५० १३२८
अंम्रितु नीरु गिआनि ५५० १३२८
गुर परसादी बिदि ५५१ १३२९
आवतु किनै न राखि ५५२ १३२९
दिसटि बिकारी बंध ५५३ १३२९
मन माइआ मनु ५५३ १३३०
जागतु बिगसै मूठो ५५४ १३३०
मसटि करउ मूरखु ५५५ १३३०
खाइआ मैलु वधाइ ५५५ १३३१
गीत नाद हरख चतु ५५६ १३३१
अंतरि देखि सबदि ५५७ १३३१
बारह महि रावल ५५८ १३३२
संता की रेणु साधु जन ५५९ १३३२

		पन्ना
(महला ३)		
गुरमुखि विरला कोई	५६०	१३३२
निरगुणीआरे कउ	५६१	१३३३
गुरमुखि हरि सालाहि	५६१	१३३३
जो तेरी सरणाई हरि	५६२	१३३३
गुरमुखि हरि जोउ	५६२	१३३४
आपे भांति बणाए बहु	५६३	१३३४
मेरे मन गुरु अपणा	५६४	१३३४
(महला ४)		
रसकि रसकि गुन गा	५६५	१३३५
ऊगवै सूरु गुरमुखि	५६६	१३३५
इकु खिनु हरि प्रभि	५६७	१३३५
अगम दइआल	५६७	१३३६
मनि लागी प्रीति	५६८	१३३६
गुर सतिगुरि नामु	५६९	१३३७
जपि मन हरि हरि	५७०	१३३७
(महला ५)		
मनु हरि कीआ तनु	५७०	१३३७
प्रभ की सेवा जन की	५७१	१३३८
गुन गावत मनि होइ	५७२	१३३८
सगले दूख मिटे सुख	५७२	१३३८
सिमरत नामु किल	५७३	१३३९
करि किरपा अपुने	५७४	१३३९
से धनवंत सेई सचु	५७५	१३३९
गुरु पूरा पूरी ता की	५७५	१३३९
सतिगुरि पूरै नामु	५७६	१३४०
पारब्रहमु प्रभु सुघड़	५७६	१३४०
कुरबाणु जाई गुर	५७७	१३४०
गुर गुरु करत सदा	५७७	१३४१
अवरु न दूजा ठाउ	५७८	१३४१
रम राम राम राम जा	५७९	१३४१
चरन कमल सरनि	५७९	१३४१
(महला १ असटपदीआ)		
दुबिधा बउरी मनु	५८०	१३४२
माइआ मोहि सगल	५८१	१३४२
निवली करम भुअंग	५८२	१३४३
गोतमु तपा अहिलिआ	५८४	१३४३
आखणु सुनणा नामु	५८५	१३४४
राम नामु जपि अंतरि	५८७	१३४५
इकि धुरि बखसि लए	५८८	१३४५
(म० ३ ~~असटपदीआ~~) ५		
गुरप्रसादी वेख तू	पर/५८९	१३४६
मै भाइ जागे से जन	५९१	१३४६
(म० ५ असटपदीआ)		
मात पिता भाई सुत	५९२	१३४७
मन महि क्रोधु महा	५९३	१३४७
सिमरत नामु किल	५९४	१३४८
भगत (श्री कबीर जीउ) की		
मरन जीवन की संका	५९६	१३४९
अलहु एकु मसीति	५९७	१३४९
अवलि अलह नूरु	५९८	१३४९
बेद कतेब कहहु मत	५९९	१३५०
सुन संधिआ तेरी देव	५९९	१३५०
भगत/म (स्री नामदेव जी) की		
मन की बिरथा मनु ही	६००	१३५०
आदि जुगादि जुगादि	६०१	१३५१

पन्ना

अकुल पुरखु इकु ੬੦੧ १३५१

भगत (श्री बेणी जीउ) की

तनि चंदनु मसतकि ੬੦੨ १३५१

--o--

रागु जैजावंती ੬੦੩

(महला ९)

राम सिमर राम सिमर ੬੦੩ १३५२

राम भजु राम भजु ੬੦੩ १३५२

रे मन कउन गति होइ ੬੦੪ १३५२

बीत जै है-बीत जै है ੬੦੪ १३५२

क्रि (सलोक सहसकृती

(महला १)

पढ़ि पुस्तक संधिआ ੬੦੫ १३५३

सलोक सहसक्रीती (महला ५)

कतंच माता कतंच ੬੦੬ १३५३

[गाथा महला ५]

करपूर पुहप सुगंधा ੬੨੧ १३६०

हला (फुनहे म० ५)

हाथि कलंम अगंम ੬੨੪ १३६१

(चउबोले महला ५)

संमन जउ इस प्रेम ੬੩੦ १३६३

भगत (सलोक स्री कबीर जी के) उ

कबीर मेरी सिमरनी ੬੩੧ १३६४

(सलोक सेख फरीद) के

जितु दिहाड़ै धन वरी ੬੬੮ १३७७

पन्ना

(सवये श्री मुख वाक

(महला ५)

आदि पुरख करतार ੬੮੨ १३८५

काची देह मोह फुनि ੬੮੬ १३८७

(महला १)

इक मनि पुरखु धिआ ੭੦੨ १३८९

(महला २)

सोई पुरखु धंनु करता ੭੦੫ १३९१

(महला ३)

सोई पुरखु सिवरि ੭੧੦ १३९२

(महला ४)

इक मनि पुरखु निरं ੭੧੫ १३९६

(महला ५)

सिमरं सोई पुरखु ੭੪੪ १४०६

(सलोक वारां ते वधीक)

(महला १)

उतंगी पैओहरी गहि ੭੫੨ १४१०

(महला ३)

अभिआगति एह न ੭੫੮ १४१३

(महला ४)

वडभागीआ सोहाग ੭੭੮ १४२१

(महला ५)

रते सेई जि मुखु न मोड़ंन १४२५ ~~१४२४~~

(महला ९) सलोक

गुन गोबिंद गाइओ ੭੮੦ १४२६

(मुंदावणी महला ५)

थाल विचि तिंनि वसु ੭੮੭ १४२९

तेरा कीता (राग माला)

राग एक संगि पंच ੭੮੮ १४२९

--o--

रागु तिलंग महला १ घरु १

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ हका कबीर करीम तू बे ऐब परवदगार ॥ १ ॥ दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥ आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥ २ ॥ सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥ ३ ॥ बदबखत हम चु बखील गाफिल बे नजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पाखाक ॥ ४ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भउ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीतु ॥ मै देवाना भइआ अतीतु ॥ कर कासा दरसन की भूख ॥ मै दरि मागउ नीता नीत ॥ १ ॥ तउ दरसन की करउ समाइ ॥ मैं दरि मागतु भीखिआ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसरि कुसम मिरगमै हरणा सरब सरीरी चढ़णा ॥ चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥ २ ॥ घिअ पट भांडा कहै न कोइ ॥ ऐसा भगतु वरन महि होइ ॥ तेरै नामि निवे रहे लिव लाइ ॥ नानक तिन दरि भीखिआ पाइ ॥३॥१॥२॥

तिलंग महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि

रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥ हंउ
कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ॥हंउ कुरबानै जाउ तिना कै
लैनि जो तेरा नाउ॥लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ॥
१॥रहाउ॥काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ॥रंङण वाला
जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ॥२॥जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना
कै पासि॥धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि॥३॥आपे
साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही
रावेइ ॥४॥१॥३॥ तिलंग म० १॥ इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥
आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु
किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणी बाली
किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु
न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ
अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही
भई कामणि इआणी ॥२॥ जाइ पुछहु सोहागणी वा है किनो बाती सहु
पाईऐ ॥ जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥
जाकै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै
तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती
सहु पाईऐ ॥ ३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउनिधि पाई ॥
आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥
ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥
सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥
४ ॥ तिलंग महला १ ॥ जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी
गिआनु वे लालो ॥ पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै
दानु वे लालो॥सरमु धरमु दुइ छप खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो॥
काजीआ बामणा की गलि थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसटमहि करहिखुदाइ वेलालो॥जाति सनाती

होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥ खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥१॥ साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥२॥३॥५॥

तिलंग महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥ १ ॥ सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥२॥१॥ तिलंग महला ४ ॥ नित निहफल करम कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥१॥ ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥२॥२॥७॥

तिलंग महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥ असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे चसम दीदं फनाइ ॥ दुनींआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥ २ ॥ वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदोइ ॥३॥ हवालमालूमु करदं पाक अलाह ॥ बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥ ४ ॥ १ ॥ तिलंग घरु २ महला ५ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू करतारु करहि सो होइ ॥ तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ सदा सदा

जपि नानक एक ॥ १ ॥ सभ ऊपरि पारब्रहमु दातारु ॥ तेरी टेक तेरा आधारु ॥ रहाउ ॥ है तू है तू होवनहार ॥ अगम अगाधि ऊच आपार ॥ जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ गुरपरसादि नानक गुण गाहि ॥२॥ जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ गुण निधान गोविंद अनूप ॥ सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ तिस कै संगि तरै संसार ॥ कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ संत जना की बाछउ धूरि ॥४॥२॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ जीअ सगल कउ देइ दानु रहाउ॥ तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥१॥ जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥ २ ॥ कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥३॥ तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥४॥३॥ तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ करते कुदरती मुसताकु ॥ दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥ २ ॥ अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ गुनह उसके सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥३॥ दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ गुर मिलि नानक बूझिआ सदा एकसु गाउ ॥४॥४॥ तिलंग महला ५ ॥ मीरां दानां दिल सोच ॥ मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥१॥रहाउ॥ दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥ १ ॥ दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ करतार कुदरति करण ख़ालक नानक तेरी टेक ॥ २ ॥ ५ ॥

तिलंग महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥

आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई॥१॥राइसा पिआरे का राइसा
जितु सदा सुखु होई ॥रहाउ॥ जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे
ताणी॥हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी॥२॥पछोतावा ना मिलै
जब चूकैगी सारी ॥ ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥३॥
कंतुलीआ सोहागणी मै ते वधवीएह ॥ से गुण मुझै न आवनी कै जी
दोसु धरेह ॥ ४ ॥ जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ पाइ
लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए॥५॥ हुकमु पछाणै नानका भउ
चंदनु लावै ॥ गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥६॥ जो
दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ जे बहुतेरा
लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥७॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै
कउ धावै ॥ गुरपरसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥८॥ पानावाड़ी
होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै॥
९॥ अपिओ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ सहजे सहजे मिलि रहै
अमरा पदु पावै ॥१०॥१॥ तिलंग महला ४ ॥ हरि कीआ कथा
कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि
जाईआ ॥१॥ आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥
रहाउ ॥ हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ जिन गुर का भाणा
मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥२॥ जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ
तिन कउ हउ वारी ॥ जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥
३ ॥ हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि
निसतारा ॥४॥ जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ तिन विटहु
नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥ ५ ॥ सा हरि तेरी उसतति है जो
हरि प्रभ भावै ॥ जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥ ६ ॥
जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले॥ओइ जपि जपि पिआरा
जीवदे हरि नामु समाले ॥ ७ ॥ जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ
घुमि जाइआ ॥ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ॥८॥
गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धंनु गुरु धंनो ॥ गुरि हरि मारगु दसिआ
गुर पुंनु वड पुंनो॥९॥जो गुरसिख गुर सेवदे से पुंन पराणी॥जनु नानकु

तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥१०॥ गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥११॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥ १२ ॥ पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ॥हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥१३॥ जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरिधारे ॥ तिन जमु नेड़ि न आवई गुर सिख गुर पिआरे ॥१४॥ हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥१५॥ सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाओ ॥ हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाओ ॥१६॥ सो धंनु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥ १७ ॥ गुर रसना अंमृतु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥१८॥ हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥ १९ ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुरबचनि समाणे ॥२०॥ तू ठाकुरु तू साहिबो तू है मेरा मीरा ॥ तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणीं गहीरा ॥२१॥ आपे हरि इक रंगु है आपे बहुरंगी ॥ जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥२२॥२॥

तिलंग महला ९ काफी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि महि प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटे घटि जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नह मरनु पछाना ॥१॥ अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥ तिलंग महला ९ ॥ जागि लेहु रे मना जागि लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संग न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बध जन हितु जा सिउ कीना ॥ जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि महि दीना ॥ १ ॥ जीवत लउ

बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥ तिलंग महला ९॥ हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥ अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मानि लै मेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥ १ ॥ जानि बूझि कै बावरे तै काजु बिगारिओ पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥ २ ॥ जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

तिलंग बाणी भगतां की कबीर जी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥ १ ॥ बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइ बेखबर बादु बकाहि॥हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि॥२॥ असमान म्याने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद॥ करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा महजूदु ॥ ३ ॥ अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥४॥१॥ नामदेव जी ॥ मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥ हाजरा हजूरि दरि पेसि तू मनीं ॥१॥ दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी॥देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही॥२॥तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी॥नामे चे सुआमी बखसंद तू हरी ॥३॥१॥२॥ हले यारां हले यारां खुसिखबरी॥बलि बलि जाउ हउ बलि बलि जांउ॥नीकी तेरीबिगारी आले तेरा नाउ॥१॥ रहाउ ॥कुजा आमद कुजा रफती कुजा मेरवी ॥ द्वारिका नगरी रासि बुगोई॥१॥खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥ २ ॥ चंदीं हजार आलम एकल खाना ॥ हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥ असपति गजपति नरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु सूही महला १ चउपदे घरु १ ॥ भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥ १ ॥ जपहु त एको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेतउ नीद न आवै ॥ रसना नाम जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंमृतु पावहु ॥२॥ मनु संपटु जितु सतसरि नावणु भावन पाती तृपति करे ॥ पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥३॥ कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ भगतिहीणु नानकु जनु जंपै हउ सालाही सचा सोई ॥४॥१॥

सूही महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ अंमृतु छोडि काहे बिखु खाइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ होवहु चाकर साचे केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ॥ २ ॥ सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥ ३ ॥ हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

सूही महला १ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ १ ॥ सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दसंन ॥१॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआं कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥ बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसन्हि ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥३॥ सिमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥ से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मैं तनि हंन्हि ॥४॥ अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोड़ी न लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥६॥१॥३॥ सूही महला १ ॥ जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥ १ ॥ तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥ २ ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ आवागउणु निवारिआ है साचा सोई ॥३॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ गुरबचनी फलु पाइआ सह के अंमृत बोला ॥४॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥५॥२॥४॥ सूही महला १ ॥ जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥१॥ तिना मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अंमृतु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥२॥ जाकउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥३॥ घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ सूही महला १ ॥ भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥

गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ अंमृतु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥ १ ॥ ४॥६॥ सूही महला १ ॥ जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥१॥ तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥१॥रहाउ॥ जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सु खाइ ॥ अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥२॥ तैसो जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ ॥ जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥३॥ इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥ नानक कंमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥४॥५॥७॥

सूही महला १ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥ जोगु न मुंदी धूंडि मुडाइऐ जोगु न सिङी वाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥१॥ गली जोगु न होई ॥ एक दृसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥१॥रहाउ॥ जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥२॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ३ ॥ नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ वाजे बाझहु सिङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ सूही महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ तेरा

अंतु न जाणा॥तूं जल थलि महीअलि भरि पुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥रहाउ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥६॥

रागु सूही महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥ १ ॥ मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥१॥ रहाउ ॥ सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुण गावै हरि प्रभ के ॥ हरि किरपा धारि मेलहु सत संगति हम धोवह पग जन के ॥२॥ राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रस के ॥ हरि अंमृतु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥ ३ ॥ हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥४॥१॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि लीओ मुलि महघा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ धरमराइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा॥२॥हरि राखु राखु जन किरम तुम्हारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा॥दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥३॥ तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मोकउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ जन नानक नामु मिल सुखु पाव हम नाम विटहु सद घुमघा ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥१॥ मेरे

मन हरि राम नामि करि रंङु ॥गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥१॥ रहाउ ॥मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंङु ॥२॥ हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ गुरि अंमृतसरि नवलाइआ सभि लाथे किलविख पंङु ॥३॥ हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ मिलि संगति हरि रंगु पाइआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥४॥ ३॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥१॥ गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥२॥ बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दहदिसि धावै ॥ हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥३॥ नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ गुरपरसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि सांति बसाई ॥ तिसना अगनि बुझि खिन अंतरि गुरि मिलिऐ भुख गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ सतिगुरि दइआलि गुण नामु हड़ाई ॥ २ ॥ हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ सत संगति मिलि हरि रसु पाई ॥ ३ ॥ धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि कृपा करे मनि हरि रंगु लाए ॥ गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ सदा अनंदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे॥१॥रहाउ॥ हरि रंग कउ लोचै सभु कोई॥ गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥२॥ मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ ॥ जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥३॥ नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ नानक हरि

रसि हरि रंगि समावै ॥४॥२॥६॥ सूही महला ४ ॥ जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥ १ ॥ हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ तउ कत अनत सादि लोभाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रसु राखहु उरधारि ॥ हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥ २ ॥ मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥४॥३॥७॥

सूही महला ४ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥१॥ हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥ २ ॥ नाम देअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥ ३ ॥ जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥ जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे कृपा करे हरि राइ ॥४॥१॥८॥ सूही महला ४ ॥ तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥१॥ हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अंमृत भगति भंडारा ॥ मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥ २ ॥ से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥ ३ ॥ जिसु घरि बिरती सोई जाणै जगतगुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥ सूही महला ४ ॥ जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ गुर कृपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥१॥ हरि धनु

संचीऐ भाई ॥ जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥१॥रहाउ॥ सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होरथै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥२॥ हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अंमृत वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई॥ हरि धनु अंमृत वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई॥३॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥४॥ साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई॥ हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥५॥ इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिसनो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥ ६ ॥३॥१०॥

सूही महला ४ ॥ जिसनो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुण रवै सो भगतु सो परवानु ॥ तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिसकै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥ १ ॥ गोबिंद गुन गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु॥ जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥२॥ जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उनका उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥ ३ ॥ जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ दासनिदासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥४॥४॥११॥

सूही महला ४ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब

गुणी निधाना ॥ तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना
॥१॥ मैं हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै
तुझ बिनु अवरु न कोई ॥१॥रहाउ॥ मैं ताणु दीबाणु तू है मेरे सुआमी
मैं तुधु आगे अरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा
दुखु सुखु तुझ ही पासे ॥ २ ॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट
अगनि धरीजै ॥ बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि
कीजै ॥३॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए
॥ जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु
आणि सभु पैरी पाए ॥४॥१॥१२॥ सूही महला ४ ॥ तूं करता सभु
किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ बुरा भला तुधु
सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥१॥ मेरे साहिब तू अंतर
की बिधि जाणहि ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै
बुलावहि ॥१॥ रहाउ ॥ सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही
मानुख भगति कराई ॥ इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि
धंधु पिटाई ॥२॥ सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि
लिखिआ लेखु ॥ जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही
को भेखु ॥३॥ तेरी वडिआई तूं है जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥
जिसनो तुधु भावै तिसनो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥४॥२॥
१३ ॥ सूही महला ४ ॥ जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिनके
सभि रोग गवाए ॥ ते मुकत भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु
परम पदु पाए ॥१॥ मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ गुरबचनी जिना
जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमा
बिसनु महादेउ त्रैगुण रोगी विचि हउमै कार कमाई॥जिनि कीए तिसहि
न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥ २ ॥ हउमै रोगि सभु जगतु
बिआपिआ तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ गुर परसादी को
विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ ३ ॥ जिनि सिसटि
साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक आपे वेखि
हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ सूही महला ४

॥ कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥१॥ मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥१॥ रहाउ ॥ सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ॥जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ॥२॥पंच ततु करि तुधु सृसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै॥३॥हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु॥ जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २४ ॥

रागु सूही महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दिखलाई ॥ सांगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥१॥ कवन रूप दिसटिओ बिनसाइओ ॥ कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥१॥ रहाउ ॥ जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ बीजु बीजि देखिआ बहु परकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ २ ॥ सहस घटा महि एकु आकासु ॥ घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ भरम लोभ मोह माइआ विकार ॥ भ्रम छूटे ते एकंकार॥३॥ओहु अबिनासी बिनसत नाही॥नाको आवै नाको जाही॥ गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥४॥१॥ सूही महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ दास अपुने की राखहु लाज ॥ १ ॥ तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ तुझ बिनु कवनु करै प्रतिपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ साचि लगै ता हउमै जाईऐ ॥२॥ जिस नो लाइ लए सो लागै ॥ गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ दुरमति जाइ परम पदु पाए ॥ गुरपरसादी नामु धिआए ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करउ

अरदासि ॥ तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ करि किरपा अपनी भगती
लाइ ॥ जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥४॥२॥ सूही महला ५ ॥ धनु
सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ प्रिअ सिउ
राती रलीआ मानै ॥१॥ सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु
अरपि तजि लाज लोकानी ॥१॥ रहाउ ॥ सखी सहेली कउ समझावै ॥
सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ सा सोहागणि अंकि समावै ॥ २ ॥ गरबि
गहेली महलु न पावै ॥ फिरि पछुतावै जब रणि बिहावै ॥ करमहीणि
मनमुखि दुखु पावै ॥३॥ बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ प्रभु अबिनासी
रहिआ भरपूरि ॥ जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥४॥३॥ सूही महला
५ ॥ गृहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ दस दासी करि दीनी
भतारि ॥ सगल समग्री मै घर की जोड़ी॥आस पिआसी पिर कउ लोड़ी
॥१॥ कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥१॥
रहाउ ॥ सतु सीगारु भउ अंजनु पाइआ ॥ अंमृत नामु तंबोलु मुखि
खाइआ ॥ कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ धन सभ सुख पावै जां पिरु
घरि आवै ॥ २ ॥ गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥ वसि करि लीना
गुरि भरमु चुकाइआ ॥ सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ सभ कामणि तिआगी
प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥३॥ प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ सेज विछाई
सरध अपारा ॥ नव रंग लालु सेज रावण आइआ ॥ जन नानक पिर
धन मिलि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥ उमकिओ हीउ
मिलन प्रभ ताई ॥ खोजत चरिओ देखउ प्रिअ जाई ॥ सुनत सदेसरो
प्रिअ गृहि सेज विछाई ॥ भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि न पाई ॥ १ ॥
किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो
॥१॥ रहाउ ॥ एका सेज विछी धन कंता॥ धन सूती पिरु सद जागंता
॥ पीओ मदरो धन मतवंता ॥ धन जागै जे पिरु बोलंता ॥ २ ॥ भई
निरासी बहुतु दिन लागे ॥ देस दिसंतर मै सगले झागे ॥ खिनु
रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ कृपालु प्रभ मिलह सभागे ॥
३ ॥ भइओ कृपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहि
पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ कहु

नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोल्हिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥१॥रहाउ दूजा ॥५॥ सूही महला ५॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बैखरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥ १ ॥ लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मैं ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे॥२॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे॥ ३॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे॥जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥४॥६॥

सूही महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ महलु न पावै कहतो पहुता ॥१॥ जो प्रिअ मानै तिन्ह की रीसा ॥ कूड़े मूरख की हाठीसा ॥१॥रहाउ॥ भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ कहतो महली निकटि न आवै ॥ २ ॥ अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥४॥ दरसन देखे की वडिआई॥ तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ७ ॥ सूही महला ५ ॥ बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ नाम की बेला पै पै सोइआ ॥ १ ॥ अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ माइआ मोह रंगि लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ साध जना का दरसु न डीठा ॥ २॥ कबहू न समझै अगिआनु गवारा॥ बहुरि बहुरि लपटिओ जंजारा॥ १॥रहाउ॥ बिखै नाद करन सुनि भीना ॥ हरि जसु सुनत आलसु मनि कीन्हा ॥ ३ ॥ द्रिसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥ करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥ ४ ॥ तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥१॥ रहाउ ॥ २ ॥ ८ ॥ सूही महला ५ ॥ घर

महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥ १ ॥
भरमे भूला साकतु फिरता ॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ ओहु पाहणु लै उस कउ
डुबता ॥२॥ गुनहगार लूणहरामी ॥ पाहण नाव न पारगिरामी ॥ ३ ॥
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता
॥४॥३॥९॥ सूही महला ५ ॥ लालनु राविआ कवन गती री ॥ सखी
बतावहु मुझहि मती री ॥१॥ सूहब सूहब सूहवी ॥ अपने प्रीतम कै रंगि
रती ॥१॥ रहाउ ॥ पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ जहा पठावहु जांउ
तती री ॥२॥ जप तप संजम देउ जती री ॥ इक निमख मिलावहु मोहि
प्रानपती री ॥३॥ माणु ताणु अहंबुधि हती री ॥ सा नानक सोहागवती
री ॥४॥४॥१०॥ सूही महला ५ ॥ तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ तुझ
ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥१॥ तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ चितहि न
बिसरहि काहू बेरा ॥१॥ रहाउ ॥ बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ तूं भारो
ठाकुरु गुणी गहेरा ॥२॥ कोटि दास जाकै दरबारे ॥ निमख निमख वसै
तिन नाले ॥ ३ ॥ हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ ओति पोति नानक
संगि बसेरा ॥४॥५॥११॥ सूही महला ५ ॥ सूख महल जा के ऊच
दुआरे ॥ ता महि वासहि भगत पिआरे ॥१॥ सहज कथा प्रभ की अति
मीठी॥विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥१॥रहाउ॥ तह गीत नाद अखारे संगा॥
ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥२॥ तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥
साच नाम की अंमृत वरखा ॥ ३ ॥ गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥
नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥४॥६॥१२॥ सूही महला ५ ॥ जाकै
दरसि पाप कोटि उतारे ॥ भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥ १ ॥ ओइ
साजन ओइ मीत पिआरे ॥ जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥ १ ॥ रहाउ
॥ जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ जा की टहल जमदूत बिदारे ॥ २ ॥
जाकी धीरक इसु मनहि सधारे ॥ जाकै सिमरणि मुख उजलारे ॥ ३ ॥
प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ सरणि नानक तिन सद बलिहारे ॥
४ ॥ ७ ॥ १३ ॥ सूही महला ५ ॥ रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥
ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥ १ ॥ जीवत पेखे जिना हरि हार

धिआइआ ॥ साध संगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१॥रहाउ॥ बादिसाह
साह वापारी मरना ॥ जो दीसै सो कालहि खरना॥२॥कूड़ै मोहि लपटि
लपटाना ॥ छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥३॥ कृपानिधान नानक
कउ करहु दाति ॥ नामु तेरा जपी दिनु राति ॥४॥८॥१४॥ सूही महला
५ ॥ घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ सगल समग्री सूति तुमारे ॥१॥
तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ तुमहो पेखि पेखि मनु बिगसारे॥१॥रहाउ॥
अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रसि हारे ॥ ओट गही अब साध संगारे ॥२॥
अगम अगोचरु अलख अपारे॥नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥३॥६॥१५॥
सूही महला ५ ॥ कवन काज माइआ वडिआई॥जाकउ बिनसत बार न
काई ॥१॥ इहु सुपना सोवत नही जानै॥ अचेत बिवसथा महि लपटानै
॥१॥ रहाउ ॥ महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठि सिधारा
॥२॥ ऊच ते ऊच ताका दरबारा ॥ कई जंत बिनाहि उपारा ॥३॥ दूसर
होआ ना को होई ॥ जपि नानक प्रभ एको सोई ॥४॥१०॥१६॥ सूही
महला ५ ॥ सिमरि सिमरि ताकउ हउ जीवा॥चरण कमल तेरे धोइ धोइ
पीवा ॥१॥ सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ भगत जना कै संगि सुआमी॥१
॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि अंमृत नामु धिआवा ॥आठ पहर तेरे गुण गावा
॥२॥ पेखि पेखि लीला मनि आनंदा ॥ गुण अपार प्रभ परमानंदा ॥३॥
जाकै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ सदा सदा नानक हरि जापै ॥४॥
११॥१७॥ सूही महला ५ ॥ गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ रसना
जापु जपउ बनवारी ॥१॥ सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ चरण कमल
मन प्राण अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ साध संगि जनम मरण निवारी ॥
अंमृत कथा सुणि करन अधारी ॥२॥ काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥
दृड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥ ३ ॥ कहु नानक
इहु ततु बीचारी ॥ राम नाम जपि पारि उतारी ॥
४ ॥ १२ ॥ १८ ॥ सूही महला ५ ॥ लोभि मोहि
मगन अपराधी ॥ करणहार की सेव न साधी ॥ १ ॥
पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि
निरगुनीआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची

देह मानुख अभिमानी ॥२॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ इन संगि
लागि रतन जनमु गवाइआ ॥३॥ दुखभंजन जगजीवन हरि राइआ ॥
सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥४॥१३॥ १९॥ सूही महला ५ ॥
पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ निकटि वसतु
कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥१॥ सो किछु करि जितु छुटहि
परानी ॥ हरि हरि नामु जपि अंम्रित बानी ॥१॥रहाउ॥ घोर महल सदा
रंगि राता ॥ संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥२॥ रखहि पोचारि माटी का
भांडा ॥ अति कुचील मिलै जम डांडा ॥३॥ काम क्रोधि लोभि मोहि
बाधा ॥ महा गरत महि निघरत जाता ॥४॥ नानक की अरदासि
सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥५॥१४॥२०॥ सूही महला ५ ॥
जीवत मरै बुझै प्रभ सोइ ॥ तिसु जन करमि परापति होइ ॥ १॥ सुणि
साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
एक बिना दूजा नही जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥२॥ जो
किछु करै सोई भल मानै ॥ आदि अंति की कीमति जानै ॥ ३ ॥ कहु
नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जाकै हिरदै वसहि मुरारी ॥४॥१५॥२१॥
सूही महला ५ ॥ गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ सगल सृसटि कउ दे आधारु
॥१॥ गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥१
॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा
गाढै ॥ २ ॥ गुर की सेवा करहु दिन राति ॥
सूख सहज मनि आवै सांति ॥ ३ ॥ सतिगुर की रेणु
वडभागी पावै ॥ नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥ ४ ॥
१६ ॥ २२ ॥ सूही महला ५ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥
आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ सिमरउ सो प्रभु अपना
सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण
कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन निरमल रीति ॥ २ ॥ संत
प्रसादि वसै मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥ ३ ॥
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानकु मागै संत रवाला ॥ ४॥
१७॥२३॥ सूही महला ५ ॥ दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ पूरन करमु

होइ प्रभ मेरा ॥ १ ॥ इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥ देहि नामु करि अपणे चेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ गुरप्रसादि किनै विरलै जाते ॥ २ ॥ सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥ ३ ॥ नानकु एक करै अरदासि ॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥ ४ ॥ १८ ॥ २४ ॥ सूही महला ५ ॥ मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥ १ ॥ जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ सूख सहज आनंद बिसराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जपि पहिरि सनाह ॥ कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥ २ ॥ हरि चरण सरण गड़ कोट हमारै ॥ कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥ ३ ॥ नानक दास सदा बलिहारी ॥ सेवक संत राजा राम मुरारी ॥ ४ ॥ १९ ॥ २५ ॥ सूही महला ५ ॥ गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥१॥ चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ साध जना की चरणी पाहा ॥१॥रहाउ॥ करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ जनम जनम के किलविख लाहां ॥ २ ॥ मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥ ३ ॥ दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ नानक दास हरि सरणि समाहा ॥ ४ ॥ २० ॥ २६ ॥ सूही महला ५ ॥ बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥१॥ सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु भुंचु मन माही ॥ अचरज साद ताके बरने न जाही ॥ २ ॥ लोभु मूआ तृसना बुझि थाकी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ ३ ॥ जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥४॥२१॥२७॥ सूही महला ५॥ अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥ १ ॥ तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परबत दोख महा बिकराला ॥ खिन महि दूरि कीए दइआला ॥ २ ॥ सोग रोग बिपति अति भारी ॥ दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥ ३ ॥ दृसटि धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २८ ॥ सूही महला ५ ॥ दीनु

छडाइ दुनी जो लाए ॥ दुही सराई खुनामी कहाए ॥ १ ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ आपणी कुदरति आपे जाणु ॥१॥रहाउ॥ सचा धरमु पुंनु भला कराए ॥ दीन कै तोसै दुनी न जाए ॥ २ ॥ सरब निरंतरि एको जागै ॥ जितु जितु लाइआ तितु तितु को लागै ॥३॥ अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥ ४ ॥ २३ ॥ २९ ॥ सूही महला ५ ॥ प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ ईत ऊत की ओट सवारी ॥ १ ॥ सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ पूरन होवहि मन के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥ २ ॥ सो साहु सेवि जितु तोटि न आवै ॥ खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥ ३ ॥ जगजीवन पुरखु साध संगि पाइआ ॥ गुरप्रसादि नानक नामु धिआइआ ॥४॥२४॥३०॥ सूही महला ५ ॥ गुर पूरे जब भए दइआल ॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥ १ ॥ पेखि पेखि जीवा दरसु तुम्हारा ॥ चरन कमल जाई बलिहारा ॥ तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥ २ ॥ जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ जालि न साकहि तीने ताप ॥ ३ ॥ निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ नानकु मागै दानु पिआरे ॥४॥२५॥३१॥ सूही महला ५ ॥ से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ जितु रसना हरि नामु उचारे ॥१॥ सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ साध गावहि गुण सदा रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ जिसु क्रिपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥२॥ जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ तूं दाता प्रभ देवणहारु ॥३॥ राम रमत संतन सुखु माना ॥ नानक देवनहार सुजाना ॥४॥२६॥ ॥३२॥ सूही महला ५ ॥ बहती जात कदे दृसटि न धारत ॥ मिथिआ मोह बंधहि नित पारच ॥ १ ॥ माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥ २ ॥ भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥ जै जगदीस की गति नही जाणी ॥ ३ ॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु

नानक प्रभु अंतरजामी ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३३ ॥ सूही महला ५ ॥ साध संगि तरै भै सागरु ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥ २ ॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआईऐ ॥ पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥३॥ सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥४॥२८॥३४॥ सूही महला ५ ॥ घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ झूठै धंधै रचिओ मूड़ा ॥१॥ जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥ २ ॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥४॥२९॥३५॥ सूही महला ५ ॥ संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सरब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥ १ ॥ गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्हे ॥ ता ते करतै असथिरु कीन्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम की फासी ॥२॥ करि किरपा लीने लड़ि लाइ ॥ सदा अनदु नानक गुण गाए ॥३॥३०॥३६॥ सूही महला ५ ॥ अंमृत बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलीकाल के मिटे कलेसा ॥ एको नामु मन महि परवेसा ॥ १ ॥ साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥ २ ॥ ३१ ॥ ३७ ॥ सूही महला ५ घरु ३ ॥ गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥ १ ॥ अंमृत नामु चलै जपि नाला ॥ नानक जाचै संत रवाला ॥ २ ॥ ३२ ॥ ३८ ॥ सूही महला ५ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थंमै सचा साई ॥१॥ हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥१॥रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक राखा आपे होआ ॥२॥३३॥३९॥ सूही महलु ५ ॥ दरसन

कउ लोचै सभ कोई ॥ पूरै भागि परापति होई ॥रहाउ॥ सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी दूता लाई ॥१॥ प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ निरदै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥२॥ अनिक जनम बीतीअन भरमाई॥ घरि वासु न देवै दुतर माई ॥३॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥४॥ सुणि साजन संत जन भाई ॥ चरण सरण नानक गति पाई ॥५॥३४॥४०॥

रागु सूही महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ कितही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥रहाउ॥ अनदु गरीबी साध संगि जितु प्रभ चिति आए ॥ जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥ १ ॥ पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥ ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह तृपताए ॥ २ ॥ नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥३॥ सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥४॥१॥४१॥ सूही महला ५ ॥ हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूँ ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥ १ ॥ मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥२॥ अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ अंमृत बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥ ३ ॥ चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥४॥२॥४२॥ सूही महला ५ ॥ जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ राखि लेहु इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥१॥रहाउ॥ जाते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ॥ छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥ १ ॥ करहु कृपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ नानक की प्रभ बेनती साध संगि समाउ ॥२॥३॥४३॥

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। ।। प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ।। जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ।।१।।रहाउ।। निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिंन भिंन भिंन भिन करीआ ।। विचि मन कोट वरीआ ।। निज मंदरि पिरीआ ।। तहा आनद करीआ ।। नह मरीआ नह जरीआ ।। १ ।। किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ।। बिख ना घिरीआ ।। अब साधू संगि परीआ ।। हरि दुआरै खरीआ ।। दरसनु करीआ ।। नानक गुर मिरीआ ।। बहुरि न फिरीआ ।।२।।१।।४४।। सूही महला ५।। रासि मंडलु कीनो आखारा ।। सगलो साजि रखिओ पासारा ।।१।।रहाउ।। बहु बिधि रूप रंग आपारा ।। पेखै खुसी भोग नही हारा ।। सभि रस लैत बसत निरारा ।।१।। बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ।। कहनु न जाई खेलु तुहारा ।। नानक रेण संत चरनारा ।।२।।२।।४५।। सूही महला ५ ।। तउ मै आइआ सरनी आइआ ।। भरोसै आइआ ।। किरपा आइआ।। जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ।। १ ।। रहाउ ।। महा दुतरु माइआ ।। जैसे पवनु झुलाइआ ।।१।। सुनि सुनि ही डराइआ ।। कररो ध्रमराइआ ।। २ ।। गृह अंध कूपाइआ ।। पावकु सगराइआ ।।३।। गही ओट साधाइआ ।। नानक हरि धिआइआ ।। अब मै पूरा पाइआ ।।४।।३।।४६।।

रागु सूही महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। ।। सतिगुर पासि बेनंतीआ मिलै नामु आधारा ।। तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ।। १ ।। भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा ।। १ ।। रहाउ ।। सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ।। सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ।।२।। तेरा रूपु अगंमु है अनूपु तेरा दरसारा।।हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हरि नामु पिआरा ।। ३ ।। सभे इछा पूरीआ जा

पाइआ अगम अपारा ॥ गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा
कउ बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४७ ॥

रागु सूही महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिसनो
होहि दइआला ॥ साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला
॥१॥मेरे रामराइ संता टेक तुम्हारी ॥जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि
तूहै अधारी ॥१॥रहाउ॥तूं दइआलु क्रिपालु क्रिपानिधि मनसा पूरणहारा
॥ भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥ २ ॥ तू
अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते॥इह अरदासि हमारी
सुआमी विसरु नाही सुख दाते॥३॥दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे
सुआमी तुधु भावा॥नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा॥४॥१॥
४८॥ सूही महला ५ ॥ विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा
॥ आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥१॥ मेरे राम हउ सो
थानु भालण आइआ ॥ खोजत खोजत भइआ साध संगु तिन्ह सरणाई
पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति
पाई ॥ साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥२॥दस अउतार
राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ तिन भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ
थके बिभूता ॥३॥ सहज सूख आनंद नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ
॥ सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि हरि ररि धिआइआ
॥४॥२॥४९॥सूही महला ५ ॥ करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु
जागाती लूटै ॥ निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु
छूटै ॥१॥ संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ जे को बचनु कमावै संतन का सो
गुरपरसादी तरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु
कलि महि मैलु भरीजै ॥ साध संगि जो हरि गुण गावै
सो निरमलु करि लीजै ॥ २ ॥ बेद कतेब सिमृति सभि
सासत इन पड़िआ मुकति न होई ॥ एकु अखरु जो गुरमुखि
जापै तिस की निरमल सोई ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस
उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि

२/८०

महि घटि घटि नानक माझा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५० ॥ सूही महला ५ ॥
जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ राम नाम रंगि राते ॥ तिन की
सोभा सभनी थाई जिन प्रभ के चरण पराते ॥ १ ॥ मेरे राम हरि
संता जेवडु न कोई ॥ भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि
महीअलि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि अपराधी संत संगि उधरै जमु
ता कै नेड़ि न आवै ॥ जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन्ह हरि सिउ
आणि मिलावै ॥ २ ॥ माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो
आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥ ३ ॥ जन की
महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक जिन सतिगुरु
भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५१ ॥ सूही महला ५ ॥
महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु
रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥१॥ मेरे रामराइ तुधु चिति आइऐ
उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जपि नामु तुम्हारा उधरे ॥१॥रहाउ॥
अंध कूप ते काढि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ सारि सम्हालि
सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥ २ ॥ आपणी नदरि करे परमेसरु
बंधन काटि छडाए ॥ आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा
लाए ॥ ३ ॥ भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५२ ॥
सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन करम करि
आइआ ॥ अपना खेलु आपि करि देख ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥ १ ॥
मेरे रामराइ मुझ ते कछू न होई ॥ आपे करता आपि कराए सरब
निरंतरि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह
इआणी ॥ कृपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥ २ ॥ जीअ
जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ तेरी गति मिति तू है
जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥ ३ ॥ निरगुणु मुगधु अजाणु
अगिआनी करम धरम नही जाणा॥दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा
लगै तेरा भाणा ॥४॥ ६ ॥ ५३ ॥ सूही महला ५ ॥ भागठड़े हरि संत
तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल

तिना के कामा ॥१॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का
करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण
दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि
हरि सिउ लैनि मिलाए ॥२॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते
॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥ ३ ॥ पखा फेरी
पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि
बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५४ ॥ सूही महला ५ ॥
पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै
तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥ १ ॥ मेरे रामराइ जिउ राखहि तिउ रहीऐ
॥ तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ तहा बैकुंठु
जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि
नामु जीवा तनु मनु होइ निहाला ॥ चरन कमल तेरे धोइ धोइ पीवा
मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥ ३ ॥ कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु
तुमरै दुआरै आइआ ॥ नानक कउ प्रभ भए कृपाला सतिगुरु पूरा
पाइआ ॥४॥८॥५५॥ सूही महला ५ ॥ तुधु चिति आए महा अनंदा
जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो
तुधु सदा धिआए ॥१॥ मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ अरदासि
करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ अंमृत
बचन रिदै उरिधारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥ २ ॥ अंतर की
गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ जिसनो लाइ
लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि मागउ
इकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ सासि सासि नानकु आराधे आठ
पहर गुण गावा ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५६ ॥ सूही महला ५ ॥ जिस के सिर
ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ बोलि न जाणै माइआ मदि
माता मरणा चीति न आवै ॥ १ ॥ मेरे रामराइ तूं संता का संत तेरे ॥
तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ जो तेरै

रंगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा ॥ तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥२॥ नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥ ३ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी॥ सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥४॥१०॥५७॥ सूही महला ५ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥ १ ॥ मेरे राम जी तू प्रभ अंतरजामी ॥ करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ २ ॥ सफल जनमु तिस का जग भीतरि साध संगि नाउ जापे ॥ सगल मनोरथ तिसके पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥ ३ ॥ दीन दइआल कृपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५८ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउकरि कंत मिलावा होई ॥१॥ ना मै रूपु न बंके नैणा॥ ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥ २ ॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥ ३ ॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥ ४ ॥ खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥ ५ ॥ हउमै जाई ता कंत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नवनिधि पाई ॥ ६ ॥ अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥७॥ भणति नानक सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥८॥१॥

सूही महला १ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कचा रंगु कसुंभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥ १ ॥ रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥१॥रहाउ॥ चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥ २ ॥ चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥ ३ ॥ नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥४॥ बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥ ५ ॥ अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥६॥ गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जम कालि जीउ ॥७॥ जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥८॥१॥२॥

सूही महला १ काफी घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ माणस जनमु दुलंभु गुरमुखि पाइआ ॥ मनु तनु होइ चुलंभु जे सतिगुर भाइआ ॥ १ ॥ चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ पति पाइ दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥ २ ॥ हउ जीवा

गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥ ३ ॥
मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि
रंगेतड़ा ॥ ४ ॥ नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि
गुण नालि नाही दुखु संतापना ॥ ५ ॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना
तिसु रंगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥ ६ ॥ गुर की
कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ
॥७॥ इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु
हरि गुण गावसी ॥८॥१॥३॥ सूही महला १ ॥ जिउ आरणि लोहा
पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥ १ ॥ बिनु
बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥१॥
रहाउ ॥ तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ मेलहि तुझहि
रजाइ सबदु कमाईऐ ॥ २ ॥ तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ
॥ तूं देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥३॥ देही होवगि खाकु पवणु
उडाईऐ ॥ इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥ ४ ॥ दिहु दीवी
अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥ ५ ॥
गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ सबदि निवारी आगि
जोति दीपाईऐ ॥६॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ सदा
रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥ ७ ॥ राति दिहै हरि नाउ मंनि
वसाईऐ ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥८॥२॥४॥ सूही महला
१ ॥ मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ जिउ राखहि
किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ मै अंधुले हरि नामु
लकुटी टोहणी ॥ रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥
१ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि
बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥ २ ॥ सेवी सतिगुर भाइ
नामु निरंजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥ ३ ॥
जनमत ही दुखु लागै मरणा आइकै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि
गुण गाइकै ॥ ४ ॥ हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ ॥ आपे
थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥ ५ ॥ देही भसम रुलाइ न जापी कह

गइआ ॥ आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥ ६ ॥ तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥ ७ ॥ मै दीजै नाम निवासु अंतरि सांति होइ॥ गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ५ ॥

रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥२॥ सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ सची बाणी गुरमुखि आखै हउमे विचहु जाए ॥ आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥३॥ गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ मनमुखु सदही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ जमकालि बाधा तृसना बाधा बिनु गुर कवणु छुडाए ॥ ४ ॥ सचा तीरथु जितु सतसरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु न मलु लगै न लाए ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥ ५ ॥ तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमे विचहु जाए ॥ गुर की साखी सहजे चाखी तृसना अगनि बुझाए ॥ गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए ॥ ६ ॥

हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ सची वडिआई
गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ एको सचा सभ महि वरतै विरला को
वीचारे ॥ आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥ ७ ॥ सभो
सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ जंमण मरणा हुकमो वरतै
गुरमुखि आपु पछाणै ॥ नामु धिआए ता सतिगुर भाए जो इछै
सो फलु पाए ॥ नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु
गवाए ॥ ८ ॥ १ ॥ सूही महला ३ ॥ काइआ कामणि अति सुआल्हिउ
पिरु वसै जिसु नाले ॥ पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु
सम्हाले ॥ हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥ १ ॥
वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥
१ ॥ रहाउ ॥ काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥
काइआ अंदरि जग जीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ काइआ
कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥ २ ॥ काइआ अंदरि
आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि
भालणि जाई ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता
लखाई ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ इसु
काइआ अंदरि नउ खंड पृथमी हाट पटण बाजारा ॥ इसु काइआ
अंदरि नामु नउनिधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥ ४ ॥ काइआ
अंदरि तोलि तोलावै आपे तोलणहारा ॥ इहु मनु रतनु जवाहर माणकु
तिसका मोलु अफारा ॥ मोलि कितही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ
गुर बीचारा ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि
भुलाई ॥ जिसनो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥
काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥ ६ ॥ काइआ अंदरि
ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ सचै आपणा खेलु
रचाइआ आवागउणु पासारा ॥ पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ
सचि नामि निसतारा ॥ ७ ॥ सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै
आपि सवारी ॥ विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥
नानक सचु वडिआई पाए जिसनो हरि किरपा धारी ॥ ८ ॥ २ ॥

रागु सूही महला ३ घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥१॥ वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ जमपुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥२॥ गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥३॥ गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥४॥ दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि॥ आपि डुबे कुटंबु सिउ सगले कुल डोबंनि ॥ ५ ॥ निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥ ६ ॥ ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥७॥ महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ ओइ अंमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥८॥ गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥ ६ ॥ देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ एको है दातारु सचा आपि धणी ॥ १० ॥ सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥११॥ मनु मैला सचु निरमला किउकरि मिलिआ जाइ ॥ प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१२॥ सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥१३॥ सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उरधारि ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥ १४ ॥ पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥ १५ ॥ मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥ १६ ॥ आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसनहारु ॥ गुरसबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥ १७ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥ ओना सचु न भावई दुख ही

माहि पचंनि ॥ १८ ॥ हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार ॥ पइऐ
किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥ १९ ॥ संता संगति मिलि रहै ता
सचि लगै पिआरु ॥ सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥२०॥
गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥ हउमै मेरा वड रोगु है
विचहु ठाकि रहाइ ॥२१॥ गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ
॥ तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥ २२ ॥ खिंचोताणि
विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै
समाइ ॥२३॥ सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि ॥ सचि
मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥ २४ ॥ से भाई से सजणा जो
सचा सेवंनि ॥ अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि ॥२५॥
गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ सचु वणंजहि गुर सबद
सिउ लाहा नामु लएनि ॥२६॥ सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै
न चलदिआ नालि ॥ विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जम कालि
॥२७॥ मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ॥ एहु खरचु
अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥२८॥ ए मन मूलहु भुलिआ जासहि
पति गवाइ ॥ एहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ
॥ २९ ॥ हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ गुर कै
सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ ॥ ३० ॥ सो सहु मेरा रंगुला
रंगे सहजि सुभाइ ॥ कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ॥३१॥
चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुर सेवंनि ॥ अंतरि नवनिधि नामु है
खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥ ३२ ॥ न ओइ
जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि ॥ गुरि राखे से उबरे हरि
सिउ केल करंनि ॥ ३३ ॥ सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु
मिले रहंनि ॥ इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु
लहंनि ॥३४॥१॥३॥ सूही महला ३ ॥ हरि जी सूखमु अगमु है कितु
बिधि मिलिआ जाइ॥ गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइ॥
१॥ गुरमुखि हरि हरि नामु जपंनि॥ हउ तिनकै बलिहारणै मनि हरिगुण
सदा रवंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी

पुरख लहंन्हि ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥२॥
नामु धिआइन्हि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंन्हि ॥ धुरि पूरबि होवै
लिखिआ गुर भाणा मंनि लएन्हि ॥३॥ वडभागी घरु खोजिआ पाइआ
नामु निधानु॥गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥४॥ सभना
का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ गुरपरसादी मनि वसै तितु घटि
परगटु होइ ॥५॥ सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ मंदा
किसनो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ॥६॥ बुरा भला तिचरु आखदा
जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥७॥
सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ जन नानक हरि आराधिआ
गुरचरणी चितु लाइ ॥८॥२॥४॥९॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु
पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥
कृपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ जे
सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥ २ ॥ जे भुख देहि
त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥३॥ तनु मनु काटि काटि सभु
अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो
देवहि सो खाई ॥५॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु
वडिआई ॥६॥ अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई
॥७॥जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥
८ ॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै ता छोडि न जाई ॥९॥ जे
तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥१०॥ वारि
वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥ ११ ॥ नानकु विचारा भइआ
दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥१२॥ झखडु झागी मीहु वरसै भी
गुरु देखण जाई ॥ १३ ॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखो
लंघि गुर पहि जाई॥१४॥जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिख गुर
बिनु मरि जाई ॥१५॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर

मिलि बिगसाई ॥ १६ ॥ सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ
बुलाई॥१७॥ नानक की बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥१८॥
तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥१९॥ जो तुधु
सेवहि सो तू है होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥ २० ॥ भंडार भरे भगती
हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥ २१ ॥ जिसु तूं देहि सोई जनु पाए
होर निहफल सभ चतुराई ॥ २२ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना
सोइआ मनु जागाई ॥२३॥ इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि
दासु कराई ॥ २४ ॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर
वडिआई ॥ २५ ॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ
न पाई ॥२६॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥२७॥
सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥ २८ ॥
अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥ २९ ॥ रैणि
दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥ ३० ॥ नानक का
जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि तृपति अघाई ॥३१॥ नानक का प्रभु पूरि
रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥३२॥१॥

रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम
आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥१॥ मै हरि हरि
नामु विसाहु ॥ गुर पूरे ते पाइआ अंमृतु अगम अथाहु ॥१॥रहाउ॥ हउ
सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा करि कै
मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥२॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त
तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै लिखिआ ता अंमृतु सहजि पीएउ ॥ ३ ॥
सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई ऐसा गुरमुखि
जे मिलै हउ ताके धोवा पाउ ॥ ४ ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै
प्रीतमु देइ मिलाइ॥सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ मिलिआ सहजि सुभाइ
॥ ५ ॥ सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ हउ

तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥ ६ ॥ जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥७॥ मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ मैं गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥ ८ ॥ हरि हरि नामु रतंनु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥९॥ गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ दृड़ाइ ॥ जिसु परापति सो लहै गुरचरनी लागै आइ ॥१०॥ अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥११॥ सजणु मेरा एकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ सतिगुरि मीति मिलाइआ मैं सदा सदा तेरा ताणु ॥१२॥ सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ ॥ ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥१३॥ राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥१४॥१॥२॥११॥

रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ उरझि रहिओ बिखिआ कै संगा ॥ मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥१॥ मेरे मन अगम अगोचर ॥ कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥१॥ रहाउ ॥ मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ अति तृसना कबहू नही ध्रापे ॥२॥ बसइ करोधु सरीरि चंडारा ॥ अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥३॥ भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥४॥ आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ महलु न पावै फिरत बिगाना ॥५॥ सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥ ६ ॥ कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥ ७ ॥ करउ बेनती संतन पासे ॥ मेलि लैहु नानक अरदासे ॥ ८ ॥ भइओ कृपालु साध संगु पाइआ ॥ नानक तृपते पूरा पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ दूजा ॥ १ ॥

रागु सूही महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ करि किरपा उधरु हरि नागर ॥१॥ चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ दीनानाथ भगत पराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ साध संगि जमदूत न भेटन ॥२॥ जीवन रूप अनूप दइआला ॥ रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥ ३ ॥ अंमृत नामु रसन नित जापै ॥ रोग रूप माइआ न बिआपै ॥ ४ ॥ जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ पोहत नाही पंच बटवारे ॥ ५ ॥ मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ सरब फला सोई जनु पाए ॥ ६ ॥ धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ केवल नामु भगति रसु दीना ॥ ७ ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संगु जीउ ॥ संत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥१॥ पारब्रहम प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ आइ मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥ २ ॥ हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ जिसनो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥ ३ ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइ जीउ ॥ ४ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ सचु खजाना संचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ दइआल जीउ ॥ ५ ॥ आवणु जाणा राह गए मनि वुठा निरंकारु

जीउ॥ता का अंतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ॥जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जंमै लख वार जीउ ॥ ६ ॥ साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ॥गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहिर प्रभ जापि जीउ ॥ रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥७॥ तूं करता तूं करणहारु तू है एकु अनेक जीउ॥तू समरथु तू सरब मै तू है बुधि बिबेक जीउ ॥ नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥८॥१॥३॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ ॥ जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ॥१॥ हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजणु तू है सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥ २ ॥ जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥३॥ पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि॥स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥ ४ ॥ किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ ॥ तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥५॥ सहीआ तउ असंख मंञहु हभि वधाणीआ॥हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ॥६॥ जै डिठे मनु धीरीए किलविख वंञन्हि दूरे ॥ सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥७॥ होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ ॥८॥१॥४॥

सूही महला ५॥ सिमृति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ ॥ १ ॥ नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ सुखु न पाइनि मूलि नाम विछुंनिआ ॥ २॥मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ॥नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ ॥ ३ ॥ सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ ॥ ४ ॥ आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ बिनु

बूझै सभु वादि जोनी भरमते॥५॥जिन कउ भए दइआल तिन साधू संगु भइआ॥अंमृतु हरि का नामु तिनी जनी जपि लइआ॥६॥ खोजहि कोटि असंख बहुतु अनंतके॥ जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥७॥ विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

रागु सूही महला १ कुचजी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ इकदू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ जिन्ही सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ ॥ से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ इकतु टोलि न अंबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ अंबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥ १ ॥ सूही महला १ सुचजी ॥ जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ गुरसबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ॥ २ ॥ सूही महला ५ गुणवता

जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ इहु मनु तैकूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ॥ हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानक कीआ पसाउ जीउ ॥ मै बहुड़ि न तृसना भुखड़ी हउ रजा तृपति अघाइ जीउ ॥ जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥३॥

रागु सूही छंत महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलिराम जीउ ॥ मैली अवगण चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलिराम जीउ ॥ गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु वादि गवाइआ॥वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥१॥ बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिसकी बलिराम जीउ ॥ रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिसकी बलिराम जीउ ॥ त्रिभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ हरि की नारि सु सरब सुहागणि रांड न मैलै वेसे ॥ नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥ २ ॥ बाबा लगनु गणाइ हंभी वंञा साहुरै बलिराम जीउ ॥ साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलिराम जीउ ॥ किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ माइ निरासी रोइ विछुंनी बाली बालै हेते ॥ नानक साच सबदि सुख महली गुर

चरणी प्रभु चेते ॥३॥ बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलिराम जीउ ॥ रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलिराम जीउ ॥ साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने॥ सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ नानक विछुड़ि ना दुखु पाए गुरमति अंकि समाए ॥४॥१॥

रागु सूही महला १ छंत घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सेता मनु लाइआ ॥ अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥ १ ॥ आवहु मीत पिआरे ॥ मंगल गावहु नारे ॥ सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ गिआन महा रसु नेत्री अंजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ ॥ सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ ॥ २ ॥ मनु तनु अंमृति भिंना ॥ अंतरि प्रेमु रतंना ॥ अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ जंत भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अंमृति भीना ॥३॥ आतम रामु संसारा ॥ साचा खेलु तुम्हारा ॥ सचु खेलु तुम्हारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ कालु बिकालु बए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए॥नानक अवगण सबदि जलाए गुण संगमि प्रभु पाए ॥४॥१॥२॥

रागु सूही महला १ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आवहो सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम॥घरि आपनड़ै खड़ी तका मैं मनि चाउ घनेरा राम॥मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखि भई निहकेवल जनम

मरण दुखु नासा ॥ सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥ १ ॥ घरि आइअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहंसी राम ॥ गुण संगि रहंसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ तसकर मारि वसी पंचाइणि अदलु करे वीचारे ॥ नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥२॥ वरु पाइअड़ा बालड़ीए आसा मनसा पूरी राम ॥ पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥ ३ ॥ पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ ॥ चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ ॥ गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥१॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीतां ॥ इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मंनु लीअड़ा दीता ॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ जिन्ह दिसि आइआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ २ ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ जे गुण

होवनि साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोडि
अवगण चलीऐ ॥ पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अंमृतु पीजै॥गुणा का होवै वासुला
कढि वासु लईजै ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥
आखण ताकउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि
करता किउ भुलै॥ सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ दानु
देइ दाता जगि विधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीऐ
होरु करे न कोई ॥४॥१॥४॥ सूही महला १ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै
मनि भावै सोई ॥ गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ सुखि सहजि
आवै साच भावै साच की मति किउ टलै॥ इसनानु दानु सुगिआनु मजनु
आपि अछलिओ किउ छलै ॥ परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न
दोई ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ १ ॥ साहिबु सो
सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अंमृतु
पीआ ॥ मथि अंमृतु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥
आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि
गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ॥साहिबु सो सालाहीऐ
जिनि जगतु उपाइआ ॥ २ ॥ आइ गइआ की न आइओ किउ आवै
जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ साहिब रंगि राता
सच की बाता जिनि बिंब का कोटु उसारिआ ॥ पंचभू नाइको आपि
सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे तू सुणि
पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई
॥३॥ अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीऐ जे
आपि जाणावै॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥ करम
सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ तंतु मंतु पाखंडु न जाणा
रामु रिदै मनु मानिआ ॥ अजनु नामु तिसै ते सूझै गुरसबदी सचु
जानिआ ॥ ४ ॥ साजन होवनि आपणे किउ परघर जाही ॥ साजन
राते सच के संगे मन माही ॥ मन माहि साजन करहि रलीआ करम
धरम सबाइआ ॥ अठसठि तीरथ पुंन पूजा नामु साचा भाइआ ॥

आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइआ ॥ साजन रंगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥५॥ अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती राहु पाधरु गुरु दसै ॥ ६ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ॥किसु पहि खोल्हउ गंठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ दूखी भरि आइआ जगतु सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ॥नाम विहूणे ऊणे झूणे न गुरि सबदु सुणाइआ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ॥७॥गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ सेवकु सेवा ता करे सच सबदि पतीणा ॥ सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ गुर सबदि मेला तां सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥८॥ कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई॥ता की कीमति ना पवै जे लोचै कोई ॥ कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ जैजैकारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए॥हीणउ नीचु करउ बेनंती साचु न छोडउ भाई ॥ नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥९॥२॥५॥

रागु सूही छंत महला ३ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ हरि प्रभु क्रिपा करे हरि जापहु सुखफल हरि जन पावहु ॥ नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहलिड़ा हरि धिआवहु ॥ १ ॥ सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ जिन कउ धुरि लिखिआ तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ अंदरहु दुरमति दूजी खोई

सो जनु हरि लिव लागा ॥ जिन कउ कृपा कीनी मेरै सुआमी तिन
अनदिनु हरि गुण गाए ॥ सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥ २ ॥ जुग
महि राम नामु निसतारा॥गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ गुरसबदु वीचारा
राम नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाए ॥ सहजे गुण गावै दिनु
राती किलविख सभि गवाए ॥ सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू
हमारा ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ ३ ॥ साजन आइ वुठे घर
माही ॥ हरि गुण गावहि तृपति अघाही ॥ हरि गुण गाइ सदा तृपतासी
फिरि भूख न लागै आए ॥ दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि
हरि नामु धिआए ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा
नाही ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥४॥१॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥ भगत
जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु
जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ
मेरे हरि भाइआ जिसदी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती
गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु
सचा मनि भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु
कमाइआ ॥ १ ॥ हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि
समाणे राम ॥ हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण
अवगण पछाणे राम ॥ गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै
भगति मीठी लागी ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि
बैरागी ॥ भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥
नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥ २ ॥
मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम
॥ हउमै माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ मरि
जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥
भगति विहूणा सभु जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥
कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोइ ॥ नानक

नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥ ३ ॥ भगता कै घरि कारजु
साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ भगति खजाना आपे दीआ कालु
कंटकु मारि समाणे राम ॥ कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे
नामु निधानु सचु पाइआ ॥ सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ
सहजि सुभाइआ ॥ हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥
नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥४॥१॥२॥ सूही
महला ३ ॥ सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम
॥ हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरिधारे राम ॥ सचु रखिआ
उरधारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ सचा सतिगुरु सची
बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ साचे गुण गावै सचि समावै
सचु वेखै सभु सोई ॥ नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा
होई ॥ १ ॥ साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥
सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ साचै नामि
सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ जोती जोति मिलाई सचि
समाई सचि नाइ परगासा ॥ जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु
सचु धिआइनि ॥ नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु
पाइनि ॥२॥ सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम॥
निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥
सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ जह देखा तह सचु
पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा
होई ॥ नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥३॥ सचे भगत
सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ घट अंतरे साची बाणी साचो
आपि पछाणे राम ॥ आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई॥
सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ साचि रते भगत इक रंगी
दूजा रंगु न कोई॥नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति
होई ॥४॥२॥३॥ सूही महला ३ ॥ जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर
सोहागु न होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु
न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको

जाणिआ ॥ धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई॥ नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु रावे दिन राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ २ ॥ गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई॥ सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कंठि लाए ॥ नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥३॥ सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइआ ॥ कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई करतै नामु नवैनिधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सूही महला ३ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै साधन कंत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥ १ ॥ भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिवलाए राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाए राम ॥ निरमल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अंमृत बाणी ॥ जिन मनि वसिआ सेई जन निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ नानक सफल

जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए ॥ २ ॥ संत संगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ॥ हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले॥सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाए ॥३॥ बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम॥ गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम॥तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रगि राते॥हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते॥साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई॥नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सूही महला ३ ॥ जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥ सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन कंत पिआरी ॥ सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥१॥ पिरु पाइअड़ा बालड़ीए अनदिनु सहजे माती राम ॥ गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु स राती राम ॥ तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाए ॥ अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ॥ नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥ २ ॥ पिरु रावे रंगि रातड़ीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥ सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न पाइआ ॥ नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ ३ ॥ कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥

गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरिधारे राम ॥ हरि राखिआ उरिधारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ सतिगुर सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ सूही महला ३ ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम॥ हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम॥ राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥१॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउकरि मिलिआ जाए राम ॥ गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥ मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउकरि मिलिआ जाए राम ॥ २ ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ ३ ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥ हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइआ राम ॥ पापी मुकतु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥४॥६॥७॥५॥७॥१२॥

रागु सूही महला ४ छंत घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण रवा बलिराम

जीउ ॥ हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलिराम जीउ
॥ गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ हउमै रोगु
गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ काइआ सेज गुर
सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ अनदिनु सुखि माणे
नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥ १ ॥ सतु संतोखु करि भाउ कुड़म
कुड़माई आइआ बलिराम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी
गावाईआ बलिराम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परमगति पाई पंच मिले
सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ
॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुरपरसादी ब्रहमु
पछाता नानक गुणी गहीरा ॥ २ ॥ मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न
पाए बलि गई बलिराम जीउ ॥ अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि
लई बलिराम जीउ ॥ कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर
मगु न पाइआ ॥ उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके
खाइआ ॥ आपे दइआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥
जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ आइआ
लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलिराम जीउ ॥ पंडित पाधे
आणि पती बहि वाचाईआ बलिराम जीउ ॥ पती वाचाई मनि वजी
वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥ गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ
फेरे ततु दिवाए ॥ वरु पाइआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद नवतनु बाल
सखाई ॥ नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ लावां
सूही महला ४ ॥ हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम दृड़ाइआ
बलिराम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु दृड़हु पाप तजाइआ बलिराम
जीउ ॥ धरमु दृड़हु हरि नामु धिआवहु सिमृति नामु दृड़ाइआ ॥ सतिगुरु
गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु
होआ वड भागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु
लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥ १ ॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु
पुरखु मिलाइआ बलिराम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै
मैलु गवाइआ बलिराम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि

गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलिराम जीउ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलिराम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥ ३ ॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलिराम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलिराम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥

गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ हिरदै रसन रसाए ॥ हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए॥वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥१॥ संगति संत मिलाए॥हरि सरि निरमलि नाए॥ निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ नदरि प्रभू सतसंगति पाई निजघरि होआ वासा ॥ हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ॥ २ ॥ अंतरि रतनु बीचारे ॥ गुरमुखि नामु पिआरे ॥ हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइआ ॥ गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर

मंदर सोहाइआ ॥ तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे भाइआ
॥ जो प्रभु कहैं सोई परु कीजै नानक अंकि समाइआ ॥ ३ ॥ हरि प्रभि
काजु रचाइआ ॥ गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ
गुरमुखि हरि पाइआ साधन कंत पिआरी॥ संत जना मिलि मंगल गाए
हरि जीउ आपि सवारी॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ
बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥४॥१॥३॥

रागु सूही छंत महला ४ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आवहो संत जनहु गुण गावह
गोविंद केरे राम ॥ गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम
॥ सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ अहिनिसि जपी सदा
सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम
नामु रिद पूजा ॥ नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा
॥ १ ॥ सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ गुरसबदि
रवैं रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ प्रभु मेरा सुआमी
अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ गुरमति सचु पाईऐ सहजि
समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा
आपे लए मिलाए ॥ नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिर्निसि नामु
धिआए ॥ २ ॥ इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ अंतरे
हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ अंतरि चतुराई थाइ न पाई
बिरथा जनमु गवाइआ ॥ जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ
पछुताइआ ॥ बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटंबु सुतु भाई ॥ नानक
माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥ ३ ॥ हउ पूछउ अपना
सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ सतिगुर भाइ चलहु
जीवतिआ इव मरीऐ राम ॥ जीवतिआ मरीऐ भउजलु तरीऐ गुरमुखि
नामि समावै ॥ पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥
मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ नानक प्रभु
पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी तृसना बुझि गईआसे ॥ हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ धनु धंनु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥१॥ गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥२॥ मनु दहदिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ नित आसा मनि चितवै मन तृसना भुख लगाइआ ॥ अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥३॥ गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ वडभागी प्रभ आइ मिलु जन नानक खिनु खिनु वारिआ ॥४॥१॥५॥

सूही छंत महला ४ ॥ मारेहि सु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ देह कंचन वे वंनीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनिमुखि मूड़ि सजुतीआ ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे गुरसबदी हउमै छुटीआ ॥ १ ॥ वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥ २ ॥ सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥ ३ ॥ इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि

मेलेई।।मै मनि तनि प्रेम वैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई।।हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई।।गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥४॥२॥६॥१८॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसंभ रंगाना ॥ कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ नानक दीन सरणि किरपानिधि राखु लाज भगताना ॥ १ ॥ सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ सुणि बावरे जो आइआ तिसु जाणा ॥ निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संत संगि मिलि रहीऐ ॥ हरि पाईऐ भागी सुणि वैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ एहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ नानक दीन भगत भवतारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ २ ॥ सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइ दासा ॥ जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ गुरु सेवीजै अंमृतु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो॥ नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥३॥ सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥ सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ॥जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ॥ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइआ ॥ नानक दीन सरणि सुखसागर राखु लाज अपनाइआ ॥४॥१॥ सूही महला ५ ॥ हरि चरण कमल की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलिराम जीउ ॥ हरि अंमृति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस के बलिराम जीउ ॥ बाबुलु मेरा वड समरथा करणकारण प्रभु हारा ॥ जिसु सिमरत दुखु काइ न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा

उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महारसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥ १ ॥ हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोड़ा थीवई बलिराम जीउ ॥ जिसनो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलिराम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥ २ ॥ सम्हलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ बलिराम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलिराम जीउ ॥ गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ॥ सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुनकारे॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे॥३॥उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलिराम जीउ ॥ ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइ न साकै भिंन करि बलिराम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ॥जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहनु न जाए ॥ जिसके चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥४॥२॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ॥सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वड भागै ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥ १ ॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तंनु निरमलु देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥ २ ॥ गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ हरि चरण जपत

निसतरिआ ॥ हरि चरण धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ भाइ भगति सुभाइ हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा तत सोई ॥३॥ पतित पावन हरि नामा ॥ पूरन संत जना के कामा ॥ गुरु संतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इछा पुंनीआ ॥ हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ बिनवंति नानक सतिगुरि द्रिड़ाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥सार न जाणा तू वडदाणा करि मिहरंमति सांई ॥ किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥ १ ॥ तुम्म गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हमा बहुरीआ राम ॥ तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ हउ किछु नाही एको तू है आपे आपि सुजाना ॥ अंमृत दिसटि निमख प्रभ जीवा सरब रंग रस माना ॥ चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ नानक ठाकुरु सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥२॥ तुझु ऊपरि मेरा है माणा तू है मेरा ताणा राम ॥ सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा राम ॥ सोई जाणै सोई पछाणै जाकउ नदरि सिरंदे ॥ मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फंदे ॥ ठाकुरु भाणी सा गुणवंती तिन हीं सभ रंग माणा ॥ नानक की धर तू है ठाकुर तू नानक का माणा ॥३॥ हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा ओल्हा राम ॥ हउ बलि जाई लख लख लख बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ भई अमोली भारा तोली

मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओल्हा ॥४॥१॥४॥ सूही महला ५ ॥ साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ ता की सरणि सरब सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥ १ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ हरि धूड़ी नाइऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ गुरचरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ हरि गुण नित गाए नामु धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥२॥ हरि हरे हरि गुणनिधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥३॥ गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंनी इछ सबाई राम ॥ रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ सांति सहज आनंद घनेरे गुरचरणी मनु लाए ॥ पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ कहु नानक कारज सगले पूरे गुरचरणी मनु लाई ॥४॥२॥५॥ सूही महला ५ ॥ करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ भरम मोह बिकार नाठे प्रभु नेरहु ते नेरा ॥ नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥ १ ॥ कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ सुणि सुणि

इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥ कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥ २ ॥ करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ भवसागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ मन बांछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥३॥ एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम ॥ एहो रंगु एहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइआला ॥ मोहि निरगुण प्रीतमु सुख सागर संत संगि मनु जागा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा कीनी चरण कमल मनु लागा ॥४॥३॥६॥ सूही महला ५ ॥ हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ हरि गुण गाइ परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ जन नानक प्रभ भए दइआला सरब कला बणि आई ॥ १ ॥ आनंदा वजहि नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥ गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ सरब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ घर महि नवनिधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन जाके भागा ॥ २ ॥ छाइआ प्रभि छत्रपति कीनी सगली तपति बिनासी राम ॥ दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ रासी राम ॥ हरि प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुंनु फलिआ ॥ सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत

खलिआ ॥ गुण निधान सुखसागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई
॥ जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ मेरा
घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ मेरा मनु
सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइआ राम ॥ गुण गाइ
प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ गुर चरण लागे सदा जागे
मनि वजीआ वाधाईआ ॥ करी नदरि सुआमी सुखहगामी हलतु
पलतु सवारिआ ॥ बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि
धारिआ ॥४॥४॥७॥ सूही महला ५ ॥ भै सागरो भै सागरु तरिआ
हरि हरि नामु धिआए राम ॥ बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि
सतिगुर पारि लघाए राम ॥ गुरसबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै
आवण जाणा ॥ जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा
॥ दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुखसागर सरणी पाए ॥ हरि सिमरि
सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाए ॥१॥ संत जना हरि मंत्र
द्रड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ आपनड़ा मनु
आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ करि अपुनी दासी मिटी
उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा
विछुड़ि कबहू न जाई ॥ सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण
चीने ॥ कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रस भीने ॥ २ ॥ अनद
बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ आपनड़ै प्रभि आपि
सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण
न बीचारिआ ॥ कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥
मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ कहु नानक
भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥ ३ ॥ गुण गोपाल गावहु नित
सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ सफल जनमु होआ मिलि साधू
एकंकारु धिआए राम ॥ जपि एक प्रभू अनेक रविआ सरब मंडलि
छाइआ ॥ ब्रहमो पासारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु द्रिसटी आइआ ॥
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही जाए ॥ पेखि दरसनु
नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥/ सूही

७-६-७०

महला ५ ॥ अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥१॥ घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत भगत हरि नामु अराधहि कटीऐ जम की फासी राम ॥ काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥ २ ॥ दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम॥पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ दहदिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥३॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीऐ राम ॥ अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम ॥ अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईऐ जोनीऐ ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥ सूही महला ५ ॥ संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंमृत जलु छाइआ राम ॥ अंमृत जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जैजैकारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ १ ॥ नवनिधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम ॥ खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ

करते की दाति सवाई राम ॥ दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ सांति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥२॥ जिस का कारजु तिनही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साध संगति संगि बनी ॥ जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ अठसठि तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा ॥ पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥३॥ गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ संता की बेनंती सुआमी नामु महारसु दीजै राम ॥ नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो॥ गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अंमृत भीजै ॥ बिनवंति नानक इछ पुंनी पेखि दरसनु जीजै ॥४॥७॥१०॥

रागु सूही महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मिठ बोलड़ा जी हरि सजनु सुआमी मोरा ॥ हउ संमलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा॥ कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भंनै घाले ॥ घट घट वासी सरब निवासी नेरै हीं ते नेरा ॥ नानक दासु सदा सरणागति हरि अंमृत सजणु मेरा ॥१॥ हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पगछारा ॥ प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई॥ चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥२॥ हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ सहज सूख आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ कै मधि सभहू

ते बाहरि राग दोख ते निआरो॥नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥३॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ॥ सभि अध्रव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ स्रुति सिमृति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ नानक सरनि कृपानिधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥४॥१॥११॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालि महला ३॥

सलोकु म० ३ ॥ सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ॥ मिठा करि कै खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उरधारि ॥ आगिआकारी सदा सुोहागणि आपि मेली करतारि ॥ नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सुोहागणि नारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥ नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ हुकमे धरती साजीअनु सची धरमसाला ॥ आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ सभना रिजकु संबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥ १ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ

इन विधि कंत मिली ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हुकमी सृसटि साजीअनु बहु
भिति संसारा ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥
इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ सचि रते से निरमले
हउमै तजि विकारा ॥ जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा
॥ २ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति
दूजा भाउ ॥ खिन महि झूठु सभु बिनस जाइ जिउ टिकै न बिरख की
छाउ॥गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ॥ उलटी सकति
सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अंमृत नाउ ॥ नानक बलिहारी गुर
आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण गाउ ॥१॥ म० ३ ॥ सूहा रंगु विकारु है
कंतु न पाइआ जाइ ॥ इसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइ ॥
मुंध इआणी दुंमणी सूहै वेसि लोभाइ ॥ सबदि सचै रंगु लालु करि भै
भाइ सीगारु बणाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ
॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ तिस दा
अंतु न जापई गुरसबदि बुझाई ॥ माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई
॥ मनमुख ठउर न पाइनी फिरि आवै जाई ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ
सभ चलै रजाई ॥ ३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सूहै वेसि कामणि कुलखणी
जो प्रभ छोडि परपुरख धरे पिआरु ॥ ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु
बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु
मिलै भतारु ॥ सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ ओह
रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजणहारु ॥ नानक गुरमुखि
सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥ १ ॥ म० १ ॥ सूहा
रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि
ब्रहम बीचारु ॥ नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ एहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज विडानु ॥ पंच धातु
विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु
अगिआनु ॥ इकना आपि बुझाइओनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ भगति
खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥ ४ ॥ सलोकु म० ३॥ सूहवीए

सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु॥ सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥१॥ म० ३ ॥ मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ आवण जाणा वीसरै गुरसबदी वीचारु ॥ मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ नानक सा धन रावीऐ रावे रावणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ मोहु कूड़ु कुटंबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥ सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ जेहा धुरि लिखि पाइओनु से करम कमिता ॥ ५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि ॥ नानक सतीआ जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि ॥१॥ म० ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि ॥ सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंनि ॥ २ ॥ ३ ॥ कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दुरहु ही भजि जाहि ॥३॥ पउड़ी ॥ तुधु दुखु सुखु नालि उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥ ६ ॥ सलोकु म० २ ॥ जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥ १ ॥ म० २ ॥ राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥ नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥ २ ॥ म० २ ॥ बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥ ३ ॥ म० २ ॥ मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै साई आप ॥

सृसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥ ७ ॥ सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन नाहि भउ मुचु भउनिभविआह ॥ नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गइआह ॥ १ ॥ म० २ ॥ तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचु धिआइनि से सचे गुरसबदि वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरिधारी ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी ॥ जिनि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥८॥ सलोक म० ३ ॥ कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥ मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ॥कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥१॥ म० ३ ॥ काजल फूल तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु ॥२॥ म० ३॥ धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिऐ तउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥ तनु मनु रता रंग सिउ हउमै तृसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ कृसन मुरारि ॥ भउ भाउ सभु तिसदा सो सचु वरतै संसारि ॥ ९ ॥ सलोक म० १ ॥ वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥ सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुंढ थीइ ॥

मरंनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गंभीरु ॥ मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥ १० ॥ सलोक म० १ ॥ नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अंबड़ै तितु निवंधै तालि ॥१॥ म० १॥ नानक मन के कंम फिटिआ गणत न आवही॥ किती लहा सहंम जा बखसे ता धका नही ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ गुरपरसादी सेवीऐ सचु सवदि नीसाणु॥ पूरा थाटु वणाइआ रंगु गुरमति माणु॥अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥ ११ ॥ सलोक म० १ ॥ नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥१॥ म० १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटे तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ दहदिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ॥ धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥ १२ ॥ सलोक म० १ ॥ दुइ दीवे चउदह हट नाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥ खुल्हे हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥ धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥ घरि आए वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥ १ ॥ म० १ ॥ राती होवनि कालीआ सुपेदा सेवंन ॥ दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वंन ॥ अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ इहु मानस जनमु दुलंभु सा मनमुख संतापे ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी जिसु

सतिगुरु थापे ॥ सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥ १३ ॥
सलोक म० १ ॥ चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ वेदीना की
दोसती वेदीना का खाणु ॥ सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥
गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा
तणीऐ ताणु ॥ कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥ १ ॥ म० १ ॥
बांगा बुरगू सिंङीआ नाले मिली कलाण ॥ इकि दाते इकि मंगते
नामु तेरा परवाणु ॥ नानक जिनी सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु
कुरबाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥
हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु
इको रवि रहिआ ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ
॥ जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समाइआ ॥ १४ ॥ म० १ ॥
सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं संम्रथु दातारु ॥ हउमै गरबु निवारीऐ
कामु क्रोधु अहंकारु ॥ लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥
अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ॥ नानक इह बिधि छुटीऐ
नदरि तेरी सुखु होइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ इको कंतु सबाईआ जिती दरि
खड़ीआह ॥ नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥ २ ॥ म० १ ॥
सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ मै तनि अवगण एतड़े खसमु न
फेरे चितु ॥ ३ ॥ म० १ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै
वाति ॥ सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥
दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै क्रिपा करि ॥ गुरमुखि लेहु मिलाइ
जनु पावै नामु हरि ॥ अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥
हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ जग महि वरतै आपि हरि
सेती प्रीति करि ॥ १५ ॥ सलोक म० १ ॥ जिनी न पाइओ प्रेम रसु
कंत न पाइओ साउ ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥
१ ॥ म० १ ॥ सउ ओलाम्हे दिनै के राती मिलनि सहंस ॥ सिफति
सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ
वधाइआ पेटु ॥ नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥ २ ॥पउड़ी॥
ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ गुरमुखि सेवि सलाहि सचा

उरधारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ
नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ तू आपि सवारहि आपि
सिरजनहारिआ ॥१६॥ सलोक म० १ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ बेद
पाठ मति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु
अगिआनु मिटंतु ॥ बेद पाठ संसार की कार ॥ पढ़ि पढ़ि पंडित करहि
बीचार ॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि
॥१॥ म० १ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना
फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक पइऐ किरति कमावणा
कोइ न मेटणहारु ॥२॥ पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए
॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥ सचु बाणी गुण उचरै सचा
सुखु पाए ॥ मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ मनु
मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥ १७ ॥ सलोक म० १ ॥ काइआ
कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ एनी फुली रउ करे अवर कि
चुणीअहि डाल॥१॥महला २॥ नानक तिना बसंतु है जिन घरि वसिआ
कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥ २ ॥ पउड़ी
॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ अनदिनु सेवी गुण
रवा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी॥सतिगुर
चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि
घरै विचि जचनी ॥ १८ ॥ सलोक म० १ ॥ पहिल बसंतै आगमनि
पहिला मउलिओ सोइ ॥ जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु
कोइ ॥ १ ॥ म० २ ॥ पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु
॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ २ ॥ म० २ ॥ मिलिऐ
मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ अंतर आतमै जो मिलै
मिलिआ कहीऐ सोइ ॥३॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु
कार कमावै ॥ दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ नामि
रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सालाहीऐ
हरि नामि समावै ॥ सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥
१९ ॥ सलोक म० २ ॥ किसही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू ॥

किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥ १ ॥ म० २ ॥ जां सुख ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ किआ सालाही किरम जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ तू अगम दइआलु अगंमु है आपि लैहि मिलाई ॥ मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ नानक वेपरवाहु है निसु तिलु न तमाई ॥२०॥

रागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥

कबीर के

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ राम को नामु न कबहू लीना ॥ १ ॥ राम न जपहु कवन मति लागे ॥ मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख करि कै कुटंबु जीवाइआ ॥ मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥२॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कहि कबीर आगे ते न सम्हारा ॥३॥१॥ सूही कबीर जी ॥ थरहर कंपै बाला जीउ॥ना जानउ किआ करसी पीउ॥१॥रैनि गई मत दिनु भी जाइ॥भवर गए बग बैठे आइ ॥१॥ रहाउ ॥ काचै करवै रहै न पानी ॥ हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥२॥ कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा॥किउ रलीआ मानै बाझु भतारा॥३॥काग उडावत भुजा पिरानी ॥ कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही कबीर जीउ ॥ अमलु सिरानो लेखा देना ॥ आए कठिन दूत जम लेना ॥ किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ चलहु सिताब दीवानि बुलाइआ ॥ १ ॥ चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥१॥रहाउ॥ करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ लेउ निबेरि आजु की राती ॥ किछु भी खरचु तुम्हारा सारउ ॥ सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥ २ ॥ साध संगि जाकउ हरि रंगु लागा ॥ धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा॥ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जनमु पदारथु जीति अमोले ॥ ३ ॥ जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ कहु कबीर

तेई नर भूले ॥ खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही कबीर जीउ ललित ॥ थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ जरा हाकदी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥ १ ॥ बावरे तैं गिआन बीचारु न पाइआ ॥ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ जे घटु जाइ त भाउ न जासी हरि के चरन निवासा ॥२॥ जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही ललित कबीर जीउ ॥ एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥१॥ हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥ ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी॥१॥रहाउ॥ नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही॥ डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥२॥ बहतरि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ धरमराइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥ ३ ॥ संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥ कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै॥तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥रहाउ॥ दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुरसलात का पंथु दुहेला ॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥ दुखीआ दरदुवंदु दरि आइआ॥ बहुतु पिआस जवाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥ ३ ॥ १ ॥ सूही ॥ जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना ॥ दूर

गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ १ ॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि मैं मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ सांझ परी दहदिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फनखाने ॥ ३ ॥ २ ॥ सूही ॥ ऊचे मंदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १ ॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥ २ ॥ घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ ३ ॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ एक राम कहि छूटिआ ॥४॥३॥

रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ॥तै सहि मन महि कीआ रोसु॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥ तै साहिब की मैं सार न जानी ॥ जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥१॥रहाउ॥ काली कोइल तू कित गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ जा होइ क्रिपालु त प्रभू मिलाए ॥२॥ विधण खूही मुंध इकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥ करि किरपा प्रभि साध संगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥ ३ ॥ वाट हमारी खरी उडीणी ॥ खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥ सूही ललित ॥ बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥ भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥ १ ॥ हथु न लाइ कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥१॥रहाउ॥ इक आपीनै पतली सहकेरे बोला ॥ दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ॥२॥ कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ हंसु चलसी डुंमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥३॥२॥

२२.६.८.

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १॥तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई॥जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥ बिलावलु महला १॥ मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला १ ॥ आपे सबदु आपे नीसानु ॥ आपे सुरता

आपे जानु ॥ आपे करि करि वेखै ताणु ॥ तू दाता नामु परवाणु ॥१॥
ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ राजु रूपु
झूठा दिन चारि ॥ नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥२॥ चखि छोडी सहसा
नही कोइ ॥ बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ एके कउ नाही भउ कोइ॥करता
करे करावै सोइ ॥ ३ ॥ सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ ठाकि रहे मनु
साचै धारिआ ॥ अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ नानक नामि रते
निसतारिआ ॥४॥३॥ बिलावलु महला १॥ गुरबचनी मनु सहज धिआने
॥ हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ हरि
बिनु किउ रहीऐ गुरसबदि पछाने ॥ १ ॥ बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी
माई ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ सासि गिरासि जपउ अपुने
हरि भाली ॥ सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ अब जाने गुरमुखि
हरि नाली ॥ २ ॥ अकथ कथा कहीऐ गुर भाइ ॥ प्रभु अगम अगोचरु
देइ दिखाइ ॥ बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ हउमै मेटि चलै
गुरसबदि समाइ ॥ ३ ॥ मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ गुरमुख नामि
मिलै साबासि ॥ हरि किरपाधारी दासनि दास ॥ जन नानक हरि नाम
धनु रासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

बिलावलु महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ धृगु धृगु खाइआ धृगु धृगु सोइआ
धृगु धृगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ ॥ धृगु सरीरु कुटंब सहित सिउ
जितु हुणि खसमु न पाइआ ॥ पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै
अहिला जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि
हरि के चरण विसारे ॥ जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै
दूख निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु दइआपति दाता किआ एहि
जंत विचारे ॥ मुकत बंध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥
गुरमुखि होवै सो मुकति कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥२॥ सो जनु मुकतु
जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ तिन की गह

गति कही न जाई सचै आपि सवारे ॥ भरमि भुलाए सि मनमुख कहीअहि
ना उरवारि न पारे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु पाए गुर
का सबदु सम्हाले ॥ हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु
होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला
३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ दूजा होइ त सोझी पाइ ॥ तिस ते
दूजा नाही कोइ ॥ तिस दी कीमति किकू होइ ॥ १ ॥ गुरपरसादि वसै
मनि आइ ॥ ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सराफु
कसवटी लाए ॥ आपे परखे आपि चलाए ॥ आपे तोले पूरा होइ ॥ आपे
जाणै एको सोइ ॥२॥ माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ जिस नो मेले
सु निरमलु होइ ॥ जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ सभु सचु दिखाले
ता सचि समाइ ॥ ३ ॥ आपे लिव धातु है आपे ॥ आपि बुझाए आपे
जापे ॥ आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ नानक आखि सुणाए आपे ॥४॥
॥ २ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को
कहै बहाना ॥ ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥
१॥ सतिगुर परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए
अनदिनु लागै सहज धिआना ॥१॥ रहाउ ॥ किआ कोई तेरी सेवा करे किआ
को करे अभिमाना ॥ जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ
दिखा वखिआना ॥२॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ जिउ
आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥ ३ ॥ कहत
नानक तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ॥ इकना घर महि दे
वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥४॥३॥ बिलावलु महला ३ ॥
पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ इसु परपंच महि साचे नाम
की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥ १ ॥ सतिगुर की जिस नो मति
आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु
अंदरि रवै हरि नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चहु जुगा का हुनि निबेड़ा नर
मनुखा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है
कलि महि कीरति हरि नामा ॥ २ ॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु
है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि

जगि ते पूरे परवाना ॥३॥ कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥४॥४॥ बिलावलु महला ३ ॥ गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ तितु घरि बिलावलु गुरसबदि सुहाए ॥ मंगलु नारी गावहि आए ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥ १ ॥ हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मनि वसाए ॥ हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥ १॥रहाउ॥ सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥ आपे सोभा सद ही पाए ॥ गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥२॥ गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ निजघरि वासा हरि गुण गाए ॥ रंगि चलूलै हरि रसि भाए ॥ इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाए ॥ ३ ॥ अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ नानक नामु द्रिड़ाए पूरा गुरु मेरा ॥४॥५॥ बिलावलु महला ३॥ पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥ १ ॥ जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥१॥रहाउ॥ मन की परतीति मन ते पाई ॥ पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ बहुड़ि न मरै न जमु पेखै ॥२॥ घर ही महि सभि कोट निधान ॥ सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ सद ही लागा सहजि धिआन ॥ अनदिनु गावै एको नाम ॥३॥ इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥४॥ पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥५॥६॥४॥६॥१०॥

रागु बिलावलु महला ४ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ जिउ नटूआ तंतु

वजाए तंती तिउ वाजहि जंत जना ॥१॥ जपि मन राम नामु रसना ॥
मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥१॥ रहाउ ॥
माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु
हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥२॥ कवन कवन की गति
मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंना ॥ ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे
हरि उधरिओ परिओ सरना ॥३॥ प्रभ दीनदइआल भगत भवतारन हम
पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास
दासंना ॥४॥१॥ बिलावलु महला ४॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती
सरणागति पुरख अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम
पाथर हीन अकरमा ॥१॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि
रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक
से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे
ठाकुर हरि जपीऐ वडे करंमा ॥२॥ नाम हीन धृगु जीवते तिन वड दूख
सहंमा ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा
॥३॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि
सतिगुरि नामु दृड़ाइआ जन नानक सफलु जनंमा ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु
महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु
भरा ॥ तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउकरि मुगध तरा ॥
१ ॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि किरपा प्रभि
धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥१॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर
प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुम्हरै संगि लगे से उधरे
जिउ संगि कासट लोह तरा ॥२॥ साकत नर होछी मति मधिम
जिन हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि
मुए फिरि मरा ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए
संतोख गुरसरा ॥ दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि
परा ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे
भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है
कलजुगि खेवटु गुरसबदि तरहु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि गुण हरि

उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि संगति पारि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अंमृतु हरि रसु पीअहु ॥२॥ हरि हरि नामु अंमृतु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु॥ गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥३॥ राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ चारि पदारथ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥४॥४॥ बिलावलु महला ४ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ गुरु सतिगुरु पारब्रहमु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥१॥ हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी॥२॥ मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥ अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥ ३ ॥ मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥४॥५॥ बिलावलु महला ४ ॥ अनद मूलु धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनंदे ॥ धरमराइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु गुोबिंदे ॥ वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत मूड़ माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरंदे ॥ तृसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥ २ ॥ गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे ॥३॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे ॥४॥६॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥ बोलहु भईआ राम नामु

पतित पावनो ॥ हरि संत भगत तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥१॥ मन राम नाम करि आसा॥ भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ कोई राम नाम गुन गावनो ॥ जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ १७ ॥

रागु बिलावलु महला ५ ॥ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ साध संगति कै अंचलि लावहु ॥ १ ॥ किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥१॥ रहाउ ॥ पवन झुलारे माइआ देइ ॥ हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥ २ ॥ पाइआ वेड़ु माइआ सरब भुइअंगा ॥ हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ सगल सीगार करे नही पावै ॥ जा होइ क्रिपालु ता गुरू मिलावै ॥ ३ ॥ हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥ ४ ॥ जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ जन नानक हरिगुण आखि समाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥ १ ॥ धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभनी थांई रविआ आपि ॥ आदि जुगादि जाका वड परतापु ॥ गुर परसादि न होइ संतापु ॥ २ ॥ गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ निरबिघन होइ सभ थांई वूठे ॥ सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥ जिथै

किथै दीसहि नाले ॥ नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥४॥२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे॥ मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ करि किरपा हरि चरन धिआई ॥ १ ॥ दइआ करहु बसहु मनि आइ॥ मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइ ॥रहाउ॥ प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ जाकै संगि सदा प्रभु बसै ॥ २ ॥ प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ प्रभ चिति आए पूरन सभ काज॥ हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥३॥ चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ बिसरि गई सभ दुरमति रीति॥ मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥४॥३॥

बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीए कै घरि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रहमु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तिना की जिन अपुना प्रभु जाता ॥ हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ नानक की बेनंती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥ २ ॥ वडभागी से काढीअहि पिआरे संत संगति जिना वासो ॥ अंमृत नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥ ३ ॥ ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिखै बनु फीका

तिआगि गी सखीए नामु महारसु पीओ ॥ बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ ॥ नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥ १ ॥ हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए मृग तृसना द्रुम छाइआ ॥ चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ ॥ रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥२॥ जाइ वसहु वडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ ॥ तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ प्रेम बिछोहु न मोह बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥४॥२॥५॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा॥१॥ऐसो गिआनु बिरलोई पाए ॥जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए॥१॥रहाउ॥अनिक रंग निरगुन इक रंगा॥आपे जलु आप ही तरंगा॥२॥आपि ही मंदरु आपहि सेवा ॥ आप ही पूजारी आप ही देवा ॥३॥आपहि जोग आप ही जुगता॥नानक के प्रभ सद ही मुकता॥४॥१॥६॥ बिलावलु महला ५॥ आपि उपावन आपि सधरना ॥ आपि करावन दोसु न लैना॥१॥ आपन बचनु आप ही करना ॥आपन बिभउ आप ही जरना ॥१॥ रहाउ ॥ आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ आप ही अछलु न जाई छलना ॥ २ ॥ आप ही गुपत आपि परगटना ॥ आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥ ३ ॥ आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भूले मारगु जिनहि बताइआ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥ १ ॥ सिमरि मना राम नामु चितारे ॥

बसि रहे हिरदै गुरचरन पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि
मनु लीना ॥ बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥२॥ दुख सुख करत जनमि
फुनि मूआ ॥ चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥३॥ अगनि सागर बूडत
संसारा ॥ नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥४॥३॥८॥ बिलावलु
महला ५ ॥ तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ कवन सुमति जितु हरि
हरि जपना ॥ १ ॥ करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ तुम्ह पेखत
सोभा मेरै आगनि ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥
५.८.८० साध संगि इसु मनहि उधारउ ॥२॥ मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥
ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥३॥ नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ कहु
नानक सफलु सो आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात
पिता सुत साथि न माइआ ॥ साध संगि सभु दूखु मिटाइआ ॥१॥ रवि
रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥ १ ॥
रहाउ ॥ तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ सीतल भए हरि हरि जसु
जापिआ ॥२॥ कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ मनु तृपताना हरि गुण
गाइआ ॥ ३ ॥ देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ नानक की बेनंती
सुआमी ॥४॥५॥१०॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा वडभागी
पाईऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ
तेरी सरना ॥ किल बिख काटै भजु गुर के चरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥
अवरि करम सभि लोकाचार ॥ मिलि साधू संगि होइ उधार ॥
॥ २ ॥ सिंमृति सासत बेद बीचारे ॥ जपीऐ नामु जितु पारि
उतारे ॥ ३ ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ साधू धूरि
मिलै निसतरीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ११ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुर का
सबदु रिदे महि चीना ॥ सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥ १ ॥
संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ करि किरपा अपुना नामु
दीना ॥१॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ जै जैकारु
जगति प्रगटीना ॥२॥ नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ अंम्रित नामु
महा रसु लीना ॥ ३ ॥ मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ कहु नानक
प्रभ भए प्रसीना ॥४॥७॥१२॥ बिलावलु महला ५ ॥ सगल मनोरथ

पाईअहि मीता ॥ चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥ १ ॥ हउ बलिहारी
जो प्रभू धिआवत ॥ जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सफल जनमु होवत वडभागी ॥ साध संगि रामहि लिव लागी ॥ २ ॥
मति पति धनु सुख सहज अनंदा ॥ इक निमख न विसरहु परमानंदा
॥ ३ ॥ हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ भनति नानक सरणि
प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ८ ॥ १३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोहि निरगुन
सभ गुणह बिहूना ॥ दइआ धारि अपुना करि लीना ॥१॥ मेरा मनु तनु
हरि गोपालि सुहाइआ ॥ करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ भगति वछल भै काटनहारे ॥संसार सागर अब उतरे पारे ॥२॥
पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ॥पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥३॥
साध संगि प्रगटे नाराइण ॥ नानक दास सभि दूख पलाइण ॥४॥९॥१४
॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु जानै प्रभ तुम्हरी सेवा ॥ प्रभ अविनासी
अलख अभेवा ॥१॥ गुण बेअंत प्रभ गहिर गंभीरे ॥ ऊच महल सुआमी
प्रभ मेरे ॥ तू अपरंपर ठाकुर मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकस बिनु नाही को
दूजा ॥ तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥ २ ॥ आपहु कछू न होवत
भाई ॥ जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जो जनु प्रभ
भाइआ ॥ गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १५ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ हरि
रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥१॥ भजु गोबिंद सभ छोडि
जंजाल ॥ जब जमु आइ संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइ
बेहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥
करनहारु इक निमख न जापिआ ॥२॥ महा मोह अंध कूप परिआ ॥
पारब्रहमु माइआ पटलि बिसरिआ ॥ ३ ॥ वडै भागि प्रभ कीरतनु
गाइआ ॥ संत संगि नानक प्रभु पाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १६ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत बंधप भाई ॥ नानक
होआ पारब्रहमु सहाई ॥१॥ सूख सहज आनंद घणे ॥ गुरु पूरा
पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥ २ ॥

अरथ धरम काम मोख का दाता ॥ पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥
३॥ साध संगि नानकि रंगु माणिआ॥घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ
॥ ४ ॥ १२ ॥ १७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सब निधान पूरन गुरदेव
॥१॥रहाउ॥ हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ मरि खुआरु साकत नर
थीवे ॥१॥ राम नामु होआ रखवारा ॥ झख मारउ साकतु वेचारा ॥२॥
निंदा करि करि पचहि घनेरे॥मिरतक फास गलै सिरि पैरे॥३॥कहु नानक
जपहि जन नाम ॥ ताके निकटि न आवै जाम ॥४॥१३॥१८॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥
पलु पलु निमख सदा हरि जपने॥१॥ चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ
॥ कवनु सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी क्रिपा करहु
प्रभ मेरे ॥ हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥ २ ॥ १ ॥ १९ ॥ बिलावलु
महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ रोग गए सगले सुख
पाए ॥ १ ॥ गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ सफल जनमु जीवन
परवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अकथ कथा अंमृत प्रभ बानी ॥ कहु नानक
जपि जीवे गिआनी ॥२॥२॥२०॥ बिलावलु महला ५॥ सांति पाई गुरि
सतिगुरि पूरे ॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप
संताप बिनासे ॥ हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥१॥ अनदु करहु
मिलि सुंदर नारी॥गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥२॥३॥२१॥ बिलावलु
महला ५॥ ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल
॥दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥१॥
तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥ महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु
साधू संगि रवाला ॥१॥रहाउ॥ प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंड
सभु तुमरा माल ॥ भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा
क्रिपाल ॥२॥४॥२२॥ बिलावलु महला ५॥ सगल अनंदु कीआ परमेसरि
अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ साध जना होए किरपाला बिगसे सभि

परवारिआ ॥१॥ कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥ वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वण तृण त्रिभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ ॥ मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥२॥५॥२३॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ हरि सिमरत काटै सो कालु ॥१॥ रहाउ ॥ साध संगि भजीऐ गोपालु ॥ गुन गावत तूटै जम जालु ॥ १ ॥ आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ नानकु जाचै साध रवाल ॥ २॥ ६ ॥ २४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥ ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ कहु नानक जाके निरमल भाग ॥ हरि चरनी ता का मनु लाग ॥ २ ॥७॥ २५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ अंमृत नामु रिद माहि धिआई ॥ १ ॥ नानक गुर पूरे सरनाई ॥ जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥ २ ॥ ८ ॥ २६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ जो जो निंद करै इन गृहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥१॥ नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥ २ ॥ ९ ॥ २७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥ १ ॥ आइ बसहु घर देस महि इह भले संजोग ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए लहि गए बिओग ॥ २ ॥ १० ॥ २८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ काहू संगि न चालही माइआ जंजाल ॥ ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥ बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥ १ ॥ सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥ २ ॥ ११ ॥ २९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि

दीन ॥ सदा सहाई संगि प्रभ अंम्रित गुण चीन ॥ रहाउ ॥ जैजैकारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसंन भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥१॥ जाका अंगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥२॥१२॥३०॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ म्रित मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥१॥ सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥१॥रहाउ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ द्रिसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥२॥ कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥ ३ ॥ जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥ १ ॥ जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥ २ ॥ पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥ ३ ॥ सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥ १ ॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जरा भरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अंम्रितु आघानिआ गुरि अमर कराइआ ॥ २ ॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥ ३ ॥

सफल दरसु तेरा पारब्रहम गुणनिधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखहु अपनी सरनि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥ १ ॥ मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥ दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥ २ ॥ तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥ ३ ॥ तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥ १ ॥ कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥ २ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥ ३ ॥ चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ होहु क्रिपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ देखि कसुंभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥ २ ॥ जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ अंतकालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥३॥ दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥ १ ॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो

आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥ सिंघु बिलाई होइ गइओ तृणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥ कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ करि किरपा मुहि नामु देहु नानक दरसरीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अहंबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि॥लपटि कपटि गृह बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥ १ ॥ ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुरपरसादि ॥ राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ मिलत संगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥ २ ॥ फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥ इह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ सूख सहज नानक अनंद ता कै पूरन नाद ॥ ४ ॥ ८ ॥ ३८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥ १ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥१॥ रहाउ ॥ पंच चोर आगै भगे जब साध संगेत ॥ पूंजी साबतु घणो लाभु गृहि सोभा सेत ॥ २ ॥ निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥ ३ ॥ गुण गभीर गुन नाइका गुण कहीअहि केत ॥ नानक पाइआ साध संगि हरि हरि अम्रेत ॥ ४ ॥ ९ ॥ ३९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥ १ ॥ जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एत छडाई मोहि ते इतनी दृड़तारी ॥ सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥ २ ॥ निंद चिंद परदूखना ए खिन महि जारी ॥ दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥ ३ ॥ तन मन सीतल भए अब मुकते संसारी ॥ हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥४॥१०॥ ४० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनहु रसाल ॥ १ ॥ तुम मिलते मेरा मनु जीओ तुम्ह मिलहु

दइआल ।। निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत किरपाल ।।१।। रहाउ ।। जगत उधारन साध प्रभ तिन लागहु पाल ।। मोकउ दीजै दान प्रभ संतन पग राल ।।२।। उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ।। भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ।। ३ ।। बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल।। गुण गावउ तेरे साध संगि नानक सुख साल ।।४।।११।।४१।। बिलावलु महला ५ ।। कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ।। परतापु तुम्हारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ।।१।। तुम्हरी कृपा ते छूटीऐ बिनसै अहंमेव ।। सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ।। १ ।। रहाउ ।। खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ।। जीवन सुखु सभु साध संगि प्रभ मनसा पूरु ।।२।। जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ।। जत कत तुम्ह भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ।। ३ ।। सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ।। नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाए ।। ४ ।। १२ ।। ४२ ।। बिलावलु महला ५।। साध संगति कै बासबै कलमल सभि नसना ।। प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ।।१।। नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ।। मन तन निरमल होईहै गुर का जपु जपना ।।१।। रहाउ ।। हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ।। बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ।। २ ।। सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी तृसना ।। दहदिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ।। ३ ।। राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना ।। नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ।। ४ ।। १३ ।। ४३ ।। बिलावलु महला ५ ।। पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ।। राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ।। १ ।। संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ।। माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि ।। १ ।। रहाउ ।। संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ।। गृहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ।। २ ।। भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ।। साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ।। ३ ।। साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ।। हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ।। ४ ।। सभ किछु तुम्ह ही

ते होआ आपि बणत बणाई ॥ दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई
॥५॥१४॥४४॥ बिलावलु महला ५ ॥ स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर
जसु गावउ ॥ संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥ १ ॥ करि
किरपा दइआल प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ संत जना की रेणुका लै
माथै लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ
बुलावउ ॥ पाव मलोवा आपु तिआगि संत संगि समावउ ॥ २ ॥ सासि
सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ सफल दरसन गुरु भेटीऐ मानु
मोहु मिटावउ ॥३॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ सफल
सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४५ ॥ बिलावलु
महला ५ ॥ अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ जिसु जन
होआ साध संगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥ १ ॥ इह परतीति गोविंद की
जपि हरि सुखु पाइआ ॥ अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै
आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥
करम भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ ॥२॥ अंतरजामी आपि
प्रभु सभ करे कराइआ ॥ पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥३॥
मत भूलहु मानुख जनमाइआ भरमाइआ ॥ नानक तिसु पति राखसी
जो प्रभि पहिराइआ ॥४॥१६॥४६॥ बिलावलु महला ५ ॥ माटी ते
जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल
दृसटेह ॥१॥ किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण एह ॥ प्रभ तजि रचे
जि आन सिउ सो रलीऐ खेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरहु सिमरहु
सासि सासि मत बिलम करेह ॥ छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु
तजि कूड़े नेह ॥ २ ॥ जिनि अनिक एक बहु रंग कीए है होसी
एह ॥ करि सेवा तिसु पारब्रहम गुर ते मति लेह ॥ ३ ॥ ऊचे
ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ दास दास को दासरा नानक करि
लेह ॥ ४ ॥ १७ ॥ ४७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ एक टेक गोविंद
की तिआगी अन आस ॥ सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुण
तास ॥ १ ॥ जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ परमेसर का
आसरा संतन मन माहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि रखै आपि देवसी

आपे प्रतिपारै ॥ दीन दइआल कृपानिधे सासि सासि सम्हारै ॥ २ ॥
करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु
खसम रजाई ॥ ३ ॥ चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥
नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥ ४ ॥ १८ ॥ ४८ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति ते भई सांति परसत पाप नाठे ॥
अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥ १ ॥ ओइ हमारे साजना हम
उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥
परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ बसत संगि हरि साध
कै पूरन आसाइ ॥ २ ॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥
दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥ ३ ॥ नानक की तू टेक
प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥ ४ ॥
१९ ॥ ४९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु
बिसराना ॥ करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥ १ ॥ दूखु तदे
जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ संतन कै आनंदु एहु नित हरि
गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥
कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥ २ ॥ पेखत लीला रंग रूप
चलनै दिनु आइआ ॥ सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ
॥३॥ करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ हरि दिनसु रैणि नानकु
जपै सद सद बलि जाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ५० ॥ बिलावलु महला ५ ॥
जलु ढोवउ इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ
दरसु पेखि जीवावउ ॥ १ ॥ करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते
पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंमृत
गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ रस महि सांति तृपति
होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥ २ ॥ जब भगति करहि संत मंडली
तिन्ह मिलि हरि गावउ ॥ करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ
॥ ३ ॥ ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ नानक की प्रभ
बेनती हरि सरनि समावउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५१ ॥ बिलावलु
महला ५ ॥ इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साध

संगति कै संगि वसै वडभागी पाए ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवै दासु तुम्ह बाणी जन आखी ॥ प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥१ ॥ रहाउ ॥ अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ अंमृत नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥ २ ॥ जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥ काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥ ३ ॥ मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ सरब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ दीन दइआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥ १ ॥ गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ साध संगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥ २ ॥ हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ किलविख उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥ ३ ॥ सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥४॥ २३ ॥ ५३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइ सांति ॥ नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्रांति ॥ १ ॥ गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥ ३ ॥ निधि निधान अंमृतु पीआ मनि तनि आनंद ॥ नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तृसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥१॥ गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ तनु मनु सभु सीतलु भइआ पाइआ सुखु बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ पी अंमृतु तृपतासिआ ताका अचरज सुआदु ॥ २ ॥ आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥ सफल सेवा गुर देव की निरमल दरबारे

॥ ३ ॥ नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु गुणहीनु ॥ नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥४॥२५॥५५॥ बिलावलु महला ५॥ हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥१॥ करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥१॥ रहाउ ॥ संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ ॥ २ ॥ कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥ ३ ॥ सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥४॥२६॥५६॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटै सो प्रभू जाकै कल हाथ ॥ अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥१॥ तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ आसा भरम बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥२॥ परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥३॥ करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ नानक तरीऐ साध संगि हरि हरि गुण गाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ५७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥ १ ॥ मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥२॥ हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥ ३ ॥ नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥४॥२८॥५८॥ बिलावलु महला ५ ॥ उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ पारब्रहमु आराधते मुखि अंम्रितु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥

परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥२॥ धंनु सु थानु बसंत धंनु जह जपीऐ नामु ॥ कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥ ३ ॥ मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ नानक प्रभ सरणागती जाकै सभु किछु हाथ ॥४॥२९॥५९॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिनि तू बंधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल होताइआ ॥१॥ जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ जिनि एहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रंगु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ कीरी ते हसती करै तूटा ले गाढै ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ किरत कमावन सरब फल रवीऐ हरि निरति ॥ ३ ॥ हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध॥मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥४॥३०॥६०॥ बिलावलु महला ५ ॥ खोजत खोजत मै फिरा खोजउ बन थान ॥ अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥ १ ॥ कब देखउ प्रभु आपना आतम कै रंगि ॥ जागन ते सुपना भला बसीऐ प्रभ संगि ॥१॥ रहाउ ॥ बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस॥रूपु न रेख न पंच तत ठाकुर अबिनास ॥ २ ॥ ओहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ करि किरपा जाकउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥३॥ सो अंतरि सो बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ नानक तिसु प्रभु भेटिआ जाके पूरन करमा ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जंत सुप्रसंन भए देखि प्रभ परताप ॥ करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥ १ ॥ खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि आराधना हरि निधि आपार ॥ धरम अरथ अरु काम मोख देते नही बार ॥ २ ॥ भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ राम नाम धनु संचिआ जाका नही सुमार ॥ ३ ॥ सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ६२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि पूरन प्रभू कारज भए रासि ॥ करतारपुरि करता वसै संतन कै पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥

बिघनु न कोऊ लागता गुर पहि अरदासि ॥ रखवाला गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥ १ ॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥२॥ बसत कमावत सभि सुखी किछू ऊन न दीसै ॥ संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥३॥ जैजैकार सभै करहि सचु थानु सुहाइआ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥४॥३३॥६३॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥१॥रहाउ॥ गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ साध संगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥१॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिओगु ॥ नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥२॥३४॥६४॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥१॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ राखनहारै राखिआ अपनी करि मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥२॥१॥६५॥ बिलावलु महला ५ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो जानि ॥ सफल सेवा पारब्रहम की ताकी नही हानि ॥१॥ आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥२॥२॥६६॥ बिलावलु महला ५॥ चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥१॥ राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव॥ राम राज रामदासपुरि कीन्हे गुरदेव ॥१॥रहाउ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीऐ भइ दुसमन भागै ॥२॥ ३ ॥ ६७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ उचरत

गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥ १ ॥ राम नामु जो जनु जपै
अनदिनु सद जागै ॥ तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ आनंद मगन
रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥२॥ ४ ॥ ६८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ भए प्रसंन गोपालराइ
भउ किछु नही करना ॥ १ ॥ दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥
जम कंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ करण कारण
समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ नानक प्रभ सरणागती साचा मनि
जोरु ॥ २ ॥५॥६९॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु आपना
नाठा दुख ठाउ ॥ बिस्राम पाए मिलि साध संगि ताते बहुड़ि न धाउ
॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपने चरनन्ह बलि जाउ ॥ अनद सूख मंगल
बने पेखत गुन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथा कीरतनु राग नाद धुनि इहु
बनिओ सुआउ ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए बांछत फल पाउ ॥२॥ ६ ॥
७० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥
तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥१॥ चरन कमल का आसरा
प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु
॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप तूहै तू सरब निवासु ॥ नानक प्रभ
सरणागती जा को निरमल जासु ॥२॥७॥ ७१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
सरब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ साधु साधु मुख ते कहहि
सुणि दासु मिलावहि ॥ १ ॥ सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि
कीन ॥ जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥
पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ नानक भगत अनंद मै
पेखि प्रभ की धीर ॥२॥८॥७२॥ बिलावलु महला ५ ॥ अरदासि सुणी
दातारि प्रभि होए किरपाल ॥ राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक
छारु ॥ १ ॥ तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ पारब्रहमि
तू राखिआ दे अपने हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअन का दाता एकु है
बीआ नही होरु ॥ नानक को बेनतीआ मै तेरा जोरु ॥ २ ॥ ९ ॥
७३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ निंदक

G.C.
२०

मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल मनोरथ प्रभ
कीए भेटे गुरदेव ॥ जैजैकारु जगत महि सफल जा की सेव ॥ १ ॥ ऊच
अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ नानक प्रभ सरणागती
जत कत मेरै साथि ॥२॥१०॥७४॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा
आराधिआ होए किरपाल ॥ मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥१॥
दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ सहज सूख आनंद रस पूरन
सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥ बिलावलु
महला ५ ॥ धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥ भउ नाठा भ्रमु
मिटि गइआ रविआ नित राम ॥ १ ॥ साध जना कै संगि बसत सुख
सहज बिस्राम ॥ साई घड़ी सुलखनी सिमरत हरि नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥
प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ नानक तिसु सरणागती घट घट
सभ जान ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥ बिलावलु ५ ॥ रोगु मिटाइआ आपि
प्रभि उपजिआ सुखु सांति ॥ वड परतापु अचरज रूपु हरि कीनी दाति
॥१॥ गुरि गोविंदि कृपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ हम तिस की
सरणागती जो सदा सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरथी कदे न होवई
जन की अरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥
२ ॥ १३ ॥ ७७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मरि मरि जनमे जिन
बिसरिआ जीवन का दाता ॥ पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु
रंगि राता ॥ १ ॥ सांति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥
सुखु पाइआ हरि साध संगि सिमरत गुणतास ॥१॥ रहाउ ॥ सुणि
सुआमी अरदासि जन तुम्ह अंतरजामी ॥ थान थनंतरि रवि रहे
नानक के सुआमी ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताती
वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै रामकार दुखु
लगै न भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम
नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि
रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए
सहाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपणे बालक आपि

रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ सुख सांति सहज आनद भए पूरन भई सेव
॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइ
जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥ १ ॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी
कल धारी ॥ मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥
साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ सेवत
सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताए ॥ अभै दानु पावउ पुरख दाते
मिलि संगति हरि गुण गाए ॥१॥ रसना अगह अगह गुन राती नैन
दरस रंगु लाए ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाए
॥२॥ सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह द्रसटि द्रसटाए ॥ अभिमानु खोइ
खोइ खोइ खोई हउ मोकउ सतिगुर मंत्रु द्रड़ाए ॥ ३ ॥ अतुलु अतुलु
अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाए ॥ जो जो सरणि परिओ गुर
नानक अभै दानु सुख पाए ॥४॥१॥८१॥ बिलावलु महला ५॥ प्रभ जी
तू मेरे प्रान अधारै ॥ नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै
॥१॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ सूख
दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥ १ ॥ तू मेरी ओट बल
बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ जो तुम करहु सोई भल
हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥२॥२॥८२॥ बिलावलु महणा ५ ॥
सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ मोह मगन पतित संगि प्रानी
ऐसे मनहि बिसारन ॥१॥ रहाउ ॥ संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी
अंम्रितु मन ते डारन ॥ काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन
॥ १ ॥ इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ नानक
की बेनंती प्रभ पहि साध संगि रंक तारन ॥ २ ॥ ३ ॥ ८३ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा
कीरतनु आनंद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥ १ ॥
रहाउ ॥ करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी

दाति ॥ आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध इसु तन ते जात ॥१॥
तृपति अघाए पेखि प्रभ दरसनु अंमृत हरि रसु भोजनु खात ॥ चरन
सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संत संगि मिलात ॥२॥ ४ ॥ ८४ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए अपने जन आप ॥ करि किरपा हरि
हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग संताप ॥१॥रहाउ॥ गुण गोविंद
गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप॥ कोटि जनम की तृसना
निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥१॥ चरण गहे सरणि सुखदाते गुर
कै बचनि जपे हरि जाप ॥ सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर
परताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ८५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तापु लाहिआ गुर
सिरजनहारि ॥ सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै
संसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ प्रभि
अंमृत नामु महा रसु दीन्हो ॥ १ ॥ दास की लाज रखै मिहरवानु ॥
गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥२॥६॥८६॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥
बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥
मगन भए ऊहा संगि माते ओति पोति लपटाई ॥ १ ॥ आल जाल
नही कछू जंजारा अहंबुधि नही भोरा ॥ ऊचन ऊचा बीचु न खीचा
हउ तेरा तू मोरा ॥ २ ॥ एकंकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥
एकु बिसथीरनु एकु संपूरनु एकै प्रान अधारा ॥ ३ ॥ निरमल निरमल
सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक
ऊचो ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ ८७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु हरि कामि
न आवत हे ॥ जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत
हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत
हे ॥ उरझि रहिओ इंद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥ १ ॥
तृण को मंदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ ऐसे गड़
महि ऐठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥ २ ॥ पंच दूत मूड

परि ठाढे केस गहे फेरावत हे ॥ द्रसटि न आवहि अंध अगिआनी
सोइ रहिओ मद मावत हे ॥ ३ ॥ जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी
जिउ फाहावत हे ॥ कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु
धिआवत हे ॥ ४ ॥ २ ॥ ८८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि
नामु अपार अमोली ॥ प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितउ
जैसे पान तंबोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि समाइओ गुरहि बताइओ
रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ प्रिअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु
हमारो कतहु न डोली ॥ १ ॥ रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति
अंग अंग संगि मउली ॥ कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति नीकी
मेरी बनी खटोली ॥ २ ॥ ३ ॥ ८९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंद
गोबिद गोबिंद मई ॥ जब ते भेटे साध दइआरा तब ते दुरमति दूरि
भई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन पूरि रहिओ संपूरन सीतल सांति दइआल
दई ॥ काम क्रोध तृसना अहंकारा तन ते होए सगल खई ॥ १ ॥ सतु
संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई ॥ कहु नानक जिनि
मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥ २ ॥ ४ ॥ ९० ॥
बिलावलु महला ५ ॥ किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकहि
एक रोमाई ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही
पाई ॥ १ ॥ किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ जह जह देखा तह
रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह महा भइआन दूख जम सुणीऐ तह
मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ सरनि परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ
बूझ बुझाई ॥२॥५॥९१॥ बिलावलु महला ५॥ अगम रूप अबिनासी
करता पतित पवित इक निमख जपाईऐ ॥ अचरजु सुनिओ परापति
भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥ १ ॥ कितु बिधीऐ कितु संजमि
पाईऐ ॥ कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो
मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ नानक
सरनि सरणि सुखसागर मोहि टेक तेरो इक नाईऐ ॥ २ ॥ ६ ॥ ९२ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ संत सरणि संत टहल करी ॥ धंधु बंधु
अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख

सहज अरु घनो अनंदा गुर ते पाइओ नामु हरी ॥ ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥१॥ पेखिओ मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥ २ ॥ ७ ॥ ९३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥१॥ रहाउ ॥ अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥ १ ॥ ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥२॥८॥९४॥ बिलावलु महला ५ ॥ निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥१॥ निंदकु प्रभू भुलाइआ कालु नेरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥ २ ॥ ९ ॥ ९५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसे काहे भूलि परे ॥ करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काच बिहाजन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥ १ ॥ अंधकूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ कहु नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥२॥१०॥९६॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मोकउ गुरि दीन्हा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ हाथ देह राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥ १ ॥ बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ कहु नानक ठाकुर भारोसै कहु न मानिओ मनि छीना ॥ २ ॥ ११ ॥ ९७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ अंम्रित नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरे दूत दुसट

बैराई गुर पूरे का जपिआ जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥१॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ ता की सरनि परिओ नानकदास जाते ऊपरि को नाही ॥ २॥१२॥९८॥ बिलावलु महला ५ ॥ सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥ जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥२॥१३॥९९॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परपउकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥१॥रहाउ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही॥सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥१॥ चरन प्रभू के बोहिथु पाए भवसागरु पारि पराही ॥ संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥२॥१४॥१००॥ बिलावलु महला ५॥ धीरउ देखि तुम्हारे रंगा॥तू ही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥१॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥ १ ॥ कबहु न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥२॥१५॥१०१॥ बिलावलु महला ५॥ अचुत पूजा जोग गोपाल॥मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि समथ अकथ सुखदाता किरपासिंधु बडो दइआल ॥ कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥ १ ॥ दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥ २ ॥ १६ ॥ १०२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ साध संगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥ १ ॥ निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु

पदारथु वडभागि लहे ॥ करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥ २ ॥ १७ ॥ १०३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुलही ते नाराइण राखु ॥ सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥ १ ॥ पुत्र मीत धनु किछू न रहिओसु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥ २ ॥ १८ ॥ १०४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पूरे गुर की पूरी सेव ॥ आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥ १ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर बसि कीने जिनि सगले जंत ॥ चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निरमल मंत ॥ २ ॥ १९ ॥ १०५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भए गुरचरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नवखंड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा तृसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥ १ ॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल सृसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥ २ ॥ २० ॥ १०६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ पारब्रहमु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥१॥रहाउ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ हाथ दे राखे करि अपने वड समरथु निमाणिआ को मानु ॥ १ ॥ भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ सासि सासि आराधै नानक सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥ २ ॥ २१ ॥ १०७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥

१ ॥ भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि एकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥२॥२२॥१०८॥ बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु द्रिसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥ ३ ॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥ ४ ॥ २३ ॥ १०९॥ बिलावलु महला ५॥ तनु धनु जोबनु चलत गइआ॥ राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥ १ ॥ महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभ काढि लइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ११० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपना प्रभु आइआ चीति ॥ दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ करतारि ॥ सांति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उरहारि ॥ १ ॥ जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥ २ ॥ २५ ॥ १११ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥ १ ॥ भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥ २ ॥ २६ ॥ ११२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि

लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥१॥ सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुरप्रसादि प्रभ भए निहाल ॥ २ ॥ २७ ॥ ११३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥ १ ॥ दिनसु रैनि मन माहि बसतु है ॥ तू करि किरपा प्रभ अपनी॥२॥बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जाकी बात सुनी ॥ ३ ॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है ॥ मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी ॥४॥२८॥११४॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि के चरन जपि जांउ कुरबानु॥गुरु मेरा पारब्रहम परमेसुरु ताका हिरदै धरि मन धिआनु ॥ १ ॥रहाउ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहांनु ॥ रसना रवहु एकु नाराइणु साची दरगह पावहु मानु ॥१॥ साधू संगु परापति जाकउ तिनही पाइआ एहु निधानु ॥ गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥ २ ॥ २९॥११५॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए सतिगुर की सरण ॥ जैजैकारु होआ जग अंतरि पारब्रहम मेरो तारण तरण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिस्वंभर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण॥थान थनंतरि सरब निरंतरि बलि बलि जांई हरि के चरण ॥ १ ॥ जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ आदि जुगादि प्रभु रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥२॥३०॥११६॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ नगर महि आपि बाहरि फुनी आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा॥आपे ही राजन आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥ १ ॥ जा कउ दुराउ का सिउ बल बंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥ २ ॥ १ ॥ ११७ ॥

बिलावलु महला ५ ॥ तुम्ह समरथा कारन करन ॥ ढाकन ढाकि गोबिद
गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥१॥ रहाउ ॥ जो जो कीनो सो तुम्ह
जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ बड परतापु सुनिओ
प्रभ तुम्हरो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥ १ ॥ हमरो सहाउ सदा सद
भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ करुणामै किरपाल कृपानिधि जीवन
पद नानक हरि दरसन ॥२॥२॥११८॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी
किरपा मोहि करहु ॥ संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु
॥१॥ रहाउ ॥ गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु
॥ तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥१॥ जो तुम्ह
करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ नानक के प्रभ तुम ही
दाते संत संगि ले मोहि उधरहु ॥२॥३॥११९॥ बिलावलु महला ५ ॥
ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥ तुम्हरी
सेवा तुम्हारे अंगा ॥१॥ रहाउ॥ जन की टहल संभाखनु जन सिउ ऊठनु
बैठनु जन कै संगा ॥ जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनत
तरंगा ॥१॥ जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ
कोटि गंगा ॥ जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के ह
कलंगा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिउ भावै तिउ
मोहि प्रतिपाल ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह
पिता किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुण गुणु नाही कोइ
पहुचि न साकउ तुम्हरी घाल ॥ तुमरी गति मिति तुमही जानहु
जिउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥ १ ॥ अंतरजामी पुरख सुआमी
अनबोलत ही जानहु हाल ॥ तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक
प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥ २ ॥ ५ ॥ १२१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥
राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ तू हमरो प्रीतमु मन मोहनु तुझ
बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंक ते राउ करत
खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ जलत अगनि मा
जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥ १ ॥ सीतल सु
पाइओ मन तृपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ निधि निधा

नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥ २ ॥ ६ ॥ १२२ ॥
बिलावलु महला ५ ॥ अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ उर लागहु
सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥१॥रहाउ॥ पतित पावन
प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ जीवन प्रान हरि धनु
सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु ॥ १ ॥ जल बिहून मीन कत
जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ जन नानक पिआस चरन कमलन्ह
की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥२॥ ७ ॥ १२३ ॥ बिलावलु महला
५ ॥ आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ गुरि पूर पूरी सभ राखी पारब्रहमि
प्रभि कीनी मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु
दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ सांति सहज आनद गुण गाए दूत
दुसट सभि होए खइआ ॥१॥ गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि
किरपा अपुना करि लइआ ॥ अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु
उचरै हरि की जइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु
भै भगती तरनु कैसे ॥ करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप
भरोसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ
राता सुआन जैसे ॥ अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे
ऐसे ॥ १ ॥ सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥
केसव कलेस नास अघखंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥२॥९॥१२५॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आपहि मेलि लए ॥ जब ते सरनि
तुमारी आए तब ते दोख गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु
अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥ जपि जपि नामु तुम्हारो
प्रीतम तन ते रोग खए ॥ १ ॥ महा मुगध अजान अगिआनी राखे
धारि दए ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥ २ ॥
१ ॥ १२६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीवउ नामु सुनी ॥ जउ
सुप्रसंन भए गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीर
गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ उपजिओ

चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइ खिनी ॥१॥ अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ अंधुले टिक निरधन धनु पाइओ प्रभ नानक अनिक गुनी ॥२॥२॥१२७॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ उडीनी उडीनी उडीनी ॥ कब घरि आवै री ॥१॥ रहाउ ॥ सरनि सोहागनि चरन सीसु धरि॥लालनु मोहि मिलावहु ॥ कब घरि आवै री ॥१॥ सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मंगल गुन गावहु ॥ आनद रूप धिआवहु ॥ नानकु दुआरै आइओ ॥ तउ मै लालनु पाइओ री ॥२॥ मोहन रूपु दिखावै ॥ अब मोहि नीद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ अब मै सहजि समानी ॥ मीठी पिरहि कहानी॥ मोहनु लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोरी अहं जाइ दरसन पावत हे ॥ राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ अब चरन गहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ अनरस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥ १ ॥ अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ अन नाही नाही रे ॥ नानक प्रीति चरन चरन हे ॥ २ ॥ २ ॥ १२९ ॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दुखहरता हरि नामु पछानो ॥ अजामलु गनका जिह सिमरत मुकति भए जीअ जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो॥१॥ अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो॥ नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ९ ॥ हरि के नाम बिना

दुखु पावै ॥ भगति बिना सहसा नह चूकै गुर इह भेदु बतावै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥ जोग
जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ १ ॥ मान मोह दोनो
कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी
जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥ बिलावलु महला ९ ॥ जा मै भजनु राम
को नांही ॥ तिह नर जनमु अकारथ खोइआ यह राखहु मन माही ॥ १
॥ रहाउ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ निहफल
धरम ताहि तुम मानो साचु कहत मै या कउ ॥ १ ॥ जैसे पाहनि जल
महि राखिओ भेदै नाहि तिहि पानी ॥ तैसे ही तुम ताहि पछानो भगति
हीन जो प्रानी ॥ २ ॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुर यह भेदु बतावै
॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥

बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ गुरमुखि
विरला बूझै कोई ॥ विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ सबदि रते सदा सुखु
होई ॥१॥ ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु
॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ कथि कथि बादु करे
दुखु होई ॥ कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ बिनु रस राते मुकति न होई ॥
२ ॥ गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ साची रहत साचा मनि सोई
॥ मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ नावहु भूले थाउ न कोई ॥३॥
मनु माइआ बंधिओ सर जालि ॥ घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु
नालि ॥ जो आंजै सो दीसै कालि ॥ कारजु सीधो रिदै सम्हालि ॥
४ ॥ सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ मनमुखि हउमै पति
गवाई ॥ आपे करतै भगति कराई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ ५ ॥
रैणि अंधारी निरमल जोति ॥ नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥
बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥ ६ ॥
सासत्र सिमृति नामु दृड़ामं ॥ गुरमुखि साति ऊतमा करमं ॥
नममुखि जोनी दूख सहामं ॥ बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥

७ ॥ मंने नामु सची पति पूजा ॥ किसु वेखा नाही को दूजा ॥ देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ नानकु कहै अवरु नही कोइ ॥८॥१॥ बिलावलु महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ इहु मनु पुंनु पापु उचरै ॥ माइआ मदि माते तृपति न आवै ॥ तृपति मुकति मनि साचा भावै ॥१ ॥ तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धनु लोकां तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥बिनु सबदै नही उतरै मैलु॥२॥ गीत राग घन ताल सि कूरे॥त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ ॥३॥ धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ अंतरि क्रोधु पड़हि नाटसाला ॥ नामु विसारि माइआ मदु पीआ ॥ बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥ ४ ॥ सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ पसू मलेछ नीच चंडाला॥ गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥ बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥५॥ गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची दरगह पूछ न होइ ॥ मानै हुकमु सीझै दरि सोइ॥६॥सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भए नासु॥७॥रहै अतीतु जाणै सभु तिस का॥तनु मनु अरपै है इहु जिसका ॥ ना ओहु आवै न ओहु जाइ ॥ नानक साचे साचि ससाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ १॥ सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥१॥ रहाउ ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ साचै नाइ वडाई पावहु ॥ २ ॥ आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ मन का अंधा अंधु कमावै ॥ दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥ ३ ॥ हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ तिसु नालि किआ चलै पहनामी ॥४॥ साचा

नामु साचै सबदि जानै ॥ आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ गुरमुखि
नामु सदा सदा वखानै ॥ ५ ॥ सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥
अउगण काटि पापा मति खाई ॥ कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥
६ ॥ सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥
नामि रते सदा सुखु पाई ॥७॥ गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ गुरमति
मानिआ मोख दुआरु ॥ नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु
॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि
रस गीत गवईआ ॥ गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति
मिलईआ ॥१॥ मैं हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ खिनु पलु रहि न
सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥१॥रहाउ॥ एकु गिरहु
दस दुआर है जा के अहिनिसि तसकर पंच चोर लगईआ ॥ धरमु
अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुखि अंधुले खबरि न पईआ ॥ २ ॥
कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥
तसकर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥ ३ ॥
हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ॥ जमु
जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥ ४ ॥ हरि गुण
गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ गुरमुखि
मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गुोपाल नीसानु बजईआ ॥ ५ ॥ नैनी
देखि दरसु मनु तृपत स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ सुनि सुनि
आतमदेव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥६॥ त्रैगुण माइआ
मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ एक द्रसटि सभ सम
करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥ ७ ॥ राम नामु है जोति
सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ नानक दीन दइआल भए
है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु
महला ४ ॥ हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन

वासु सुगंध गंधईआ ॥ मिलि सत संगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआं ॥ १ ॥ जपि जगंनाथ जगदीस गुसईआ ॥ सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥ १ ॥रहाउ॥ भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥ २ ॥ हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥ ३ ॥ रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडारु खुल्हईआ ॥ गुरचरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते त्रिपति न भईआ ॥ ४ ॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥ ५ ॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम द्रिड़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥ ६ ॥ नामु जपहु नामे गति पावहु सिम्रिति सासत्र नामु द्रिड़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पदु पईआ ॥ ७ ॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥ १ ॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥ २ ॥ दासनि दास दास होइ रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥ ३ ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे इहु मनु त्रिसना जलत तिखईआ ॥ गुरमति नामु अम्रित जलु पाइआ अगनि बुझी गुरसबदि बुझईआ ॥ ४ ॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै

अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि
रखि चरण हरि ताल पूरईआ॥५॥हरिकै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल
रसि सबदु रवईआ॥निज घरि धार चुऐ अति निरमल जिनि पीआ तिन
ही सुखु लहीआ ॥६॥ मन हठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू
घर उसरईआ ॥ आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिंन भिंन
ढहि पईआ ॥ ७ ॥ हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु
खेलईआ ॥ जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि
रमईआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ सतिगुरु परचै मनि
मुंदरा पाई गुर का सबदु तनि भसम द्रिड़ईआ ॥ अमर पिंड भए साधू
संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥१॥ मेरे मन साध संगति मिलि
रहीआ ॥ क्रिपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ
॥१॥ रहाउ ॥ तजै गिरसतु भइआ बनवासी इकु खिनु मनूआ टिकै न
टिकईआ ॥ धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥
२ ॥ धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥
आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥ ३ ॥
उपजी तरक दिगंबरु होआ मनु दहदिस चलि चलि गवनु करईआ ॥
प्रभवनु करै बूझै नही त्रिसना मिलि संगि साध दइआ घरु
लहीआ ॥ ४ ॥ आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि
सिधि चेटक चेटकईआ ॥ त्रिपति संतोखु मनि सांति न आवै मिलि
साधू त्रिपति हरि नामि सिधि पईआ ॥ ५ ॥ अंडज जेरज सेतज
उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ साधू सरणि परै सो
उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥ ६ ॥ नामा जैदेउ
कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि
दईआ ॥ ७ ॥ संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु
करईआ ॥ नानक सरणि परे जग जीवन हरि हरि किरपा धारि
रखईआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ अंतरि पिआस उठी
प्रभ केरी सुणि गुरबचन मनि तीर लगईआ ॥ मन की बिरथा मन

हो जाणै अवरु कि जाणै को पीर पराईआ ॥ १ ॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥२॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥३॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥४॥ खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥५॥ हरि हरि हारु कंठ है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥६॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥७॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥८॥५॥ बिलावलु महला ४॥ मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चातृक प्रिउ प्रिउ बूंद मुखि पईआ ॥ १ ॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥२॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥ ३ ॥ कोइ आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ ४ ॥ सेज एक

एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ॥५॥करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥६॥ पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ॥ भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥ ७ ॥ प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥ ८ ॥ ६ ॥९॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ९ ॥

रागु बिलावलु महला ५ असटपदी घर १२

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥१॥ रहाउ ॥ प्रभ चरन कमल अपार ॥ हउ जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि ॥१॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप कलमल दहन ॥ चड़ि नाव संत उधारि॥ भै तरे सागर पारि ॥२॥ मनि डोरि प्रेम परीति॥ इह संत निरमल रीति॥ तजि गए पाप बिकार ॥ हरि मिले प्रभ निरंकार ॥३॥ प्रभ पेखीऐ बिसमाद॥चखि अनद पूरन साद॥नह डोलीऐ इत ऊत ॥ प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥४॥ तिन नाहि नरक निवासु॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते जमु न पेखहि नैन ॥ सुनि मोहे अनहत बैन ॥५॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दइआल ॥ हरि निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेव ॥६॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जाकी महा बिखड़ी कार ॥ ता की मिति न जानै कोइ ॥ जलि थलि महीअलि सोइ ॥ ७ ॥ करि बंदना लख बार ॥ थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥ ८ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिओ दुआरि ॥ गहि चरन साधू सग ॥ मन मिसट हरि हरि रंग

॥ करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ नानका नामु धिआइ ॥ १ ॥ दीना
नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ जाचउ संत रवाल
॥ १ ॥रहाउ॥ संसारु बिखिआ कूप ॥ तम अगिआन मोहत घूप ॥ गहि
भुजा प्रभ जी लेहु ॥ हरि नामु अपुना देहु ॥ प्रभ तुझ बिना नही ठाउ
॥ नानका बलि बलि जाउ ॥२॥ लोभि मोहि बाधी देह ॥ बिनु भजन
होवत खेह ॥ जमदूत महा भइआन ॥ चित गुपत करमहि जान ॥ दिनु
रैनि साखि सुनाइ ॥ नानका हरि सरनाइ ॥ ३ ॥ भै भंजना मुरारि ॥
करि दइआ पतित उधारि ॥ मेरे दोख गने न जाहि ॥ हरि बिना
कतहि समाहि ॥ गहि ओट चितवी नाथ ॥ नानका दे रखु हाथ ॥४॥
हरि गुणनिधे गोपाल ॥ सरब घट प्रतिपाल॥ मनि प्रीति दरसन पिआस
॥ गोबिंद पूरन आस ॥ इक निमख रहनु न जाइ ॥ वडभागि नानक
पाइ ॥ ५ ॥ प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ मनि प्रीति चंद चकोर ॥ जिउ
मीन जल सिउ हेतु ॥ अलि कमल भिंनु न भेतु ॥ जिउ चकवी सूरज
आस ॥ नानक चरन पिआस ॥६॥ जिउ तरुनि भरत परान ॥ जिउ
लोभीऐ धनु दानु ॥ जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ जिउ महा खुधिआरथ
भोगु ॥ जिउ मात पूतहि हेतु ॥ हरि सिमरि नानक नेत ॥ ७ ॥ जिउ
दीप पतन पतंग ॥ जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ मैगलहि कामै बंधु ॥
जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ हरि नानक इहु
मनु लाइ ॥ ८ ॥ कुरंक नादै नेहु ॥ चातृकु चाहत मेहु ॥ जन जीवना
सतसंगि ॥ गोबिद भजना रंगि ॥ रसना बखानै नामु ॥ नानक दरसन
दानु ॥ ९ ॥ गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ सो सरब फल हरि लेइ ॥
कुल समूह करत उधारु ॥ संसारु उतरसि पारि ॥ हरि चरन बोहिथ
ताहि ॥ मिलि साध संगि जसु गाहि ॥ हरि पैज रखै मुरारि ॥ हरि
नानक सरनि दुआरि ॥१०॥२॥

बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ एकम एकंकारु निराला॥ अमरु अजोनी
जाति न जाला ॥ अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ॥खोजत खोजत घटि
घटि देखिआ ॥ जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ गुरपरसादि

परम पदु पाई ॥१॥ किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ गुर कै सबदि
महलु घरु दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ जम दरि बाधे
आवण जाणे ॥ किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ सिरि जम कालु
सि चोटा खाहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ पाखंडि कीन्है मुकति
न होइ ॥२॥ आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि
॥ धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥
जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा सिरजणहारा॥३॥ तृतीआ
ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा॥जोती जाती गणत न आवै
॥ जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ किसु
नेड़ै किसु आखा दूरि ॥४॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खाणी चारे बाणी
भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥
तीनि समावै चउथै वासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥५॥ पंचमी
पंच भूत बेताला ॥ आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ इकि भ्रमि भूखे मोह
पिआसे ॥ इकि रसु चाखि सबदि तृपतासे ॥ इकि रंगि राते इकि मरि
धूरि ॥ इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥६॥ झूठे कउ नाही पति नाउ
॥ कबहु न सूचा काला काउ ॥ पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ छेरीं
भरमै मुकति न होइ ॥ तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ गुरमति मेले
भगति हड़ाए ॥ ७ ॥ खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ अनहद
सबदु निराला वाजे ॥ जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ सबदे
भेदे तउ पति पावै ॥ करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ साचै
साचे साचि समावहि ॥ ८ ॥ सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ सात
समुंद भरे निरमल नीरि ॥ मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ गुर कै
सबदि पावै सभि पारि ॥ मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ सचु
नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ९ ॥ असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ सचु
निहकेवलु करमि अराधै ॥ पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ तही
निरंजनु साचो नाउ ॥ तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ प्रणवति
नानकु कालु न खाइ ॥ १० ॥ नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥
घटि घटि नाथु महा बलवंडा ॥ आई पूता हहु जगु सारा ॥ प्रभ

आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥ ओहु अपरंपरु करणै जोगु ॥ ११ ॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥ अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥१२॥ एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहार निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु ॥ १३ ॥ जह देखउ तह एको एका ॥ होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ फलोहार कीए फलु जाइ॥ रस कस खाए सादु गवाइ ॥ कूड़ै लालचि लपटै लपटाइ ॥ छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥१४॥ दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ अतीत भए मारे बैराई॥प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥१५॥ दुआदसी दइआ दानु करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि भवण महि एको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥१६॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंमृत मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥१७॥ चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ चउदसि भवन पाताल समाए ॥ खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥१८॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥१९॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ताके दासा ॥ २० ॥ १ ॥

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥ नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ १ ॥ हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥ ३ ॥ बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद सोभा पाए ॥ नामि रते गुरसबदि सुहाए ॥ ४ ॥ लाहा नामु पाए गुरदुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ गुरपरसादी आपु गवाईऐ ॥ नानक नामु रखहु उरधारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ५ ॥ वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥ ६ ॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कार ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥ ७ ॥ छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुरपरसादी सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥ ८ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ ॥ तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ गुरमुखि

बूझै सोझी होइ ॥ ९ ॥ पंद्रह थितीं तै सत वार ॥ माहा रुती आवहि वार वार ॥ दिनसु रैणि तिवै संसारु आवागउणु कीआ करतारि ॥ निहचलु साचु रहिआ कलधारि ॥ नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥ १० ॥ १ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ आदि पुरखु आपे सृसटि साजे ॥ जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ आंवहि जावहि मरहि अभागे ॥ सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ परपंचु चूकै सचि समाइ ॥ १ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ ता कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सृसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ भरमे भूला आवै जाए ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ हउमै मारे ता दरु सूझै ॥ २ ॥ एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ दूजे ते जे एको जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै॥ सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ कउणु डरै डरु किस का होइ ॥ ४ ॥ गुरमती सांति वसै सरीर ॥ सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ नामे राते सहजि समाए ॥ नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ ५ ॥ इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ आपे करे हरि आपि कराए ॥ एको वरतै अवरु न कोइ ॥ मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ दरि साचै साचे वीचारी ॥६॥ थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥ सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ थिती वार ता जा सचि राते ॥ बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥ ७ ॥ मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ आपि उपाए उपावणहारु ॥ आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥ ८ ॥ बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ एथै सुखु न आगै होइ ॥ मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ॥ सतिगुर

सेवे भरमु चुकाए ॥ घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥ ९ ॥ आपे पूरा करे सु होइ ॥ एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥१०॥२॥

बिलावलु महला १ छंत दखणी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥ १ ॥ सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम॥नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावए ॥ राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ गुरिसबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥२॥ स्री धर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो॥सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥३॥ जोति सबाइड़ीए त्रिभवण सारे राम ॥ घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ अलख अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईआ ॥ हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ हरि नामु अंम्रितु चाखि त्रिपती नानका उरधारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ॥मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ भेख भवनी हठु न जाना

नानका सचु गहि रहे॥१॥भिंनड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम॥निजघरि सूतड़ीए पिरमु जगाए राम ॥ नवहाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ॥तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ॥मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥२॥ जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ रहै अतीतु अपरंपरि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ ओहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरिधारिआ ॥३॥ महलि बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रैलोक नाथु पछाणए ॥ मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए॥ मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ ॥ साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ ॥४॥२॥

छंत बिलावलु महला ४ मंगल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनुसुखि समाणा राम ॥ गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥१॥ निमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ मे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥२॥ माणस जनमि हरि पाईऐ हरि रावण वेरा राम ॥ गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइ घणेरा राम ॥ जिन माणस जनमि न पाइआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥ ३ ॥ गुरि हरि प्रभु अगमु दृड़ाइआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥ भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ बिनु हरि नाम न जीवदे

जिउ जल बिनु मीना राम ॥ सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ सलोकु ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥१॥छंत॥ मेरा हरि प्रभ रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम॥ गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम॥ अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥१॥ हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम॥ जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥२॥ धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जां हरि प्रभ भाई राम ॥ अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥३॥ हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ धनु धंनु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ जिन वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उरधारी राम ॥ जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥४॥२॥४॥

बिलावलु महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरनपते ॥ सहजे समाईऐ गोबिंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥ १ ॥ भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ इक चिति इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिनंती मिलै हरि जसु लाहा ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥ २ ॥ साहा अटलु गणिआ पूरन

संजोगो राम ॥ सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाणीआं ॥ मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माणीआ ॥ मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करणकारण जोगो ॥ ३ ॥ भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ प्रभु घरि आइअड़ा गुरचरणी लागी राम॥गुरचरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुंनीआ ॥ मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे अहंमति मन की तिआगी ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी संत संगि लिव लागी ॥४॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि सुधा रसु अंमृतु भगति भरे भंडारा ॥ बिनवंति नानक बलिहारि वंञा पारब्रहम प्रान अधारा ॥ १ ॥ सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिस भावह इक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरण रज मनु पागीऐ ॥ भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत कतहू न धावह ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥२॥ बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अंकुरि उदोत जणाइआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइआ ॥ द्रसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥ ३ ॥ सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥४॥२॥

बिलावलु महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरंजनो ॥ लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो॥ होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ नानकु पइअंपै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥१॥ अंमृतु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ ओह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ मोहनी महा बचित्रि चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ गृह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ नानक पइअंपै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥२॥ मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तूही ॥ जै जै जइअंपहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ नानकु पइअंपै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥ ३ ॥ मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ मोहि चातृक तुम्ह बूंद तृपतउ मुखि परै ॥ मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ नानकु पइअंपै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥ ४ ॥ धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ हर हरा सुआमी सुखहगामी अनद मंगल रसु घणा ॥ नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुण भणा ॥ मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ नानकु पइअंपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरंपरा ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ५ छंत मंगल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ सुंदर सांति दइआल प्रभ सरब सुखानिधि पीउ ॥ सुखसागर

प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होवत इहु जीउ ॥ १ ॥ छंत ॥ सुख सागर प्रभु
पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ मान निमानु वञाईऐ हरि चरणी लागो
राम ॥ छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ नानक पउ
सरणाई रामराइ थिरु होइ सुहागो राम ॥१॥ सो प्रभु तजि कत लागीऐ
जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ लाज न आवै अगिआन मती दुरजन
बिरमाईऐ राम ॥ पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम
॥ नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥ २ ॥
स्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ प्रभु भगति
वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ भ्रमि मोही दूख न जाणही
कोटि जोनी बसना राम ॥ नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा
क्रम भसमा राम ॥३॥ लाइ बिरहु भगवंत संगे होइ मिलु बैरागनि राम
॥ चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ ईत ऊत नह
डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा
अटल सुहागनि राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि
खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ गुन गोविद सद गाईअहि
पारब्रहम कै रंगे राम ॥ सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥
नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥१॥ इकु तिलु प्रभू न
वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पि
चीन्हा राम ॥ बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥
नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥ २ ॥ किआ गुण ते
कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम॥सिमरि सिमरि नाराइणै भए पारगरामी
राम ॥ गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम ॥ नानक उधरे जपि
हरे सभ हू का सुआमी राम ॥ ३ ॥ रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे स
लोइण नीके राम ॥ प्रभ पेखत इछा पुनीआ मिलि साजन जी के राम ॥
अंमृत रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ नानक जलु जलहि
समाइआ जोती जोति मीके राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

बिलावल की वार महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरिउरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू हरि प्रभु आपि अगंमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥१॥ सलोकु म० ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सत संगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनंदु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ झखि झखि पवै झड़ि ॥ २ ॥ सलोक म० ३ ॥ ब्रहमु बिंदहि ते

ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ॥ नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ॥ गुरमुखि जनमु सफलु है जिसनो आपे लए मिलाइ ॥ नानक नदरी नदरि करे ता नामु धनु पलै पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सरब सुखु पाईऐ ॥ गुर पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥३॥ सलोक म० ३ ॥ सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ गुर का सबदु अंमृतु है सभ तृसना भुख गवाए ॥ हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए॥सचो दहदिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥१॥ म० ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥२॥ पउड़ी ॥ गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ निंदक दुसट बडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ किआ होवै किसही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥ ४ ॥ सलोक म० ३ ॥ धृगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि

फिरि आवै जाए ॥ कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ॥ जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ नामि रते जन सदा सुखु पाइनि जन नानक तिन बलि जाए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु॥ नानक गुरपरसादी एहु मनु तां तरै जा छोडै अहंकारु॥आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥२॥पउड़ी॥ जिथै जाईऐ जगत महि तिथै हरि साई ॥ अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई॥ कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई॥सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥५॥ सलोक म० ३ ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ अंदरु सीतलु सांति है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंमृतु खाणा पैन्हणा नानक नाइ वडिआई होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि गुणी निधानु ॥ सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ अंमृतु गुणी निधानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥ जो किछु हरि करावै सु आइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥ सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ सृसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीए ॥ हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥ ६ ॥ सलोक म० ३ ॥ अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ करमी सतिगुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुरमुखि सदा हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु

जपत सुखु पाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥ २ ॥ म० ३ ॥ मनमुख मैले मरहि गवार ॥ गुरमुखि निरमल हरि राखिआ उरधारि ॥ भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ दूजै भाइ सूते कबहु न जागहिमाइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुखका बीचार ॥ हरिनामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिसनो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥ ७ ॥ सलोक म० ३ ॥ इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ गुरपरसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ ॥ सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रैगुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन्ही गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ ओइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ जिसु धन कारणि चुगली करहि सो धनु चुगली हथि न आवै ओइ भावै तिथै जाहि ॥ गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै

न सकहि होरथै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥ ८ ॥ सलोक म० ३ ॥ गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ॥जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥१॥ म० ३॥ कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ॥ अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अंमृतु पिआउ ॥ मीठा बोले अंमृत बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लए अकै कोई किहु देवाए ऐहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ जिसनो सतिगुर नालि हरि सरधा लाए तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिसनो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ इसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बंनै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कु ंडा विचि काला कराइआ ॥ हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥९॥ सलोक म० ३ ॥ जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥१॥ म० ३ ॥ हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ ना इह मारी नं मरै ना इह हटि विकाइ॥गुर कै सबदि परजालीऐ ता इह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीमाणु ॥ पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिओनु सभना का अभिमानु॥जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिओसु सभु जहानु ॥ जि सतिगुर नो मिलि मंने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥ जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ पउदी भिति देखि कै सभि आइ पए सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना

किअहु मनहु गुमानु ॥१०॥ सलोक म० १॥ कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि॥नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥१॥ म० १॥ जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ॥काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अंमृत नामु निधानु कंठि उरिधारिआ ॥ नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥ ११ ॥ सलोक म० ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंनि ॥ पंच चोर तिना घरु मुहन्हि हउमै अंदरि संनि ॥ साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि ॥ जिन्ही अंमृतु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंनि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्हि ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्हि ॥ पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्हि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥२॥ पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥१२॥ सलोक म० ३ ॥ अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वढभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥ जिउ मीहि वुठै

गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि सांति तड़ आवै ॥ नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मंनै सु सभनां भावै ॥१३॥१॥सुधु॥

बिलावलु बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ की

१ ओं सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥ १ ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥ २ ॥ हरि के सेवक जो हरि भाए तिन की कथा निरारी रे ॥ आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥ ३ ॥ पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥ ४ ॥ १ ॥बिलावलु॥ बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥ १ ॥ मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मैं बउरा ॥ मैं बिगरिओ बिगरै मति अउरा ॥१॥ रहाउ ॥ आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥ २ ॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥३॥ सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ आपु पछानै त एकै जानै ॥४॥ अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ कहि कबीर रामै रंगि राता ॥५॥२॥ बिलावलु ॥ गृहु तजि बनखंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥ अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥ १ ॥ किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥ २ ॥

जग जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका॥इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका ॥३॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥ बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥१॥ हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥१॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ सात सूत इनि मुडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥२॥ सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ॥संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥३॥ घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ कहत कबीर सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥४॥४॥ बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥१॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥२॥५॥ बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥१॥ रहाउ ॥ अमर जानि संची इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥ १ ॥ संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥ २ ॥ ६ ॥ बिलावलु ॥ दरमादे ठाढे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी ॥ दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥१॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ कृपा भई है अपार ॥ कहि कबीर तुम सम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु ॥ डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥ १ ॥ आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ छोडि कपटु

नित हरि भजु बवरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह तू जाचहि सो त्रिभवन भोगी ॥ कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥ २ ॥ ८ ॥ बिलावलु ॥ इनि माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ धृगु तनु धृगु धनु धृगु इह माइआ धृगु धृगु मति बुधि फंनी ॥ इस माइआ कउ दृड़ु करि राखहु बांधे आप वचंनी ॥१॥ किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना ॥ २ ॥ ९ ॥ बिलावलु ॥ सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप॥परम जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥१॥ रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत कछू न दीसई नह दीसै जात॥जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥ २ ॥ मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥३॥१०॥ बिलावलु ॥ जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ जीवत सुंन समानिआ गुर साखी जागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ कासी फूटी पंडिता धुनि कहां समाई ॥१॥ त्रिकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥ २ ॥ आप आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥ ३ ॥ ११ ॥ बिलावलु ॥ चरन कमल जा कै रिदै वसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ मानौ सभ सुख नउनिधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गांठि जब खोलै देव ॥ बारंबार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥ १ ॥ जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥ कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥२॥१२॥

२.८.८०

बिलावलु वाणी भगत नामदेव जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥ दुख बिसारि सुखु अंतरि लीना ॥ १ ॥

गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥ राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥ जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥ २ ॥ १ ॥

बिलावलु बाणी रविदास भगत की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असटदसा सिधि कर तलै सभ कृपा तुमारी ॥ १ ॥ तू जानत मैं किछु नही भवखंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥ जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ १ ॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ २ ॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३॥२॥

बाणी सधने की रागु बिलावलु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नृप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ कामारथी सुआरथी वाकी पैज सवारी ॥१॥ तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥१॥रहाउ॥ एक बूंद जल कारने चातृकु दुखु पावै ॥ प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥ प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥ ३ ॥ मैं नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥ ४ ॥ १ ॥

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

रागु गौड चउपदे महला ४ घरु १ ॥ जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई॥हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥१॥ मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥१॥ रहाउ॥ जो दीसै माइआ मोह कुटंबु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन का वाहिआ कछु न वसाई ॥ मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ॥२॥ जे किछु आस अवर करहि पर मित्रो मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि

आई ॥ इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥ ३ ॥ आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि तृपताई ॥४॥ १ ॥ गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥ १ ॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥१॥रहाउ॥ जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्हरे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥ २ ॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उप करै दूखि सुखासा ॥ ३ ॥ तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अंति छडाए जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥ ४ ॥२॥ गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अनंदु सुखु अंतरि सांति सीतल मनु अपना॥जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिनके चरण मलहु हरि दसना ॥ २ ॥ सबदु

पछाणि राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥३॥ जिसते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥४॥३॥ गोड महला ४ ॥ जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुंभ कचाणु ॥ हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥ २ ॥ ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥ ३ ॥ ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जाकै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ ४ ॥४॥ गोड महला ४ ॥ हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईऐ ॥ सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभदू रखि लईऐ ॥१॥ मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईऐ ॥२॥ हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ निहकपट सेवा कीजै हरि केरी तां मेरे मन सरब सुख पईऐ ॥३॥ जिसदै वसि सभु किछु सो सभदू वडा सो मेरे मन सदा धिआईऐ ॥ जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लए छडईऐ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गोंड महला ४ ॥ हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ तृखावंतु बिनु नीर ॥ १ ॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे

मन अंतर की पीर ॥१॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै
सो भाई सो मेरा बीर ॥ २ ॥ मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के
ले सतिगुर की मति धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु
हरि दरसनि सांति सरीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सभु करता सभु भुगता ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सुनतो करता पेखत करता ॥ अदृसटो करता दृसटो करता ॥
ओपति करता परलउ करता ॥ बिआपत करता अलिपतो करता ॥१॥
बकतो करता बूझत करता ॥ आवतु करता जातु भी करता ॥ निरगुन
करता सरगुन करता ॥ गुरप्रसादि नानक समदृसटा ॥ २ ॥ १ ॥ गोंड
महला ५॥ फाकिओ मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिओ कुसंभाइले
॥ पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥ १ ॥ मन
समझु छोडि आवाइले ॥ अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै
जाइले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिओ तू लागि परिओ
कुटंबाइले ॥ जिउ पंखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि
धिआइले ॥ २ ॥ जैसे मीनु रसन सादि बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़
लोभाइले ॥ तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥ ३ ॥ होहु
क्रिपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्हरे जीअ जंताइले ॥ पावउ दानु सदा
दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥४॥२॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥
माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ बरतन कउ सभु किछु भोजन
भोगाइ ॥ सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइ ॥ १ ॥ पारब्रहम की
लागउ सेव ॥ गुर ते सुझै निरंजन देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि
कीए रंगि अनिक परकार ॥ ओपति परलउ निमख मझार ॥

जा की गति मिति कही न जाइ ॥ सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥२॥ आइ न जावै निहचलु धनी ॥ बे अंत गुना ता के केतक गनी ॥ लाल नाम जाकै भरे भंडार ॥ सगल घटा देवै आधार ॥३॥ सतिपुरखु जाको है नाउ ॥ मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ बाल सखाई भगतन को मीत ॥ प्रान अधार नानक हित चीत ॥४॥१॥३॥ गोंड महला ५॥ नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ नामो ही इसु मन का अधारु ॥ नामो ही चिति कीनी ओट ॥ नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥१॥ रासि दीई हरि एको नामु ॥ मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥१॥रहाउ॥ नामु हमारे जीअ की रासि ॥ नामो संगी जत कत जात ॥ नामो ही मनि लागा मीठा ॥ जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥ २ ॥ नामे दरगह मुख उजले ॥ नामे सगले कुल उधरे ॥ नामि हमारे कारज सीध ॥ नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥३॥ नामे ही हम निरभउ भए ॥ नामे आवन जावन रहे ॥ गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥४॥२॥४॥ गोंड महला ५ ॥ निमाने कउ जो देतो मानु ॥ सगल भूखे कउ करता दानु ॥ गरभ घोर महि राखनहारु ॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥ १ ॥ ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंकु राउ जा कै एक समानि ॥ कीट हसति सगल पूरान ॥ बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ जो किछु करै सु आपहि करै ॥ २ ॥ जा का अंतु न जानसि कोइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ घट घट घटि सभ घट आधारु ॥ ३ ॥ नाम रंगि भगत भए लाल ॥ जसु करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंगि जन रहे अघाइ ॥ नानक तिन जन लागै पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गोंड महला ५ ॥ जाकै संगि इहु मनु निरमलु ॥ जाकै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ जा कै संगि रिदै परगास ॥ १ ॥ से संतन हरि के मेरे मीत ॥ केवल नामु गाईऐ जा कै नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मंत्रि हरि हरि मनि वसै ॥ जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ जा कै कीरति निरमल सार ॥ जा की रेनु बांछै संसार ॥ २ ॥ कोटि पतित जा कै संगि

उधार ॥ एकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ सरब जीआं का जानै भेउ ॥ कृपा निधानु निरंजन देउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए कृपाल ॥ तब भेटे गुर साध दइआल ॥ दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ सूख सहज आनंद हरि नाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥ १ ॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥ अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥ २ ॥ गुरप्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ गुर किरपा ते मुगध मनु मानिआ ॥ ३ ॥ गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ गुरु परमेसुरु है भी होगु ॥ कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर ॥ गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ जाकी कोइ न मेटै दाति ॥ १ ॥ गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥रहाउ॥ गुर चरणी जाका मनु लागै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ताका भागै ॥ गुर की सेवा पाए मानु ॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥ २ ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का सेवकु दहदिसि जापै ॥ ३ ॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ गुर चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥ गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ सरब पूज चरन गुर सेउ ॥ १ ॥ गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ गुरू बिना मै नाही होरु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ अंधकार महि गुर

मंत्रु उजारा॥गुर कै संगि सगल निसतारा ॥३॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी
॥ गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ गुर का सबदु न मेटै कोइ ॥ गुरु नानकु
नानकु हरि सोइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ९ ॥ गोंड महला ५ ॥ राम राम संगि
करि बिउहार ॥ राम राम राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतनु
गाइ ॥ रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥ १ ॥ संत जना मिलि बोलहु
राम ॥ सभ ते निरमल पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम राम धनु संचि
भंडार ॥ राम राम राम करि आहार ॥ राम राम वीसरि नही जाइ ॥
करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥ २ ॥ राम राम राम सदा सहाइ ॥ राम
राम राम लिव लाइ ॥ राम राम जपि निरमल भए ॥ जनम जनम के
किलबिख गए ॥ ३ ॥ रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ उचरत राम भै
पारि उतारै ॥ सभ ते ऊच राम परगास ॥ निसि बासुर जपि नानक
दास ॥ ४ ॥ ८ ॥ १० ॥ गोंड महला ५ ॥ उन कउ खसमि कीनी
ठाकहारे ॥ दास संग ते मारि बिदारे ॥ गोबिंद भगत का महलु न
पाइआ ॥ राम जना मिलि मंगलु गाइआ ॥ १ ॥ सगल सृसटि के
पंच सिकदार ॥ राम भगत के पानीहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत पास
ते लेते दानु ॥ गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ लूटि लेहि साकत
पति खोवहि ॥ साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥ २ ॥ पंच पूत
जणे इक माइ ॥ उतभुज खेलु करि जगत विआइ ॥ तीनि गुणा कै
संगि रचि रसे ॥ इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥ ३ ॥ करि किरपा
जन लीए छडाइ ॥ जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ कहु नानक भगति
प्रभ सारु ॥ विनु भगती सभ होइ खुआरु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ११ ॥ गोंड
महला ५ ॥ कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ
॥ जपि जपि अंमृत नामु अघाए ॥ संत प्रसादि सगल फल पाए ॥
॥ १ ॥ राम जपत जन पारि परे ॥ जनम जनम के पाप हरे ॥ १ ॥
रहाउ ॥ गुर के चरन रिदै उरिधारे ॥ अगनि सागर ते उतरे पारे ॥
जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥२॥
थान थनंतरि एको सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ करि
किरपा जाकउ मति देइ ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥ ३ ॥

जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ ॥ ४ ॥ १० ॥ १२ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥ १ ॥ इन बिधि रमहु गोपाल गुोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥ २ ॥ जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ आगै दरगह पावै मानु ॥ मनु तनु निरमल होइ निहालु ॥ रसना नामु जपत गोपाल ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ साधू की मनु मंगै रवाला ॥ होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥ ४ ॥ ११ ॥ १३ ॥ गोंड महला ५ ॥ धूप दीप सेवा गोपाल ॥ अनिक बार बंदन करतार ॥ प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ गुर सुप्रसंन भए वडभागि ॥ १ ॥ आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रमत भए आनंद ॥ पारब्रहम पूरन बखसंद ॥ करि किरपा जन सेवा लाए ॥ जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥ २ ॥ करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ साध संगि जपीऐ हरि नामु ॥ सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥ ३ ॥ राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ पंच दूत भागे बिकराल ॥ जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ नानक का अंगु कीआ करतारि ॥ ४ ॥ १२ ॥ १४ ॥ गोंड महला ५ ॥ करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गुोबिंद ॥ जीअ जंत सगले बखसिंद ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि सरब समाही ॥ अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारे ॥ २ ॥ अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बांछत पूरन फल पाए ॥ ३ ॥ करन

कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥ ४ ॥ १३ ॥ १५ ॥ गोंड महला ५ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारा चीत ॥ मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥१॥ हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ वडभागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जम कालु ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥२॥ हरि गुण गावै संत प्रसाद ॥ काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ पूरे गुर का पूरन मंत ॥३॥ हरि धनु खाटि कीए भंडार ॥ मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ हरि चरणी नानक मनु लागा ॥ ४ ॥ १४ ॥ १६ ॥ गोंड महला ५ ॥ भवसागर बोहिथ हरि चरण ॥ सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥ १ ॥ तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमृति सासत्र बेद पुराण ॥ पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ जोगी जती बैसनो रामदास ॥ मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥२॥ करण पलाह करहि सिव देव ॥ तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ जग महि विरले केई केइ ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुण किछहू नाहि ॥ सरब निधान तेरी द्रसटी माहि ॥ नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ करि किरपा दीजै गुरदेव ॥ ४ ॥ १५ ॥ १७ ॥ गोंड महला ५ ॥ संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ संत उधारउ तत खिण तालि ॥१॥ सोई संतु जि भावै राम ॥ संत गोबिंद कै एकै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ संत का दोखी राज ते टालि ॥ २ ॥ संत की निंदा करहु नी कोइ ॥ जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ झख मारउ सगल संसारु ॥ ३ ॥ प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ जीउ पिंडु सभु

तिसकी रासि ॥ नानक कउ उपजी परतीति ॥ मनमुख हार गुरमुख सद
जीति ॥४॥१६॥१८॥ गोंड महला ५ ॥ नामु निरंजनु नीरि नराइण ॥
रसना सिमरत पाप बिलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण सभ माहि
निवास ॥ नाराइण घटि घटि परगास ॥ नाराइण कहते नरकि न
जाहि ॥ नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥ १ ॥ नाराइण मन माहि
अधार ॥ नाराइण बोहिथ संसार ॥ नाराइण कहत जमु भागि पलाइण
॥ नाराइण दंत भाने डाइण ॥ २ ॥ नाराइण सद सद बखसिंद ॥
नाराइण कीने सूख अनंद ॥ नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ नाराइण
संत को माई बाप ॥ ३ ॥ नाराइण साध संगि नराइण ॥ बारं बार
नाराइण गाइण ॥ बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ नाराइण ओट
नानक दास गही ॥ ४ ॥ १७ ॥ १९ ॥ गोंड महला ५ ॥ जाकउ
राखै राखनहारु ॥ तिसका अंगु करे निरंकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात
गरभ महि अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साध
संगि जपै निरंकारु ॥ निंदक कै मुहि लागै छारु ॥ १ ॥ राम कवचु
दास का संनाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे
सो जाइ ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥ २ ॥ जो जो सरणि पइआ
हरि राइ ॥ सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ जे को बहुतु करे
अहंकारु ॥ ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥ ३ ॥ है भी साचा
होवणहारु ॥ सदा सदा जाईं बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि
॥ नानक के प्रभ प्राण अधार ॥४॥१८॥२०॥ गोंड महला ५॥ अचरज
कथा महा अनूप ॥ आतमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥ ना इहु
बूढा ना इहु बाला ॥ ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ ना इहु
बिनसै ना इहु जाइ ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥ १ ॥ ना इसु
उसनु नही इसु सीतु ॥ ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ ना इसु
हरखु नही इसु सोगु ॥ सभु किछु इसका इहु करनै जोगु ॥ २ ॥
ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ इहु अपरंपरु होता आइआ ॥ पाप
पुंन का इसु लेपु न लागै ॥ घट घट अंतरि सद ही जागै ॥३॥ तीनि
गुणा इक सकति उपाइआ ॥ महा माइआ ता की है छाइआ ॥ अछल

अछेद अभेद दइआल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ ता की गति मिति कछू न पाइ॥ नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥४॥१९॥२१॥ गोंड महलु ५ ॥ संतन कै बलिहारै जाउ ॥ संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ संत सरणि वडभागी पए ॥१॥ राम जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ गुरप्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जब होइ दइआल ॥ साधू जन की करै रवाल ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ राम रतनु वसै मनि आइ ॥२॥ सफलु जनमु तां का परवाणु॥ पारब्रहमु निकटि करि जाणु॥ भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ चरन कमल जन का आधारु ॥ गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ दास जना की मनसा पूरि ॥ नानक सुखु पावै जन धूरि ॥४॥२२॥२८॥

रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ करि नमसकार पूरे गुरदेव ॥ सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ आठ पहर नाम रंगि राता ॥१॥ गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ अपने दास कउ राखनहार ॥१॥रहाउ॥ पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ दुसट अहंकारी मारि पचाए ॥ निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ जै जैकारु करै सभु लोगु ॥ २ ॥ संतन कै मनि महा अनंदु ॥ संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ संगति के मुख ऊजल भए ॥ सगल थान निंदक के गए ॥३॥ सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥ ४ ॥ जन की निंदा करै न कोइ ॥ जो करै सो दुखीआ होइ ॥ आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥ ५ ॥ जन निरवैर निंदक अहंकारी ॥ जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥६॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ सति बचन

वरतहि हरि दुआरे ॥ जैसा करे सु तैसा पाए ॥ अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥ ७ ॥ नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ करि किरपा राखहु जन केरी ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥ ८ ॥ १ ॥ २६ ॥

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घर १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥१॥ बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥१॥रहाउ॥ संतन सिउ बोले उपकारी॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥२॥ बोलत बोलत बढहि बिकारा॥ बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥३॥ कहु कबीर छूछा घटु बोलै॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥४॥१॥गोंड॥ नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ पसू मरै दस काज सवारै ॥१॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ बाबा रे ॥१॥रहाउ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥२॥ कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै ॥३॥२॥गोंड॥ आकासि गगनु पातालि गगनु है चहुदिसि गगनु रहाइले ॥ आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥१॥ मोहि बैरागु भइओ ॥ इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ततु कहा ते कीनु रे ॥ करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥ २ ॥ हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥३॥३॥

रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥१॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो

हसती तोरु ॥१॥ रहाउ ॥ रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वाकै रिदै बसै भगवानु ॥२॥ किआ अपराधु संत है कीना ॥ बांधि पोट कुंचर कउ दीना ॥ कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ बूझी नही काजी अंधिआरै ॥३॥ तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥४॥१॥४॥ गोंड ॥ ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ ना इहु जती कहावै सेउ ॥ ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ ना इसु माइ न काहू पूता ॥ १ ॥ इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ ता का अंत न कोऊ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ न इसु पिंडु न रकतू राती ॥ ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥ २ ॥ ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥३॥ गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर मिटै न मंसु ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ गोंड ॥ तूटे तागे निखुटी पानि ॥ दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ कूच बिचारे फूए फाल॥इआ मुंडीआ सिर चढिबो काल ॥१॥ इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई॥आवत जात नानक सर होई ॥१॥ रहाउ ॥ तुरी नारि की छोडी बाता ॥ राम नाम वा का मनु राता ॥ लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥ २ ॥ इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ हम कउ साथरु उन कउ खाट ॥ मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥३॥ मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ ए मुंडीआ बूडत को टेक ॥ सुनि अंधली लोई बे पीरि ॥ इन्ह मुंडीअनि भजि सरनि कबीर ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ गोंड ॥ खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ उसु रखवारा अउरो होवै ॥ रखवारे का होइ बिनास ॥ आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥ १ ॥ एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ सगले जीअ जंत की नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि गलि सो है हारु ॥ संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ संत की ठिठकी फिरै बिचारी

॥ २ ॥ संत भागि ओह पाछै परै ॥ गुरपरसादी मारहु डरै ॥ साकत
की ओह पिंड पराइणि ॥ हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥ ३ ॥ हम
तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ ॥ कहु
कबीर अब बाहरि परी ॥ संसारै कै अंचलि लरी ॥४॥४॥७॥ गोंड
॥ ग्रिहि सोभा जाकै रे नाहि ॥ आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ वाकै अंतरि
नही संतोखु ॥ बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥ १ ॥ धनु सोहागनि महा
पवीत ॥ तपे तपीसर डोलै चीत ॥१॥ रहाउ ॥ सोहागनि किरपन की
पूती ॥ सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ साधू कै ठाढी दरबारि ॥ सरनि
तेरी मोकउ निसतारि ॥ २ ॥ सोहागनि है अति सुंदरी ॥ पग नेवर
छनक छनहरी ॥ जाउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ नाहि त चली बेगि
उठि नंगे ॥ ३ ॥ सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ दस अठ पुराण तीरथ
रस कीआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥ बडे भूपति राजे है छेधे ॥४॥
सोहागनि उरवारि न पारि ॥ पांच नारद कै संगि बिधवारि ॥ पांच
नारद के मिटवे फूटे ॥ कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥५॥५॥८॥ गोंड ॥
जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ कुंभ
बिना जलु ना टीकावै ॥ साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥१॥ जारउ तिसै
जु रामु न चेतै ॥ तन मन रमत रहै महि खेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे
हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ घुंडी
बिनु किआ गंठि चड़ाईऐ ॥ साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥ २ ॥ जैसे
मात पिता बिनु बालु न होई ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोई ॥ घोर
बिना कैसे असवार ॥ साधू बिनु नाही दरवार ॥ ३ ॥ जैसे बाजे बिनु
नही लीजै फेरी ॥ खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ कहि कबीर
एकै करि करना ॥ गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥४॥६॥९॥
गोंड ॥ कूटन सोइ जु मन कउ कूटै ॥ मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥
कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥
१ ॥ कूटनु किसै कहहु संसार ॥ सगल बोलन के माहि बीचार ॥ १ ॥
रहाउ ॥ नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ झूठि न पतीऐ परचै
साचै ॥ इसु मन आगे पूरै ताल ॥ इसु नाचन के मन रखवाल ॥ २ ॥

बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ पांच पलीतह कउ परबोधै ॥ नउ नाइक की भगति पछानै ॥ सो बाजारी हम गुर माने ॥ ३ ॥ तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ धंनु गुरदेव अति रूप बिचखन ॥४॥७॥१०॥गोंड॥ धंनु गुपाल धंनु गुरदेव ॥ धंनु अनादि भूखे कवल टहकेव ॥ धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी॥तिन कउ मिलिबो सारिगपानी ॥१॥ आदि पुरख ते होइ अनादि ॥ जपीऐ नामु अंन कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ जपीऐ नामु जपीऐ अंनु ॥ अंभै कै संगि नीका वंनु॥अंनै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी॥ ३॥ अंनै बिना न होइ सुकालु ॥ तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धंनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११ ॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥१॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥१॥रहाउ॥ गइआ पिंडु भरता ॥ बनारसि असि बसता॥ मुखि बेद चतुर पड़ता ॥२॥ सगल धरम अछिता॥गुर गिआन इंद्री दृड़ता ॥ खटु करम सहित रहता ॥३॥ सिवा सकति संबादं ॥ मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ प्रान तजे वाको धिआनु न जाए ॥ १ ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ राम छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥रहाउ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना गढते हिरै सुनारा ॥ २ ॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ कउडा डारत हिरै जुआरी ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥ ४ ॥ २ ॥ गोंड ॥ मोकउ तारि ले रामा तारि ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥

नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ नर ते उपजि
सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥ १ ॥ जहा जहा धूअ नारदु
टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की
निज मति एह ॥ २ ॥ ३ ॥ गोंड ॥ मोहि लागती ताला बेली ॥ बछरे
बिनु गाइ अकेली ॥ १ ॥ पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ ऐसे राम नामा
बिनु बापरो नामा ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ थन
चोखता माखनु घूटला ॥ २ ॥ नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ गुरु भेटत
अलखु लखाइआ ॥३॥ जैसे बिखै हेत पर नारी॥ ऐसे नामे प्रीति मुरारी
॥ ४ ॥ जैसे तापते निरमल घामा ॥ तैसे राम नामा बिनु बापरो
नामा ॥ ५ ॥ ४ ॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि हरि करत मिटे सभि भरमा॥
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो
हरि अंधुले की लाकरी ॥१॥ हरए नमसते हरए नमह ॥ हरि हरि करत
नही दुखु जमह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरनाखस हरे परान ॥ अजैमल
कीओ बैकुंठहि थान॥सूआ पड़ावत गनिका तरी॥सो हरि नैनहु की पूतरी
॥२॥हरिहरि करत पूतना तरी॥बाल घातनी कपटहि भरी॥सिमरन द्रोपद
सुत उधरी ॥ गऊतम सती सिला निसतरी ॥३॥ केसी कंस मथनु जिनि
कीआ ॥ जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु
जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥ गोंड ॥ भैरउ भूत सीतला धावै ॥
खर बाहन उहु छार उडावै ॥ १ ॥ हउ तउ एक रमईआ लैहउ ॥ आन
देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥ २ ॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि
होइ अउतरै ॥ ३ ॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुकति की
बरीआ कहा छपानी ॥४॥ गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै
नामा इउ कहै गीता ॥ ५ ॥ २ ॥ बिलावलु गोंड ॥ आजु नामे
बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ पांडे तुमरी गाइत्री

लोधे का खेतु खाती थी ॥ लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥१॥ पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ मोदी के घर खाणा पाका वाका लड़का मारिआ था ॥२॥ पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥ ३ ॥ हिंदू अंन्हा तुरकू काणा ॥ दुहां ते गिआनी सिआणा ॥ हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२॥ एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुगतारि ॥ ३ ॥ उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥ गोंड ॥ जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै ॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥ साध का निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिमृति स्रवनी सुनै ॥ करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥ करै निंद बहु जोनी हांढै ॥३॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४॥२॥

रामकली महला १ घरु १ चउपदे ॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥१॥ न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाजपते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥ २ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलंती आई ॥३॥ न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला १ ॥ सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ जह जह देखा तह नरहरी ॥१॥ जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउकरि उतरउ पारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥ २ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ आपे

सरब रहिआ भरपूरि ॥ सतगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ जह देखा तह
रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी
॥ प्रणवति नानक दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥४॥२॥ रामकली
महला १ ॥ जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु
लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥ १ ॥
किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ नह मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु
दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ जलु खाई
पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥ २ ॥ किंते नामा अंतु
न जाणिआं तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ ऊचा नही कहणा मन महि
रहणा आपे जाणै आपि करे ॥ ३ ॥ जब आसा अंदेसा तब ही किउ
करि एकु कहै ॥ आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥४॥
इन बिधि सागरु तरीऐ॥ जीवतिआ इउ मरीऐ ॥१॥रहाउ दूजा ॥४॥३॥
रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे
॥ पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥ १ ॥ बाबा गोरखु
जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥१॥रहाउ॥
पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ मरण जीवण
कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥ २ ॥ सिध साधिक अरु जोगी जंगम
पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे
॥ ३ ॥ कागदु लूणु रहै घृत संगे पाणी कमलु रहै ॥ ऐसे भगत
मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली
महला १ ॥ सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पंच करे नह डोलै
॥ ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥ १ ॥
सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै॥होवै सु तृपति संतोखि अमुलै॥
धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥
२ ॥ नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥ सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥
आसा माहि निरासु बलाए ॥ निहचउ नानक करते पाए ॥ ३ ॥
प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चेले की संधि मिलाए ॥

दीखिआ दारू भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥ ४॥
५ ॥ रामकली महला १ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै
मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥१॥
गुर तारि तारणहारिआ ॥ देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ
बलिहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु
सिधु जिनी धिआइआ ॥ परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन
कउ आइआ ॥ २ ॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा
॥ गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥३॥ ६ ॥ रामकली
महला १ ॥ सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥ तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥
अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥ १ ॥ ऐसा
दीवा नीरि तराइ ॥ जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ हछी मिटी
सोझी होइ ॥ ता का कीआ मानै सोइ ॥ करणी ते करि चकहु ढालि ॥
ऐथै ओथै निबही नालि ॥ २ ॥ आपे नदरि करे जा सोइ ॥ गुरमुखि
बिरला बूझै कोइ ॥ तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ पाणी मरै न
बुझाइआ जाइ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥३॥ डोलै वाउ न वडा होइ ॥
जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न
पाईआ गणी सहंस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ नानक सो पारंगति
होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ रामकली महला १ ॥ तुधनो निवणु मंनणु तेरा
नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता
सुणि सदि बहाले पासि ॥ १ ॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी
दरगह साचा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ तू
देवहि मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै
छोडी कीमति पाइ ॥ २ ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ अपनी
कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ हरिराइ ॥ ना को आवै
ना को जाइ ॥ ३ ॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न
पाइआ ॥ सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥
४॥८॥ रामकली महला १ ॥ सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु
बुझै बिधि जाणै॥उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै॥१॥

ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ तिसते मुकति परमगति होई ॥१॥ रहाउ ॥
दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ ताकी गति
मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥२॥ पुरख महि नारि नारि
महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ धुनि महि धिआनु धिआन महि
जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी॥३॥मन महि जोति जोति महि मनूआ
पंच मिले गुर भाई॥नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव
लाई ॥४॥९॥ रामकली महला १ ॥ जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ ता
हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम पिआरी ॥ जो गुरसबदी बीचारी
॥ १ ॥ सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती
लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥१॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे अनहद घोरा
॥ मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरै सचु समाइआ ॥ गुरु आदि
पुरखु हरि पाइआ ॥ २ ॥ सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ मनु राता सारिग
पाणी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥ ३ ॥
जह आपु गइआ भउ भागा ॥ गुर चरणी सेवकु लागा ॥ गुरि सतगुरि
भरमु चुकाइआ ॥ कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥४॥१०॥ रामकली
महला १ ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुधिआ दुसट जलै दुखु
आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ गुरमति भगति पावै
जनु कोई ॥१॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ एक दृसटि एको करि
देखिआ भीखिआ भाइ सबदि तृपतासै ॥१॥ रहाउ ॥ पंच बैल गडीआ
देह धारी ॥ रामकला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी गाडो सिर भारि ॥
लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥ २ ॥ गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥
दुखु सुखु सम करणा सोग बिओगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी
॥ असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥३॥ सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥
कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ नानक
राम भगति जन तरणा ॥ ४ ॥ ११ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली महला ३ घरु १ ॥

सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥
सतिजुगि धरमु पैर है चारि ॥ गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥ १ ॥
जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ जि नामि लागै सो मुकति होवै
गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रेतै इक कल कीनी
दूरि ॥ पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ गुरमुखि बूझै सोभा
होई ॥ अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥ २ ॥ दुआपुरि दूजै
दुबिधा होइ ॥ भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ दुआपुरि धरमि दुइ पै
रखाए ॥ गुरमुखि होवै त नामु दृड़ाए ॥ ३ ॥ कलजुगि धरम कला
इक रहाए ॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ माइआ मोहु अति
गुबारु ॥ सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥ ४ ॥ सभ जुगि महि साचा एको
सोई ॥ सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ साची कीरति सचु सुखु होई ॥
गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥ ५ ॥ सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥
नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥६॥१॥

रामकली महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जेवड भाग होवहि वडभागी
ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि
समावै ॥१॥ गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव
लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ हीरा रतन जवेहर
माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ जिसु वडभागु होवै वड मसतकि
तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥ २ ॥ रतनु जवेहरु लालु हरि नामा
गुरि काढि तली दिखलाइआ॥भागहीण मनमुखि नही लीआ तृण ओलै
लाखु छपाइआ ॥ ३ ॥ मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतिगुरु
सेवा लाए ॥ नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाए ॥४॥
१॥ रामकली महला ४॥ राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा

सुनाइ ॥ दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥१॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २५.९.२० जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ दरसनु संतु देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥ ३ ॥ धृगु धृगु नर निंदक जिन जन नही भाए हरि के सखा सखाइ ॥ से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥ ४ ॥ दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥१॥ राम मोकउ हरि जन मेलि मनि भावै॥ अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ो बोलि कूड़ो फलु पावै ॥ ३ ॥ मोकउ धारि कृपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ हउ काटउ काटि वाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ४ ॥ जेवड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ हरि जन अंमृत कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥१॥ राम मोकउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि नुखि लाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरखु धिआईऐ ॥ २ ॥ सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥३॥ बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु

कराईऐ ॥४॥४॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुर दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ॥ हम चेरी होइ लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइआ ॥१॥ राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥१॥ रहाउ॥ मेरे इकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइआ ॥ धनु धनु वडभाग गुर सरणी आए हरि गुर मिलि दरसनु पाइआ ॥२॥ मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइआ ॥३॥ मोकउ जग जीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइआ ॥४॥ ५ ॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दाता वडा वड पुरखु हैं जितु मिलिऐ हरि उरधारे ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अंमृत नामु समारे ॥ १ ॥ राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वडभाग हमारे ॥१॥रहाउ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे॥ हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥२॥ हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरिधारे ॥ जेवडभाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे॥३॥ हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥४॥६॥

रागु रामकली महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगुणु न बीचारहु कोई ॥ माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥ १ ॥ मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥

जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥ २ ॥ मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥ जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥ १ ॥ संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥ २ ॥ भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥ ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥ १ ॥ इह बिधि है मनु जोगनी ॥ मोह सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी॥आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥ २ ॥ नह सिवसकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥ ३ ॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अंभै अंभु मिलोगनी ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ ॥ त्रैगुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अंम्रित संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥१॥ अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥१॥ रहाउ ॥ मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥ २ ॥ सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति पेआ

जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥ ३ ॥ ऐसा रसु अंमृतु मनि चाखिआ तृपति रहे आघाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी सतिगुर की सरणाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला ५ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै वैरी सगले साधे ॥ जिनि वैरी है इहु जगु लुटिआ ते वैरी लै बाधे ॥ १ ॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥ २ ॥ पूरन होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥ ३ ॥ वरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला ५ ॥ तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥ १ ॥ एकै एकै एक तूही ॥ एकै एकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥ २ ॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥ ३ ॥ तुम पूरन पूरि रहे संपूरन हम भी संगि अघाए ॥ मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥ १ ॥ राम को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥२॥ चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ भिंन भिंन होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥ ३ ॥ घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ एकि नचावहि एकि

भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु भेटै पूरा ॥४॥७॥ रामकली महला ५ ॥ ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ एका देसी एक दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ एका सुरति एका ही सेवा एको गुर ते जापै ॥१॥ भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ राम रमा रामा गुन गाउ ॥ छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ फेरी फेरु न होवै कबही एकु सबदु बंधि पालै ॥२॥ नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ सहज अनंद दिखावै भावै ॥ एहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥३॥ जेको अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ साध संगति की जावउ टेक ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥ ४ ॥ ८ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ १ ॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥१॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥ २ ॥ कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥३॥ कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥४॥ कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥ ५ ॥ ९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवनै महि पवनु समाइआ ॥ जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ माटी माटी होई एक ॥ रोवणहारे की कवन टेक ॥१॥ कउनु मुआ रे कउनु मूआ॥ ब्रहमगिआनी मिलि करहु बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ अगली किछु खबरि न पाई ॥ रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ भरम मोह के बांधे बंध ॥ सुपनु भइआ भखलाए अंध ॥२॥ इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ आवत जावत हुकमि अपारि ॥ नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ नह बिनसै अबिनासी होगु ॥ ३ ॥ जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ रामकली महला ५ ॥ जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ राम नाम

सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महाकालु ॥१॥रहाउ॥ कोटि जनम भ्र भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ वडै भागि साध संगु पाइओ ॥१॥ बिनु गुर पू नाही उधारु ॥ बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ॥२॥११॥

रागु रामकली महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ खटु भ एका बात वखानहि ॥ दसअसटी मिलि एको कहिआ ॥ ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥१॥ किंकुरी अनूप वाजै ॥ जोगीआ मतवारो रे ॥१॥ रहाउ॥ प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ तृतीए महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ एकु रहिआ तो एकु दिखाइआ ॥ २ ॥ एकै सूति पराए मणीए ॥ गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ खिंचिआ सूतु त आ थाइ ॥ ३ ॥ चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ तह बिखं थान अनिक खिड़कीआ ॥ खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥४॥ इउ किंकुरी आनूपु वाजै ॥ सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२ ॥ रामकली महला ५ ॥ तागा करि कै लाई थिगली ॥ लउ नाड़ी सूआ है असती॥ अंभै का करि डंडा धरिआ॥किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥१॥ जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ तेरी खिंथा दो दिहाई ॥१॥ रहाउ ॥ गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ मागहि टूका तृपति न पावै ॥ नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥ २ ॥ चलचित जोगी आसणु तेरा ॥ सिङी वाजै नित उदासेरा ॥ गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥ ३ ॥ जिसनो होआ नाथु कृपाला ॥ रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥ ४ ॥ इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥ १३॥ रामकली महला ५ ॥ करन करावन सोई ॥ आन न दीसै कोई ॥ ठाकुर मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥ १ ॥ ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

निरमल जोति अंमृतु हरि नाम ॥ पीवत अमर भए निहकाम॥ तनु मनु
सीतलु अगनि निवारी ॥ अनद रूप प्रगटे संसारी ॥ २ ॥ किआ देवउ
जा सभु किछु तेरा ॥ सद बलिहारि जाउ लख बेरा॥तनु मनु जीउ पिंडु
दे साजिआ ॥ गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥ ३ ॥ खोलि किवारा
महलि बुलाइआ ॥ जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ कहु नानक सभु
पड़दा तूटा ॥ हउ तेरा तू मै मनि वूठा ॥४॥३॥१४॥ रामकली महला
५ ॥ सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ अंमृतु नामु दीओ मुखि देव ॥
सगली चिंता आपि निवारी ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥ १ ॥
काज हमारे पूरे सतगुर ॥ बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥ १ ॥ रहाउ ॥
महिमा जा की गहिर गंभीर ॥ होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ जाके
बंधन काटे राइ ॥ सो नरु बहुरि न जोनी पाइ ॥ २ ॥ जाकै अंतरि
प्रगटिओ आप ॥ ता कउ नाही दूख संताप ॥ लालु रतनु तिसु पालै
परिआ ॥ सगल कुटंब ओहु जनु लै तरिआ ॥ ३ ॥ ना किछु भरमु न
दुबिधा दूजा॥एको एकु निरंजन पूजा॥जत कत देखउ आपि दइआल ॥
कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥४॥४॥१५॥ रामकली महला ५ ॥ तन ते
छुटकी अपनी धारी ॥ प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ जो किछु करै
सु मनि मेरै मीठा ॥ ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥१॥ अब मोहि जानी
रे मेरी गई बलाइ ॥ बुझि गई तृसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ
समझाइ ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा राखिओ गुरि सरना ॥ गुरि पकराए
हरि के चरना ॥ बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ गुर पारब्रहम एकै ही
जाने ॥२॥ जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ प्रभ मेरे को सगल निवास
॥ ना को दूतु नही बैराई ॥ गलि मिलि चाले एकै भाई ॥ ३ ॥ जाकउ
गुरि हरि दीए सूखा ॥ ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ आपे आपि
सरब प्रतिपाल ॥ नानक रातउ रंगि गोपाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥
रामकली महला ५ ॥ मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ हिरदै
रामु नही पूरन रहत ॥ उपदेसु करे करि लोक दृड़ावै ॥
अपना कहिआ आपि न कमावै ॥ १ ॥ पंडित बेदु बीचारि
पंडित ॥ मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै

राखिओ सालगिरामु ॥ मनु कीनो दहदिस बिस्रामु ॥ तिलकु चरा
पाई पाइ ॥ लोकु पचारा अंधु कमाइ ॥ २ ॥ खटु करमा अरु आसणु
धोती ॥ भागठि गृहि पड़ै नित पोथी ॥ माला फेरै मंगै बिभूत ॥ इह
बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥ ३ ॥ सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ त्रै
गुण की ओसु उतरी माइ ॥ चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस
की सरणी पाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन
नही आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ताके
पानीहार ॥ जा कउ मइआ भई करतार ॥ १ ॥ जिसहि सहाई होइ
भगवान ॥ अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करता
राखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअंत महिमा ताकी
केतक बरन ॥ बलि बलि जाईऐ ताके चरन ॥ २ ॥ तिन ही कीआ जपु
तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि
महि परवानु ॥ जाकउ ठाकुरि दीआ मानु ॥ ३ ॥ साध संगि मिलि
भए प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास
॥ नानक होए दासनि दास ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ रामकली महला ५ ॥
दोसु न दीजै काहु लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥ आपन करम आपे
ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध ॥ १ ॥ ऐसी जानी संत जनी ॥
परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ
बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥ राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम
बिना होइ जासी धूर ॥ २ ॥ भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ संगि नाही
रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही
करत बिहानी ॥ ३ ॥ हरि का नामु अंम्रितु कलि माहि ॥ एहु निधाना
साधू पाहि ॥ नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ
तिन ही डीठा ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पंच
सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद वाजे अचरज बिसमाद ॥ केल
करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम पूरन निरजोग ॥ १ ॥ सूख सहज
आनंद भवन ॥ साध संगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही
जनम मरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि

ओहु बिस्राम ॥भोजनु भाउ कीरतन आधारु॥निहचल आसनु बे सुमारु ॥
२॥ डिगि न डोलै कतहू धावै ॥ गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ भ्रम
भै मोह न माइआ जाल ॥ सुंन समाधि प्रभू किरपाल ॥३॥ ता का अंतु
न पारावारु ॥ आपे गुपतु आपे पासारु ॥ जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु
॥ कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥४॥९॥२०॥ रामकली महला ५ ॥
भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ॥ संगति करत संतोखु मनि पाइआ
॥ संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ अनिक बार संतह डंडउत ॥ १ ॥ इहु
मनु संतन कै बलिहारी ॥जाकी ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपाधारी
॥१॥ रहाउ ॥ संतह चरण धोइ धोइ पीवा॥संतह दरसु पेखि पेखि जीवा
॥संतह की मेरै मनि आस॥ संत हमारी निरमल रासि ॥२॥ संत हमारा
राखिआ पड़दा ॥ संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ संतह संगु दीआ
किरपाल ॥ संत सहाई भए दइआल ॥३॥ सुरति मति बुधि परगासु ॥
गहिर गंभीर अपार गुणतासु ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ नानक
संतह देखि निहाल ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरै
काजि न गृहु राजु मालु ॥ तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ इसट मीत
जाणु सभ छलै ॥ हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥ १ ॥ राम नाम गुण
गाइले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ हरि सिमरत जमु कछु न
कहै ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ सुइना रुपा माटी
दाम ॥ गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा
॥ २ ॥ करि करि थाके वडे वडेरे ॥ किनही न कीए काज माइआ पूरे
॥ हरि हरि नामु जपै जनु कोइ ॥ ता की आसा पूरन होइ ॥ ३ ॥
हरि भगतन को नामु अधारु ॥ संती जीता जनमु अपारु ॥ हरि संतु
करे सोई परवाणु ॥ नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥
रामकली महला ५ ॥ सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ तेरै काजि न
अवरा जोग ॥ करि अहंकारु होइ वरतहि अंध ॥ जम की जेवड़ी तू
आगै बंध ॥ १ ॥ छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ ईहा बसना राति
मूड़े ॥ माइआ के माते तै उठि चलना ॥ राचि रहिओ तू
संगि सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥

भरि जोबनि लागा दुरगंध ॥ तृतीअ बिवमथा सिचे माइ ॥ बिरधि
भइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥२॥ चिरंकाल पाई द्रुलभ देह ॥ नाम
बिहूणी होई खेह ॥ पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ तिसहि न बूझै जिनि एह
सिरी ॥३॥ सुणि करतार गोविंद गोपाल॥ दीन दइआल सदा किरपाल
॥ तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ बखसि मिलावहु नानक जग अंध
॥४॥१२॥२३॥ रामकली महला ५ ॥ करि संजोगु बनाई काछि ॥
तिसु संगि रहिओ इआना राचि ॥ प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ अंत
की बार ऊठि सिधारै ॥ १ ॥ नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ गोवि
भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥ १ ॥रहाउ॥
तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ लोक पचा
गति नही होइ ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥ २ ॥ बिनु हरि नाम न
टूटसि पटल ॥ सोधे सासत्र सिमृति सगल ॥ सो नामु जपै जिसु आपि
जपाए ॥ सगल फला से सूखि समाए ॥ ३ ॥ राखनहारे राखहु आपि॥
सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ जितु लावहि तितु लागह सुआमी॥
नानक साहिबु अंतरजामी ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ रामकली महला ५॥
जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ मनु असमझु साधसंगि पतीआना॥
डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ सति माहि ले सति समाइआ ॥ १ ॥ दूख
गइआ सभु रोगु गइआ ॥ प्रभ की आगिआ मन महि मानी मह
पुरख का संगु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पवित्र सरब निरमला॥
जो वरताए सोई भला ॥ जह राखै सोई मुकति थानु ॥ जो जपाए सोई
नामु ॥ २ ॥ अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि ॥ तह बकुंठु जह
नामु उचरहि ॥ सरब अनंद जब दरसनु पाईऐ ॥ राम गुणा नित
नित हरि गाईऐ ॥ ३ ॥ आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ दइआल
पुरख परगट परताप ॥ कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ नानक क
गुर भेटे पूरे ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जा
ताप बिस्राम॥ रिधि बुधि सिधि सुरगिआन॥अनिक रूप रंग भोग रसै
गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥१॥ हरि के नाम का वडिआई॥कीमति
कहणु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरबीर धीरज मति पूरा ॥ सह

समाधि धुनि गहिर गंभीरा ॥ सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ जा कै
रिदै वसै हरि नाम ॥ २ ॥ सगल सूख आनंद अरोग ॥ समदरसी पूरन
निरजोग ॥ आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ जा कै नामु बसै मन माही
॥३॥ दीन दइआल गुोपाल गोविंद ॥ गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥
नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ संतन की टहल संत का कामु ॥४॥१५
॥ २६ ॥ रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै
मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का
सोइआ जागु ॥१॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै
भउजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥
ता छूटहि माइआ के पटल ॥ गुर का सबदु अंमृत रसु पीउ ॥ ता तेरा
होइ निरमल जीउ ॥२॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा॥ बिनु हरि भगति
नही छुटकारा॥सो हरि भजनु साध कै संगि॥ मनु तनु रापै हरि कै रंगि
॥३॥ छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ मन बिनु हरि नावै जाइ न काई॥
दइआधारी गोविद गुोसाई॥हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥४॥१६॥२७॥
रामकली महला ५ ॥ संत कै संगि राम रंग केल ॥ आगै जम सिउ
होइ न मेल ॥ अहंबुधि का भइआ बिनास ॥ दुरमति होई सगली
नास ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ पंडित ॥ करम कांड अहंकारु न
काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का जसु
निधि लीआ लाभ ॥ पूरण भए मनोरथ साभ ॥ दुखु नाठा सुखु
घर महि आइआ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥ २ ॥ नाम
रतनु जिनि पाइआ दानु ॥ तिसु जन होए सगल निधान ॥
संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥
३॥ हरि की कथा सुनत पवित ॥ जिहवा बकत पाई गति मति ॥
सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ नानक ते जन ऊतम भाई ॥ ४ ॥
१७ ॥ २८ ॥ रामकली महला ५ ॥ गहु करि पकरी न आई हाथि ॥
प्रीति करी चाली नही साथि ॥ कहु नानक जउ तिआगि दई ॥
तब ओह चरणी आइ पई ॥ १ ॥ सुणि संतहु निरमल बीचार ॥
राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥

१ ॥ रहाउ ॥ जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ तब आपस ऊपरि रखै
गुमानु ॥ जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ तब ओहु सेवकि सेवा करै
॥ २ ॥ मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ इकतु ठउर ओहु कही न समावै ॥
उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ राम जनी कीनी खंड खंड ॥ ३ ॥ जो मागै
सो भूखा रहै ॥ इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥ इसहि तिआगि सत
संगति करै ॥ वडभागी नानक ओहु तरै ॥४॥ १८ ॥ २९ ॥ रामकली
महला ५ ॥ आतम रामु सरब महि पेखु ॥ पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु॥
रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥१॥ पी
अंमृतु संतन परसादि ॥ वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ
जाणै सुआदु ॥१॥रहाउ॥ अठदस बेद सुने कह डोरा ॥ कोटि प्रगास न
दिसै अंधेरा ॥ पसू परीति घास संगि रचै ॥ जिसु नही बुझावै सो कितु
बिधि बुझै ॥२॥ जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ ओति पोति भगतन
संगानि ॥ बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ नानक तिन जम नेड़ि
न आवहि ॥ ३ ॥ १९ ॥३०॥ रामकली महला ५ ॥ दीनो नामु कीओ
पवितु ॥ हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ काटी बंधि हरि सेवा लाए
॥ हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥१॥ बाजे अनहद बाजा ॥ रसकि
रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ गई
गिलानि साध कै संगि ॥ मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥ २ ॥ राखै
राखनहार दइआल ॥ ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ करि किरपा
प्रभि कीनी दइआ ॥ बूडत दुख महि काढि लइआ ॥ ३ ॥ सुणि सुणि
उपजिओ मन महि चाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥
गावत गावत परम गति पाई ॥ गुरप्रसादि नानक लिव लाई ॥
४ ॥ २० ॥ ३१ ॥ रामकली महला ५ ॥ कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥
छोडि जाहि ताहू का जतनु ॥ सो संचै जो होछी बात ॥ माइआ
मोहिआ टेढउ जात ॥ १ ॥ अभागे तै लाज नाही ॥ सुख सागर
पूरन परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंमृतु कउरा
बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि ननहु डीठी ॥ कूड़ि कपटि अहंकारि

रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥२॥ माइआ कारणि सदही झूरै ॥ मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ निरभउ निरंकार दातारु ॥ तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ ३ ॥ सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥ ४ ॥ २१ ॥३२॥ रामकली महला ५ ॥ रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ आगै दरगह पावउ थाउ ॥ सदा अनंदु न होवी सोगु ॥ कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥ १ ॥ खोजहु संतहु हरि ब्रहम गिआनी ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा परमगति पावहि हरि सिमरि परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ नाम बिना को सकै न तारि ॥ सगल उपाव न चालहि संगि ॥ भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥ २ ॥ देही धोइ न उतरै मैलु ॥ हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ ताका रोग सगल मिटि जाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम दइआल ॥ मन ते कबहु न बिसरु गुोपाल ॥ तेरे दास की होवा धूरि ॥ नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥४॥ २२ ॥ ३३ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू समरथु पूरन पारब्रहमु ॥ सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥ १ ॥ तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥१॥रहाउ॥ जपि जपि जीवा तेरा नाउ॥आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ दूखु अंधेरा मन ते जाइ ॥ दुरमति बिनसै राचै हरि नाइ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गुर पूरे की निरमल रीति ॥ भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ अंमृत नाम रसना नित जपै ॥ ३ ॥ कोटि जनम के काटे फाहे ॥ पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ तोटि न आवै अखुट भंडार॥ नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥४॥२३॥ ३४ ॥ रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन ॥ सूख सहज दइआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥ १ ॥ मेरे राम को भंडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आनंद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूंजी ॥ संतन

हथि राखी कूंजी ॥ २ ॥ सुंन समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम
पूरन तह बासनु ॥ भगत संगि प्रभु गोसटि करत॥ तह हरख न सोग न
जनम न मरत ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ साध
संगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि
मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३५ ॥ रामकली महला
५ ॥ महिमा न जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ अवतार न
जानहि अंतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥ १ ॥ अपनी गति आपि
जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा नही जानहि
भेव ॥ खोजत हारे देव ॥ देवीआ नही जानै मरम ॥ सभ ऊपरि
अलख पारब्रहम ॥ २ ॥ अपनै रंगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे
मेल ॥ इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ अपणा कीआ आपि जणाए ॥
३ ॥ संतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥
नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥ ४ ॥
२५ ॥ ३६ ॥ रामकली महला ५ ॥ किछहू काजु न कीओ जानि ॥
सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ जाप ताप सील नही धरम ॥ किछु
न जानउ कैसा करम ॥ १ ॥ ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ तुझ बिनु दूजा
अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रिधि न बुधि न
सिधि प्रगासु ॥ बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ करणहार मेरे प्रभ
एक ॥ नाम तेरे की मन महि टेक ॥ २ ॥ सुणि सुणि जीवउ मनि इहु
बिस्रामु ॥ पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ तू अगनतु जीअ का दाता ॥
जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥ ३ ॥ जो उपाइओ तिसु तेरी
आस ॥ सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ नानक दास तेरै कुरबाणु ॥
बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३७ ॥ रामकली महला
५ ॥ राखणहार दइआल ॥ कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ सगल
अराधहि जंत ॥ मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥ १ ॥ जीअन को दाता
मेरा प्रभु ॥ पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥ १
रहाउ ॥ ता की गही मन ओट ॥ बंधन ते होई छोट ॥ हिरदै जपि
परमानंद ॥ मन माहि भए अनंद ॥ २ ॥ तारण तरण हरि सरण

जीवन रूप हरि चरण ॥ संतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥ ३ ॥ सुमति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३८ ॥ रामकली महला ५ ॥ सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिंदे सेई फल पाइ ॥ १ ॥ होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ ॥ सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥२॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥ ३ ॥ गुर का बचनु जपि मंतु ॥ एहा भगति सार ततु ॥ सतिगुर भए दइआल ॥ नानक दास निहाल ॥४॥२८॥३९॥ रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ पूरन इही सुआउ ॥ १ ॥ आनंद करि संत हरि जपि ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंत निरमल ॥१॥ रहाउ ॥ एक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ गुर के चरन नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥२॥ देवनहार दातार ॥ अंतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब निधान ॥ राखनहार निदान॥ ३ ॥ नानक पाइआ एहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै तिस की गति होइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥४॥२९॥४०॥ रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥ हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अंत की वेला लए छडाई ॥१॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ॥१॥रहाउ॥ऊठत बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल संतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥ निरमलु तेरा होवै चीत ॥ २ ॥ सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ जनम जनम का उतरै भारु ॥ ३ ॥ पूरन तेरी होवै आस ॥ जम की कटीऐ तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥

नानक सुखि सहजि समीजै ॥४॥३०॥४१॥ रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि गुमानु ॥ जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ नाम बिना किछू कामि ना आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मनि लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाणा लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥२॥ वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥ ३ ॥ कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ बूडत लोह साध संगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥४॥३१॥४२॥ रामकली महला ५ ॥ मन माहि जापि भगवंतु ॥ गुरि पूरे इहु दीनो मंतु ॥ मिटे सगल भै त्रास ॥ पूरन होई आस ॥१॥ सफल सेवा गुर देवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥ तिस कउ सदा मन ज़ापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥ सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥ २ ॥ साहिबु मेरा अति भारा ॥ खिन महि थापिउथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जन का राखा सोई ॥३॥ करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ ते ऊच जा का परतापु ॥४॥३२॥४३॥ रामकली महला ५॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर छूटी सभ आस॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥१॥ एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥१॥रहाउ॥ तुमही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन॥ मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ आनंद हरि रूप दिखाइआ ॥ २ ॥ तिसही की ओट सदीव ॥ जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान ॥३॥ सरब की रेण होवीजै ॥ आपु मिटाइ मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४४ ॥ रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि

खुदाइ वड बेसुमार ॥ १ ॥ ओंनमो भगवंत गुसाई ॥ खालकु रवि
रहिआ सरब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगंनाथ जगजीवन माधो ॥ भउ
भंजन रिद माहि अराधो ॥ रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ पूरन सरबत्र
मुकंद ॥ २ ॥ मिहरवान मउला तूही एक ॥ पीर पैकांबर सेख ॥ दिला
का मालकु करे हाकु ॥ कुरान कतेब ते पाकु ॥ ३ ॥ नाराइण नरहर
दइआल ॥ रमत राम घट घट आधार ॥ बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥
लीला किछु लखी न जाइ ॥४॥ मिहर दइआ करि करनैहार ॥ भगति
बंदगी देहि सिरजणहार ॥ कहु नानक गुरि खोए भरम ॥ एको अलहु
पारब्रहम ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४५ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जनम के
बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही संताप ॥ गुर के चरन कमल मनि
वसे ॥ महा बिकार तन ते सभि नसे ॥ १ ॥ गोपाल को जसु गाउ
प्राणी ॥ अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥ १ ॥
रहाउ ॥ तृसना भूख सभ नासी ॥ संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥
रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की एह नीसानी ॥ २ ॥
मिटे जंजाल होए प्रभ दइआल ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥
परापूरबला करमु बणि आइआ ॥ हरि के गुण नित रसना गाइआ ॥
३ ॥ हरि के संत सदा परवाणु ॥ संत जना मसतकि नीसाणु ॥ दास
की रेणु पाए जे कोइ ॥ नानक तिस की परमगति होइ ॥ ४ ॥ ३५ ॥
४६ ॥ रामकली महला ५ ॥ दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ चरन कमल
हिरदै धरि धिआनु ॥ धूरि संतन की मसतकि लाइ ॥ जनम जनम की
दुरमति मलु जाइ ॥ १ ॥ जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ पारब्रहमु सभु
नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की
कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ गुर की
सुरति निकटि करि जानु ॥ गुर का सबदु सति करि मानु ॥ २ ॥
गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ कदे न बिआपै तृसना भूख ॥
मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥ ३ ॥
गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ गुर
चरनी जा का मनु लागा ॥ नानक दास तिसु पूरन भागा ॥ ४ ॥

३६ ॥ ४७ ॥ रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥
मूड़ मुगध तरा संगी कवन ॥ रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ पंच
बटवारे से मीत करि मानहि ॥ १ ॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥
गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साध संगि करि मन की प्रीति ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ तृपति न आवै बिखिआ
सादि ॥ भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दुतर माइआ
॥ २ ॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥
राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥ ३ ॥
पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु ॥ करि
किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरण गही नानक प्रभ तेरी ॥ ४ ॥
३७ ॥ ४८ ॥ रामकली महला ५ ॥ इह लोके सुखु पाइआ ॥ नही
भेटत धरमराइआ ॥ हरि दरगह सोभावंत ॥ फुनि गरभि नाही बसंत ॥
१ ॥ जानी संत की मित्राई ॥ करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि
संजोगि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै चरणि चितु लागा ॥ धंनि
धंनि संजोगु सभागा ॥ संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख
दुख सगले मेरे लाथे ॥ २ ॥ साध की सचु टहल कमानी ॥ तब होए
मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि
घटि वूठा ॥ ३ ॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु
महि परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसंद ॥ ४ ॥
३८ ॥ ४९ ॥ रामकली महला ५ ॥ गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी
का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदरि
निहाले ॥ १ ॥ कृपानिधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन
तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी
सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का जाला तूटा
॥ २ ॥ सूके कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥
अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ ३ ॥
अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥
संत जना का सदा सहाई ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥ ४ ॥

३९ ॥ ५० ॥ रामकली महला ५ ॥ पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ॥ दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ साध संगि चूके भै फेर ॥१॥ सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाझि गए तृण पाप सुमेर ॥ जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि ॥ प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥ २ ॥ सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ सिंधु समाइओ घटुके माहि ॥ करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥ ३ ॥ जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ जउ काढिओ तउ नदरि निहाल॥पाप पुंन हमरै वसि नाहि ॥ रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५१ ॥ रामकली महला ५ ॥ ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥ १ ॥ हरि चरन कमल सरनाइ मना ॥ राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊने काज न होवत पूरे ॥ कामि क्रोध मदि सद ही झूरे॥करै बिकार जीअरे कै ताई॥गाफल संगि न तसूआ जाई ॥२॥ धरत धोह अनिक छल जानै॥कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ इहु मनु होआ साध रवाल ॥ हसत कमल लड़ि लीना लाइ ॥ नानक साचै साचि समाइ ॥४॥४१॥ ५२ ॥ रामकली महला ५ ॥ राजा राम की सरणाइ ॥ निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साध संगि दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रामु बसै मन माही ॥ सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ सगले काज सवारे अपने ॥ हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥ १ ॥ जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ सो दासु आदेसा काहे करै ॥ जनम मरण की चूकी काणि ॥ पूरे गुर ऊपरि कुरबाणि ॥ २ ॥ गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥ साध संगि सो भवजलु तरै ॥ ३ ॥ अंमृतु पीवहु साध पिआरे ॥ मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ अनद करहु तजि

सगल बिकार ॥ नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥४॥४२॥५३॥ रामकली महला ५ ॥ ईंधन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी कउ जलु दहदिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥ १ ॥ ऐसा संम्रथु हरि जीउ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलु कीनो साबुनु सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥२॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥ ३ ॥ संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंमृति सासत बेद पूराण ॥ ब्रहम बीचारु बीचारे कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥४॥४३॥५४॥ रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥१॥ रहाउ ॥ पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि किछू न संगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥ १ ॥ निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ ॥२॥ बोलै झूठु कमावै अवरा तृसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ ॥ ३ ॥ जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रहम मइआ ॥ ४ ॥ ४४ ॥ ५५ ॥ रामकली महला ५ ॥ ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरण कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के ॥ १ ॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु कृपा निधानु ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥ २ ॥ निरमल मंतु देइ जिसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ एकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥ ३ ॥ गुरपरमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नि

नानकु चितवै सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ५६ ॥

रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गावहु राम के गुण गीत ॥ नामु जपत परम सुखु पाईऐ आवागउणु मिटै मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत होवत परगासु ॥ चरन कमल महि होइ निवासु ॥ १ ॥ संत संगति महि होइ उधारु ॥ नानक भवजलु उतरसि पारि ॥२॥ १ ॥ ५७ ॥ रामकली महला ५ ॥ गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ राम नाम जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥१॥रहाउ॥ एकु अराधहु साचा सोइ ॥ जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥१॥ नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥ २ ॥ सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥३॥ आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ नानक राखा होआ आपि ॥४॥२॥५८॥

रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नर नरह नमसकारं ॥ जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥१॥ रहाउ ॥ हरन धरन पुन पुनह करन ॥ नहगिरह निरंहारं ॥१॥ गंभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥२॥१॥५९॥ रामकली महला ५ ॥ रूपु रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥१॥ रहाउ॥भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै नह संगि गामनी ॥१॥ सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥२॥२॥६०॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥रागु रामकली महला ९ तिपदे॥रे मन ओट लेहु हरि नामा॥ जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना॥१॥ रहाउ ॥ बडभागी तिहि जन कउ जानउ जो हरि के गुन गावै

॥ जनम जनम के पाप खोइकै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥ १ ॥ अजामलु
कउ अंत काल मै नाराइन सुधि आई ॥ जां गति कउ जोगीसुर बाछत
सो गति छिन महि पाई ॥ २ ॥ नाहन गुनु नाहनि कछु बिदिआ धरमु
कउनु गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखो अभै दानु तिहि दीना
॥ ३ ॥ १ ॥ रामकली महला ९ ॥ साधो कउनु जुगति अबि कीजै ॥
जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥रहाउ॥ मनु
माइआ मै उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जग
जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥ १ ॥ भए दइआल क्रिपाल संत जन
तब इह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई
॥२॥ राम नाम नर निसिबासुर मै निमख एक उरधारै ॥ जम को त्रासु
मिटै नानक तिह अपनो जनमु सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥ रामकली महला ९॥
प्रानी नाराइनि सुधि लेह ॥ छिनु छिनु अउध घटै निसबासुर बृथा जातु
है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु
अगिआना ॥ बिरध भइओ अजहू नही समझै कउनु कुमति उरझाना
॥ १ ॥ मानस जनमु दीओ जिह ठाकुर सो तै किउ बिसराइओ ॥
मुकति होत नर जा कै सिमरै निमख न ताको गाइओ ॥ २ ॥ माइआ
को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ नानक कहत चेति चिंतामनि
होइ है अंति सहाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ ८१ ॥ 13.7.-20

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली महला ३ असटपदीआ ॥ सोई चंदु चड़हि से तारे
सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ
खेले थाव कैसे ॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाणा
करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितै देसि न
आइआ सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करहि तह नाही
महल उसारि न बैठा ॥ २ ॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु
न होई ॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥ ३
जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदा

पव जंजीरी ता चाकर हथह मरणा ॥ ४ ॥ आखु गुणा कलि आईऐ ॥
तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी कृसना होआ ॥ बाणी ब्रहमा बेदु
अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥ ५ ॥ पति विणु पूजा सत विणु
संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु
सोच न होई ॥ ६ ॥ कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पंडित रहे
पुराण ॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू एको जाणु ॥७॥
नानक नामु मिलै वडिआई एदू ऊपरि करमु नही ॥ जे घरि होदै मंगणि
जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥८॥१॥ रामकली महला १ ॥ जगु
परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ ममता
मोहु कामणि हितकारी ॥ ना अउधूती ना संसारी ॥ १ ॥ जोगी बैसि
रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ घरि घरि मागत लाज न लागै ॥१॥ रहाउ ॥
गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ किउ लागी निवरै परतापु ॥ गुर कै
सबदि रचै मन भाइ ॥ भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥२॥ भसम चड़ाइ
करहि पाखंडु ॥ माइआ मोहु सहहि जम डंडु ॥ फूटै खापरु भीख न भाइ
॥ बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥३॥ बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥
माई मागत त्रै लोभावहि ॥ निरदइआ नही जोति उजाला ॥ बूडत बूडे
सरब जंजाला ॥४॥ भेख करहि खिथा बहु थटूआ॥ झूठो खेलु खेलै बहु
नटूआ ॥ अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ विणु करमा कैसे उतरसि
पारे ॥ ५ ॥ मुंद्रा फटकु बनाई कानि ॥ मुकति नही बिदिआ
बिगिआनि ॥ जिहवा इंद्री सादि लुोभाना ॥ पसू भए नही मिटै
नीसाना ॥ ६ ॥ त्रिबिधि लोगा त्रिबिधि जोगा ॥ सबदु वीचारै चूकसि
सोगा ॥ ऊजल साचु सु सबदु होइ ॥ जोगी जुगति वीचारै सोइ ॥ ७ ॥
तुझ पहि नउनिधि तू करणै जोग ॥ थापि उथापे करे सु होगु ॥
जतु सतु संजमु सचु सु चीतु ॥ नानक जोगी त्रिभवण मीतु ॥
८ ॥ २ ॥ रामकली महला १ ॥ खटु मटु देही मनु बैरागी ॥
सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ गुर
बचनी सांच नामि पतीणा ॥ १ ॥ प्राणी राम भगति सुखु

पाईऐ।।गुरमुख हरि हरि मीठा लागै हरि हरि नामि समाईऐ ।।१।।रहाउ।।
माइआ मोहु बिवरजि समाए ।। सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ।। नामु रतनु
निरमोलकु हीरा ।। तितु राता मेरा मनु धीरा ।।२।। हउमै ममता रोगु
न लागै ।। राम भगति जम का भउ भागै ।। जमु जंदारु न लागै मोहि
।। निरमल नामु रिदै हरि सोहि ।। ३ ।। सबदु बीचारि भए निरंकारी।।
गुरमति जागे दुरमति परहारी ।। अनदिनु जागि रहे लिव लाई।।
जीवन मुकति गति अंतरि पाई ।।४।। अलिपत गुफा महि रहहि निरारे
।। तसकर पंच सबदि संघारे ।। पर घर जाइ न मनु डोलाए ।। सहज
निरंतरि रहउ समाए ।।५।। गुरमुखि जागि रहे अउधूता ।। सद बैरागी
ततु परोता ।। जगु सूता मरि आवै जाइ ।। बिनु गुर सबद न सोझी
पाइ ।।६।। अनहद सबदु वजै दिनु राती ।। अविगत की गति गुरमुखि
जाती ।। तउ जानी जा सबदि पछानी ।। एको रवि रहिआ निरबानी।।
।। ७ ।। सुंन समाधि सहज मनु राता ।। तजि हउ लोभा एको जाता।।
गुर चेले अपना मनु मानिआ ।। नानक दूजा मेटि समानिआ ।।८।।३।।
रामकली महला १ ।। साहा गणहि न करहि बीचारु ।। साहे ऊपरि
एकंकारु ।। जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ।। गुरमति होइ त हुकमु
पछाणै ।।१।। झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ।। हउमै जाइ सबदि घरु
लहीऐ ।।१।। रहाउ ।। गणि गणि जोतकु कांडी कीनी ।। पड़ै सुणावै ततु
न चीनी ।। सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ।। होर कथनी बदउ न सगली
छारु ।। २ ।। नावहि धोवहि पूजहि सैला ।। बिनु हरि राते मैलो मैला
।। गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ।। मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि
।। ३ ।। वाचै वादु न बेदु बीचारै ।। आपि डुबै किउ पितरा तारै ।। घटि
घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ।। सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ।। ४ ।। गणत
गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ।। गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ।। करि अपराध
सरणि हम आइआ ।। गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ।। ५ ।। गुर
सरणि न आईऐ ब्रहमु न पाईऐ ।। भरमि भुलाईऐ जनमि म
आईऐ ।। जमदरि बाधउ मरै बिकारु ।। ना रिदै नामु
सबदु अचारु ।। ६ ।। इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि

॥ दुबिधा राते महलु न पावहि ॥ जिसु गुर परसादी नामु अधारु॥कोटि
मधे को जनु आपारु ॥ ७ ॥ एकु बुरा भला सचु एकै ॥ बूझु गिआनी
सतगुर की टेकै ॥ गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ आवणु जाणा
मेटि समाणिआ ॥ ८ ॥ जिन कै हिरदै एकंकारु ॥ सरब गुणी साचा
बीचारु ॥ गुर कै भाणै करम कमावै ॥ नानक साचे साचि समावै ॥९॥
४ ॥ रामकली महला १ ॥ हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ वरतु
तपनु करि मनु नही भीजै ॥ राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥ १ ॥ गुरु
सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि
डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादु पड़ै रागी जगु
भीजै ॥ त्रैगुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु दूखु सहीजै
॥ २ ॥ चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ निउली करम खटु करम करीजै
॥ राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥ ३ ॥ अंतरि पंच अगनि किउ
धीरजु धीजै ॥ अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ गुरमुखि होइ काइआ
गड़ु लीजै ॥ ४ ॥ अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ मनु नही सूचा किआ
सोच करीजै ॥ किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥ ५ ॥ अंनु न खाहि
देही दुखु दीजै ॥ बिनु गुर गिआन तृपति नही थीजै ॥ मनमुखि जनमै
जनमि मरीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ मनु हरि
राचै नही जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥ ७ ॥
ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ नानक नामु
मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥ रामकली महला १ ॥ अंतरि
उतभुजु अवरु न कोई ॥ जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ जुगह जुगंतरि
साहबु सचु होई ॥ उतपति परलउ अवरु न कोई ॥ १ ॥ ऐसा मेरा
ठाकुरु गहिर गंभीरु ॥ जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइआ हरि कै
नामि न लगै जम तीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥
साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ जिहवा सूची साचा बोलु ॥ घरि दरि
साचा नाही रोलु ॥ २ ॥ इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥
नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ नाम बिना किआ गिआन धिआनु
॥ गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥ ३ ॥ हठु अहंकारु करै नही पावै ॥

॥ पाठ पड़ै ले लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥
नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥ ४ ॥ जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥
मनूआ डोलै नरके पाई ॥ जमपुरि बाधो लहै सजाई ॥ बिनु नावै जीउ
जलि बलि जाई ॥ ५ ॥ सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ हठि निग्रहि
न तृपतावहि भेवा ॥ सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा॥ मनि तनि निरमल
अभिमान अभेवा ॥ ६ ॥ करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ तुम सरणागति
रहउ सुभाउ ॥ तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ जपु जापउ गुरमुखि
हरि नाउ ॥ ७ ॥ हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ झूठि न पावसि पाखंडि
कीनै ॥ बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ नानक गुरमुखि ततु बीचार
॥ ८ ॥ ६ ॥ रामकली महला १ ॥ जिउ आइआ तिउ जावहि बउ
जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै
नामु विसारि भवजलि पइआ ॥ १ ॥ तनु धनु देखत गरबि गइआ
॥ कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ
॥ १ ॥ रहाउ ॥ जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि
कासटु भइआ ॥ पुंनु दानु इसनानु न संजमु साध संगति बिनु बादि
जइआ ॥ २ ॥ लालचि लागै नामु बिसारिओ आवत जावत जनमु
गइआ ॥ जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि कालि गइआ
॥ ३ ॥ अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥
बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥४॥
खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥
इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥ ५ ॥
करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥
हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥ ६ ॥
सुख संपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ जिस
का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥ ७ ॥ अंति
कालि किछु साथि न चालै जा दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ आदि
पुरखु अपरंपरु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥ ८ ॥ मूए क
रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ देखि कुटं

माइआ गृह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥ ९ ॥ जा आए ता
तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाए लइआ ॥ जो किछु करणा सो करि
रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥ १० ॥ जिनि एहु चाखिआ राम
रसाइणु तिन की संगति खोजु भइआ ॥ रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू
ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ॥११॥दुखु सुखु गुरमुखि समकरि
जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ आपु मारि गुरमुखि हरि पाए
नानक सहजि समाइ लइआ ॥१२॥७॥ रामकली दखणी महला १ ॥
जतु सतु संजमु साचु दृड़ाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥१ ॥ मेरा गुरु
दइआलु सदा रंगि लीणा ॥ अहिनिसि रहै एक लिव लागी साचे देखि
पतीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहै गगन पुरि दृसटि समैसरि अनहत सबदि
रंगीणा ॥ २ ॥ सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा
॥३॥ मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥४॥ एक
महि सरब सरब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥५॥ जिनि कीए
खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥ ६ ॥ दीपक ते दीपकु
परगासिआ त्रिभवण जोति दिखाई ॥ ७ ॥ सचै तखति सच महली बैठे
निरभउ ताड़ी लाई ॥८॥ मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी
वाई ॥९॥ नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥ १० ॥ ८ ॥
रामकली महला १ ॥ अउहठि हसत मड़ी घरु छाइआ धरणि गगन
कल धारी ॥ १ ॥ गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
ममता मारि हउमै सोखै त्रिभवणि जोति तुमारी ॥२॥ मनसा मारि मनै
महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥ ३ ॥ सिंङी सुरति अनाहदि वाजै
घटि घटि जोति तुमारी ॥ ४ ॥ परपंच बेणु तही मनु
राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥ ५ ॥ पंच ततु मिलि अहिनिसि
दीपकु निरमल जोति अपारी ॥ ६ ॥ रवि ससि लउके इहु
तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥ ७ ॥ सिव नगरी महि
आसणु अउधू अलखु अगमु अपारी ॥ ८ ॥ काइआ
नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥ ९ ॥ सबदि
रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥ १० ॥

कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ मनु मारी ॥ ११ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥१२॥ काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥१३॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥१४॥ आपे मेलि लए गुण दाता हउमै तृसना मारी ॥ १५ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥ १६ ॥ गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥ १७ ॥ मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥१८॥ बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥ १९ ॥ गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥२०॥ सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥२१॥ माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥ २२ ॥ सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥ २३ ॥ एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥२४॥ आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥ २५ ॥ ९ ॥

रामकली महला ३ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥१॥ ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अंमृत नामु भुगति पाई ॥ धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥२॥ मनु दृड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥४॥ भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि तृसना खंडी ॥५॥ हुकमु बूझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ सहसा तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए ॥६॥ नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ सतिगुर नालि

तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥ ७ ॥ एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ गृह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥ ८ ॥ इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा तृसना माइआ ॥ अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥ ९ ॥ हरि का नामु अउखधु है जोगी जिसनो मंनि वसाए ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥ १०॥ जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिसनो नदरि करे सो पाए ॥ अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥११॥ विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥१२॥ १ ॥ १० ॥ रामकली महला ३ ॥ भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥१॥ संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥१॥रहाउ॥ सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥ २ ॥ आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥३॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥ ४ ॥ सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥ ५ ॥ सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥६॥ सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥ ७ ॥ भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥८॥ बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥९॥ जोगी जुगति गवाई हंढै पाखंडि जोगु न पाई ॥ १० ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसै गुरसबदी जोगु पाई ॥ ११ ॥ धातुरबाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥ १२ ॥ एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥ १३ ॥ नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥ १४ ॥ त्रैगुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥१५॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥१६॥ गुरपरसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥ १७ ॥ पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिंना बूझ न पाई ॥ १८ ॥ बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु कहहि किसु भाई ॥ १९ ॥ भगति जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाइ ॥ २० ॥ बाणी लागै सो गति

पाए सबदे सचि समाई ॥ २१ ॥ काइआ नगरी सबदे खोजे नामु
नवंनिधि पाई ॥ २२ ॥ मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना
उसतति कराई ॥ २३ ॥ लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि
लगाई ॥ २४ ॥ अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई
॥ २५ ॥ हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥
२६ ॥ नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति पाई ॥ २७ ॥ २ ॥
११ ॥ रामकली महला ३ ॥ हरि की पूजा दुलंभ है संतहु कहणा कछू
न जाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ नामो पूज कराई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥२॥
हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि बसाई ॥ ३ ॥ पूजा करै सभु
लोकु संतहु मनमुखि थाइ न पाई ॥ ४ ॥ सबदि मरै मनु निरमलु संतहु
एह पूजा थाइ पाई ॥ ५ ॥ पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव
लाई ॥ ६ ॥ बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥ ७ ॥
गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥८॥ आपे निरमलु
पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई ॥ ६ ॥ पूजा करहि परु बिधि नही
जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥ १० ॥ गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै
भाणा मनि वसाई ॥ ११ ॥ भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु
सखाई ॥ १२॥ आपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई
॥ १३ ॥ पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥ १४ ॥
जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥१५॥ एहु
मनूआ सुंन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥ १६ ॥ सुणि सुणि
गुरमुखि नामु वखाणहि सत संगति मेलाई ॥१७॥ गुरमुखि गावै आपु
गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥१८॥ साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि
लिव लाई ॥ १६ ॥ भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति
सखाई ॥ २० ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई
॥ २१ ॥ ३ ॥ १२ ॥ रामकली महला ३ ॥ हम कुचल कुचील अति
अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि नामि
निसतारी ॥ सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी ॥

१ ॥ रहाउ ॥ पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा
धारी ॥ २ ॥ इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी
॥३॥ इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरिधारी ॥४॥
अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥५॥ भै बिनु भगति न होई
कबही भै भाइ भगति सवारी ॥ ६ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ
गिआनि तति बीचारी॥७॥आपे आपि कराए करता आपे बखसि भंडारी
॥ ८ ॥ तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी
॥९॥हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥१०॥नामु
पदारथु गुर ते पाइआ अखुट सचे भंडारी ॥११॥ अपणिआ भगता नो
आपे तुठा अपणी किरपा करि कलधारी ॥१२॥ तिन साचे नाम की
सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥१३॥ जीउ पिंडु सभु किछु है
तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥१४॥ सबदि लगे सेई जन निसतरे
भउजलु पारि उतारी ॥ १५ ॥ बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को
वीचारी ॥१६॥ जो धुरि लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी
॥१७॥ काइआ कंचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥ १८ ॥ काइआ
अंमृति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥ १९ ॥ जो प्रभ खोजहि सेई
पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी ॥ २० ॥ बादी बिनसहि सेवक
सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥ २१ ॥ सो जोगी ततु गिआनु बीचारे
हउमै तृसना मारी ॥ २२ ॥ सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिसनो
कृपा तुमारी ॥ २३ ॥ सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए
अहंकारी ॥ २४ ॥ जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ
मिलीऐ राम मुरारी ॥ २५ ॥ अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने
प्रिअ प्रीति पिआरी ॥ २६ ॥ तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर
विटहु बलिहारी ॥ २७ ॥ माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे
सबदि वीचारी ॥ २८ ॥ आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि
वीचारी ॥ २९ ॥ नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे
वीचारी ॥३०॥४॥१३॥ रामकली महला ३ ॥ नामु खजाना गुर ते
पाइआ तृपति रहे आघाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि मुकति गति पाई ॥

एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आ
करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो क
रहिआ अवरु न करणा जाई ॥३॥ आपे साजे स्रिसटि उपाए सिरि सि
धंधै लाई ॥ ४ ॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिला
॥५॥ आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥ ६ ॥ आ
मारि जीवाले आपे तिसनो तिलु न तमाई ॥ ७ ॥ इकि दाते इकि मंग
कीते आपे भगति कराई ॥८॥ से वडभागी जिनी एको जाता सचे र
समाई ॥६॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥१०
आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥ ११ ॥ वडा दात
गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥१२॥ जिनी चाखिआ तिन
सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १३ ॥ इकना नावहु आपि भुला
इकना गुरमुखि देइ बुझाई ॥ १४ ॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस द
वडी वडिआई ॥ १५ ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपाव
बणत बणाई ॥१६॥ निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मना
॥१७॥ तिसनो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥१
॥ सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥१६॥ सचा आ
सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥ २० ॥ नानक सुणि वेखि रहि
विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥२१॥५॥१४॥

रामकली महला ५ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ किनही कीआ परविरति पसार
॥ किनही कीआ पूजा बिसथारा॥ किनही निवल भुइअंगम साधे॥ मोहि
दीन हरि हरि आराधे ॥१॥ तेरा भरोसा पिआरे ॥ आन न जाना वेस
॥१॥ रहाउ ॥ किनही ग्रिहु तजि वणखंडि पाइआ॥किनही मोनि अउधू
सदाइआ॥कोई कहतउ अनंनि भगउती॥मोहि दीन हरि हरि ओट लीत
॥२॥ किनही कहिआ हउ तीरथ वासी॥कोई अंनु तजि भइआ उदासी
किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ मोहि दीन हरि हरि दरि परि

॥ ३ ॥ किनही कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह
बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि दीन हरि हरि आधारा
॥ ४ ॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई
॥ किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि
धिआइआ ॥ ५ ॥ किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ किनही भेख बहु
थाट बनाए ॥ किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि
सेवा ॥ ६ ॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सिउ
मंडित ॥ कोई करै आचार सुकरणी ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी
॥ ७ ॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥
कहु नानक जउ साध संगु पाइआ ॥ बूझी तृसना महा सीतलाइआ
॥८॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ इसु पानी ते जिनि तू घरिआ॥ माटी
का ले देहुरा करिआ ॥ उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ
महि जिनि तू राखिआ ॥ १ ॥ राखनहारु सम्हारि जना ॥ सगले छोडि
बीचार मना ॥१॥रहाउ॥ जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीए
भ्रात पुत हारी ॥ जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर
कउ रखि लेहु चीता ॥ २ ॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ जिनि
दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु
ठाकुर की रहु मन सरना ॥ ३ ॥ छतीह अंमृत जिनि भोजन दीए ॥
अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ वसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ तिसु
ठाकुर के चिति रखु चरना ॥ ४ ॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥
हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ मन
तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥ ५ ॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥
सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥
कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥६॥ ईहा ऊहा एकै ओही ॥ जत कत
देखीऐ तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ जिसु विसरिऐ
इक निमख न सरै ॥ ७ ॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा
ना करमारे ॥ गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ नानक दास संगि
पाथर तरिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग

रस रूप ॥ काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख
वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥ १ ॥ रचना साचु बनी ॥
सभ का एकु धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू
बिहावै रसना सादि ॥ काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ संत रचे केवल
नाम मुरारी ॥ २ ॥ काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ काहू बिहावै अमली
हूआ ॥ काहू बिहावै परदरब चुोराए ॥ हरि जन बिहावै नाम धिआए
॥ ३ ॥ काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥
काहू पवन धार जात बिहाए ॥ संत बिहावै कीरतनु गाए ॥ ४ ॥ काहू
बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ काहू
बिहावै बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥ ५ ॥ काहू
बिहावै नट नाटिक निरते॥ काहू बिहावै जीआ इह हिरते ॥ काहू बिहावै
राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥ ६ ॥ काहू बिहावै मता
मसूरति ॥ काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥
संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥ ७ ॥ जितु को लाइआ तित ही लगाना
॥ ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ८ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ ॥
दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ संकट ते छूट ॥ जा का नामु
सिमरत भउ जाइ ॥ तैसे संत जना राखै हरिराइ ॥ १ ॥ ऐसे राखनहार
दइआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलु पीवत
जिउ तिखा मिटंत ॥ धन बिगसै गृहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु
प्राण अधारु ॥ तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥ २ ॥ किरसानी
जिउ राखै रखवाला ॥ मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ प्रीतमु देखि
प्रीतमु मिलि जाइ ॥ तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥ ३ ॥ जिउ अंधुले
पेखत होइ अनंद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल परबत परते
पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥ ४ ॥ जिउ पावक संगि सीत को
नास ॥ ऐसे प्राछत संत सगि बिनास ॥ जिउ साबुनि कापर ऊजल
होत ॥ नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥ ५ ॥ जिउ चकवी सूरज की
आस ॥ जिउ चातृक बूंद की पिआस ॥ जिउ कुरंक नाद कर

समाने ॥ तिउ हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥ ६ ॥ तुमरी कृपा ते लागी प्रीति ॥ दइआल भए ता आए चीति ॥ दइआधारी तिनि धारणहार ॥ बंधन ते होई छुटकार ॥७॥ सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ भ्रम भै छूटे गुरपरसादि ॥ नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥८॥४॥ रामकली महला ५ ॥ जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥१॥ इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥ २ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥ ३ ॥ नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥ ४ ॥ भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥५॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुमही आगै सारना ॥ ६ ॥ तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥७॥ अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकुवंञै वारना ॥८॥५॥

रामकली महला ५ असटपदी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥१॥ मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ पारब्रहम का नामु दृड़ाए अंते होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥२॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वञाई ॥३॥ करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई॥४ ॥ बंधन तोड़ि चरन कमल दृड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥ ५ ॥ अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥६॥ जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई॥७॥नाम रसाइणि इहु मनु राता अंमृतु पी तृपताई ॥ ८ ॥ संत संगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥ ९ ॥ पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई॥ १० ॥ नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई॥ ११ ॥ घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥ १२ ॥ जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥ १३ ॥ पुत्र

कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥ १४ ॥ अपणे जीअ
तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥ १५ ॥ साच धरम का बेड़ा
बांधिआ भवजलु पारि पराई ॥ १६ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी नानक
बलि बलि जाई ॥ १७ ॥ अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार
दीपाई ॥१८॥ अंतरजामी जीअन का दाता देखत तृपति अघाई ॥१६॥
एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥२०॥ भगति
दानु भगता कउ दीना हरि नानक जाचै माई ॥ २१ ॥ १ ॥ ६॥
रामकली महला ५ सलोकु ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की
टेक ॥ मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ १ ॥ मनु तनु
राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥ १ ॥ सतिगुरि
खेप निबाही संतहु ॥ हरिनामु लाहा दास कउ दीआ सगली तृसन
उलाही संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि
कीमति कहणु न जाई संतहु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो धिआना
साचै दरसि समाई संतहु ॥ ३ ॥ गुण गावत गावत भए निहाला हरि
सिमरत तृपति अघाई संतहु ॥ ४ ॥ आतमरामु रविआ सभ अंतरि
कत आवै कत जाई संतहु ॥ ५ ॥ आदि जुगादी हैभी होसी सभ जीआ
का सुखदाई संतहु ॥ ६ ॥ आपि बेअंतु अंतु नही पाईऐ पूरि रहिआ
सभ ठाई संतहु ॥ ७ ॥ मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु
मेरी माई संतहु ॥८॥२॥७॥ रामकली महला ५ ॥ मन बच क्रमि राम
नामु चितारी ॥ घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि
उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भए
दुसटारी ॥ १ ॥ जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपनी किरपा
धारी ॥ २ ॥ उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अहंकारी ॥
३ ॥ साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥ ४ ॥
न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥ ५ ॥
तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥ ६ ॥ कीमति कउणु
करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥ ७ ॥ नाम दानु नानक
वडिआई तेरिआ संत जना रेणारां ॥ ८ ॥ ३ ॥ ८ ॥ २२ ॥

रामकली महला ३ अनंदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥ ७ ॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै

॥ पावै त सो जनु देहि जिसनो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि
भरमि भूले फिरहि दहदिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुरपरसादी
मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि
पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥ आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह
कहाणी ॥ करहा कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तणु मनु
धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु मंनिहु
गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ
कहाणी ॥ ९ ॥ ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न
पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु
भरमि भुलाइआ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ
॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु
मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए मन पिआरिआ तू
सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै
नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा
कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि
तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥
अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ किनै तेरा
आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि
वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तू है जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै
नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥ सुरि नर मुनि जन
अंमृतु खोजदे सु अंमृतु गुर ते पाइआ॥पाइआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी
सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि
आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै
नानकु जिसनो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ॥१३॥भगता की
चाल निराली॥चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा॥लबु
लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा॥खंनिअहु तिखी वालहु
निकी एतु मारगि जाणा॥गुरपरसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना
समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू

चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥ १७ ॥ करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुरपरसादी सहजु उपजै इह सहसा इव जाइ ॥ १८ ॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ १९ ॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥

२१ ॥ जे को गुर ते वे मुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥ २३॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ २४ ॥ गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ सिमृति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिसनो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी॥२७॥माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओसनो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानक

एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥ जैसी अगनि उदरि महि तैसी बाहरि माइआ॥माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी तृसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ॥मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी॥एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ ए रसना तू अनरसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अनरस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ॥गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ कहै नानक प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि

आइकै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ ३५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध मे सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रसटि होई ॥ ३६ ॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नवनिधि तिसदा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ ३८ ॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

रामकली सदु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥१॥ हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥ २ ॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ। । सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥ ४ ॥ अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरिसरि पावए ॥ हरि भाइणा सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ

गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै
पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥
कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि
गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ॥ कहै सुंदरु
सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥६॥१॥

रामकली महला ५ छंत

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि
खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा॥जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा
हरि जानीअड़ा ॥ नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अंम्रित प्रिअ
गूड़ा ॥ नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ माइआ
मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ कहु नानक गुर
बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥ १ ॥ गोबिंदा मेरे
गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ किरपाला मेरे किरपाला दान
दातारा मेरे किरपाला ॥ दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि
सोहनिआ ॥ इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥
जिसनो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ कहु नानक जो प्रभ
कउ भाणा तिसही कउ प्रभु पिआरा ॥२॥ माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का
माणो ॥ जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो॥ सुघड़ सुजाना सद
परधाना अंमृतु हरि का नामा॥चाखि अघाणे सारग पाणे जिन कै भाग
मथाना ॥ तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणा ॥
कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥ ३ ॥ मंगला हरि
मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला॥सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ
सोहिलड़ा ॥ अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ सो
प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ चूकी पिआसा
पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै
नित नित मंगलु सुनीऐ ॥४॥१॥ रामकली महला ५ ॥ हरि

हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ॥राम रामा राम रमा कंठि उरधारीऐ ॥ उरधारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥ भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ जगदीस ईस गोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥ १ ॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ मालु मिलख भंडार नामु अनंत धरा ॥ नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम पुनह चरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥ २ ॥ गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरख पति परमेसरा॥ सरब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू संतु सुजाणु सोइ जिसहि प्रभ जी मानई ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु द्रड़ाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुंनीआ ॥ जलने बुझाई सांति आई मिले चिरी विछुंनिआ ॥ आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ रुणझुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥ १ ॥ सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ अनंद मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ कृपा करि प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ हरि एकु चितवै प्रभु एकु गावै हरि एकु दृसटी आइआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ २ ॥

१२-११
२०

मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ दइआल
प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ दइआल दुखहर सरणि
दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम
उधारणो ॥ सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥
बिनवंति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥ ३ ॥ राखि
लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ आठ पहर अपना
प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ धिआइ सो प्रभु तरे भवजल रहे
आवण जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥
सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि
आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५
छंत ॥ सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥
नानक प्रभू आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥ १ ॥ छंतु ॥ प्रभ बिपति
निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ सदा सदा हरि सिमरीऐ
जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ
इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गुरचरन लागे दिन सभागे सरब गुण
जगदीसरै ॥ करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥
बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥ १ ॥
सलोकु ॥ हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक
टेक गुोपाल की गोविंद संकट मोच ॥ १ ॥ छंतु ॥ भै संकट काटे
नाराइण दइआल जीउ ॥ हरि गुण आनंद गाए प्रभ दीनानाथ
प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥
कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ पिंडु गृहु
थानु तिसका तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइ नानक
सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण
गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥ १
॥ छंतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ भजु
साधू संगि दइआलदेव मन की मति तिआगु जीउ ॥ इक ओट कीजै
जीउ दीजै आस इक धरणी धरै ॥ साध संगे हरि नाम रंगे संसारु

सागरु सभु तरै ॥ जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागे दागु जीउ ॥ बलि जाइ नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥ ३ ॥ सलोकु धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥ सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥ १ ॥ छंतु ॥ सगल इछ मेरी पुंनीआ मिलिआ निरंजन राइ जीउ ॥ अनदु भइआ वडभागीहो ग्रिहि प्रगटे प्रभ आए जीउ ॥ ग्रिहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ गणा ॥ बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ आपे मिलाए गहि कंठि लाए तिसु बिना नही जाइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु रामकली महला ५ ॥ रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥

रामकली महला ५ रुती सलोकु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ करि बंदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥१॥ किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइ ॥२॥ छंतु ॥ जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ पुंन दान न तुलि किरिआ हरि सरब पापा हंत जीउ ॥ बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहंत जीउ ॥ १ ॥ सलोक ॥ उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥ १ ॥ संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अनंत ॥ सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥

घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए चरन कमल प्रफुलिआ ॥ सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥ २ ॥ सलोक ॥ साध संगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥ १ ॥ जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥२॥ छंतु ॥ ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ ॥ प्रेम बिछोहु दुहागणी दृसटि न करी राम जीउ ॥ नह दृसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ करि पाप जोनी भैभीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ बिनवंति नानक ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥ ३ ॥ सलोक ॥ सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ मन तन अंतरि रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ ॥ घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ प्रभ पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नवनिधि गृह भरे ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ प्रिअ रंगि जागे नह छिद्र लागे कृपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥ ४ ॥ सलोक ॥ आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥ १ ॥ बिनु मिलबे सांति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण धृगु बना ॥ सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ ईत उत दहदिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥ ५ ॥ सलोक

॥ जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी सांति ॥ नानक प्रभ पूरन मिले दुतीआ बिनसी भ्रांति ॥ १ ॥ साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ ध्रोह जीउ ॥ सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ भाउ भगति गोविंद बांछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥६॥ सलोक ॥ हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ संत संजोगी नानका गृहि प्रगटे प्रभ मीत ॥ १ ॥ नाद बिनोद अनंद कोड प्रिअ प्रीतम संगि बने ॥ मन बांछत फल पाइआ हरि नानक नाम भणे ॥ २ ॥ छंतु ॥ हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ सखी सहेली गाउ मंगलो गृहि आए हरि कंत जीउ ॥ गृहि लाल आए मनि धिआए सेज सुंदरि सोहीआ ॥ वणु तृणु त्रिभवण भए हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ मिले सुआमी इछ पुंनी मनि जपिआ निरमल मंत जीउ ॥ बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥ ७ ॥ सलोक ॥ संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥ १ ॥ जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥ २ ॥ छंत ॥ चरण बिराजत सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ तजि आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ बिनवंति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥८॥१॥

रामकली महला १ दखणी ओअंकारु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ ओअंकारु सैल

जुग भए ॥ ओअंकारि बेद निरमए ॥ ओअंकारि सबदि उधरे ॥ ओअंकारि
गुरमुखि तरे ॥ ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ ओनम अखरु त्रिभवण
सारु ॥ १ ॥ सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ लिखु राम नाम
गुरमुखि गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ससै सभु जगु सहजि उपाइआ
तीनि भवन इक जोती ॥ गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक
मोती ॥ समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ गुरमुखि
देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥२॥ धधै धरमु धरे धरमापुरि
गुणकारी मनु धीरा ॥ धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भए मनूरा
॥ धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ करते की
मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥ ३ ॥ ङिआनु गवाइआ दूजा
भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ गुर रसु गीत बाद नही भावै
सुणीऐ गहिर गंभीरु गवाइआ ॥ गुरि सचु कहिआ अंमृतु लहिआ
मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अंमृतु
पीआइआ ॥ ४ ॥ एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥
अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरु महलु सिञापै ॥ प्रभु नेड़ै हरि दूरि न
जाणहु एको सृसटि सबाई ॥ एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु
समाई ॥ ५ ॥ इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न
जाई ॥ माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ लबि लोभि
मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ एकु सरेवै ता गति मिति पावै
आवणु जाणु रहाई ॥ ६ ॥ एकु अचारु रंगु इकु रूपु ॥ पउण पाणी
अगनी असरूपु ॥ एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ एको बूझै सूझै पति
होइ ॥ गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ गुरमुखि एकु विरला को
लहै ॥ जिसनो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ गुरू दुआरै आखि सुणाए
॥७॥ ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥
ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ ऊनवि
बरसै नीझर धारा ॥ ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ इसु एके का जाणै भेउ
॥ आपे करता आपे देउ ॥ ८ ॥ उगवै सूरु असुर संघारै ॥ ऊचउ देखि
सबदि बीचारै ॥ ऊपरि आदि अंति तिहु लोइ ॥ आपे करै कथै सुणै

सोइ ॥ ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ प्रभु जग जीवनु अवरु न कोइ ॥ नानक नामि रते पति होइ ॥ ९ ॥ राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ राति दिनंति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिसही जेहा ॥ अति निरमाइलु सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥१०॥ रोसु न कीजै अंमृतु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनंती ॥ एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥११॥ लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अनंदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥१२॥ लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ लबु लोभु बुरा अहंकारु ॥ लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ मनमुखु अंधा मुगधु गवार ॥ लाहे कारणि आइआ जगि ॥ होइ मजूरु गइआ ठगाइ ठगि ॥ लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥ १३ ॥ आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ आई न मेटण को समरथु ॥ आथि सैल नीच घरि होइ ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना जगु बउराना ॥ सभ महि वरतै एको सोइ ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥ १४ ॥ जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति किव होई ॥ १५ ॥ विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥ १६ ॥ गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥ गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर

वीचारि ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ ता मिलीऐ जा लए
मिलाइ ॥ गुणवंती गुण सारे नीत ॥ नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥१७
॥ कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ कसि
कसवटी सहै सु ताउ ॥ नदरि सराफ वंनीस चड़ाउ ॥ जगतु पसू
अहंकालु कसाई ॥ करि करतै करणी करि पाई ॥ जिनि कीती तिनि
कीमति पाई ॥ होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥ १८ ॥ खोजत
खोजत अंमृतु पीआ ॥ खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ खरा खरा
आखै सभु कोइ ॥ खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ खात पीअंत मूए नही
जानिआ ॥ खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ असथिरु चीतु मरनि
मनु मानिआ ॥ गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥ १९ ॥ गगन गंभीरु
गगनंतरि वासु ॥ गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ गइआ न आवै आइ
न जाइ ॥ गुरपरसादि रहै लिव लाइ ॥ गगनु अगंमु अनाथु अजोनी
॥ असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी
॥ गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥२०॥ घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥
जाति असंख अंत नही मेरे ॥ केते मात पिता सुत धीआ ॥ केते गुर
चेले फुनि हूआ ॥ काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ केती नारि वरु एकु
समालि ॥ गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ दहदिस ढूढि घरै महि
पाइआ ॥ मेलु भइआ सतिगुरू मिलाइआ ॥ २१ ॥ गुरमुखि गावै
गुरमुखि बोलै ॥ गुरमुखि तोलि तुलावै तोलै ॥ गुरमुखि आवै जाइ
निसंगु ॥ परहरि मैलु जलाइ कलंकु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥
गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ गुरमुखि सबदु अंमृतु है सारु ॥ नानक
गुरमुखि पावै पारु ॥२२॥ चंचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ चोरी मिरगु अंगूरी
खाइ ॥ चरन कमल उरधारे चीत ॥ चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥
चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥ चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ चिति वसै
राचै हरि नाइ ॥ मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ ॥ २३ ॥ छीजै देह
खुलै इक गंढि ॥ छेआनित देखहु जगि हंढि ॥ धूप छाव जे सम करि
जाणै ॥ बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ छाइआ छूछी जगतु
भुलाना ॥ लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ छीजै जोबनु जरूआ

सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥ २४ ॥ जापै आपि प्रभू तिहु
लोइ ॥ जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखहि राखु
॥ जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ जा तू
मेलहि ता तुझै समावा ॥ जैजैकारु जपउ जगदीस ॥ गुरमति मिलीऐ
बीस इकीस ॥ २५ ॥ झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ झूरि मरै
देखै परमादु ॥ जनमि मूए नही जीवण आसा ॥ आइ चले भए आस
निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ कालु न चांपै हरि गुन
गाइ ॥ पाई नवनिधि हरि कै नाइ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ २६ ॥
ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे समझै आपे सूझै ॥ गुर का कहिआ
अंकि समावै ॥ निरमल सूचे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी नही तोट
॥ लाल पदारथ साचु अखोट ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ गुर
की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरमति साचि समावहु ॥ २७ ॥ टूटै
नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर
बोलि ॥ दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ टूटै गंठि पड़ै वीचार ॥ गुर
सबदी घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥ त्रिभवण ठाकुरु
प्रीतमु मोटा ॥ २८ ॥ ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि
पछुताइ ॥ ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ पर
घरि जाती ठाकि रहाई ॥ महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी
साचि पिआरी ॥ साई सुोहागणि ठाकुरि धारी ॥ २९ ॥ डोलत डोलत
हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी
डार ॥ डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥ डरु राखिआ
गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब
देखा नही दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मंनि अंमृतु पीआ भरपूरि ॥
देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ गुरू दुआरै देवसी तिखा
निवारै सोइ ॥ ३० ॥ ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि
पवनि करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥
अमर अजाची हरि मिले तिनकै हउ बलि जाउ ॥ तिन की
धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै

पाइआ निरमल नाउ ॥ जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी तिसु सम्हला ता तनि दूखु न होइ ॥ ३१ ॥ णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ जाइ रसातलि अंति ॥ गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥ ३२ ॥ तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ ततु चुगहि मिलि एक से तिन कउ फास न रंच ॥ उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ गुरपरसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥ अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ ३३ ॥ थर थर कंपै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ थानि मानि सचु एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ सरबे थान थनंतरी तू दाता दातारु ॥ जह देखा तह एकु तू अंतु न पारावारु ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥ ३४ ॥ दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ दइआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु

१२१२/८८ धिआनु ॥ ३५ ॥ धनि गइऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि एक ॥ मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ धंधा धावत रहि गए मन महि सबदु अनंदु ॥ दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविंद ॥ बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥ ३६ ॥ ना ना करत न छूटीऐ विणु गुण जमपुरि जाहि ॥ ना तिसु एहु

न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥३७॥ पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ पर हरि पापु पछाणै आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जम कालु ॥ किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खैकालु ॥ मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥३८॥ फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥३९॥ बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महापुरख की निज घरि वासा होइ ॥ ४० ॥ भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढा है ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवा है ॥ भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥ गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ हरिगुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥ भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥ गुरपरसादी आपो चीन्है जीवतिआ इव मरीऐ ॥ ४१ ॥ माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो

मरै जे गुणु होवहि नालि ॥ मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि ॥ गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥ ४२ ॥ जो आवहि से जाहि फूनि आइ गए पछुताहि ॥ लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ धंधा मुआ विगूती माइआ ॥ जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ असथिरु करता तू धणी तिसही की मै ओट ॥ गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥४३॥ राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥ राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ तिन ही जैसी थी रहां जपि जपि रिदै मुरारि ॥ अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥४४॥ लसकरीआ घर संमले आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि सेइ ॥ प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥४५॥ बीजउ सूझै को नही बहै दूलीचा पाइ ॥ नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ वणु तृ ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ लाल रतन बहु माणक सतिगुर हाथि भंडारु ॥ ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइ ॥ रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ गुरमुखि बेअंतु धिआईऐ अंतु न पारावारु ॥ ४६ ॥ ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ ड़ाड़ै गारुड़ तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ गुरपरसादी हरि पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ सो साहु साच जिसु हरि धनु रासि ॥ गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ रूड़ी बाण

हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु
पाइआ नारि ॥४७॥ सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ साहु
सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु संचिआ साचउ
नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु
मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ साकउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी
तिसु ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ बिखिआ अंमृतु
एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥४८॥ खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख
असंख॥गणत न आवै किउ गणी खपि खपिमुए बिसंख॥खसमु पछाणै
आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख
भाइ ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि
मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइसी बीजउ
वथु विकारु ॥ जंत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥ ४९ ॥
सृसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ सृसटा करै सु निहचउ होइ ॥ संपै कउ ईसरु
धिआईऐ ॥ संपै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ संपै कारणि चाकर चोर ॥
संपै साथि न चालै होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै
छुटै निदानि ॥ ५० ॥ हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ हउ हउ
करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कंकन घणे करि
थाकी सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ हरि बिनु किनि सुखु
पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़णा हरि बुझना हरि सिउ
रखहु पिआरु ॥ हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥
५१ ॥ लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ आपे
कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ करते हथि वडिआईआ
बूझहु गुर बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ
सारि ॥ नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ मनमुख
भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई
तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि
हिरदै दिता दिखाइ ॥ ५२ ॥ पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ

बिचरै सहजि सुभाइ ॥ बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ मूरखु सबदु न चीनै सूझ बूझ नह काइ ॥ ५३ ॥ पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥ ५४ ॥ १ ॥

रामकली महला १ सिध गोसटि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ कवन तुम्हे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥ कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाही ॥ नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥२॥ घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए॥ सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए॥गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥ ३ ॥ दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउकरि पाईऐ पारो ॥ चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥४॥ जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे ॥ सुरति सबदि भवसागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो॥अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥ ५ ॥ सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुरदुआरो ॥ इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो॥ आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥६॥ हाटी बाटी रहहि

निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ कंद मूलु अहारा खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ गोरखपूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥७॥ हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डोलाई ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥ दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥ इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ॥नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ॥९॥अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ।साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥१०॥ ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी॥कांइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ नानक गुरमुखि नामु समालि ॥११॥ कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥१२॥ घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥१३॥ किउकरि बाधा सरपनि खाधा॥किउकरि खोइआ किउकरि लाधा ॥ किउकरि निरमलु किउकरि अंधिआरा ॥ इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥ १४ ॥ दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ नानक हउमै मेटि समाइ ॥१५॥ सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥ उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ नानक साचे भावै साचा ॥१६॥ किसु कारणि गृहु तजिओ उदासी ॥ किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥ किसु वखर के तुम वणजारे ॥ किउकरि साथु लंघावहु पारे ॥ १७ ॥ गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥ १८ ॥ कितु बिधि

पुरखा जनमु वटाइआ ॥ काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ ॥ कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ बिनु दंता कि खाईऐ सारु ॥ नानक साचा करहु बीचारु ॥ १६ ॥ सतिगुर कै जनमै गवनु मिटाइआ ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ मनसा आसा सबदि जलाई ॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ त्रैगुण मेटे खाईऐ सारु ॥ नानक तारे तारणहारु ॥ २० ॥ आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासी ॥ गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासी ॥ काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निजघरि होवै वासो ॥ जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥ २१ ॥ कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाइ ॥ किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाइ ॥ पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥ २२ ॥ आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ गुरबचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥ २३ ॥ अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुण थीआ ॥ सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥ २४ ॥ साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवागउणु भइआ ॥ आवागउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥

एका बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ सो बूझै जिसु
आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ नानक तारे तारणहारा
हउमै दूजा परहरिआ ॥२५॥ मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ पर घरु
जोहै हाणे हाणि ॥ मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ वेमारगि मूसै मंत्रि
मसाणि ॥ सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ नानक साचि रते सुखु जाणि
॥२६॥ गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥
गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥
गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥
गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ गुरमुखि
परचै सु सबदि गिआनी ॥ गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ गुरमुखि
पाईऐ अलख अपारु ॥ नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥२८॥ गुरमुखि
अकथु कथै बीचारि ॥ गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ गुरमुखि जपीऐ
अंतरि पिआरि ॥ गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ सबदि भेदि जाणै
जाणाई ॥ नानक हउमै जालि समाई ॥२९॥ गुरमुखि धरती साचे साजी
॥ तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥
साचि रतउ पति सिउ घरि जाउ ॥ साच सबद बिनु पति नही पावै ॥
नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥ ३० ॥ गुरमुखि असटसिधी सभि
बुधी ॥ गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ गुरमुखि सर अपसर
बिधि जाणै ॥ गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ गुरमुखि
तारे पारि उतारे ॥ नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥ ३१ ॥
नामे राते हउमै जाइ ॥ नामि रते सचि रहे समाइ ॥ नामि
रते जोग जुगति बीचारु ॥ नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ नामि
रते त्रिभवण सोझी होइ ॥ नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥ ३२ ॥
नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ नामि रते सदा तपु होइ ॥ नामि
रते सचु करणी सारु ॥ नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ बिनु
नावै बोलै सभु वेकारु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥
३३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ जोग जुगति सचि रहै
समाइ ॥ बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥ गुर

कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ बिनु सबदै सभि दूजै
लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ
उरधारि ॥ ३४ ॥ गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ गुरमुखि परखै
रतनु सुभाइ ॥ गुरमुखि साची कार कमाइ ॥ गुरमुखि साचे मनु
पतीआइ ॥ गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ नानक गुरमुखि चोट
न खावै ॥ ३५ ॥ गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ गुरमुखि लागै सहजि
धिआनु ॥ गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥
गुरमुखि करणी कार कराए ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥ ३६ ॥
गुरमुखि सासत्र सिमृति बेद ॥ गुरमुखि पावै घट घटि भेद ॥ गुरमुखि
वैर विरोध गवावै ॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ गुरमुखि राम
नाम रंगि राता ॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥ ३७ ॥ बिनु गुर
भरमै आवै जाइ ॥ बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ बिनु गुर मनूआ
अति डोलाइ ॥ बिनु गुर तृपति नही बिखु खाइ ॥ बिनु गुर
बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥ ३८ ॥ जिसु
गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ मुकति
महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ तनु हटड़ी
इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥ ३९ ॥ गुरमुखि
बांधिओ सेतु बिधातै ॥ लंका लूटी दैत संतापै ॥ रामचंदि मारिओ
अहिरावणु ॥ भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ गुरमुखि साइरि
पाहण तारे ॥ गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥ ४० ॥ गुरमुखि चूकै
आवण जाणु ॥ गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ गुरमुखि खोटे खरे
पछाणु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि दरगह सिफति
समाइ ॥ नानक गुरमुखि बंधु न पाए ॥ ४१ ॥ गुरमुखि नामु निरंजन
पाए ॥ गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ गुरमुखि साचे के गुण
गाए ॥ गुरमुखि साचै रहै समाए ॥ गुरमुखि साचि नामि पति
ऊतम होइ ॥ नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥ ४२ ॥
कवण मूलु कवण मति वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू
चेला ॥ कवण कथा ले रहहु निराले ॥ बोलै नानकु सुणहु तुम बाले

॥ एसु कथा का देइ बीचारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ ४३ ॥ पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥ ४४ ॥ मैण के दंत किउ खाईऐ सारु ॥ जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इत उत किस कउ जाणि समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥४५॥ हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मेटै एको होवै ॥ जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥ ४६ ॥ सच भै राता गरबु निवारै ॥ एको जाता सबदु वीचारै ॥ सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ नानक नदरी नदरि पिआरे ॥ ४७ ॥ कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवन जोधु जो कालु संघारै ॥ बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥४८॥ सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥४९॥ नाम ततु सभ ही सिरि जापै॥बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ दूजा जाइ इकतु घरि आनै॥बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥५०॥ अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंनमसुंनं॥चउथे सुनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥ घट घटि सुंन का जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ जो जनु नाम निरंजन राता ॥ नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१॥ सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥ अनहत सुंनु कहा ते होई ॥ अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥ ५२ ॥ नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुंन वजावहि तूरे ॥ साचै राचे देखि

हजूरे ॥ घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ गुपती बाणी परगटु होइ ॥
नानक परखि लए सचि सोइ ॥ ५३ ॥ सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥
गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ सुंन सबदु अपरंपरि धारै ॥ कहते मुकतु
सबदि निसतारै ॥ गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ नानक आपु गवाइ
मिलण नही भ्राते ॥ ५४ ॥ कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ किउ ततु न
बूझै चोटा खाइ ॥ जमदरि बाधे कोइ न राखै ॥ बिनु सबदै नाही पति
साखै ॥ किउकरि बूझै पावै पारु ॥ नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥५५॥
कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ ततु न
चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ मानै हुकमु
सभे गुण गिआन ॥ नानक दरगह पावै मानु ॥ ५६ ॥ साचु वखरु धनु
पलै होइ ॥ आपि तरै तारे भी सोइ ॥ सहजि रता बूझै पति होइ ॥ ता
की कीमति करै न कोइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ नानक पारि
परै सच भाइ ॥ ५७ ॥ सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ
भवजलु संसारो ॥ त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥
बोलै खेलै असथिरु होवै किउकरि अलखु लखाए ॥ सुणि सुआमी सचु
नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै
करि नदरी मेलि मिलाए ॥ आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए
॥ ५८ ॥ सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥
पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई ॥ नदरि करे सबदु
घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी
नामो मंनि वसाए ॥ सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥
चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥ ५९ ॥ त्रै सत
अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥ गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै
चीनै अलख अपारो ॥ त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो
॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ सुखमना
इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ नानक तिहु ते ऊपरि
साचा सतिगुर सबदि समाए ॥ ६० ॥ मन का जीउ पवनु कथीअले
पवनु कहा रसु खाई ॥ गिआन की मुद्रा कवन अउधू सिध की

कवन कमाई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अंमृत रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि तृपतासै ॥ नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥ ६१ ॥ रंगि न राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतमरामै कउ लहै ॥ ६२ ॥ गुरपरसादी रंगे राता ॥ अंमृतु पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिओ पीओ आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ नानक बूझै को वीचारी ॥ ६३ ॥ इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥ ६४ ॥ इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खावै दूख भूख साचे की साचे ही तृपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥ ६५ ॥ जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ नाभि कमल असथंभु न होतो त पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न जापी किउकरि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥ हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथंभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सुसारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न होतउ त्रिभवण जोति आपे

[illegible]

निरंकारु ॥ वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ साच
बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥ कितु कितु बिधि
जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु
उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु
बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै
समाए ॥ नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरिधारे ॥ नानक बिनु
नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥ ६८ ॥ गुरमुखि साचु सबदु
बीचारै कोइ ॥ गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ गुरमुखि मनु भीजै
विरला बूझै कोइ ॥ गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ गुरमुखि जोगी
जुगति पछाणै ॥ गुरमुखि नानक एको जाणै ॥६९॥ बिनु सतिगुर सेवे
जोगु न होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे
नामु पाइआ न जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ॥ बिनु सतिगुर
भेटे महा गरबि गुबारि ॥ नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥
गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरमुखि साचु रखिआ उरधारि ॥
गुरमुखि जगु जीता जम कालु मारि बिदारि ॥ गुरमुखि दरगह न आवै
हारि ॥ गुरमुखि मेलि मिलाए सो जाणै ॥ नानक गुरमुखि सबदि
पछाणै ॥ ७१ ॥ सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न
होई ॥ नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु
परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि
खुआई ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि
बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥ ७२ ॥ तेरी गति
मिति तू है जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे
परगटु आपे सभि रंगि माणै ॥ साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत
फिरहि फुरमाणै॥मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै
॥ अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥ नानक सभि
जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥७३॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली की वार महला ३ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥ सलोकु म० ३ ॥ सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिसनो लाए भाउ ॥ नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ अंभै सेती अंभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥ नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ लोकु कि वेखै बपुड़ा जिसनो सोझी नाहि ॥ जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइ ॥ जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ २ ॥ म० ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिसनो आपे मेले सोइ ॥ सुखै एहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइ ॥ अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥ सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई॥१॥वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ कबीर महिदी करिकै घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥१॥ म० ३ ॥ नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥२॥ पउड़ी ॥ वेकी सृसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ तुधु जेवडु मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥ २ ॥ सलोकु म० ३ ॥ भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ गुरपरसादी

हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उरधारि ॥ नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥१॥ म० ३॥ धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ कूड़ु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ सिरै उपरि जमडंडु है दूजै भाइ पति खोइ ॥ हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ॥ नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइ ॥२॥ पउड़ी॥ इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ इकना नो नाउ बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥३॥ सलोकु ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥१॥ म० ३ ॥ किउकरि इहु मनु मारीऐ किउकरि मिरतकु होइ ॥ कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइ ॥ गुरपरसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ नानक जिसनो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ २ ॥ म० ३ ॥ जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाएइ ॥ अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ दूजा भाउ रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा॥पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥ ४ ॥ सलोकु म० ३ ॥ मन का झूठा झूठु कमावै ॥ माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ ओहु तपा कैसे परमगति लहै ॥ गुरपरसादी को सचु कमावै ॥ नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राति दिनसु उपाइअनु संसार की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासिआ ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ

वणि तृणि ॥ सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥५॥ सलोक म० ३॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिसदै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ अभै निरंजनु परम पदु ताका भूखा होइ ॥ तिसका भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेख करेनि॥ अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ॥ सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥६॥ सलोकु म० ३ ॥ रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ नानक नउनिधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु धृगु जीवणु धृगु वासु॥ जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिमृति सासत साजिअनु पाप पुंन गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥ ७ ॥ सलोक म० ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ भै पइऐ तनु खीनु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु

गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥
रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ गुर कै सबदि कमलु
बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ भरमु गइआ ता जागिआ
चूका अगिआन अंधारु ॥ तिसनो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि
पिआरु ॥ सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ मनमुखि सीगारु
न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ बिनु हरि भगती सीगारु करहि
नित जंमहि होइ खुआरु ॥ सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु
जाणै करतारु ॥ नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ चंगै मंदै
आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥ २ ॥ म० ३ ॥
बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ
विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ
॥ तिन जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिनी सतिगुर
सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई
ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥३॥
पउड़ी ॥ आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ आपि
निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ
गुरमुखि सुखु पावहि ॥ निजघरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥
सचा गहिर गंभीरु है गुर सबदि बुझाई ॥८॥ सलोक म० ३ ॥ सचा
नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए
सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ नानक हरि का
भाणा मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निचचु ॥१॥ म० ३॥ मनमुख
बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ ओइ थाउ कुथाउ
न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ ओइ आपणै सुआइ आइ बहि
गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि
खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु
इहु वीचारु ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख
कटणहारु ॥ नामु जपे नामो आराधे तिसु जन कउ करहु सभि
नमसकारु ॥ मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥

जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ गुरपरसादी
पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥
जिसनो बखसे तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ॥ घट अंतरि अंमृतु
रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥ ९ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबाणीआ
कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई
करम करेनि ॥ जाइ पुछहु सिमृति सासत बिआस सुक नारद बचन
सभ स्रिसटि करेनि ॥ सचै लाए सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥
नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥ १ ॥ म० ३ ॥
गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ ओइ भाणै चलनि
आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ कूड़ु कुसतु कमावदे परनिंदा सदा
करेनि ॥ ओइ आपि डुबे परनिंदका सगले कुल डोबेनि ॥ नानक जितु
ओइ लाए तितु लगे ओइ बपुड़े किआ करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ
नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ इकि कूड़ि कुसति
लाइअनु मनमुख विगूती ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती
॥ जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वातिसपीती ॥ नानक नामु धिआईऐ
सचु सिफति सनाई ॥ १० ॥ सलोकु म० १ ॥ सती पापु करि सतु
कमाहि ॥ गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ
॥ भावै आवउ भावै जाउ ॥ सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ आपो आपै
पूजा होइ ॥ काजी होइ कै बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाइ ॥
वढी लैकै हकु गवाए ॥ जे को पुछै ता पड़ि सुणाए ॥ तुरक मंत्रु कनि
रिदै समाहि ॥ लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ चउका दे कै सुचा होइ ॥
ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ आगै पाछै रोवहि
पूत ॥ जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ कितु कारणि सिरि छाई पाई
॥ नानक कलि का एहु परवाणु ॥ आपे आखणु आपे जाणु ॥१॥ म०
१ ॥ हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ सूतु पाइ
करे बुरिआई ॥ नाता धोता थाइ न पाइ ॥ मुसलमानु करे वडिआई
॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥

करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ मुद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ एथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ ॥ सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥११॥ सलोक म० १॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि॥ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिसनो देइ तिसु आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥ १ ॥ म० १ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ पुंन दान का करे सरीरु ॥ सो गिरही गंगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु॥२॥म० १॥ सो अउधूती जो धूपे आपु॥भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ पटण महि भीखिआ करै॥सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ बोलै गोरखु सति सरूप ॥ परम तंत महि रेख न रूप ॥३॥ म० १ ॥ सो उदासी जि पाले उदासु ॥ अरध उरध करे निरंजन वासु ॥ चंद सूरज की पाए गंढि ॥ तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ बोलै गोपीचंदु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ४ ॥ म० १ ॥ सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजाले ॥ सुपनै बिंदु न देई झरणा ॥ तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु

५ ॥ म० १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ गगन मंडल महि रोपै थंमु ॥ अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ ते बैरागी सत समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥६॥ म० १ ॥ किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ कंन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति एको नाउ ॥ कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे समकरि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरंकारि जो रहै समाइ ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥ १२ ॥ सलोक म० ३ ॥ मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु ओहु जि मुगधु है अहंकारे मरणा ॥ एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥१॥ म० १ ॥ नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥ लेखा रबु मंगसीआ बैठा कढि वही ॥ तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥२॥ पउड़ी ॥ हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति ना पवै किछु कहणु न जापै ॥ गुरपरसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥ सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥१३॥ सलोकु म० १ ॥ सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ) ॥ परसरामु रोवै घरि आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु निकाला भइआ ॥ सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ रोवै दहसिरु

लंक गवाइ ॥ जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ रोवहि पांडव भए
मजूर ॥ जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥
एकी कारणि पापी भइआ ॥ रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ अंति कालि
मतु लागै भीड़ ॥ रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥ घरि घरि मागहि भीखिआ
जाइ ॥ रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ पंडित रोवहि गिआनु
गवाइ ॥ बाली रोवै नाहि भतारु ॥ नानक दुखीआ सभु संसारु ॥
मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ अउरी करम न लेखै लाइ ॥ १ ॥
म० २ ॥ जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥
नानक मंनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ सभ महि गुपतु
वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ गुण गावै गुण उचरै गुण माहि
समाइआ ॥ सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ सभु
किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥ १४ ॥ सलोक म० २ ॥
नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ रतना सार न जाणई आवै
आपु लखाइ ॥ १ ॥ म० २ ॥ रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥
वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ जिन गुणु पलै नानका माणक
वणजहि सेइ ॥ रतना सार न जाणई अंधे वतहि लोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ बजर कपाट न खुलनी
गुर सबदि खुलीजै ॥ अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ तितु
घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ सभ महि एकु वरतदा जिनि
੧੧·੨/੮੦ आपे रचन रचाई ॥ १५ ॥ सलोक म० २ ॥ अंधे कै राहि दसिऐ अंधा
होइ सु जाइ ॥ होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ पाइ ॥ अंधे एहि
न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ अंधे सेई नानका खसमहु
घुथे जाहि ॥ १ ॥ म० २ ॥ साहबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ
॥ जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ जिथै सु वसतु न जाप
आपे वरतउ जाणि ॥ नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥
२॥२॥ सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ॥ नानक हुकमु न
बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥३॥पउड़ी॥ काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि

दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी लाइअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे सृसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥ १६ ॥ सलोक म० १ ॥ सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥ १७ ॥ सलोक म० २ ॥ नानक चिंता मति करहु चिंता तिसही हेइ ॥ जल महि जंत उजाइनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिसही हेइ ॥१॥ म० १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली झीवरु तृसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि तृसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥ १८ ॥ सलोक म० १ ॥ वेलि पिंजाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥ लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु हंढै ॥ सचु पुराणा होवै नाही सीता

कदे न पाटै ॥ नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥१॥ म० १ ॥ सच की काती सचु सभु सारु ॥ घाड़त तिस की अपर अपार ॥ सबदे साण रखाई लाइ ॥ गुण की थेकै विचि समाइ ॥ तिसदा कुठा होवै सेखु ॥ लोहू लबु निकथा वेखु ॥ होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ नानक दरि दीदारि समाइ ॥२॥ म० १ ॥ कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥३॥ पउड़ी ॥ सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥१६॥ सलोक म० ३ ॥ आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ किआ करे एह बपुड़ी जां भुोलाए सोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥२०॥ सलोक म० १ ॥ सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा ॥ सरवर अंदरि हीरा मोती सो हंसा का खाणा ॥ बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ ओना रिजकु न पइओ ओथै ओन्हा होरो खाणा ॥ सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥१॥ साहिबु मेरा उजला जेको चिति करेइ ॥ नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥ 23.2.81

रामकली की वार महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक म० ५ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु दृड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ वादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥ १ ॥ सलोकु म० ५ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुर बाहरा धृगु जीवणु संसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सदही वरतै नालि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ कोइ न किसही वसि सभना इक धर ॥ पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछु न जाणीऐ ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ गाईऐ राति दिनंतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥ २ ॥ सलोक म० ५ ॥ भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटंबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि नानक नदरि निहाल ॥ १ ॥ म० ५ ॥ विणु

तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ देहि नामु संताखीआ उतरै
मन की भुख ॥ गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख
॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ घड़ी न मुहतु चसा
तिसु बिनु ना सरै ॥ अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥
जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ भगतु गिआनी तपा जिसु
किरपा करै ॥ सो पूरा परधानु जिसनो बलु धरै ॥ जिसहि जराए आपि
सोई अजरु जरै ॥ तिसही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥ ३ ॥
सलोकु म० ५ ॥ धंनु सु राग सु रंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥
धंनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ जिनी इक मनि इकु
अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी
पलै पाइ ॥ जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ आखा
बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जनम
मरण दुखु जाइ ॥ जन नानक पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ
॥ १ ॥ म० ५ ॥ धंनु सु वेला घड़ी धंनु धनु मूरतु पलु सारु ॥ धंनु
सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ
हरि पाइआ अगम अपारु ॥ हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु॥
जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥२॥पउड़ी॥ सिफति
सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न
लीतीअनु ॥ जिसनो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ ओना इको नामु
अधारु इका उन भतिआ ॥ ओना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ ओना
पिआरा रबु ओनाहा जोगई ॥ जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु
जाणिआ ॥ हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥ ४ ॥ सलोक
म० ५ ॥ हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु॥हरि इको
मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥ हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु
मैला करै न भंगु ॥ जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु॥ हरि इको
मेरा मसलती भंनण घड़न समरथु ॥ हरि इको मेरा दातारु है सिरि
दातिआ जग हथु ॥ हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु॥
सतिगुरिसंतु मिलाइआ मसतकि धरि कै हथु॥वडा साहिबु गुरू मिलाइआ

जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि
संजोग ॥ नानक पाइआ सचु नामु सदही भोगे भोग ॥ १ ॥ म० ५ ॥
मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ वेखदिआ ही भजि जानि
कदे न पाइनि बंधु ॥ जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखणि गंढु ॥ जितु
दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ जीअ की सार न जाणनी
मनमुख अगिआनी अंधु ॥ कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥
अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ
करत बिहंधु ॥ कृपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ जन
नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो रते
दीदार सेई सचु हाकु ॥ जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥
मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥
जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ मनु तनु होइ निहालु
बिंदक नदरि झाकु ॥ नउनिधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ तिसै
मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥५॥ सलोक म० ५ ॥ हरणाखी
कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ सुंदर बचन तुम सुणहु
छबीली पिरु तैडा मनसाधारणु ॥ दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा
मै कारणु ॥ ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ पिरु छैलु
छबीला छडि गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ ना हउ भुली ना हउ
चुकी ना मै नाही दोसा ॥ जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु
संदेसा ॥ साई सोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ पिरि
अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥ करमहीण धन
करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥ सभि सुहागणि माणहि रलीआ
इक देवहु राति मुरारी ॥१॥ म० ५ ॥ काहे मन तू डोलता हरि मनसा
पूरणहारु ॥ सतिगुरु पुरखु धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ हरि नामा
आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ जिन कउ पूरबि
लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा
धनु संचिआ नामु अपारु ॥ अठे पहर इकतै लिवै मंननि
हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु

मनि पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसनो सदा सुख ॥
जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु तू आवहि चिति
तिसु कि काड़िआ ॥ जिसदा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ जिसु
तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु
धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वडपरवारिआ जिसु तू आवहि चिति
तिनि कुल उधारिआ ॥६॥ सलोक म० ५ ॥ अंदरहु अंना बाहरहु
अंना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै
॥ अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नींद विआपिआ
कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु करम हउ जुगता
तुहु कुटे किआ फलु पावै ॥ हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा
मछी नो तार लावै ॥ जा हंस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि
जोड़ु कदे न आवै ॥ हंसा हीरा मोती चुगना बगु डडा भालण जावै ॥
उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ जितु को लाइआ तित
ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे
जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख हंस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै
॥ रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥
सरवर हंसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ जन नानक जिस दै मसतकि
भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटंब
सभि तारे सभा सृसटि छडावै ॥१॥ म० ५॥ पंडितु आखाए बहुती राही
कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि
नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा ॥ सचु कहै
ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा
मनि लागा तिसु मोहा॥ठगै सेती ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा
॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै तां उघड़ि आइआ लोहा ॥ बहुतेरी
थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ सतिगुर
की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ सतिगुरु
निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक
जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि

मनेहा ॥ अंमृत बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई॥जिसनो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ जिसनो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ जिसनो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ जिसनो तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ तिसनो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥ ७ ॥ सलोक म० ५ ॥ करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ हथ देइ आपि रखु विआपै भउ न कोइ ॥ गुण गावा दिनु रैणि एतै कंमि लाइ ॥ संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ सरब निरंतरि खसमु एको रवि रहिआ ॥ गुरपरसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ दइआ करहु दइआल अपणी सिफिति देहु ॥ दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति एह ॥ १ ॥ म० ५ ॥ एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥ इको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइ ॥ मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु धिआइ॥ अंमृतु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वड भागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसनो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ जिसनो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ जिसनो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ जिसनो तेरा अंगु सु निरमली हूँ निरमला ॥ जिसनो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ॥ जिसनो तेरी खुसी तिनि नउनिधि भुंचीऐ ॥ जिसनो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी ॥ जिसनो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥ ८ ॥ सलोक महला ५ ॥ होहु कृपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ॥ तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कोइ न बंधै वाट ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी

उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि॥भउ जलु बिखमु
असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंमृतु सेइ
खाहि ॥ कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु
सम्हाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥ ६ ॥
सलोक म० ५ ॥ दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रहम नामु देहु आधारु॥
अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ तू निहचलु निरवैरु सचु
सचा तुधु दरबारु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ प्रभ
छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ से सुखीए सचु साह
से जिन सचा बिउहारु ॥ जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु
॥ नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥१॥ म० ५ ॥ अनद सूख बिस्राम
नित हरि का कीरतनु गाइ ॥ अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि
नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ ना तू
आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ ना तू आवहि वसि तीरथ नाईऐ ॥ ना तू
आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ ना
तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥१०॥ सलोक म० ५ ॥ आपे वैदु
आपि नाराइणु ॥ एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ गुर का सबदु
अंमृत रसु खाइण ॥ नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण
॥१॥ म० ५ ॥ हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ हुकमे दुखु सुखु समकरि सहै
॥ हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ नानक जिसनो होवै दाति ॥ हुकमि
मरै हुकमे ही जीवै ॥ हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ हुकमे सोग हरख आनंद
॥ हुकमे जपै निरोधर गुरमंत ॥ हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ नानक
जा कउ भगती लाए ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा
सेवदारु ॥ हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार॥ सो ढाढी धंनु
धंनु जिसु लोड़े निरंकार॥सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु॥ओहु
ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रैणार ॥ मंगै अंमृत नामु न आवै कदे
हारि॥कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार॥सो ढाढी गुणवंतु जिसनो प्रभ
पिआर॥११॥सलोक म० ५॥ अंमृतबाणी अमिउ रसु अंमृतु हरि का नाउ॥

मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ उपदेसु सुणहु तुम गुर सिखहु सचा इहै सुआउ ॥ जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ॥सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु जाइ॥नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥१॥ म० ५॥ नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ॥भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै करम करेइ॥भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ॥भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ तृसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नाउ मनि वसै ॥ तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥ १२ ॥ सलोक म० ५ ॥ मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुंभै भुली ॥ तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तू है ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ जिसनो लाए सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ जिसनो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो॥सभे तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥१३॥ सलोक म० ५॥ उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर मिलि सजणु मै लधा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे दुख संताप जां तुधहु भुलीऐ ॥ जे कीचनि

लख उपाव तां कही न घुलीऐ ॥ जिसनो विसरै नाउ सु निरधनु कांढीऐ ॥ जिसनो विसरै नाउ सु जोनी हांढीऐ ॥ जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ॥१४॥सलोकम०५॥तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तूनानक मनि भाणा ॥ घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥१॥ म० ५॥ पाव सुहावे जां तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी॥मुखु सुहावा जां तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी॥२॥पउड़ी॥मिलि नारी सत संगि मंगलु गावीआ ॥ घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ॥ बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ मनि दरसन की पिआस चरन दासावीआ ॥ सोभा बणी सीगारु खसमि जां रावीआ ॥ मिलीआ आइ संजोगि जां तिसु भावीआ ॥ १५ ॥ सलोक म० ५ ॥ हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥१॥ म० ५ ॥ देह छिजंदड़ी ऊणम झूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ जो भावै पारब्रहम सोई सचु निआउ ॥ जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ ॥ जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ कारणकरण करीम कुदरति तेरीऐ ॥ १६ ॥ सलोक म० ५ ॥ सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ पधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंडा गुर दरसनु देखि निहाली ॥१॥ म० ५ ॥ हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ मुलि न घिधा मैकु सतिगुरि दिता ॥ ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ जनमु पदारथु नानक जिता ॥२॥ पउड़ी ॥ जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ लगा रंगु चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ आतम जिता गुरमती आगंजत

पागा ॥ जिसहि धिआइआ पारब्रहमु सो कलि महि तागा ॥ साधू
संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ जिसु प्रभु मिलिआ आपणा
सो पुरखु सभागा ॥ नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥१७॥
सलोक म० ५ ॥ जां पिरु अंदरि तां धन बाहरि ॥ जां पिरु बाहरि तां
धन माहरि ॥ बिनु नावै बहु फेर फिराहरि ॥ सतिगुरि संगि दिखाइआ
जाहरि ॥ जन नानक सचे सचि समाहरि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ आहर
सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ नानक जितु आहरि जगु उधरै
विरला बूझै कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा
॥ रंग परंग अनेक न जापनि करतबा ॥ जीआ अंदरि जीउ सभु
किछु जाणला ॥ सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ तेरै घरि
आनंदु वधाई तुधु घरि ॥ माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥
सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ नानक दासनि दासु तुधु आगै
बिनवता ॥ १८ ॥ सलोक म० ५ ॥ छतड़े बाजार सोहनि विचि
वपारीए ॥ वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धनी ॥ १ ॥ महला ५ ॥
कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु
रचाइआ तिसही माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सफलिउ बिरखु
सुहावड़ा हरि सफल अंमृता ॥ मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै
घिता॥ वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता॥ओहु पिआरा जीअ
का जो खोल्है भिता ॥ सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ कुरबाणी
वंञा वारणै बले बलि किता॥ दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइ चिता
॥ जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अंमृतु सतिगुरि दिता ॥१९॥
सलोक महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती
भारि न विआपई उन कउ लाहू लाहि ॥१॥ महला ५ ॥ कबीर चावल
कारणे तुख कउ मुहली लाइ॥संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धरमराइ ॥२॥
पउड़ी ॥ आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥ आपणी कीमति आपि
आपे ही जातीआ॥सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ॥आपणा कीता
आपि आपि वरंनिआ॥धंनु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा॥धंनु सु तेरे भगत
जिनी सचु तूं डिठा ॥ जिसनो तेरी दइआ सलाहे सोइ तुधु ॥ जिसु गुर

भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥ २० ॥ सलोक म० ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ जो नर पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥ १ ॥ म० ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअन्हि जिन्हा पिआरे नेह ॥२॥ पउड़ी ॥ जपु तपु संजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ जिसु बुझाइहि अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ अंतरजामी अगम पुरखु इक द्रसटि दिखाए ॥ साध संगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए ॥ अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ जनम मरण भउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए ॥ नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलि लाए ॥२१॥ सलोक म० ५ ॥ मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ॥ नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूल ॥ १ ॥ म० ५ ॥ अंदरु विधा सचि नाइ बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ नानक रविआ हभ थाइ वणि तृणि त्रिभवणि रोमि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ कीमति किसै न पाइ तेरी थटीऐ ॥ गहिर गंभीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥नानक वरतै इकु इको इकु तू ॥२२॥१॥ सुधु

रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ देगुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीवदै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥ मति गुर आतमदेव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअदै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ १ ॥ लहणे की फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै

गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥ २ ॥ जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरमराइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सैडाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंमृतु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥ ३ ॥ होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै किकिओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिअनु करि आवागउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिनि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति देखहु जिकिओनु ॥ जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ ४ ॥ फेरि वसाइआ फेरु आनि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वरिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथु न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ नउनिधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरु आणि सतिगुरि खाडूरु ॥ ५ ॥

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥
जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ
करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा
कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा
बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रैभाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ
सतहु छावाणु॥नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु॥चारे कुंडा सुझीओसु
मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥
अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु॥झखड़ि वाउ न डोलई परबतु
मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे
पातिसाह जां त सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु
॥ नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई
दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ धंनु धंनु रामदास गुरु
जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै
धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु
अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं सेविआ भाउ
करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे
तुधु सपरवारिआ ॥ धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु
तू लहणा तू है गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा तां मनु साधारिआ
॥७॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु
साजिओनु आपे ही थंम्हि खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि
लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ
॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ उगवणहु तै
आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू ना सेविओ मनमुखा
पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे
जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ ८ ॥

रामकली बाणी भगता की कबीर जीउ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥ तृसना

कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥ १ ॥ कोई है रे संतु
सहज सुख अंतरि जाकउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ एक बूंद भरि तनु
मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवन चतुरदस भाठी
कीनी ब्रहम अगनि तनि जारी रे ॥ मुद्रा मदक सहज धुनि लागी
सुखमन पोचनहारी रे ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि
गहनै देउ रे ॥ सुरति पिआल सुधा रसु अंमृतु एहु महा रसु पेउ रे ॥
३ ॥ निझर धार चुऐ अति निरमल इह रस मनूआ रातो रे ॥ कहि
कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥ ४ ॥ १ ॥ गुड़ु करि
गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ सुखमन नारी
सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥ १ ॥ अउधू मेरा मनु मतवारा ॥
उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन भइआ उजिआरा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु
दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥ २ ॥ प्रगट प्रगास गिआन गुर
गमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न
कबहू जाई ॥ ३ ॥ २ ॥ तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी
॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥ १ ॥ अब
तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसाद सुखी सदही ॥ १ ॥रहाउ॥
तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु
मगहर पाइओ फुनि कासी बसे आई ॥ २ ॥ जैसा मगहरु तैसी कासी
हम एकै करि जानी ॥ हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि
गुमानी ॥ ३ ॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥
अजै सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥ ४ ॥ कवनु
नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की काणि न
कढते अपने गुर परसादे ॥ ५ ॥ अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है
सारिंगपानी ॥ राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥ ६ ॥
३ ॥ संता मानउ दूता डानउ इह कुठवारी मेरी ॥ दिवस रैनि तेरे
पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥ १ ॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥
भउकहि आगै बदनु पसारि ॥१॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक

अब तउ मिटिआ न जाई ।। तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई
।।२।। दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ।। साधू होइ
सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ।। ३ ।। कोठरे महि कोठरी परम
कोठी बीचारि ।। गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसत सम्हारि ।।४।।
कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ।। अम्रित रसु जिनि
पाइआ थिरु ता का सोहागु ।। ५ ।। ४ ।। जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै
सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ।। जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ
पंडितु हरि न कहै ।। १ ।। काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ।। रामु न
बोलहि पाडे दोजकु भरहि ।।१।। रहाउ ।। आपन ऊच नीच घरि भोजनु
हठे करम करि उदरु भरहि ।। चउदस अमावस रचि रचि मांगहि कर
दीपकु लै कूप परहि ।। २ ।। तूं ब्रहमनु मै कासी क जुलहा मुहि तोहि
बराबरी कैसे कै बनहि ।। हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे
डूबि मरहि ।। ३ ।। ५ ।। तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस
भरीआ ।। इह अंम्रित की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ।।१।। जानी
जानी रे राजा राम की कहानी ।। अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि
बिरलै जानी ।। १ ।। रहाउ ।। भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले
उरधरिआ ।। सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ।। २ ।।
सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ।। कहि
कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ।। ३ ।। ६ ।। मुंद्रा
मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ।। खिंथा इहु तनु
सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ।।१।। ऐसा जोगु कमावहु जोगी
।। जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ।। १ ।। रहाउ ।। बुधि बिभूति चढावउ
अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ।। करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की
किंगुरी बजाई ।।२।। पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ।।
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ।। ३ ।। ७ ।। कवन
काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ।। भवनिधि
तरन तारन चिंतामनि इक निमख न इहु मनु लाइआ ।। १ ।।
गोबिंद हम ऐसे अपराधी ।। जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ

तिस की भाउ भगति नही साधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परधन परतन परती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ आवागवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥ २ ॥ जिह घर कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥३॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए संपै मो माही ॥ दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥ ४ ॥ दीन दइआल कृपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥ ५ ॥ ८ ॥

जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ अनहद बजहि सदा भरपूर ॥१॥ ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥१॥रहाउ॥ जिह सिमरन नाही ननकारु ॥ मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥२॥ जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ दीपकु बांधि धरिओ बिनु तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥३॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुरपरसादी उतरहि पारि ॥ ४ ॥ जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥ ५ ॥ जिह सिमरन तेरी जाइ बलाइ ॥ जिह सिमरन तुझु पोहै न माइ ॥ सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥ ६ ॥ सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥ ७ ॥ जिह सिमरन नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जाका नही अंतु ॥ तिस के आगे तंतु न मंतु ॥ ८ ॥ ९ ॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ बंधचि बंधनु पाइआ ॥ मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ जब नख सिख

इहु मनु चीना ॥ तब अंतरि मजनु कीना ॥१॥ पवनपति उनमनि रह
खरा ॥ नही मिरतु न जनमु जरा ॥१॥ रहाउ ॥ उलटीले सकति सहां
॥ पैसीले गगन मझारं ॥ बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ भेटीअले रा
निसंगा ॥२॥ चूकीअले मोह मइआसा ॥ ससि कीनो सूर गिरासा ॥
जब कुंभकु भरिपुरि लीणा ॥ तह बाजे अनहद बीणा ॥३॥ बकतै ब
सबदु सुनाइआ ॥ सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ करि करता उतरसि पां
॥ कहै कबीरा सारं ॥ ४ ॥ १ ॥ चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ जोती
अंतरि ब्रहमु अनूपु ॥१॥ करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ जोती अंत
धरिआ पसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ क
कबीर निरंजन अलेखु ॥२॥२॥ दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअ
हउ रे भाई ॥ निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥ १
रहाउ ॥ नींबु भइओ आंबु आंबु भइओ नींबा केला पाका झारि
नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुगध गवार ॥१॥ हरि भइओ खां
रेतु महि बिखरिओ हसतीं चुनिओ न जाई ॥ कहि कमीर कुल जा
पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥ २ ॥ ३ ॥

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घर १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ आनीले कागदु काटीले गू
आकास मधे भरमीअले ॥ पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डो
राखीअले ॥१॥ मनु राम नामा बेधीअले ॥ जैसे कनिक कला वि
मांडीअले ॥१॥ रहाउ ॥ आनीले कुंभु भराईले ऊदक राजकुआ
पुरंदरीए ॥ हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअ
॥ २ ॥ मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ पां
कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥ ३ ॥ कह
नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ अंत
बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥ ४ ॥ १
बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो ॥ अन
मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥ १ ॥ बैर

रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥ १ ॥रहाउ॥ इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ चंदु सूरजु दुइ समकरि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥२॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ॥ ३ ॥ पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन समाधि समाउगो ॥ ४ ॥२॥ माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥ हम नही होते तुम नही होते कवनु कहां ते आइआ ॥ १ ॥ राम कोइ न किसही केरा ॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥रहाउ॥ चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ॥ सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते आइआ ॥ २ ॥ खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ रामकली घरु २ ॥ बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै॥ असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ १ ॥ छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ २ ॥ असुदान गजदान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै॥ आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ ३ ॥ मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ जसरथ राइ नंदु राजा मेरा रामचंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंमृतु पीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

रामकली बाणी रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥ १ ॥ देव रूसै गांठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर

इन पंचहु मिलि लूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥२॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥३॥१॥

रामकली बाणी बेणी जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥१॥ संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ गुरगमि चीनै बिरला कोइ ॥ तहां निरंजनु रमईआ होइ ॥१॥ रहाउ ॥ देवसथानै किआ नीसाणी ॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥२॥ उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ अंमृत रसि गगनंतरि भीजै ॥ एसु कला जो जाणै भेउ ॥ भेटै तासु परम गुरदेउ ॥३॥ दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी ॥ उपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥४॥ जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ तीन तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥५॥ जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥६॥ कर पलव साखा बीचारे ॥ अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ असुर नदी का बंधै मूलु ॥ पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ जगंनाथ सिउ गोसटि करै ॥ ७ ॥ चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ सरब कला ले आपे रहै ॥ मनु माणकु रतना महि गुहै ॥ ८ ॥ मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ माहि निरंजनु त्रिभवण धणी ॥ पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ बेणी जाचै तेरा नामु ॥ ९ ॥

✓ 13-3 81

रागु नट नाराइन महला ४

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोखु बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥ १ ॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥ २ ॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे॥ तिनकी संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥ ३ ॥ कृपा कृपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥ ४ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि रले ॥ राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि कृपले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥ १ ॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥ २ ॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥ ३ ॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देखि हरि मिले ॥ जन

नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥४॥२॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ गुर परसादी हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन पखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम जगंनाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ तुम वडपुरख दीन दुख भंजन हरि दीओ नामु मुखे ॥१॥ हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर संगि सखे ॥ जिउ चंदन संगि बसै निमु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥ २ ॥ हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप कृखे ॥ जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥४॥३॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ हरि हरि कृपा करी जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥१॥ रहाउ ॥ जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥१॥ तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगै ॥ गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥२॥ जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥३॥ तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥ ४ ॥ ४ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ जगंनाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत कृसानि लुने ॥ १ ॥ तुमरी उपमा तुमही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ जैसे तुम तैसे प्रभ तुमही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥ २ ॥ माइआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिओ खुल खुलने ॥ जिउ जल कुंचरु तदूए बांधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥३॥ सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन कलि

कीरति हरि प्रवणे ॥ हरि हरि दइआलि दइआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ जिन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥१॥ इह परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जग जीवनु जुगणे ॥ जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥ २ ॥ जो प्रभ कीआ सु तुमही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥ ३ ॥ तुम जलनिधि हरि मानसरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बांछै हरि देवहु करि कृपणे ॥४॥६॥

नट नाराइन महला ४ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ ले गुर पग रेन रवाल ॥ सभि दालिद भंजि दुख दाल ॥ हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥१॥रहाउ॥ हरि का गृहु हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ हरि आपनी कृपा करी आपि गृहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ नट महला ४ ॥ मन मिलु संत संगति सुभवंती ॥ सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ सभ किलबिख पाप लहंती ॥ हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥१॥रहाउ॥ हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानंती॥१॥ हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहंती ॥ नानक जन हरि कथा सुणि तृपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥२॥२॥८॥ नट महला ४ ॥ कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ सो हरि जनु है भल भाल ॥

हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥ जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥२॥३॥६॥

रागु नट नाराइन महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ क्रिपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥ १ ॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥२॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ संत संगि लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥ ३ ॥ देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥४॥१॥

नट नाराइन महला ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ ईहा ऊहा हरि तुमही तुमही इहु गुर ते मंत्रु द्रिड़ीओ॥१॥जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ साध संगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥२॥१ ॥ २ ॥ नट महला ५ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥ जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥१॥रहाउ॥ तपति बुझानी अंम्रित बानी त्रिपते जिउ बारिक खीर ॥ मात पिता साजन संत मेरे संत सहाई बीर ॥ १ ॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भए

नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥२॥२॥३॥ नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ आठ पहर जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥ १ ॥ महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ नट महला ५ ॥ हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रेहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ सगल तिआगि एक लिव लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥ १ ॥ कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनद भइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ५ ॥ चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥ १ ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीओ दासु अपना प्रीति न कबहू थोरी ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥ नट महला ५ ॥ मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥१॥ रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ पूरन पूरि रहे किरपानिधि घटि घटि दिसटि समाइणु ॥ १ ॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ दुइ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै तेरे दासनि दास दसाइणु ॥२॥६॥७॥ नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमानु ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुखसागर

नानकु सद कुरबानु ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥ नट महला ५ ॥ हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीनानाथ दइआल ॥१॥ ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥ २ ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥३॥८॥९॥

नट पड़ताल महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ हरि नामु सुनावै नीत ॥ बिनसै दुखु बिपरीति ॥ सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ कोई विरला आपन कीत ॥ संगि चरन कमल मनु सीत ॥ करि किरपा हरि जसु दीत ॥१॥ हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ कोटि पतित होहि पुनीत ॥ नानक दास बलि बलि कीत ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥

नट असटपदीआ महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ राम मेरे मनि तनि तामु अधारे ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥ २ ॥ सहस नेत्र नेत्र हैं प्रभ कउ प्रभु एको पुरखु निरारे ॥ सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥३॥ गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक सम्हारे ॥ ४ ॥ रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अनरस साद बिसारे ॥५॥ गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ धरमराइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥६॥ सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ सासु

साधु जाइ नामै बिनु सो बिरथा साधु बिकारे ॥ ७ ॥ कृपा कृपा करि दीन प्रभ सरनी मोकउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥ ८ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ कृपा कृपा करि गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर नामु दृड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति वजी है दहदिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥ १ ॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥ २ ॥ बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ सतिगुर मिलिऐ परम पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति पलति दुखदाई होवहि जम कालु खड़ा सिरि मारे ॥४॥ उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारै ॥ आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारै ॥ ५ ॥ कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥ ६ ॥ मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ जितने करज करज के मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥ ७ ॥ जगंनाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथ हारे ॥ नानक प्रभ खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥ ८ ॥ २ ॥ नट महला ४ ॥ राम हरि अंमृतसरि नावा रे ॥ सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परसन परस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥ १ ॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जम कंकर मारि बिदारे ॥ २ ॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सत संगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥ ३ ॥ जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ जब घर मंदरि आगि लगानी

कढि कूपु कढै पनिहारे ॥४॥ साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि
हरि नामु विसारे ॥ साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै
परारे ॥ ५ ॥ लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि
सवारे ॥ गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे
॥ ६ ॥ पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥
गुरप्रसादि अंमृत रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥ ७ ॥ हरि हरि
रूप रंग सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ जैसा रंगु देहि सो होवै
किआ नानक जंत विचारे ॥ ८ ॥ ३ ॥ नट महला ४ ॥ राम गुर सरनि
प्रभू रखवारे ॥ जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइओ करि ऊपरु कढि
निसतारे॥१॥रहाउ॥प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि
धारे ॥ मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥१॥ हरि
हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ एकु पुरखु इकु नदरी आवै
सभ एका नदरि निहारे ॥ २ ॥ हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु
चेरी जगतु समारे ॥ आपि दइआलु दइआ दानु देवै विचि पाथर कीरे
कारे ॥ ३ ॥ अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंघारे ॥
बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥ ४ ॥ बाणी
गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे ॥ गुरु बाणी कहै सेवकु
जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ ५ ॥ सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ
मनि बीजिआ खावारे ॥ जिउ जन चंद्रहांसु दुखिआ धृसटबुधी अपना
घरु लूकी जारे ॥ ६ ॥ प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के
सास निहारे ॥ कृपा कृपा करि भगति दृड़ाए जन पीछै जगु निसतारे
॥७॥ आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे सृसटि सवारे ॥ जन
नानक आपे आपि सभु वरतै करि कृपा आपि निसतारे ॥ ८ ॥ ४ ॥
नट महला ४ ॥ राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती
दुसटां आनी हरि हरि लाज निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा जाचक
जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे॥सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ
हरि गुरु मेलि सवारे ॥ १ ॥ साकत करम पाणी जिउ मथीऐ नित
पाणी झोल झुलारे ॥ मिलि सत संगति परमपदु पाइआ कढि

माखन के गटकारे ॥ २ ॥ नित नित काइआ मजनु कीआ नित मलि मलि देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥३॥ मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥४॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥ ५ ॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा सरधा उपाइ मिलाए मोकउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥ ६ ॥ पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइ अंम्रित रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥ ७ ॥ तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ नानक क्रिपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मन धीरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाए इकु बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥ १ ॥ पचै पतंगु म्रिग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥ २ ॥ सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु गति पावहु सत संगति गुरि निसतारे ॥ ३ ॥ प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥ ४ ॥ साकत कउ अंम्रित बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥ ५ ॥ संतन संत साध मिलि रहीऐ गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥ ६ ॥ लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ मेरे ठाकुर कै दीबानि खबारि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥ ७ ॥ राखु राखु राखु प्रभ मेरे मैं राखहु किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १

रागु माली गउड़ा महला ४

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभ मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभि आइआ ॥ १ ॥ सरणागती प्रभि पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ प्रहिलादु जनु हरिनाखि पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥ २ ॥ हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ हरि हारु हरि उरिधारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ सत संगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अंम्रिति हरिसरि नाता ॥ १ ॥ धनु धनु साध जिनी हरि प्रभु पाइआ तिन पूछउ हरि की बाता ॥ पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥२॥ लिलाटि लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ हरि प्रभु आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥ ३ ॥ राम रसाइणु जिन्ह गुरमति पाइआ तिन्ह की ऊतम बाता ॥ तिन की पंक पाईऐ वडभागी जननानकु चरनि पराता ॥४॥२॥ मालीगउड़ा महला ४॥

सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ अपरंपरो
पारब्रहमु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम
नीच मधिम करम कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ हरि आनि मेलिओ
सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइओ ॥१॥ प्रभि मसतके धुरि लीखिआ
गुरमती हरि लिव लाइओ ॥ पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ
मंगलु गाइओ ॥ २ ॥ पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआं नही
भाइओ ॥ ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइओ ॥
३ ॥ मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुरचरन मनु मै लाइओ ॥ हरि
राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइओ ॥ ४ ॥ ३ ॥ माली
गउड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ कमल प्रगासु
भइआ गुरु पाइआ हरि जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै
भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ किलबिख
खीन भए सांति आई हरि उरधारिओ वडभागा ॥ १ ॥ मनमुखु
रंगु कुसुंभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ खिन महि
बिनसि जाइ परतापै डंडु धरमराइ का लागा ॥ २ ॥ सत संगति प्रीति
साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ काइआ कापरु
चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥ ३ ॥ हरि चारिओ रंगु मिलै
गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै रांगा ॥ जन नानकु तिन के चरन पखारै
जो हरि चरनी जनु लागा ॥ ४ ॥ ४ ॥ मालीगउड़ा महला ४ ॥ मेरे
मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम
नामै मति गुरमति राम रसाला ॥ १ ॥रहाउ॥ गुरमति नामु धिआईऐ
हरि हरि मनि जपीऐ हरि जप माला ॥ जिन्हके मसतकि लीखिआ
हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥ १ ॥ जिन्ह हरि नामु धिआइआ तिन
चूके सरब जंजाला ॥ तिन जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि
रखवाला ॥ २ ॥ हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला
॥ करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥ ३ ॥
बहु मैले निरमल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ मनु अनदु
भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥ ४ ॥ ५ ॥ माली

गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ हरि हरि
उरधारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥१॥रहाउ॥ मेरे हरि प्रभ
की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट॥ हरि साजनु मेलिओ गुरि
पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥ १ ॥ मकर प्रागि दानु बहु कीआ
सरीरु दीओ अध काटि ॥ बिनु हरिनाम को मुकति न पावै बहु कंचनु
दीजै कटि काट ॥२॥ हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उधरे कपट
कपाट ॥ त्रिकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥३॥
कलजुगि गुरु पूरा तिनि पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट॥जन
नानक रसु अंमृतु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥४॥६॥ छका १

मालीगउड़ा महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रे मन टहल हरि सुख सार ॥ अवर
टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥१॥ रहाउ ॥ जिना मसतकि
लीखिआ ते मिले संगार ॥ संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख
अपार ॥१॥ नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ सभ
तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥२॥ इक भरमि भूले साकता
बिनु गुर अंध अंधार ॥ धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥३॥
अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ धनु धंनु ते जन नानका
जिन हरि नामा उरिधार ॥ ४ ॥ १ ॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ राम
नाम कउ नमसकार ॥ जासु जपत होवत उधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ जा कै
सिमरनि मूरख चतुर ॥ जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥ १ ॥ जा कै
सिमरनि भउ दुख हरै ॥ जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ जा कै सिमरनि
मुचत पाप ॥ जा कै सिमरनि नही संताप ॥ २ ॥ जा कै सिमरनि
रिद बिगास ॥ जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ जा कै सिमरनि
निधि निधान ॥ जा कै सिमरनि तरे निदान ॥ ३ ॥ पतित पावनु नाम
हरी ॥ कोटि भगत उधारु करी ॥ हरि दास दासा दीनु सरन ॥
नानक माथा संत चरन ॥ ४ ॥ २ ॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ ऐसो
सहाई हरि को नाम ॥ साध संगति भजु पूरन काम ॥ १

॥ रहाउ ॥ बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत ॥ बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ जलत अगनी मिलत नीर ॥ जैसे बारिक मुखहि खीर ॥१॥ जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ जैसे भूखे भोजन मात ॥ जैसे किरखहि वरस मेघ ॥ जैसे पालन सरनि सैंघ ॥ २ ॥ गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ जैसो आंडो हिरदे माहि ॥ जैसो दानो चकी दराहि ॥३॥ बहुतु ओपमा थोर कही ॥ हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ ऊच मूचो बहु अपार ॥ सिमरत नानक तरे सार ॥ ४ ॥ ३ ॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ इही हमारै सफल काज ॥ अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥१॥ रहाउ ॥ चरन संतह माथ मोर ॥ नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ हसत हमरे संत टहल ॥ प्रान मनु धनु संत बहल ॥ १ ॥ संत संगि मेरे मन की प्रीति ॥ संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ संत आगिआ मनहि मीठ ॥ मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥ २ ॥ संत संगि मेरा होइ निवासु ॥ संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥ ३ ॥ मुकति जुगति एहा निधान ॥ प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥४॥४॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ सभ कै संगी नाही दूरि ॥ करनकरावन हाजरा हजूरि ॥१॥रहाउ॥ सुनत जीओ जासु नामु ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिस्रामु ॥ सगल निधि हरि हरि हरे ॥ मुनि जन ता की सेव करे ॥१॥ जा कै घरि सगले समाहि ॥ जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ सदा सदा सेवहु किरपाल ॥ २ ॥ सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ बेमुहताज नही किछु काणि ॥ सभ किछु करना आपन आपि ॥ रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥३॥ साध संगति कउ हउ बलिहार ॥ जासु मिलि होवै उधारु ॥ नाम संगि मन तनहि रात ॥ नानक कउ प्रभि करी दाति ॥४॥५॥

मालीगउड़ा महला ५ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ हरि समरथ की सरना ॥ जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारनकरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ रवि रहिआ सरबत

ठाई सूखमो असथूल ॥ १ ॥ आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना
निति गाउ ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै देहु अपना नाउ ॥२॥१॥
६ ॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ प्रभ समरथ देव अपार ॥ कउनु जानै
चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक खिनहि थापि
उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ
दातार ॥१॥ हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार॥
कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥ २ ॥ २ ॥
७ ॥ मालीगउड़ा महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ दीन
बांधव भगति वछल सदा सदा कृपाल ॥१॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि
तू है प्रभ बिना नाही कोइ ॥ पूरि रहिआ सगल मंडल एकु सुआमी
सोइ ॥१॥ करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥बलिहारि
जाए सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥२॥३॥८॥

ੴ मालीगउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै
॥ मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ॥धनि धनि मेघा रोमावली
॥ धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली ॥१॥ धनि धनि तू माता देवकी ॥
जिह गृह रमईआ कवलापती ॥२॥ धनि धनि बनखंड बिंद्राबना ॥ जह
खेलै स्री नाराइना ॥३॥ बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी
आनद करै ॥४॥१॥ मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ सांवलीओ बीठुलाइ
॥१॥रहाउ॥कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले
॥ दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥१॥ गोतम नारि
अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ ऐसा अधमु अजाति नामदेउ
तउ सरनागति आईअले ॥ २ ॥ २ ॥ सभै घट रामु बोलै रामा बोलै
॥ राम बिना को बोलै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकल माटी कुंजर चीटी
भाजन हैं बहु नाना रे ॥ असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि
रामु समाना रे ॥ १ ॥ एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ
आसा रे ॥ प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥

रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ सबद ॥ पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥ १ ॥ बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥ ३ ॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला १ ॥ मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति वडिआई ॥ मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ १ ॥ मुरख मन काहे करसहि माणा ॥ उठि चलणा खसमै भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि साद सहज सुखु होई ॥ घर छडणे रहै न कोई ॥ किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥ २ ॥ सजु काइआ पटु हढाए ॥ फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥ करि सेज सुखाली सोवै ॥ हथी पउदी काहे रोवै ॥ ३ ॥ घर घुंमणवाणी

भाई ॥ पाप पथर तरणु न जाई ॥ भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला १ घरु १ ॥ करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे॥१॥ चित चेतसि की नही बावरिआ॥हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥ २ ॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संनी चिंत भई ॥ ३ ॥ भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ एकु नामु अंमृतु ओहु देवै तउ नानक तृसटसि देहा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला १ ॥ बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे॥ पदमनि जावल जल रस संगति संग दोख नही रे ॥ १ ॥ दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंमृतु न लखसि रे ॥१॥रहाउ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥ २ ॥ अंमृत खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥३॥ पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥ ४ ॥ इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥५॥४॥ मारू महला १ ॥ सलोकु ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥१॥सबदु॥ सखी सहेली गरबि गहेली ॥ सुणि सह की इक बात सुहेली ॥ १ ॥ जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥ २ ॥ तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥ ३ ॥ भणति नानकु अंदेसा एही ॥ बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥ मारू महला १

॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ गुर की बचनी हाटि
बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥ १ ॥ तेरे लाले किआ चतुराई ॥
साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मा लाली पिउ लाला
मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी
राइआ ॥ २ ॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥ ३ ॥ लूणहरामी नानकु
लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु
विणु मुकति न पाई ॥ ४ ॥६॥ मारू महला १ ॥ कोई आखै भूतना को
कहै बेताला ॥ कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥१॥ भइआ दिवाना
साह का नानकु बउराना ॥ हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥१॥ रहाउ ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ एकी साहिब बाहरा दूजा
अवरु न जाणै कोइ ॥२॥ तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥
हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ॥३॥तउ देवाना जाणीऐ
जा साहिब धरे पिआरु ॥ मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु
॥४॥७॥ मारू महला १ ॥ इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ मनमुख
फिरहि सि जाणहि दूरि ॥१॥ सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ जिसु
तू देहि तिसै निसतारै ॥१॥ रहाउ ॥ न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ
॥ न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥२॥ इसु धन की देखहु
वडिआई ॥ सहजे माते अनदिनु जाई ॥ ३ ॥ इक बात अनूप सुनहु नर
भाई ॥ इसु धन बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥४॥ भणति नानकु
अकथ की कथा सुणाए ॥ सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥५॥८॥ मारू
महला १ ॥ सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु
सनबंधु कीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु
नह कंधु छीजै ॥ १ ॥ मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ नह चीनिआ
परमानंदु बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अजर गहु जारि लै
अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह
कंधु छीजै ॥ २ ॥ भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन

सिउ अंमृतु पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ ३ ॥ ९ ॥ मारू महला १ ॥ माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ सरब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ मानै हुकमु सोहैं दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥ २ ॥ निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निमाणिआ तू माणु ॥ अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥ ३ ॥ साचा नामु सलाहीऐ साचे ते तृपति होइ ॥ गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥ १ ॥ गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमणु ब्रहमु गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ एको नामु एकु नाराइणु त्रिभवण एका जोती ॥ २ ॥ जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥ ३ ॥ दोवै सिरे सतिगुरू निबेड़े सो बूझै जिसु एक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥ ४ ॥ ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥ ५ ॥ ११ ॥

रागु मारू महला १ ॥ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ सो
जाणै जिसु वेदन होवै ॥ प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै
कारी जीउ ॥ १ ॥ जिसनो साचा सिफती लाए ॥ गुरमुखि विरले किसै
बुझाए ॥ अंमृत की सार सोई जाणै जि अंमृत का वापारी जीउ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पिर सेती धन प्रेमु रचाए ॥ गुर कै सबदि तथा चितु लाए ॥
सहज सेती धन खरी सुहेली तृसना तिखा निवारी जीउ ॥ २ ॥ सहसा
तोड़े भरमु चुकाए ॥ सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ गुर कै सबदि मरै
मनु मारे सुंदरि जोगा धारी जीउ ॥३॥ हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥
जमपुरि वजहि खड़ग करारे ॥ अब कै कहिऐ नामु न मिलई तू सहु
जीअड़े भारी जीउ ॥ ४ ॥ माइआ ममता पवहि खिआली ॥ जमपुरि
फासहिगा जमजाली ॥ हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे
खुआरी जीउ ॥५॥ ना हउ करता न मै कीआ ॥ अंमृतु नामु सतिगुरि
दीआ ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ
॥ ६ ॥ १ ॥ १२ ॥

मारू महला ३ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह
भेजहि तह जावा ॥ सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा
॥१॥ बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥ इहु
फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥ २ ॥ इंद्री धातु सबल
कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥ आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै
कोई ॥३॥ गुरपरसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ जो तिसु
भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥४॥ भणति नानकु
लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ तासु तासु धरमराइ
जपतु है पए सचे की सरना ॥५॥१॥ मारू महला ३ ॥ आवण जाणा
ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥ सचु खजाना बखसिआ आपे
जाणै सोइ ॥ १ ॥ ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥

गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ जोनी सभि भवाइअनि बिसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ अनदिनु सची भगति करि सचा लए मिलाइ ॥ ३ ॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला ३ ॥ पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥ सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना मै जाति न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥२॥ इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ धंधै कूड़ि विआपिआ जमपुरि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥ भगति खजाना बखसिओनु गुरमुखा सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला ३ ॥ सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥१॥ रहाउ ॥ इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥२॥ इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ ओना विचि आपि वरतदा करणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ मारू महला ३ ॥ मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ॥ सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि एको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ ॥ २ ॥ सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ जमपुरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ नानक

तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मारू महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि
सरणि परे ॥ दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ भगति
वछलु हरि नामु कृतारथु गुरमुखि कृपा करे ॥१॥ मेरे मन नामु जपत
उधरे ॥ ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥ १ ॥ रहाउ
॥ कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ नामा जैदेउ
कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ गुरमुखि नामि लगे से उधरे
सभि किलबिख पाप टरे ॥ २ ॥ जों जो नामु जपै अपराधी सभि तिन
के दोख परहरे ॥ बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु
नरहरे ॥ नामु जपत उग्र सैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥३॥
जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ सेवक पैज रखै
मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ जन नानक हरि किरपा धारी उरधरिओ
नामु हरे ॥४॥१॥ मारू महला ४ ॥ सिध समाधि जपिओ लिव लाई
साधिक मुनि जपिआ ॥ जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक
रविआ ॥ सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरे
मन नामु जपत तरिआ ॥ धंना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि
पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर गण गंधरबे जपिओ रिखि बपुरै हरि
गाइआ ॥ संकरि ब्रहमै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥
हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ २ ॥ कोटि
कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ बेद पुराण
सिमृति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ नाम रसाल
जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ ३ ॥ अनत तरंगी नामु
जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ गोबिदु कृपा करे थाइ पाए
जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ गुरि धारि कृपा हरि नामु दृड़ाइओ जन
नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

मारू महला ४ घरु ३

१ ओ सतिगुर प्रसादि ॥ हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि
पति पाइ ॥ हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लए छडाइ ॥ जिथै
अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥ १ ॥ मेरे
सतिगुरा मै हरि हरि नामु द्रिड़ाइ ॥ मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि
बिनु अवरु न माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै हरि बिरही हरि नामु है कोई
आणि मिलावै माइ ॥ तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥
सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥ २ ॥ जिन हरि हरि
नामु न चेतिओ से भागहीण मरि जाइ ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि
भवाईअहि मरि जंमहि आवै जाइ ॥ ओइ जमदरि बधे मारीअहि
हरि दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ तू प्रभु हम सरणागती मोकउ मेलि
लैहु हरिराइ ॥ हरि धारि कृपा जग जीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥
हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥ ४ ॥ १ ॥
३ ॥ मारू महला ४ ॥ हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि
॥ हउ तिसु विटहु खन खंनीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ मै अंतरि
प्रेमु पिरंम का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥ १ ॥ मन पिआरिआ
मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि
धीरक हरि साबासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे
हरि धनु रासि ॥ बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥
हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ सागर
भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर तुठा खोलि देइ मुखि
गुरमुखि हरि परगासि ॥ मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ
कंधी पासि ॥ ३ ॥ गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥
चिरी विछुंना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ गुर भावै
सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥४॥ २ ॥ ४ ॥ मारू महला
४ ॥ हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥
जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु निरबाणी ॥
गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥ १ ॥ मन

मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥ २ ॥ गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥३॥ हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अंमृत बाणी ॥ सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥४॥३॥५ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥१॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु॥अंमृतु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥ २ ॥ मनमुख तृसना भरि रहे मनि आसा दहदिस बहु लाखु ॥ बिनु नावै धृगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ ओइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥३॥ त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ संत संगति मेलापु करि हरिनामु मिलै पति साखु ॥ हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥४॥४॥६॥

मारू महला ४ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ जिस नो कृपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि कृपा करे बनवाली ॥ हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागरु अंमृतु हरि

नाउ ॥ मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ हरि सति सति सदा हरि सति
हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥२॥ नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ बोलि
हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ जे हरि सुप्रसंनु होवै मेरा सुआमी हरि
सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥३॥ माइआ मोहु बिखमु है भारी॥ किउ
तरीऐ दुतरु संसारी॥ सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि
लंघावै जीउ ॥४॥ तू सरबत्र तेरा सभु कोई॥जो तू करहि सोई प्रभ होई
॥ जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥५॥१॥
७ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ सभि किलविख
काटै हरि तेरे ॥ हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि
सखाई जीउ ॥१॥ जिस नो कृपा करे सो धिआवै॥ नित हरि जपु जापै
जपि हरि सुखु पावै ॥ गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि
लंघाई जीउ ॥१॥रहाउ॥ निरभउ निरंकारु सतिनामु ॥ जग महि स्रेसटु
ऊतम कामु ॥ दुसमन दूत जम कालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई
जीउ ॥२॥ जिस उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ सो सेवकु चहु जुग चहु
कुंट जानिआ ॥ जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जम कंकरु खाई
जीउ ॥३॥ सभ महि एकु निरंजन करता ॥ सभि करि करि वेखै अपणे
चलता॥ जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ
॥४॥ हउ अनदिनु नामु लई करतारे॥ जिनि सेवक भगत सभे निसतारे॥
दसअठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥५॥२॥८॥

मारू महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर
ऊपरि अमरु करारा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा
॥ १ ॥ एका निरभउ बात सुनी ॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो
गुर मिलि गाइ गुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देहधार अरु देवा डरपहि
सिध साधिक डरि मुइआ ॥ लखचउरासीह मरि मरि जनमे फिरि
फिरि जोनी जोइआ ॥ २ ॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप

उपाइआ ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरमराइआ ॥ ३ ॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला ५ ॥ पांच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जम कंकर मारि बिदारे ॥१॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥ २ ॥ कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥ ३ ॥ कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥४॥ २ ॥ मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ जो जो करम कीए हउ हउमै तेते भए अजाए ॥ १ ॥ अवर दिन काहू काज न लाए ॥ सो दिनु मोकउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र गृह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ माइआ मद चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥२॥ इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए ॥ तुम दातार वडे प्रभ संम्रथ मागन कउ दानु आए ॥३॥ तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अनंद सुख पाए ॥४॥३॥ मारू महला ५॥ कवन थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहंकारा ॥ कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा ॥१॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहनसील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥ २ ॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनमु मरणु उसही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥ ३ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु उझारै तब एकै एककारा ॥ ४ ॥

४ ॥ मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न
घालिओ ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥१॥
सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते
राखिओ चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिसते
मुखु नही मोरिओ ॥ सहजु अनंदु रखिओ गृह भीतरि उठि उआहू कउ
दउरिओ ॥२॥ आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही
जानिओ ॥ जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ
॥३॥ भइओ कृपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ धंनु सेवकु
सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥४॥५॥ मारू महला
५ ॥ खुलिआ करमु कृपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ स्रमु
थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥ १ ॥ अब मोहि जीवन
पदवी पाई ॥ चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई
॥१॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ सद
हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥२॥ सुख सीतल सरधा
सभ पूरी होए संत सहाई ॥ पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा
कथनु न जाई ॥ ३ ॥ निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण
ओटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥४॥६॥
मारू महला ५ ॥ जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न
गावसि रे ॥ छोडि जाइ खिन भीतरि ताकउ उआ कउ फिरि फिरि
धावसि रे ॥ १ ॥ अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ बैरी संगि रंग
रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जागसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाकै नामि
सुनिऐ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ काढि देइ सिआल बपुरे
कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥२॥ जिस का जासु सुनत भव तरीऐ ता
सिउ रंगु न लावसि रे ॥ थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि
अटकावसि रे ॥३॥ भइओ प्रसादु कृपा निधि ठाकुर संत संगि पति पाई
॥ कहु नानक त्रैगुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ मारू
महला ५ ॥ अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥
हसत पाव झरे खिन भीतरि अगनि संगि लै जारिओ ॥ १ ॥

मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ लूणु खाइ करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिओ ॥१॥रहाउ॥ असाध रोगु उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥ २ ॥ ८ ॥ मारू महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ हरिगुण गावह नीता नीत ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ आदि मधि अंति है सोऊ ॥ १ ॥ संतन की ओट आपे आपि ॥१॥रहाउ॥ जा कै वसि है सगल संसारु ॥ आपे आपि आपि निरंकारु ॥ नानक गहिओ साचा सोइ ॥ सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥२॥९॥

मारू महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ प्रान सुखदाता जीअ सुख दाता तुम काहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥१॥ रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिओ दासी संगि सानथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥ २ ॥ सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ॥पर की कउ अपनी करि पकरी ऐसे भूल भुलानथ ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद बैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ मारू महला ५ ॥ गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावदे मनु खाइ ॥ बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थंम गलि लाइ ॥ १ ॥ रे नर काइ परगृहि जाइ ॥ कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिओ धरमराइ ॥१॥ रहाउ ॥ बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइ ॥ महा सागरु समुदु लंघना पारि न परना जाइ ॥ २ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतरु माइ ॥ ३ ॥ सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइ ॥ सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥ ४ ॥ जिसु करमु खुलिआ तिसु

लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ सुभाइ ॥ गुरि मंत्रु अवखधु
नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रे नर इन
बिधि पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ
॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ ११ ॥ मारू महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि
परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज रूपु प्रभ
पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥ १ ॥ मानकु पाइओ रे
पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि
किरपा गुरू दिवाइआ था ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु
मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ
तह अंमृत नामु चुआइआ था ॥ २ ॥ तोटि नाही मनि तृसना बूझी
अखुट भंडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ
रसु पाइआ था ॥ ३ ॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ
था ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था
॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारू महला ५ ॥ जिसहि साजि निवाजिआ
तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि
॥ १ ॥ रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ
सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ
॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥ २ ॥ भाउ लागा
गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ
॥३॥ पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु
पाइआ तृपति रहे आघाइ ॥४॥४॥१३॥ मारू महला ५ ॥ फुटो आंडा
भरम का मनहि भइओ परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि
खलासु ॥१॥ आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि
सीतल नामु दीओ ॥१॥ रहाउ ॥ जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि
गए निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै
कोटवार ॥ २ ॥ चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥ सागर ते
कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥ ३ ॥ सचु थानु सचु बैठका सचु
सुआउ बणाइआ ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ

॥ ४ ॥ ५ ॥१४॥ मारू महला ५ ॥ बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥ १ ॥ जीअ की कै पहि बात कहा ॥ आपि मुकतु मोकउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपसी करि कै देही साधी मनूआ दहदिस धाना ॥ ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना॥संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥२॥ घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥३॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दइआ करे भगवंता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ तां उतरी मन की चिंता ॥४॥ मेरा अंतरजामी हरि राइआ॥सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गए बकबाइआ ॥१॥रहाउ दूजा॥६॥१५॥मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥१॥ रहाउ ॥ रूप रंग खुसीआ मन भोगण तेते छिद्र विकारा ॥ हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥२॥ माइआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइआ ॥ से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुरमिलि हरि हरि गाइआ ॥३॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥४॥७॥१६॥

मारू महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ओअंकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु तृणु त्रिभवण पाणी ॥ चारि बेद चारे खाणी ॥ खंड दीप सभि लोआ ॥ एक कवावै ते सभि होआ ॥ १ ॥ करणै हारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै

जाई ॥ मनु टिकणु न पावै राई ॥ बाझु गुरू गुबारा ॥ मिलि सतिगुर
निसतारा ॥२॥ हउ हउ करम कमाणे ॥ ते ते बंध गलाणे ॥ मेरी मेरी
धारी ॥ ओहा पैरि लोहारी ॥ सो गुरमिलि एकु पछाणै ॥ जिसु होवै
भागु मथाणै ॥३॥ सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ सो भूला जि
प्रभू भुलाइआ ॥ नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ जि करावै सु नामु
वखानी ॥ तेरा अंतु न पारावारा ॥ जन नानक सद बलिहारा ॥४॥१॥
१७॥ मारू महला ५ ॥ मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ लोभि विआपी
झूठी दुनीआ ॥ मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ
॥१॥ निरभउ निरंकारु दइअलीआ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ
॥१॥ रहाउ ॥ एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ एकहि सुपनै दामु न छडहै
॥ राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥ २ ॥
एकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ एक संची तजि बाप महतारी ॥ सुत
मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥ ३ ॥ होइ अउधूत
बैठे लाइ तारी ॥ जोगी जती पंडित बीचारी॥गृहि मड़ी मसाणी बन महि
बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ ॥ ४ ॥ काटे बंधन ठाकुरि जा के॥
हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ साध संगि भए जन मुकते गति
पाई नानक नदरि निहलीआ ॥५॥२॥१८॥ मारू महला ५ ॥ सिमरहु
एकु निरंजन सोऊ ॥ जाते बिरथा जात न कोऊ ॥ मात गरभ महि
जिनि प्रतिपारिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ सोई बिधाता
खिनु खिनु जपीऐ ॥ जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ चरण कमल
उर अंतरि धारहु ॥ बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ करण पलाह
मिटहि बिललाटा ॥ जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ साध संगि विरला
को पाए ॥ नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥ १ ॥ राम नामु मनि
तनि आधारा ॥ जो सिमरै तिस का निसतारा ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ
वसतु सति करि मानी ॥ हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥ काम
क्रोध लोभ मद माता ॥ कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ अपना छोडि
पराइऐ राता ॥ माइआ मद मन तन संगि जाता ॥ तृसन न बूझै
करत कलोला ॥ ऊनी आस मिथिआ सभ बोला ॥ आवत

इकेला जात इकेला ॥ हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ पाइ ठगउरी
आपि भुलाइओ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥ २ ॥ पसु
पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहुबिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो
तह रहनु न पावै ॥ थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि
बासना बहुतु बिसथारा ॥ अहंमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक दोख अरु
बहुतु सजाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक
महि पाइआ ॥ तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत
कृपाल सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत प्रभ
सरनी आइआ ॥ दीनानाथ जगतपित माइआ ॥ प्रभ दइआल दुख
दरद बिदारण ॥ जिसु भावै तिसही निसतारण ॥ अंध कूप ते
काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ साध रूप अपना तनु
धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप संजम इसते
किछु नाही ॥ आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु
तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १९ ॥ मारू
महला ५ ॥ कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥ १ ॥
ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥ २ ॥ अपने
कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥ ३ ॥ नानकु दीनु नामु मागै
दुतीआ भरमु चुकाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २० ॥ मारू महला ५ ॥ मेरा
ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु बेचारा ॥ १ ॥ मोहनु लालु मेरा
प्रीतम मन प्राना ॥ मोकउ देहु दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे
जोई ॥ बीजउ अवरु न कोई ॥२॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी
आहे ॥ ३ ॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा ॥४॥५॥
२१ ॥ मारू महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले
बलि जाईऐ ॥ ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥ १ ॥
मोकउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट आधारा ॥
१ ॥ रहाउ ॥ सरब धारण प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि
तुमही जानहु तुम जल हम मीना ॥२॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि

आइओ पाछै ॥ सगलो भू मंडल खंडल प्रभ तुमही आछै ॥३॥ अटल
अखइओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ दानु पावउ संता संगु नानक
रेनु दासारा ॥४॥६॥२२॥ मारू महला ५ ॥ तृपति आघाए संता ॥
गुर जाने जिन मंता ॥ ता की किछु कहनु न जाई ॥ जा कउ नाम
बडाई ॥१॥ लालु अमोला लालो ॥ अगह अतोला नामो ॥१॥ रहाउ
॥ अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ गुरमुखि ततु गिआनो॥पेखत सगल
धिआनो ॥ तजिउ मन ते अभिमानो ॥२॥ निहचलु तिन का ठाणा ॥
गुर ते महलु पछाणा ॥ अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ हरि की सेवा लागे
॥३॥ पूरन तृपति अघाए ॥ सहज समाधि सुभाए ॥ हरि भंडारु हाथि
आइआ ॥ नानक गुर ते पाइआ ॥४॥७॥२३॥

मारू महला ५ घरु ६ दुपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ छोडि सगल सिआणपा मिलि
साध तिआगि गुमानु ॥ अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम
बखानु ॥१॥ मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ मिटहि अघ तेरे जनम
जनम के कवनु बपुरो जामु ॥१॥रहाउ॥ दूख दीन न भउ बिआपै मिलै
सुख बिस्रामु ॥ गुरप्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥२॥
१॥२४॥ मारू महला ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥
पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥ १ ॥ मेरे मन नामु नित नित
लेह ॥ जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बिरख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ हरि भगति
दृड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत एह ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥
मारू महला ५ ॥ पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥
मरै न आवै न जाइ बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥ १ ॥
मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ चेति मन महि हरि हरि
निधाना एह निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कृपाल दइआल गोपाल
गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक
तिसु संगि बीधि ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥ मारू महला ५ ॥ चलत
बैसत सोवत जागत गुर मत्रु रिदै चितारि ॥ चरण सरण भजु संगि

साधू भवसागर उतरहि पारि ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल बिसारि ॥१॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥२॥४॥ २७ ॥ मारू महला ५ ॥ तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ॥तिसहि परापति नामु तेरा करि क्रिपा जिसु दीउ ॥१॥ मेरे मन नामु अंमृतु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥१॥रहाउ॥ नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥२॥५॥ २८॥ मारू महला ५ ॥ प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥१॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥१॥रहाउ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥२॥६॥२९॥ मारू महला ५॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु॥महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥१॥ डूबे नाम बिनु घन साथ॥ करणकारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥१॥रहाउ॥ साध संगति गुण उचारण हरि नाम अंमृत पाथ॥ करहु क्रिपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥२॥७॥३०॥

मारू अंजुली महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पंच धात करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअड़ै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥ १ ॥ जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ ऊरध मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाइ लइआ ॥ २ ॥ विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥ ३ ॥ मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक

आइआ सो परवाणु थिआ ॥४॥१॥३१॥ वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥ १ ॥ कीता जिसो होवै पापां मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥२॥ घटि घटे वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥३॥ आवै न जावै संगे कमावै पूरन जा का कामु हे ॥४॥ भगत जना का राखणहारा ॥ संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥५॥२॥३२॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥ हरि को नामु सदा सुखदाई॥जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंचाली कउ राज सभा मै राम नाम सुधि आई ॥ ता को दूखु हरिओ करुणामै अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ कहु नानक मै इही भरोसै गही आन सरनाई ॥२॥१॥ मारू महला ९ ॥ अब मै कहा करउ री माई ॥ सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल फास जब गर मै मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ राम नाम बिनु या संकट मै को अब होत सहाई ॥ १ ॥ जो संपति अपनी करि मानी छिन मो भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥ मारू महला ९ ॥ माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजन नही लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ॥जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहनि भागिओ ॥ १ ॥ इह चिंता उपजी घट मै जब गुरचरनन अनुरागिओ ॥ सुफलु जनमु नानक तब हूआ जो प्रभ जस मै पागिओ ॥ २ ॥ ३ ॥

मारू असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि

थाके भेखा ॥ साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥१॥ तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइणु भाइ लै परहरि दुखु भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा ॥ २ ॥ जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ गुरमती दधि मथीऐ अंमृतु पाईऐ नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥ ३ ॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जंमै वारोवार॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार॥गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥ ४ ॥ सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥ ५ ॥ साची संगति थानु सचु सचे घर बारा॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा॥सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥ ६ ॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥ ७ ॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ गुरसबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥८॥१॥ मारू महला १ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥१॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुरपरसादी उबरे सचा नामु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥ २ ॥ गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ ॥ आवागउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥३॥ सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि लिखिआ पाईऐ किसनो दीजै दोसु ॥ गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मंने नाउ संतोसु ॥ ४ ॥ मागर मछु फहाईऐ कूंडी जालु वताइ ॥ दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ जंमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ

॥ ५ ॥ हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ धंधै धावत जगु बाधिआ न बूझै वीचारु ॥ जंमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥ ७ ॥ सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ सचु चुगै अंमृतु पीऐ उडै त एका वार ॥ गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ मारू महला १ ॥ सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ जिस कै डरि भै भागीऐ अंमृतु ता को नाउ ॥ मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥ १ ॥ बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥ २ ॥ जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥ आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥ ३ ॥ अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥४॥ साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥ ५ ॥ भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥ ६ ॥ नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥७॥ गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥८॥३॥ मारू महला १ ॥ साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥१॥ ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ जिउ फुरमावहि तिउ चला स

लाल पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥ २ ॥ लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ विछुड़िआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ ॥ ३ ॥ लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुरकी ॥ ४ ॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥ ५ ॥ मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाड़ी ॥ फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ गुरपरसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥ ६ ॥ अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥ ७ ॥ जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ मारू महला १ ॥ लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुरपरसादी उबरे हरि की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाले नो सिरिकार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥ २ ॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिसनो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ जीउ पिंडु सभु तिसदा साहु तिनै विचि पाइआ ॥ जा क्रिपा करे ता सेवीऐ सेवि साचि समाइआ ॥ ४ ॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ बंधन तूटहि मुकति होइ तृसना अगनि बुझाए ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥ ५ ॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही

तू बखसणहारु ॥ तेरा हुकमु लाला मंने एह करणी सारु ॥ ६ ॥ गुरु सागरु अंमृतसरु जो इछे सो फलु पाए ॥ नामु पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाए ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिसनो हुकमु मनाए ॥ ७ ॥ सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥ ८ ॥ ५ ॥ मारू महला १ ॥ हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ एहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥१॥ किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ॥जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अंमृत नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥२॥ कीता किआ सालाहीऐ करि देखै सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥ ३ ॥ पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ पाप पुंन दुइ संगमे खुधिआ जम काला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥ ४ ॥ जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥५॥ खार समुद्र ढढोलीऐ इकु मणीआ पावै ॥ दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥६॥ मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीऐ पारस संगि भीजै ॥ वंनी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥७॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥ ८ ॥ ६ ॥ मारू महला १ ॥ मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ गृह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका तृसना होइ वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढारै ॥ १ ॥ बाबा ऐसी रवत रवै संनिआसी ॥ गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते तृपतासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख

भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआ धारी ॥ घरि घरि
मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न
चीनै जूऐ बाजी हारी ॥ २ ॥ अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि
पूअर तापै ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउकरि चीनसि आपै ॥
निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ अठसठि तीरथ
भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥ ३ ॥ छाणी खाकु बिभूत चड़ाई
माइआ का मगु जोहै ॥ अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै
॥ पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे कीमति ओहै ॥ नामु न जपई
किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै॥४॥ मूंडु मुंडाइ जटा सिख बाधी
मोनि रहै अभिमाना ॥ मनूआ डोलै दहदिस धावै बिनु रत आतम
गिआना ॥ अंमृतु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ किरतु न
मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥५॥ हाथ कमंडलु कापड़ीआ
मनि तृसना उपजी भारी ॥ इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु
लाइआ पर नारी ॥ सिख करे करि सबदु न चीनै लंपटु है बाजारी ॥
अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥६॥ सो संनिआसी
जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ छादन भोजन की आस न करई
अचिंतु मिलै सो पाए ॥ बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि
जलाए॥ धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥७॥
आस निरास रहै संनिआसी एकसु सिउ लिव लाए ॥ हरि रसु पीवै ता
साति आवै निजघरि ताड़ी लाए॥ मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु
वरजि रहाए ॥ गृहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥८॥ ब्रहमा
बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी॥ खाणी बाणी गगन पताली जंता
जोति तुमारी ॥ सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उरधारी॥
नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥९॥७॥ मारू महला
१ ॥ मात पिता संजोगि उपाए रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ अंतरि
गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥ १ ॥ संसारु भवजलु
किउ तरै ॥ गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिओ भारु अफारु टरै ॥
१ ॥ रहाउ ॥ ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ

हरे ॥ तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥ २ ॥
चारि पदारथ लै जगि जनमिआ सिव सकती घरि वासु धरे ॥ लागी
भूख माइआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥ ३ ॥ करण पलाव
करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विआपे
कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥ ४ ॥ खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि
दिखावै काल घरे ॥ बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न
कालु टरे ॥५॥ जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥
तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥६॥ बिरधि
भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैनहु नीरु ढरे ॥ चरण
रहे कर कंपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥ ७ ॥ सुरति गई काली हू
धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ बिसरत नाम ऐसे दोख लागहि जमु
मारि समारे नरकि खरे ॥८॥ पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै
का कउ दोसु धरे ॥ बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै
जनमु जरे ॥९॥ खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे
॥ नामु विसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धरमराइ का डंडु परे ॥१०॥
गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ ते
निरमल पुरख अपरंपर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥ ११ ॥ हरि
सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ हरि जन गुरु
परधानु दुआरे नानक तिन जन की रेणु हरे ॥१२॥८॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मारू काफी महला १ घरु २ ॥
आवउ वंञउ डुमणी किती मित्र करेउ ॥ सा धन ढोई न लहै
वाढी किउ धीरेउ ॥ १ ॥ मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ हउ
घोलि घुमाई खंनीऐ कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ मै गलि अउगण
मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥ २ ॥ पेईअड़ै पिरु संमला साहुरड़ै
घरि वासू ॥ सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइआ गुणता

॥ ३ ॥ लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइ॥ पिरु मुती डोहागणी तिन डुखां रैण विहाइ ॥ ४ ॥ किती चखउ माडड़े किती वेस करेउ ॥ पिर बिनु जोबनु वादि गइअमु वाढी झूरंदी झूरेउ ॥ ५ ॥ सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥ सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥ ६ ॥ गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ गुरमुखि बूझै जाणीऐ हउमै गरबु निवारि ॥७॥ तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ीआह ॥८॥१॥९॥ मारू महला १ ॥ ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥ २ ॥ मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥ ३ ॥ साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥ ४ ॥ सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥ ५ ॥ पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥ ६ ॥ हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥ ७ ॥ ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥ १ ॥ बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ ॥ मूरखा सिरि मूरखु है जि मंने नाही नाउ ॥ २ ॥ गुरदुआरै नाउ पाईऐ बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥ ३ ॥ राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ हुकमी बाधे पास खेलहि चउपड़ि एका सारी ॥ ४ ॥ जगि चतुरु सिआणा भरमि

पुलान
21·4-57

भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ नाउ विसारहि बेदु समालहि बिखु
भूले लेखारी ॥५॥ कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥
एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥६॥ रयति राजे कहा
सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी
अलखु निवासी ॥७॥३॥११॥

मारू महला ३ घरु ५ असटपदी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिसनो प्रेमु मंनि वसाए ॥ साचै
सबदि सहजि सुभाए ॥ एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ
॥ १ ॥ आपे मेले आपि मिलाए ॥ आपणा पिआरु आपे लाए ॥ प्रेम
की सार सोई जाणै जिसनो नदरि तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दि
द्रिसटि जागै भरमु चुकाए ॥ गुरपरसादि परमपदु पाए ॥ सो जोगी इ
जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥२॥ संजोगी धन पिर मेला
होवै ॥ गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ रंग सिउ नित रलीआ माणै
अपणे कंत पिआरी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ आपे
आपि निरंजनु सोई ॥ सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी
जीउ ॥४॥ एहु सबदु सारु जिसनो लाए ॥ गुरमुखि तृसना भुख गवाए
॥आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥५॥ अगम
निगमु सतिगुरू दिखाइआ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ॥ अंजन
माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥६॥ गुरमुखि होवै
सो ततु पाए ॥ आपणा आपु विचहु गवाए ॥ सतिगुर बाझहु सभु धंधु
कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥७॥ इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी
इकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले
गावारी जीउ ॥ ८ ॥ गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥ मनमुखि बिरथा
जनमु गवाइआ ॥ अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी
जीउ ॥ ९ ॥ अंमृत नामु सदा सुखदाता ॥ गुरि पूरै जुग चारे जाता
जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥१०॥१॥

मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥१॥ रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ अंमृतु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥१॥रहाउ॥ रतन जवेहर बनजनि आइओ कालरु लादि चलाइओ ॥ २ ॥ जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥ ३ ॥ अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नही तुझु गाइओ ॥ ४ ॥ जहा जाणा सो थानु विसारिओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥ ५ ॥ पुत्र कलत्र गृह देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥ ६ ॥ जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे करम कमाइओ ॥ ७ ॥ जउ भइओ कृपालु ता साधसंगु पाइआ जन नानक ब्रहमु धिआइओ ॥८॥ १ ॥ मारू महला ५ ॥ करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू संगु ॥ हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥१॥ मेरे मान को असथानु ॥ मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ गुर प्रसादी प्रभु अराधे जम कंकरु किछु न कही ॥ २ ॥ मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥३॥ दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥ ४ ॥ रिधि सिधि नवनिधि जा कै अंमृता परवाह ॥ आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥५॥ सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥ ६ ॥ अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ पावना ते महा पावन कोटि दान इसनान ॥७॥ बल बुधि सुधि पराण सरब सु संतना की रासि ॥ बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥८॥२॥ मारू महला ५ ॥ ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु॥ काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥१॥ मन मेरे राम राउ नित नीति ॥ दइआल देव कृपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ महा सागरु

१२८ ४-५-२१

नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥२॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥३॥ ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र॥ मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत ॥ ४ ॥ करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु ॥५॥ सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान ॥ जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥६॥ सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥८॥३॥

मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चादना चादनु आंगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥२॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥ ३ ॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥ ४ ॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥५॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ मारू महला ५ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥१॥रहाउ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥१॥ संत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥२॥ भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥ ३ ॥ दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥ ४ ॥ नउनिधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥ ५ ॥ संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥ ६ ॥ मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना ॥७॥कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥८॥२॥५॥ मारू महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद

जीवना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीवना जितु मनु आघावै नामु अंमृत रसु पीवना ॥ १ ॥ खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा तृपतीवना ॥ २ ॥ पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥ ३ ॥ भोगना मन मधे हरि रसु संत संगति महि लीवना ॥ ४ ॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥ ५ ॥ मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहु अउखीवना ॥ ६ ॥ मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि कृपालि जिसु दीवना॥७॥सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइ पीवना ॥ ८ ॥ ३ ॥६॥

मारू महला ५ घरु ८ अजुलीआ

१ ओ सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जिसु गृहि बहुतु तिसै गृहि चिंता ॥ जिसु गृहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥ १ ॥ गृहि राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहुबिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥२॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥३॥ करम करै त बंधा नह करै त निंदा॥मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा॥गुरप्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥४॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥५॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इसही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥ ६ ॥ जो सूरा तिसही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥ ७ ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥८॥१॥७॥ मारू महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥ १ ॥ पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥

अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥ दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै
बाणीआ॥२॥ संगि न कोई भईआ बेबा॥मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा
॥करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ॥३॥ खुसि खुसि
लैदा वसतु पराई ॥ वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ दुनीआ लबि पइआ
खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥४॥ जमि जमि मरै मरै फिरि
जंमै ॥ बहुतु सजाइ पइआ देसि लंमै ॥ जिनि कीता तिसै न जाणी
अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥५॥ खालक थावहु भुला मुठा ॥ दुनीआ
खेलु बुरा रुठ तुठा॥सिदक सबूरी संतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ
॥६॥ मउला खेल करे सभि आपे ॥ इकि कढे इकि लहरि विआपे॥
जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥७॥ मिहर
करे ता खसमु धिआई ॥ संता संगति नरकि न पाइ ॥ अंमृत नामु
दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥८॥२॥८॥

मारू सोलहे महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥
जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु रहणा
तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥ १ ॥ आपि उपाए आपि खपाए ॥
आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि
लाई हे ॥ २ ॥ आपे दाना आपे बीना ॥ आपे आपु उपाइ पतीना ॥
आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥ ३ ॥ आपे सभि
सूरा पूरो पूरा ॥ आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ कालु जालु जमु
जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥ ४ ॥ आपे पुरखु आपे ही
नारी ॥ आपे पासा आपे सारी ॥ आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे
कीमति पाई हे ॥ ५ ॥ आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ आपे जलु थल
सागरु सरवरु ॥ आपे मछु कछु करणी करु तेरा रूपु न लखणा
जाई हे ॥ ६ ॥ आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ आपि पतीजै गुर की
बैणी ॥ आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजा
हे ॥ ७ ॥ आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ आपे परखे पूरा तोलो ॥

आपे किसही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥ ८ ॥ आपे धनखु आपे
सर बाणा ॥ आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ कहता बकता सुणता सोई
आपे बणत बणाई हे ॥ ६ ॥ पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ उदर
संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई
हे ॥१०॥ आपे मछुली आपे जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब
जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥ ११ ॥ आपे जोगी
आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरंकारी
निरभउ ताड़ी लाई हे ॥१२॥ खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ जो दीसै
सभ आवण जाणी॥ सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे॥१३॥
सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ सरब कला साचे भरपूरा ॥ अफरिओ
वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥१४॥ कालु बिकालु भए
देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति तृपति वर दाता
भगति भाइ मनि भाई हे ॥१५॥ आपि निरालमु गुरगम गिआना॥ जो
दीसै तुझ माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै
नामु वडाई हे ॥१६॥ १ ॥ मारू महला १ ॥ आपे धरती धउलु अकासं
॥ आपे साचे गुण परगासं ॥ जती सती संतोखी आपे आपे कार
कमाई हे ॥१॥ जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइ न मेटै साचे
लेखै॥ आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥२॥ पंच चोर चंचल
चितु चालहि ॥ पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ काइआ नगरु ढहै
ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥३॥ गुर ते बूझै त्रिभवणु सूझै ॥
मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ
बाल सखाई हे ॥ ४ ॥ आपे सुरगु मछु पइआला ॥ आपे जोति सरूपी
बाला ॥ जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥५॥ बेद
कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल
उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥६॥ करि करि थाकी मीत घनेरे
॥ कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ
मिलै भउ जाई हे ॥ ७ ॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइ तू
है समझावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न दीसै नावहु गति मिति पाई हे

॥ ८ ॥ गंगा जमुना केल केदारा ॥ कासी कांती पुरी दुआरा ॥ गंगा
सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥ ९ ॥ आपे सिध साधिकु
वीचारी ॥ आपे राजनु पंचा कारी ॥ तखति बहै अदली प्रभु आपे
भरमु भेदु भउ जाई हे ॥ १० ॥ आपे काजी आपे मुला ॥ आपि
अभुलु न कबहू भुला ॥ आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को
बैराई हे ॥ ११ ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ सभसै दाता तिलु
न तमाई ॥ भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे
॥ १२ ॥ किआ सालाही अगम अपारै ॥ साचे सिरजणहार मुरारै ॥
जिसनो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥१३॥ ब्रहमा बिसनु
महेसु दुआरै॥ ऊभे सेवहि अलख अपारै॥होर केती दरि दीसै बिललादी
मै गणत न आवै काई हे ॥ १४ ॥ साची कीरति साची बाणी ॥ होर
न दीसै बेद पुराणी ॥ पूंजी साचु सचे गुण गावा मैं धर होर न
काई हे ॥ १५ ॥ जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ कउणु न मूआ कउणु
न मरसी ॥ नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई
हे ॥ १६ ॥ २ ॥ मारू महला १ ॥ दूजी दुरमति अंनी बोली ॥ काम
क्रोध की कची चोली ॥ घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद
न पाई हे ॥ १ ॥ अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ मनमुखु तके कुंडा
चारे ॥ बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥ २ ॥
कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ गिआन
खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥ ३ ॥ मा की रकतु
पिता बिदु धारा ॥ मूरति सूरति करि आपारा ॥ जोति दाति जेती सभ
तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥ ४ ॥ तुझ ही कीआ जंमण मरणा ॥ गुर
ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु
दरदु सरीरहु जाई हे ॥ ५ ॥ निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ धावत
राखे ठाकि रहाइआ ॥ कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई
हे ॥ ६ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ किउ रहीऐ चलणा
परथाए ॥ सचा अमरु सचे अमरापुरि सा सचु मिलै वडाई
हे ॥ ७ ॥ आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ जिनि सिरिआ

तिनि धंधै लाइआ ॥ सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई
हे ॥ ८ ॥ ऐथै गोइलड़ा दिन चारे ॥ खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ बाजी
खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥ ९ ॥ तिन कउ
तखति मिली वडिआई ॥ निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ खंडी
ब्रहमंडी पाताली पुरीई त्रिभवण ताड़ी लाई हे ॥१०॥ साची नगरी तखतु
सथावा ॥ गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ साचे साचै तखति वडाई
हउमै गणत गवाई हे ॥ ११ ॥ गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ किउ सुखु
पावै दूऐ तीऐ ॥ निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे
॥ १२ ॥ जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ साचा रवि रहिआ मनु
राता ॥ तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे
॥ १३ ॥ जीभ रसाइणि साचै राती ॥ हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥
स्रवण स्रोत रजे गुर बाणी जोती जोति मिलाई हे ॥ १४ ॥ रखि रखि
पैर धरे पउ धरणा ॥ जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ दुखु सुखु देहि तू
है मनि भावहि तुझही सिउ बणि आई हे ॥१५॥ अंत कालि को बेली
नाही ॥ गुरमुखि जाता तुधु सालाही॥नानक नामि रते बैरागी निजघरि
ताड़ी लाई हे ॥१६॥३॥ मारू महला १ ॥ आदि जुगादी अपर अपारे
॥ आदि निरंजन खसम हमारे ॥ साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी
लाई हे ॥१॥ केतड़िआ जुग धुंधू कारै ॥ ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥
सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥ २ ॥ सतजुगि सतु
संतोखु सरीरा ॥ सति सति वरतै गहिर गंभीरा ॥ सचा साहिबु सचु परखै
साचै हुकमि चलाई हे ॥३॥ सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ गुर का सबदु
मने सो सूरा ॥ साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥४॥
सतजुगि साचु कहै सभु कोई॥ सचि वरतै साचा सोई ॥ मनि मुखि साचु
भरम भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥ ५ ॥ त्रेतै धरम कला इक
चूकी ॥ तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ गुरमुखि होवै सु साचु
वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥ ६ ॥ मनमुखि कदे न दरगह
सीझै ॥ बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ बाधे आवहि बाधे जावहि
सोझी बूझ न काइ हे ॥ ७ ॥ दइआ दुआपुरि अधी होई ॥

गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु
तिथाई हे ॥ ८ ॥ राजे धरमु करहि परथाए ॥ आसा बंधे दानु कराए
॥ राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥ ९ ॥ करम
धरम करि मुकति मंगाही ॥ मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ बिनु गुर
सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥ १० ॥ माइआ ममता
छोडी न जाई ॥ से छूटे सचु कार कमाई ॥ अहिनिसि भगति रते
वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥११॥ इकि जप तप करि करि तीरथ
नावहि ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै
बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥१२॥ कलीकाल महि इक कल राखी
॥ बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु
सतिगुर भरमु न जाई हे ॥ १३ ॥ सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ ना जम
काणि न छंदा बंदा ॥ जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु
संताई हे ॥ १४ ॥ गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ गुरमुखि कोटि
असंख उधारे ॥ सरब जीआ जग जीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे
॥१५॥ सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ आपि निरंजनु अलख अपारी ॥
नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ मारू
महला १ ॥ साचै मेले सबदि मिलाए ॥ जा तिसु भाणा सहजि समाए
॥ त्रिभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥ १ ॥ जिस के
चाकर तिस की सेवा ॥ सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ भगता का
गुणकारी करता बखसि लए वडिआई हे ॥ २ ॥ दे दे तोटि न आवै
साचे ॥ लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै
भरमि भुलाई हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ साचे की लिव
गुरमति जाती ॥ मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥४॥
कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ सबदि मिलै से दरगह
पधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥ ५ ॥ कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ जिउ
वाड़ी ओजाड़ि उजाड़ी ॥ नाम बिना किछु सादि न लागै हरि
बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥ ६ ॥ भोजनु साचु मिलै आघाई ॥
नाम रतनु साची वडिआई ॥ चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति

मिलाई हे ॥ ७ ॥ नावहु भुली चोटा खाए ॥ बहुतु सिआणप भरमु न
जाए ॥ पचि पचि मुए अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥८॥
बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ मै दिखालिहु तिसु सालाही ॥ मनु
तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ प्रभ की
गति मिति कोइ न पावै ॥ जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ साचे
साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥ १० ॥ वडी वडिआई
वे परवाहे ॥ आपि उपाए दानु समाहे ॥ आपि दइआलु दूरि नही
दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥ ११ ॥ इकि सोगी इकि रोगि विआपे
॥ जो किछु करे सु आपे आपे ॥ भगति भाउ गुर की मति पूरी
अनहदि सबदि लखाई हे ॥१२॥ इकि नागे भूखे भवहि भवाए॥इकि हठु
करि मरहि न कीमति पाए ॥ गति अविगत की सार न जाणै बूझै
सबदु कमाई हे ॥ १३ ॥ इकि तीरथि नावहि अंनु न खावहि ॥ इकि
अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई कितु
बिधि पारि लंघाई हे ॥ १४ ॥ गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ मनमुखि
रामु न जपै अवाई ॥ पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई
हे ॥ १५ ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ बूझै हुकमु सो साचि समावै
॥ नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥ १६ ॥ ५ ॥
मारू महला १ ॥ आपे करता पुरखु बिधाता ॥ जिनि आपे आपि
उपाइ पछाता ॥ आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे सृसटि उपाई हे ॥१॥
आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ तिन की संगति
अहिनिसि लाहा गुर संगति एह वडाई हे ॥ २ ॥ जुगि जुगि संत भले
प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ उसतति करहि परहरि दुखु
दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥३॥ ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि
॥ संगति कुल तारे साचु परीसहि॥ कलिमल मैलु नाही ते निरमल ओइ
रहहि भगति लिव लाई हे ॥ ४ ॥ बूझहु हरि जन सतिगुर
बाणी ॥ एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ आजु कालि मरि
जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥ ५ ॥ छोडहु
प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ साकत

कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥ ६ ॥ छोडिहु निंदा
ताति पराई ॥ पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ मिलि सत संगति
नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥ ७ ॥ छोडहु काम क्रोधु बुरिआई
॥ हउमैं धंधु छोडहु लंपटाई ॥ सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु
इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥ ८ ॥ आगै बिमल नदी अगनि
बिखु झेला ॥ तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ भड़ भड़ अगनि
सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुखताई हे ॥ ९ ॥ गुर पहि मुकति
दानु दे भाणै ॥ जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ जिन पाइआ तिन
पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥ १० ॥ गुर बिनु उरझि
मरहि बेकारा ॥ जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ बाधे मुकति नाही
नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥ ११ ॥ बोलहु साचु पछाणहु अंदरि
॥ दूरि नाही देखहु करि मंदरि ॥ बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ
भवजलु पारि लंघाई हे ॥ १२ ॥ देही अंदरि नामु निवासी ॥ आपे
करता हैं अबिनासी ॥ ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै
सबदि रजाई हे ॥ १३ ॥ ओहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥
ओहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि
जनमहि आई जाई हे ॥ १४ ॥ गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥
ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ ततु लहहि अंतरगति
जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥ १५ ॥ आपि तरै जनु पितरा
तारे ॥ संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ नानकु तिस का लाला गोला
जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारू महला १ ॥
केते जुग वरते गुबारै ॥ ताड़ी लाई अपर अपारै॥ धुंधूकारि निरालमु
बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥ १ ॥ जुग छतीह तिनै वरताए ॥ जिउ
तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर
अपारा हे ॥२॥ गुपते बूझहु जुग चतुआरे॥घटि घटि वरतै उदर मझारे
॥ जुगु जुगु एका एको वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥३॥ बिंदु रकतु
मिलि पिंडु सरीआ ॥ पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ आपे चोज
करे रंग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥ ४ ॥ गरभ कुंडल महि

उरध धिआनी ॥ आपे जाणै अंतरजामी ॥ सासि सासि सचु नामु
समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥ ५ ॥ चारि पदारथ लै जगि आइआ
॥ सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै
नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ बालकु मरै बालक की लीला ॥ कहि कहि
रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा
हे ॥ ७ ॥ भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै
॥ माइआ कारणि रोइ विगूचहि धृगु जीवणु संसारा हे ॥ ८ ॥ काली हू
फुनि धउले आए ॥ विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ दुरमति अंधुला
बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥९॥ आपु वीचारि न रोवै कोई ॥
सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि
मिलै निसतारा हे ॥ १० ॥ बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ रामु न
जपई अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा
हे ॥११॥ नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो
॥ साहुरड़ै घरि वासु न पाए पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥ १२ ॥ खाजै पैझै
रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न
जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥१३॥ परविरती नरविरति पछाणै ॥
गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ किसही मंदा आखि न चलै सचि खरा
सचिआरा हे ॥१४॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै
पति होई ॥ आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे
॥१५॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥
नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥१६॥१॥७॥
मारू महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ
सुरति समोई ॥ सरब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना
हे ॥१॥ गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥ सागर महि रतन लाल बहु सारे
॥ मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥ २ ॥ हरि
अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥
सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि लीना हे ॥ ३ ॥ सतिगुर
बाझहु मुकति किनेही ॥ ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥

दरगह मुकति करे करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥ ४ ॥ सतिगुरु
दाता मुकति कराए ॥ सभि रोग गवाए अंमृतु रसु पाए ॥ जमु
जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥ ५ ॥
काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥
अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥६॥ सृसटि
उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत
संगति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥ ७ ॥ नामु विसारि दोख
दुख सहीऐ ॥ हुकमु भइआ चलणा किउ रहीऐ ॥ नरक कूप महि
गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥ ८ ॥ चउरासीह नरक साकतु
भोगाईऐ ॥ जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति न होई
किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥ ९ ॥ खंडेधार गली अति भीड़ी ॥
लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही
बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥ १० ॥ मीत सखे केते जग माही ॥
बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु
कीरतनु कीना हे ॥ ११ ॥ कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इछहु
सोई फलु पावहु ॥ साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना
हे ॥ १२ ॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु पावहु सहजि
महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥१३॥
प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥
सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे
॥१४॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ त्रिभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ सभ
तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥१५॥ इकि
दर सेवहि दरदु वञाए ॥ ओइ दरगह पैधे सतिगुरू छडाए ॥ हउमै
बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥ १६ ॥ सतिगुर
मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि
करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥१७॥२॥८॥ मारू
महला १ ॥ असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ रामु
पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥

१ ॥ गुरमुखि साधू सरणि तुमारी ॥ करि किरपा प्रभि पारि उतारी
॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे
॥ २ ॥ मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ आवहि जाहि मरहि मरि
जाही ॥ पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जमदरि अंधु खुआरा हे
॥ ३ ॥ इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ किरत के बाधे
पाप कमावहि ॥ अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे
॥ ४ ॥ पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु
विसारा ॥ जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा
हे ॥ ५ ॥ प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहि अगिआन
अंधेरे ॥ धरमराइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे
॥ ६ ॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु बेताला
॥ आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥ ७ ॥ मसतकि
भारु कलर सिरि भारा ॥ किउकरि भवजलु लंघसि पारा ॥ सतिगुरु
बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र जगि
हेतु पिआरा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरि
तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥९॥ कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ मनमुखु
दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ अंमृत नामु गुरू वडदाणा नामु जपहु सुख
सारा हे ॥१०॥ सतिगुरु तुठा सचु दृड़ाए ॥ सभि दुख मेटे मारगि पाए
॥ कंडा पाइ न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥११॥ खेहू खेह
रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ करण पलाव करे बहुतेरे
नरकि सुरगि अवतारा हे ॥१२॥ माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ इनि
दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते
पतीआरा हे॥१३॥साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ नामु विसारि कहा
सुखु पावहि ॥ त्रिहुगुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे
॥१४॥ कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ
हारा ॥ मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥ १५ ॥
सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ राम नामु दे सरणि परेकै ॥ हरि धनु
नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥ १६ ॥ राम नामु

साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥१७॥३॥ ९ ॥ मारू महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ राम जपहु अंतरगति धिआने॥ लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥१॥ जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥ २ ॥ हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥३॥ राम नामु गुरबचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥ ४ ॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु॥ अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु दाता वडदाणा ॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥ ७ ॥ सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥८॥ साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥ ९ ॥ साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै॥बाकी धरम राइकी लीजै सिरि अफरिओ भारु अफाराहे॥१०॥बिनुगुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥ ११ ॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥ १२ ॥ गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥ १३ ॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी

सहु अपणा कीआ करारा हे ॥ १४ ॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥ १५ ॥ हरि की भगति करहु जन भाई॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥ १६ ॥ हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥ १७ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥ १ ॥ तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥२॥ अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥३॥ जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥ ४ ॥ चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला॥साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥५॥ आपु तेजु वाइ पृथमी आकासा ॥ तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥६॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥ ७ ॥ दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ खिंचो ताणि करहि बेताले ॥ सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥८॥ कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥९॥ जमदरि बाधे मिलहि सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नही काई ॥ करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥१०॥ साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा

इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२॥ भूले सिख गुरू समझाए ॥ उझड़ि
जादे मारगि पाए ॥ तिसु गुरु सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि
सखाता हे ॥ १३ ॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रहमै
इंद्रि महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे
तिसहि पछाता हे ॥ १४ ॥ अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ गुरबाणी
सिउ प्रीति सु परसनु ॥ अहिनिसि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु
गुरमुखि जाता हे ॥ १५ ॥ भोजन गिआनु महारसु मीठा ॥ जिनि
चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा
मारि समाता हे ॥ १६ ॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ तिन घट घट
अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै
जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥ १७ ॥ ५ ॥ ११ ॥ मारू महला १॥
साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ आपे करता
करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥ १ ॥ वेकी वेकी जंत उपाए ॥ दुइ
पंधी दुइ राह चलाए ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि
लाहा हे ॥ २ ॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ नामु न बूझहि
भरमि भुलाना॥ लैकै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥३॥
सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा॥ विणु गुर
पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥ ४ ॥ सभ सालाहे सुणि सुणि
आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी
गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥५॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि
कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ जाकउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा
बुधि ताहा हे ॥६॥ जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ सोहिलड़े अगिआनी
गाए ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइआ सिरि साहा हे ॥
७ ॥ संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ सृसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥
दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥ ८ ॥ नीके साचे
के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै
सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ९ ॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि
वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति चूका

जम का फाहा हे ॥ १० ॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै
बोलि न जाणै ॥ अंधुले की मति अंधली बोली आइ गइआ दुखु ताहा
हे ॥११॥ दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु गुर की
सरणा ॥ दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा
हे ॥ १२ ॥ सची करणी गुर की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नही जम
धारा ॥ डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥ १३ ॥
हरि के लोग नही जमु मारै ॥ ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ राम नामु
घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥१४॥ ओड़ु न कथनै सिफति
सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ दरगह पैधे जानि सुहेले
हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥१५॥ किआ कहीऐ गुण कथहि घनेरे ॥ अंतु
न पावहि वडे वडेरे ॥ नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा
पातिसाहा हे ॥१६॥६॥१२॥ मारू महला १ दखणी ॥ काइआ नगरु
नगर गड़ अंदरि ॥ साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥ असथिरु थानु सदा
निरमाइलु आपे आपु उपाइदा ॥ १ ॥ अंदरि कोट छजे हट नाले ॥
आपे लेवै वसतु समाले ॥ बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी
खोलाइदा ॥२॥ भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि
रजाई ॥ दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥ ३ ॥
पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ आपे कीतो खेलु तमासा ॥ बलदी
जलि निवरै किरपा ते आपे जलनिधि पाइदा ॥ ४ ॥ धरति उपाइ
धरी धरमसाला ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ
सभ थाई कला खिंचि ढाहाइदा ॥ ५ ॥ भार अठारह मालाणि तेरी ॥
चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ चंदु सूरजु दुइ दीपक राखे ससि घरि सूरु
समाइदा ॥ ६ ॥ पंखी पंच उडरि नही धावहि ॥ सफलिओ बिरखु
अंम्रित फलु पावहि ॥ गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग
चुगाइदा ॥ ७ ॥ झिलमिलि झिलकै चंदु न तारा ॥ सूरज किरणि न
बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि
भाइदा ॥ ८ ॥ पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ करि करि देखै आपि
दइआला ॥ अनहद रुणझुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि वाइदा

॥ ९ ॥ अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु
छाजै ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥ १० ॥
आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ एकंकारु
वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥ ११ ॥ अंमृतु पीआ सतिगुरि
दीआ ॥ अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ एको एकु सु अपरपरंपरु परखि
खजानै पाइदा ॥ १२ ॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर गंभीरा ॥ कोइ न
जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥
१३ ॥ करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ तू
दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥ १४ ॥ आपे देखि
दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता
आपे मारि जीवाइदा ॥१५॥ जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ देखहि आपि
बैसि बिजमंदरि ॥ नानकु साचु कहै बेनंती हरि दरसनि सुखु पाइदा
॥ १६ ॥ १ ॥ १३ ॥ मारू महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥
भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन
रसाइदा ॥ १ ॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ मुकतु भए हरि दास
तुमारे ॥ आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥२॥ ईसरु
ब्रहमा देवी देवा ॥ इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी
अंतु न कोई पाइदा ॥ ३ ॥ विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ जो किछु
करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह
लवाइदा ॥ ४ ॥ जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु
गणाए रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ ५ ॥
निरमल काइआ ऊजल हंसा ॥ तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ सगले
दूख अंमृतु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥ ६ ॥ बहु सादहु दूखु
परापति होवै ॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई
कबहू विणु भाणे भरमाइदा ॥ ७ ॥ गिआन विहूणी भवै सबाई ॥
साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती
जोति मिलाइदा ॥ ८ ॥ अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि
ढाहे फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि

भेदि पतीआइदा ॥९॥ हम दासन के दास पिआरे ॥ साधिक साच भले
वीचारे ॥ मंने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु द्रिड़ाइदा ॥१०॥ पलै
साचु सचे सचिआरा ॥ साचे भावै सबदु पिआरा ॥ त्रिभवणि साचु
कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥ ११ ॥ वडा वडा आखै
सभु कोई ॥ गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ साचि मिलै सो साचे भाए
ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ धुरहु विछुंने धाही रुंने ॥ मरि मरि
जनमहि मुहलति पुंने ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न
पछोताइदा ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे तृपता आपे
मुकता ॥ आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥
दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ करणकारण समरथु अपारा ॥ करि करि
वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥ १५ ॥ से गुण गावहि साचे
भावहि ॥ तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ नानक साचु कहै
बेनंती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१६॥२॥१४॥ मारू महला १॥ अरबद
नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ ना दिनु रैनि न
चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ १ ॥ खाणी न बाणी पउण न
पाणी ॥ ओपति खपति न आवण जाणी ॥ खंड पताल सपत नहीं
सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥ २ ॥ ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥
दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ नरकु सुरगु नही जंमणु मरणा ना को
आइ न जाइदा ॥३॥ ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै एको
सोई ॥ नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥४॥
ना तदि जती सती बनवासी ॥ ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥
जोगी जंगम भेखु न कोई नाको नाथु कहाइदा ॥५॥ जप तप संजम ना
ब्रत पूजा ॥ ना को आखि वखाणै दूजा ॥ आपे आपि उपाइ विगसै
आपे कीमति पाइदा ॥६॥ न सुचि संजमु तुलसी माला ॥ गोपी कानु न
गऊ गोआला ॥ तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥७॥ करम
धरम नही माइआ माखी ॥ जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ ममता जालु
कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥८॥ निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो
॥ ना तदि गोरखु ना माछिंदो ॥ ना तदि गिआनु धिआनु कुल ओपति

ना को गणत गणाइदा ॥ ६ ॥ वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ देउ न
देहुरा गऊ गाइत्री ॥ होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा
॥ १० ॥ ना को मुला ना को काजी ॥ ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥
रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥ ११ ॥ भाउ न
भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ आपे साहु
आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥१२॥ बेद कतेब न सिम्रिति सासत ॥
पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ कहता बकता आपि अगोचरु आपे
अलखु लखाइदा ॥१३॥ जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ बाझु
कला आडाणु रहाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए माइआ मोह
वधाइदा ॥१४॥ विरले कउ गुरि सबदु सुणाइआ ॥ करि करि देखै हुकमु
सबाइआ ॥ खंड ब्रहमंड पाताल अरंभे गुपतहु परगटीआइदा ॥ १५ ॥
ता का अंतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ नानक साचि रते
बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥१६॥३॥१५॥ मारू महला १ ॥
आपे आपु उपाइ निराला ॥ साचा थानु कीओ दइआला ॥ पउण पाणी
अगनी का बंधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥१॥ नउ घर थापे थापणहारै
॥ दसवै वासा अलख अपारै ॥ साइर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि
मैलु न लाइदा ॥ २ ॥ रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ आपे करि
वेखै वडिआई ॥ जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥ ३ ॥
गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ आपे रतनु
विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥ ४ ॥ कीमति पाई पावणहारै ॥ वे
परवाह पूरे भंडारै॥ सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा
॥५॥ नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ जम जंदारु न मारै फेटै ॥ जिउ जल
अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥ ६ ॥ आपे वरखै
अंमृत धारा ॥ रतन जवेहर लाल अपारा ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा
पाईऐ प्रेम ५दारथु पाइदा ॥ ७ ॥ प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ कबही
न घाटसि पूरा तोलो ॥ सचे का वापारी होवै सचो सउदा
पाइदा ॥ ८ ॥ सचा सउदा विरला को पाए ॥ पूरा सतिगुरु
मिलै मिलाए ॥ गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु

समाइदा॥६॥हुकमे आइआ हुकमि समाइआ॥हुकमे दीसै जगतु उपाइआ
॥ हुकमे सुरगु मछु पइआला हुकमे कला रहाइदा ॥१०॥ हुकमे धरती
धउल सिरि भारं ॥ हुकमे पउण पाणी गैणारं ॥ हुकमे सिव सकती घर
वासा हुकमे खेल खेलाइदा ॥११॥ हुकमे आडाणे आगासी॥ हुकमे जल
थल त्रिभवण वासी॥हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइदा
॥१२॥ हुकमि उपाए दस अउतारा॥ देव दानव अगणत अपारा ॥ मानै
हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइ समाइदा ॥१३॥ हुकमे जुग छतीह
गुदारे ॥ हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ आपि नाथु नथीं सभ जा की
बखसे मुकति कराइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ नेब
खवास भला दरवाजा ॥ मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि
पछुताइदा ॥१५॥ सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ जतु सतु संजमु सरणि
मुरारी ॥ नानक सहजि मिलै जगजीवनु गुरसबदी पति पाइदा ॥१६॥
४॥१६॥ मारू महला १ ॥ सुंन कला अपरंपरि धारी॥ आपि निरालमु
अपर अपारी ॥ आपे कुदरति करि करि देखै सुंनहु सुंनु उपाइदा ॥१॥
पउणु पाणी सुंनै ते साजे ॥ स्रिसटि उपाइ काइआ गड़ राजे ॥ अगनि
पाणी जीउ जोति तुमारी सुंने कला रहाइदा ॥ २ ॥ सुंनहु ब्रहमा
बिसनु महेसु उपाए ॥ सुंने वरते जुग सबाए ॥ इसु पद वीचारे सो जनु
पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥ ३ ॥ सुंनहु सपत सरोवर
थापे ॥ जिनि साजे वीचारे आपे ॥ तितु सतसरि मनूआ गुरमुखि नावै
फिरि बाहुड़ि जोनि न पाइदा ॥ ४ ॥ सुंनहु चंदु सूरजु
गैणारे ॥ तिस की जोति त्रिभवण सारे ॥ सुंने अलख अपार
निरालमु सुंने ताड़ी लाइदा ॥ ५ ॥ सुंनहु धरति अकासु उपाए
॥ बिनु थंमा राखे सचु कल पाए ॥ त्रिभवण साजि मेखुली माइआ
आपि उपाइ खपाइदा ॥ ६ ॥ सुंनहु खाणी सुंनहु बाणी ॥ सुंनहु
उपजी सुंनि समाणी ॥ उतभुजु चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु
सबदि देखाइदा ॥ ७ ॥ सुंनहु राति दिनसु दुइ कीए ॥ ओपति
खपति सुखा दुख दीए ॥ सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि
निजघरु पाइदा ॥ ८ ॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥

ब्रहमे मुखि माइआ है त्रैगुण ॥ ता की कीमति कहि न सकै को तिउ
बोले जिउ बोलाइदा ॥ ९ ॥ सुंनहु सपत पाताल उपाए ॥ सुंनहु
भवण रखे लिव लाए ॥ आपे कारणु कीआ अपरंपरि सभु तेरो कीआ
कमाइदा ॥ १० ॥ रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ जनम मरणु
हउमै दुखु पाइआ ॥ जिसनो कृपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै
मुकति कराइदा ॥ ११ ॥ सुंनहु उपजे दस अवतारा ॥ सृसटि उपाइ
कीआ पासारा ॥ देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम
कमाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ इह गुर की पउड़ी
जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ
पति पाइदा ॥ १३ ॥ पंच ततु सुंनहु परगासा ॥ देह संजोगी करम
अभिआसा ॥ बुरा भला दुइ मसतकि लीखे पापु पुंनु बीजाइदा ॥
१४ ॥ ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥
रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥ १५ ॥
इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा
॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥ १६ ॥ सतिगुर
ते पाए वीचारा ॥ सुंन समाधि सचे घर बारा ॥ नानक निरमल नादु
सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥ १७ ॥ ५ ॥ १७ ॥ मारू महला
१ ॥ जह देखा तह दीन दइआला ॥ आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥
जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥ १ ॥ जगु तिस
की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ
॥ ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ
॥ २ ॥ तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगंम
निराला ॥ सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ
॥ ३ ॥ त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥
निरमल जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥ ४ ॥
ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ हरि रस माते पारि उतारे ॥ नानक
रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥ ५ ॥ तू
अंतरजामी जीअ सभि तेरे ॥ तू दाता हम सेवक

तेरे ॥ अंम्रित नामु क्रिपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥
६ ॥ पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ आतम राम पाए सुखु थीआ
॥ करम करतूति अंम्रित फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइआ
॥ ७ ॥ न तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ सरब निरंजनु घटि घटि
जानिआ ॥ अंम्रित रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ
॥ ८ ॥ अधिआतम करम करे दिनु राती ॥ निरमल जोति निरंतरि
जाती ॥ सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइआ ॥ ९ ॥
बेणु रसाल वजावै सोई ॥ जा की त्रिभवण सोझी होई ॥ नानक बूझहु
इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइआ ॥ १० ॥ ऐसे जन
विरले संसारे ॥ गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ आपि तरहि
संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ॥ ११ ॥ घरु
दरु मंदरु जाणै सोई ॥ जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ काइआ गड़
महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ ॥ १२ ॥ चतुरदस
हाट दीवे दुइ साखी ॥ सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ अंतरि
वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिऐ हरि धनु पाइआ ॥ १३ ॥
तखति बहै तखतै की लाइक ॥ पंच समाए गुरमति पाइक ॥
आदि जुगादी हैभी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥ १४ ॥ तखति
सलामु होवै दिनु राती ॥ इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥
नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइआ ॥ १५ ॥ १ ॥
१८ ॥ मारू महला १ ॥ हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ सतिगुर
सेवि रहहु सरणाई ॥ तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि
जगाइआ ॥ १ ॥ तू एकंकारु निरालमु राजा ॥ तू आपि सवारहि
जन के काजा ॥ अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि
सुहाइआ ॥ २ ॥ देही नगरी ऊतम थाना ॥ पंच लोक वसहि परधाना
॥ ऊपरि एकंकारु निरालमु सुंन समाधि लगाइआ ॥ ३ ॥ देही नगरी
नउ दरवाजे ॥ सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ दसवै पुरखु अतीतु निराला
आपै अलखु लखाइआ ॥ ४ ॥ पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ हुकमि
चलाए सचु नीसाना ॥ नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि आतम राम

नामु पाइआ ॥ ५ ॥ सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे
गुर गिआन समाना ॥ कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ
॥ ६ ॥ सचै थानि वसै निरंकारा ॥ आपि पछाणै सबदु वीचारा
॥ सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ
॥ ७ ॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ जोगी सबदु अनाहदु वावै
॥ पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥ ८ ॥
भउ बैरागा सहजि समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अंजनु
सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥ ९ ॥ दुख भै भंजनु
प्रभु अबिनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु
सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥ १० ॥ कालै कवलु
निरंजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे जाणै आपि
पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥११॥ आपे साहु आपे वणजारा
॥ आपे परखे परखणहारा ॥ आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति
पाइआ ॥ १२ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ घटि घटि रवि
रहिआ बनवारी॥पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ
॥१३॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा
माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥१४॥ हउमै मेटि सबदि
सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि जसु हरि गुण
लाहा सत संगति सचु फलु पाइआ ॥१५॥२॥१६॥ मारू महला १ ॥
सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु
बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ ॥ १ ॥ हउमै
ममता लोभ बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै
अपरंपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ २ ॥ गुरमति लेवहु हरि लिव
तरीऐ ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ जत जत देखउ तत तत
तुमही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥ ३ ॥ सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥
सचु गुरसबदु जितै लगि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि
गरभि न जोनी जाइआ ॥ ४ ॥ सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु
गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मंत्रु हरि नामु रसाइणु कहु नानक

पूरा पाइआ ॥ ५ ॥ सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ एहु समुंदु
अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ
कै घरि पाइआ ॥ ६ ॥ झूठी जग हित की चतुराई ॥ बिलम न लागै
आवै जाई ॥ नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइआ
॥ ७ ॥ उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ हउमै माइआ के गलि फंधे ॥
जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जमपुरि बंधि चलाइआ ॥ ८ ॥
गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ बिनु गुर राम नामु किउ
धिआईऐ ॥ गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥
९ ॥ गुरमति क्रिसनि गोवरधन धारे ॥ गुरमति साइरि पाहण तारे ॥
गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ १० ॥
गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ जम के
फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ गुरमति पंच
सखे गुर भाई ॥ गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ मनि मुखि नामु
जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥ १२ ॥ गुरमुखि बूझै
सबदि पतीजै ॥ उसतति निंदा किस की कीजै ॥ चीनहु आपु जपहु
जगदीसरु हरि जगंनाथु मनि भाइआ ॥ १३ ॥ जो ब्रहमंडि खंडि
सो जाणहु ॥ गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ घटि घटि भोगे
भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥ १४ ॥ गुरमति बोलहु हरि जसु
सूचा ॥ गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी
नानक हरि रंगि रंगाइआ ॥ १५ ॥ ३ ॥ २० ॥ मारू महला १ ॥
कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ भ्रम
का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ
॥ १ ॥ निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै ॥
अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ आनंद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै
देखाइआ ॥२॥ सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ ससि घरि सूरु दीपकु
गैणारे ॥ देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु त्रिभवणि ब्रहमु सबाइआ
॥ ३ ॥ अंम्रित रसु पाए त्रिसना भउ जाए ॥ अनभउ पदु पावै आपु
गवाए ॥ ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइआ ॥४॥ अद्रसट

अगोचरु नामु अपारा ॥ अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ नानक कउ
जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न पाइआ ॥ ५ ॥ अंतरि
नामु परापति हीरा ॥ हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ दुघट घट भउ
भंजनु पाईऐ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥ ६ ॥ भगति हेति गुर
सबदि तरंगा ॥ हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ हरि भावै गुर मेलि
मिलाए हरि तारे जगतु सबाइआ ॥ ७ ॥ जिनि जपु जपिओ सतिगुर
मति वा के ॥ जमकंकर कालु सेवक पग ताके ॥ ऊतम संगति गति
मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥ ८ ॥ इहु भवजलु जगतु
सबदि गुर तरीऐ ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऐ ॥ पंच बाण ले
जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥ ९ ॥ साकत नरि सबद
सुरति किउ पाईऐ ॥ सबद सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ नानक गुरमुखि
मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥ १० ॥ निरभउ सतिगुरु
है रखवाला ॥ भगति परापति गुर गोपाला ॥ धुनि अनंद अनाहदु
वाजै गुरसबदि निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ निरभउ सो सिरि
नाही लेखा ॥ आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ आपि अतीतु
अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥ १२ ॥ अंतर की
गति सतिगुरु जाणै ॥ सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ अंतरु देखि
निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥ १३ ॥ निरभउ सो अभ
अंतरि वसिआ ॥ अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ नानक हरि जसु
संगति पाईऐ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥ १४ ॥ अंतरि बाहरि सो
प्रभु जाणै ॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ ऊपरि आदि सरब
तिहु लोई सचु नानक अंमृत रसु पाइआ ॥ १५ ॥ ४ ॥ २१ ॥ मारू
महला १ ॥ कुदरति करनैहार अपारा ॥ कीते का नाही किछु
चारा ॥ जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥
१ ॥ हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ किसु नेड़ै किसु आखां दूरे ॥
गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥ २ ॥ जि
कउ मेले सुरति समाए ॥ गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ आनद
अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥ ३ ॥ मन तन धन ते

पिआरा ॥ अंति सखाई चलणवारा ॥ मोह पसार नही संगि बेली बिनु
हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥
सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला
मारगि पाइआ ॥ ५ ॥ संत जना हरि धनु जसु पिआरा ॥ गुरमति
पाइआ नामु तुमारा ॥ जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु
गाइआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त महलि बुलाए ॥ साची दरगह गति
पति पाए ॥ साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥७॥
सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ बिखिआ
मलु जाइ अंमृतसरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥ ८ ॥ सतिगुर
सेवहु संक न कीजै ॥ आसा माहि निरासु रहीजै ॥ संसा दूख बिनासनु
सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइआ ॥९॥ साचे भावै तिसु वडीआए ॥
कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि
गुर भाइआ ॥ १० ॥ वाचहि पुसतक वेद पुरानां ॥ इक बहि सुनहि
सुनावहि कानां ॥ अजगर कपटु कहहु किउ खुल्है बिनु सतिगुर ततु न
पाइआ ॥११॥ करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ अंतरि क्रोधु चंडालु
सु हउमै ॥ पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ
॥ १२ ॥ तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ जतु सतु संजमु कथहि
गिआना ॥ राम नाम बिनु किउ सुखु पाईऐ बिनु सतिगुर भरमु न
जाइआ ॥१३॥ निउली करम भुइअंगम भाठी ॥ रेचक कुंभक पूरक मन
हाठी ॥ पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुरसबद महारसु पाइआ ॥१४॥
कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ गुरसबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥
नानक आतम रामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ
॥ १५ ॥ ५ ॥ २२ ॥

मारू सोलहे महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हुकमी सहजे सृसटि उपाई ॥
करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ
समाई हे ॥ १ ॥ माइआ मोहु जगतु गुबारा ॥ गुरमुखि बूझै को

वीचारा ॥ आपे नदरि करे सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥ २ ॥ आपे मेले दे वडिआई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥ ३ ॥ हउमै माइआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै रहिआ समाई हे ॥ ४ ॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥ ६ ॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥ ८ ॥ तृसना अगनि जलै संसारा ॥ जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥ ९ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ साचै नामि सदा लिवलागी ॥ अंतरि नामु रविआ निहकेवलु तृसना सबदि बुझाई हे ॥१०॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचै सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥११॥ सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥ निरमल नामु वसै मनि आए ॥ सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥१२॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुर सेवे की वडिआई तृसना भूख गवाई हे ॥ १३॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥ १४ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥१५॥ अपणी नदरि करे सो पाए ॥ सचै सबदि ताड़ी चितु लाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला ३ ॥ एको एकु वरतै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥ १ ॥ लख चउरासीह

जीअ उपाए ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥ २ ॥ माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई हे ॥ ३ ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥ ४ ॥ आपे लाइ लए सो लागै ॥ गुरपरसादी जम का भउ भागै ॥ अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥५॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि तृसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥ ७ ॥ काइआ कुटंबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥ ८ ॥ मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ जनमत की न मूओ आभागा ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥९॥ काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥१०॥ पंच दूत काइआ संघारहि ॥ मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि॥ अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥११॥ इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥ १२ ॥ गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ पूरा सेवकु सबदि सिञापै ॥ सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥ १३ ॥ हउमै मारे सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उरिधारे ॥ एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥१४॥ विनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइआ॥ सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥१५॥ आपे गुण दाता वीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति होइ हे ॥ १६ ॥ २ ॥ मारू महला ३ ॥ जगजीवनु साचा एको दाता ॥ गुरसेवा ते सबदि पछाता ॥ एको अमरु एका पतिसाही

जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥१॥ सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता
॥ आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि
साचै पति पाई हे ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि
निंदक पति गवाई ॥ नामि रते परम हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई
हे ॥ ३ ॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥
काइआ अंदरि अंमृतसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥ ४ ॥ पड़ि
पंडितु अवरा समझाए ॥ घर जलते की खबरि न पाए ॥ बिनु सतिगुर
सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके सांति न आई हे ॥५॥ इकि भसम लगाइ
फिरहि भेख धारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत
रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥६॥ इकि गृह कुटंब महि सदा
उदासी ॥ सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ अनदिनु सदा रहहि रंगि
राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥७॥ मनमुखु निंदा करि करि विगुता
॥ अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ जम कालु तिसु कदे न छोडै अंति
गइआ पछुताई हे ॥८॥ सचै सबदि सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति
न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई
हे ॥९॥ इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इकि अहिनिसि नामि रते
निरंकारी ॥ जिसनो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे
॥१०॥ इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इकि मनूआ मारि मन सिउ
लूझहि ॥ साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥ ११ ॥
आपे सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइ मिलाई ॥ आपे नदरि करे
मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥ १२ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन
साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ आपे करता करि करि
वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥ १३ ॥ जुगि जुगि साचा
एको दाता ॥ पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ सबदि
मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥ १४ ॥
हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ मरि मरि जंमहि दूजा
भाइआ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु
लिव लाई हे ॥ १५ ॥ जो तिसु भावै सोई करसी ॥ आपहु

होआ ना किछु होसी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति
पाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ मारू महला ३ ॥ जो आइआ सो सभु को जासी
॥ दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे
साचि समाई हे ॥१॥ आपे करता करि करि वेखै ॥ जिस नो नदरि करे
सोई जनु लेखै ॥ गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी
अंधु कमाई हे ॥२॥ मनमुख सहसा बूझ न पाई॥ मरि मरि जंमै जनमु
गवाई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥ ३ ॥
धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ आपे
बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥ ४ ॥ दुरमति झूठी बुरी
बुरिआरि ॥ अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ कची मति फीका मुखि
बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥ ५ ॥ अउगणिआरी कंत न भावै ॥ मन
की जूठी जूठु कमावै ॥ पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न
पाई हे ॥ ६ ॥ दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ सीगारु करे पिर खसम न
भावै ॥ गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥ ७ ॥ आपे
हुकमु करे सभु वेखै ॥ इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ अनदिनु नामि
रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥ ८ ॥ हउमै धातु मोह रसि
लाई ॥ गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ आपे मेलै आपे करि वेखै
बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥ ९ ॥ इकि सबदु वीचारि सदा जन
जागे ॥ इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ आपे करे कराए आपे
होरु करणा किछू न जाई हे ॥ १० ॥ कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥
हरि का नामु रखै उरधारे ॥ सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै
नामि समाई हे ॥ ११ ॥ दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ माइआ मोहि दुख
माहि समानी ॥ बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे
॥ १२ ॥ किस नो कहीऐ जा आपि कराए ॥ जितु भावै तितु राहि
चलाए ॥ आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥ १३ ॥
आपे करता आपे भुगता ॥ आपे संजमु आपे जुगता ॥ आपे निरमलु
मिहरवानु मधुसूदनु जिसका हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥ १४ ॥ से
वडभागी जिनी एको जाता ॥ घटि घाट वसि रहिआ जगजीवनु

दाता ॥ इकथै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥१५॥
गुरमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ जिसु
तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥१६॥४॥ मारू महला ३
॥ सचु सालाही गहिर गंभीरै ॥ सभु जगु है तिसही कै चीरै ॥ सभि
घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥ १ ॥ सचा साहिबु
सची नाई ॥ गुरपरसादी मंनि वसाई ॥ आपे आइ वसिआ घट अंतरि
तूटी जम की फासी हे ॥२॥ किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ सतिगुरु सेवी
सबदि सालाही ॥ सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे
॥३॥ देही काची कागद मिकदारा॥बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा
॥ कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥४॥ सचा
चउका सुरति की कारा ॥ हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ सदा तृपति
पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥५॥ हउ तिन बलिहारी
जो साचै लागे ॥ हरि गुण गावहि अनदिनु जागे॥साचा सूखु सदा तिन
अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥६॥ हरि नामु चेता अवरु न पूजा॥
एको सेवी अवरु न दूजा ॥ पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि
निवासी हे॥७॥भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइआ ॥ आपि भूला जा
खसमि भुलाइआ॥हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी
हे ॥८॥ कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ किआ मुहु लै बोलह ना हम
गुण न सेवा साधी ॥ डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु
अबिनासी हे ॥९॥ ना कोई करे न करणै जोगा ॥ आपे करहि करावहि
सु होइगा॥ आपे बखसि लैहि सुखु पाए सदही नामि निवासी हे ॥१०॥
इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥
सचु धनु जंमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥ ११ ॥ हरि
जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥
गुरमुखि होवै सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥१२॥ अंतरि हरि
धनु समझ न होई ॥ गुरपरसादी बूझै कोई ॥ गुरमुखि होवै
सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १३ ॥ अनल वाउ
भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अंधे

किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥ १४ ॥ मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ परनिंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥ १५ ॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥१६॥५॥ मारू महला ३ ॥ एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥ १ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥ २ ॥ माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥ ३ ॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ जम कालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥ ४ ॥ अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि जम कालु न सूझै ॥ ऐथै कमाणा सु अगै आइआ अंत कालि किआ कीजै हे ॥ ५ ॥ जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥ दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपेगुण महि भीजै हे ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ माइआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरिनामि भीजै हे ॥ ७ ॥ सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ गुरपरसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अंमृतु पीजै हे ॥ ८ ॥ किलबिख दूख निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥९॥ माइआ अगनि जलै संसारे ॥ गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अंतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥१०॥ इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईए हरि हरि रसना पीजै हे ॥ ११ ॥ मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति सांति सुखु होई॥पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमुखि अंतरु भीजै हे ॥ १२ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ त्रैगुण बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥

१३ ॥ बेद पड़हि हरिनामु न बूझहि ॥ माइआ कारणि पड़ि पड़ि
लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउकरि दुतरु तरीजै हे ॥
१४ ॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु
पछाणहि ॥ पुंनु पापु सभु बेदि दृड़ाइआ गुरमुखि अंमृतु पीजै हे ॥
१५ ॥ आपे साचा एको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक
नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारू महला
३ ॥ सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ निज घरि वसिआ तिथै मोहु न
माइआ ॥ सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥
१॥ सचा सउदा सचु वापारा॥न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु
खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥२॥ सचै लाए से जन
लागे ॥ अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै सबदि सदा गुण गावहि
सबदि रते वीचारी हे ॥३॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ एको वेखा दूजा
नाही ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥४॥
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥
सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥ ५ ॥ माइआ मोहु
सभु आपे कीना ॥ गुरमुखि विरलै किनही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु
सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥ ६ ॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई
॥ हउमै तृसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै
मारि निवारी हे ॥ ७ ॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ सचै
सबदे सचि सुहावै ॥ ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी
हे ॥ ८ ॥ बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ माइआ मोह दुख सबाइआ
॥ बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥ ९ ॥
साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ॥
सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥ १० ॥ गुर की सेवा
मीठी लागी ॥ अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु
निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥११॥ से जन सुखीए सतिगुरि
सचे लाए ॥ आपे भाणे आपि मिलाए ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे
होर माइआ मोह खुआरी हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥

ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥ १३ ॥ हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥ १४ ॥ जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ साचै सबदे साचु कमाए ॥ अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥ १५ ॥ आपे वेखै हुकमि चलाए ॥ अपणा भाणा आपि कराए ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥१६॥७॥ मारू महला ३ ॥ आपे आपु उपाइ उपंना ॥ सभ महि वरतै एकु परछंना ॥ सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥१॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सिरि सिरि धंधै आपे लाए ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥२॥ आवागउणु है संसारा ॥ माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सदही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥ ३ ॥ इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ अंमृत फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अंमृत बाता हे ॥४॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥५॥ जा तुधु भाणा ता सची कारै लाए ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥६॥ जह देखा तह एको सोई ॥ दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥७॥ काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखि सबदु न बुझै इआणा ॥ गुरपरसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥ ८ ॥ कोट गड़ी के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उरधारे ॥ जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥९॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे॥१०॥मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाए ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे ॥ ११ ॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥

नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥ १२ ॥ नामे
राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ आवहि
जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥ १३ ॥ पूरै
सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ नामे नामि
मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥१४॥ काइआ नगरु ढहै
ढहि ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै
जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥१५॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥
साचा सबदु वसै मनि आए ॥ नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै
साचु पछाता हे ॥ १६ ॥ ८ ॥ मारू सोलहे ॥ आपे करता सभु जिसु
करणा ॥ जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि
गुर कै सबदि पछाता हे ॥१॥ हरि के भगति भरे भंडारा ॥ आपे बखसे
सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥२॥
आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ आपे नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जंत सभि
सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥३॥ जिस नो नदरि होवै
धुरि तेरी ॥ मरै न जंमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि
जुगि एको जाता हे ॥४॥ माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥ ब्रहमा
बिसनु देव सबाइआ॥जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआनमती पछाता
हे ॥५॥ पाप पुंन वरतै संसारा ॥ हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥
गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥६॥ किरतु
न कोई मेटणहारा॥गुर कै सबदे मोख दुआरा॥पूरबि लिखिआ सो फलु
पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे॥७॥माइआ मोहि हरि सिउ चितु न
लागै॥दूजै भाइ घणा दुखु आगै॥मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंतकालि
पछुताता हे ॥८॥हरि कै भाणै हरि गुण गाए॥सभि किलबिख काटे दूख
सबाए॥हरि निरमल निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे॥९॥ जिस
नो नदरि करे सो गुण निधि पाए॥हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ गुण अवगण
का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥१०॥ मेरा प्रभु निरमलु अति
अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ॥ आपे बखसे सचु दृड़ाए मनु तनु
साचै राता हे॥११॥मनु तनु मैला विचि जोति अपारा॥गुरमति बूझै करि

वीचारा ॥ हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥१२॥ गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥ १३ ॥ रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ कीमति कवणु करे वेचारा ॥ गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे ॥ १४ ॥ सिमृति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥ १५ ॥ आपे करता करे कराए ॥ सची बाणी सचु दृड़ाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारू महला ३ ॥ सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ सबदे दूख निवारणहारा ॥ अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥ १ ॥ आपे सचा सचु वरताए ॥ इकि जन साचै आपे लाए ॥ साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥ २ ॥ धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ सची भगती आपे लाए ॥ साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥ ४ ॥ आपे साजे सृसटि उपाए ॥ विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥ ५ ॥ भंनै घड़े सवारे साजे ॥ माइआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥ ६ ॥ आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे ॥ ७ ॥ आपे सचा सची नाई ॥ गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥ ८ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ गुरपरसादी मंनि वसाई ॥ सदा सबदि सालाही गुण दाता लेखा कोइ न मंगै ताहा हे ॥९॥ ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा॥ अंतु न पावहि अलख अभेवा॥जिन कउ नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे ॥ १० ॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई॥ एको नामु मंनि वसाई॥नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा

हे ॥ ११ ॥ सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकम न
जाणहि सारा ॥ हुकमे मंने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥ १२ ॥
गुरपरसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ नामे
राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥ १३ ॥ सभ जग महि
वरतै एको सोई ॥ गुरपरसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन
निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥ १४ ॥ सदा भगत तेरी सरणाई ॥
अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि
गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥ १५ ॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे
साहिब तेरै मनि भावा ॥ नानकु साचु कहै बेनंती सचु देवहु सचि
समाहा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥ मारू महला ३ ॥ सतिगुरु सेवनि से
वडभागी ॥ अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ
घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥ १ ॥ नदरि करे ता गुरू मिलाए
॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे
मनि ओमाहा हे ॥ २ ॥ कृपा करे ता मेलि मिलाए ॥ हउमै ममता
सबदि जलाए ॥ सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥
३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥
जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥ ४ ॥ दुखु सुखु
करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ दूजा भाउ आपि वरताइआ॥ गुरमुखि होवै
सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥ ५ ॥ से मनमुख जो
सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ
निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा हे ॥ ६ ॥ अफरिओ जमु
मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ सबदु सुणे ता दूरहु
भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥ ७ ॥ हरि जीउ की है सभ
सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे विचारा ॥ हुकमी बंदा हुकमु कमावै
हुकमे कढदा साहा हे ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ गुरमुखि
पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु
ताहा हे ॥ ९ ॥ गुरमुखि जाता करमि बिधाता ॥ जुग चारे गुर
सबदि पछाता ॥ गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि

समाहा हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ अगम अगोचर
वेपरवाहे ॥ एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥ ११ ॥
गुरमुखि सांति सदा सुखु पाए ॥ गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ॥
गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि
उपजै साचि समावै ॥ ना मरि जंमै न जूनी पावै ॥ गुरमुखि सदा
रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥१३॥ गुरमुखि भगत सोहहि
दरबारे ॥ सची बाणी सबदि सवारे ॥ अनदिनु गुण गावै दिनु राती
सहज सेती घरि जाहा हे ॥१४॥ सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ अनदिनु
भगति करहु लिव लाए ॥ हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल
गुण पातिसाहा हे ॥१५॥ गुण का दाता सचा सोई ॥ गुरमुखि विरला
बूझै कोई ॥ नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥१६
॥२॥११॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ तिसदा
अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ गुरपरसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि
मति अगाहा हे ॥१॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरपरसादी परगटु
होई ॥ सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु संबाहा हे ॥ २ ॥
पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ ॥ हुकमे ही सभु जगतु उपाइआ ॥
हुकमु मंने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ ३ ॥
सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ तिसदै सबदि निसतरै संसारा ॥ आपे
करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे॥४॥कोटि मधे किसहि बुझाए
॥ गुर कै सबदि रते रंगु लाए ॥ हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि
बखसे भगति सालाहा हे ॥५॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ जो मरि
जंमहि काचनिकाचे ॥ अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु
अथाहा हे ॥६॥ सतिगुरु पूरा साचु दृड़ाए ॥ सचै सबदि सदा
गुण गाए ॥ गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे
॥७॥ सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ अनदिनु
सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ८ ॥ अगिआनी अंधा
बहु करम दृड़ाए ॥ मनहठि करम फिरि जोनी पाए ॥ बिखिआ
कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥ ९ ॥ पूरा

सतिगुरु भगति दृड़ाए॥गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥११॥ से भगत सचे तेरै मनि भाए॥दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए॥साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥ बिनु सबदै तुधु नो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुरु दाता हरिनामु जपि संबाहा हे ॥१४॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥१५॥ भगत सचे तेरै दरवारे॥सबदे सेवनि भाइ पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥१६॥३॥१२॥ मारू महला ३ ॥ मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥१॥ वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ सिव सकती देही महि पाए ॥ गुरपरसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥२॥ अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी आपु पछानै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥३॥ अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥४॥ देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अंमृतु पीवै तृसना अगनि बुझाहा हे ॥ ५ ॥ सभि रस देही अंदरि पाए ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥ ६ ॥ विणु चाखे सादु किसै न आइआ ॥ गुर कै सबदि अंमृतु पीआइआ ॥ अमृतु पी अमरापदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥ ७॥ आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु

चुकाहा हे ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ हउमै मेरा आपु
गवाए ॥ आपे कृपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥ ९ ॥ गुर
का सबदु अंमृत है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि
हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥ १० ॥ सेवक
सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ आपे
बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥ ११ ॥ सबदे अकथु
कथे सालाहे ॥ मेरै प्रभ साचे वे परवाहे ॥ आपे गुण दाता सबदि
मिलाए सबदे का रसु ताहा हे ॥१२॥ मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ जो
धुरि लिखिआ सु करम कमाए॥बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै
दुखु ताहा हे ॥१३॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझही
माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची-आपे अलखु अथाहा हे ॥१४॥
बिनु गुर दाते कोइ न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥ गुर किरपा ते
घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥ १५ ॥ से जन मिले धुरि
आपि मिलाए ॥ साची बाणी सबदि सुहाए ॥ नानक जनु गुण गावै
नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥१६॥४॥१३॥ मारू महला ३॥
निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ हरि रसि भीने
सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा हे॥१॥ अंदरि रंगु सदा सचिआरा
॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ नउनिधि नामु वसिआ घट
अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥२॥ रईअति राजे दुरमति दोई
॥ बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि
निहचलु राजु तिनाहा हे ॥ ३ ॥ आवणु जाणा रखै न कोई ॥ जंमणु
मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते
पाहा हे ॥४॥ सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै
॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥५॥ हउमै
मोहु उपजै संसारा ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर
सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे ॥ ६ ॥ सचा अमरु
सबदि सुहाइआ ॥ पंच सबद मिलि वाजा वाइआ ॥ सदा कारजु
सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥ ७ ॥ खिन महि

हसै खिन महि रोवै ॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ संजोगु विजोगु
करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ॥ ८ ॥ जीवन मुकति गुर
सबदु कमाए ॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ गुर किरपा ते मिलै
वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥ ६ ॥ रस कस खाए पिंडु वधाए॥ भेख
करै गुर सबदु न कमाए ॥ अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि
समाहा हे ॥ १० ॥ बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ घट महि ब्रहमु
तिसु सबदि न पछाणहि ॥ गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु
ताहा हे ॥ ११ ॥ घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अंधे सादु
न पावहि ॥ अनरस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे
॥ १२ ॥ मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो
॥ कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥ १३ ॥ कंचन
देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ महला
अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥ १४ ॥ आपे देवै
देवणहारा॥ तिसु आगै नही किसै का चारा॥आपे बखसे सबदि मिलाए
तिस दा सबदु अथाहा हे ॥ १५ ॥ जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा
साहिबु ठाकुरु मेरा॥नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा
हे ॥१६॥५॥१४॥ मारू महला ३॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु॥गुरमुखि
गिआनु धिआनु आपारु ॥ गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा
पाइदा ॥१॥ गुरमुखि मनुआ उलटि परावै॥ गुरमुखि बाणी नादु वजावै
॥ गुरमुखि सचि रते बैरागी निजघरि वासा पाइदा ॥२॥ गुर की साखी
अंमृत भाखी ॥ सचै सबदे सचु सुभाखी॥ सदा सचि रंगि राता मनु मेरा
सचे सचि समाइदा ॥३॥ गुरमुखि मनु निरमलु सतसरि नावै ॥ मैलु न
लागै सचि समावै ॥ सचो सचु कमावै सद ही सची भगति द्रिड़ाइदा
॥ ४ ॥ गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ गुरमुखि सचु कमावै
करणी ॥ सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥ ५ ॥
गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ गुरमुखि
सद सेवहि सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥ ६ ॥
गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ हउमै माइआ भरमु

गवाए ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरिगुण गाइदा ॥ ७ ॥ गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ भाइ भगति सदा रंगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥८॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ सचै नामि सदा लिव लाए ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥ ९ ॥ जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाए ॥ जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥ १० ॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते भेख करे नही भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥ ११ ॥ गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ मरण जीवण की सोझी पाए ॥ मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ मरै न जंमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥ १३ ॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे वेखै थापि उथापे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥ १५ ॥ गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥१६॥१॥१५॥ मारू महला ३ ॥ आपे सृसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥ १ ॥ काइआ कोटु है आकारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥ २ ॥ काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥ ३ ॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥ ४ ॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥ आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥ ५ ॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा

भगति कराइदा ॥६॥ इस मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥७॥ आपि अपरंपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥ ८ ॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरा ॥ आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥९॥ घर ही अंदरि साचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥ १० ॥ दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ माइआ मोहि बधा जम काले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥ ११ ॥ जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा ॥ १२ ॥ काम करोधु सबल संसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ पउण पाणी है बैसंतरु ॥ माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहे है आपे ॥ जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा ॥ १५ ॥ जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ नानक दासु कहै बेनंती सचि नामि चितु लाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १६ ॥ मारू महला ३ ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ तुधु नो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥२॥ है भी साचा होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥ ४ ॥ पाताल पुरीआ लोअ आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥५॥

हुकमे बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥ ६ ॥ अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥ ७ ॥ मनु तनु सीतलु गुरचरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥ ८ ॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि गुरसबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥ ९ ॥ मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥ १० ॥ लख चउरासीह आपि उपाए ॥ मानस जनमि गुर भगति दृड़ाए ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइदा ॥ ११ ॥ करमु होवै गुरु भगति दृड़ाए ॥ विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥ १२ ॥ सिमृति सासत अंतु न जाणैं ॥ मूरखु अंधा ततु न पछाणैं ॥ आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥ १३ ॥ सभु किछु आपे आपि कराए ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥ १४॥ सचा साहिबु गहिर गंभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा ॥ १५ ॥ आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ गुरपरसादी बूझै कोई॥ नानक नामु वसै घटि अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥१६॥३॥१७॥ मारू महला ३ ॥ जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ तू आपे जाणहि सिरजण हारा ॥ होर किआ को कहै कि आखि वखाणैं तू आपे कीमति पाइदा ॥ १ ॥ ओअंकारि सभ सृसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइदा ॥ २ ॥ बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई ॥ सदा अलिपतु रहै गुरसबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥३॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाए वजावणहारा ॥ घटि घटि पउणु वहै इकरंगी मिलि पवणैं सभ वजाइदा ॥ ४ ॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥

गुरपरसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥ ५ ॥ गुर सेवे
जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु
सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दुखु संसारा
॥ बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु
पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥
गुर परसादी किसै बुझाए ॥ गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै
घरि पाइदा ॥ ८ ॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥ सहसा मूलि न चुकै
विकारा ॥ गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥ ९ ॥
जे सचु देइ त पाए कोई ॥ गुरपरसादी परगटु होई ॥ सचु नामु सालाहे
रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥ १० ॥ जपु तपु संजमु नामु
पिआरा ॥ किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु
होआ सहजे सहजि समाइदा ॥ ११ ॥ अंतरि लोभु मनि मैलै मलु
लाए ॥ मैले करम करे दुखु पाए ॥ कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि
दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ निरमल बाणी को मंनि वसाए ॥ गुरपरसादी
सहसा जाए ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु
पाइदा ॥ १३ ॥ आपि सिरंदा सचा सोई ॥ आपि उपाइ खपाए
सोई ॥ गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥
१४ ॥ अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि जलै सभु
कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥
१५ ॥ मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥
नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥
१८ ॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ ओसु तिलु
न तमाइ वेपरवाहा ॥ तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि
मिलाइदा ॥ १ ॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु दाता
अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुरसबदी
मेलाइदा ॥ २ ॥ चउदह भवण तेरे हट नाले ॥ सतिगुरि दिखाए
अंतरि नाले॥ नावै का वापारी होवै गुरसबदी को पाइदा ॥३॥ सतिगुरि
सेविऐ सहज अनंदा ॥ हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ सहजे भगति करे

दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥ ४ ॥ सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ सहज भाइ सची लिवलागी ॥ सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥ ६ ॥ जिस नो सचा देइ सु पाए ॥ अंतरि साचु भरमु चुकाए ॥ सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥ ७ ॥ आपे करता सभना का सोई ॥ जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ॥ आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥ ८ ॥ हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥ ९ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ नदरि करे ता सेवे कोई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥१०॥ तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा लाए ॥ तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥११॥ अंदरि परगासु गुरू ते पाए ॥ नामु पदारथु मंनि वसाए ॥ गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥ १२ ॥ अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥१३॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ ममता काटि सचि लिव लाए॥सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥१५॥ आपे करे कराए करता ॥ सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१६॥५॥१९॥ मारू महला ३ ॥ जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ भाणे विचि को विरला आइआ ॥ भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥ २॥ तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु आए ॥ जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए ॥ भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा।

॥ ३ ॥ जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ गुरमुखि नामु पदारथु
पाए ॥ तुधु आपणै भाणै सभ सृसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु
भाइदा ॥ ४ ॥ मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ भाणा न मंने बहुतु दुखु
पाई ॥ भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहू पाइदा ॥ ५ ॥
सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुर
सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा ॥ ६ ॥ सभ नावहु उपजै
नावहु छीजै ॥ गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआए
रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥ ७ ॥ महलै अंदरि महलु को पाए
॥ गुर कै सबदि सचि चितु लाए ॥ जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए
सचे सचि मिलाइदा ॥८॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥
माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ बिनु नावै मनु तनु है कुसटी
नरके वासा पाइदा ॥ ९ ॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल
हंसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निजघरि वासा
पाइदा ॥१०॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा
संसारा ॥ नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥ ११ ॥
जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ॥ गुर
किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१२॥ नावै
नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥
जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥
काइआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥
सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥१४॥ अंतर घर बंके
थानु सुहाइआ ॥ गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ इतु साथि निबहै
सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा॥१५॥मेरै करतै इक बणत बणाई॥
इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि
को नामु पाइदा ॥ १६ ॥ ६ ॥ २० ॥ मारू महला ३ ॥ काइआ
कंचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥
अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥ १
हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥

तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥ २ ॥
हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि
सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥ ३ ॥ सो
जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥
गिआन अंजनु पाए गुरसबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥ ४ ॥ वडै भागि
इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु सबदै
सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥ ५ ॥ इकि कितु आए
जनमु गवाए ॥ मनमुख लागे दूजै भाए ॥ एह वेला फिरि हाथि न
आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥
तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि
मंनि वसाइदा ॥ ७ ॥ हउमै गणत गुरसबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै
रखहु उरधारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा
॥ ८ ॥ सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥
आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥ ९ ॥ जिनि मन विचि वथु
पाई सोई जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै सोई जनु
निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥ १० ॥ एह काइआ पवितु है सरीरु ॥
गुरसबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि
गुणी समाइदा ॥ ११ ॥ एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ दूजै भाइ
भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा
॥१२॥ जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ हंसु निरमलु दरि सचै
जाणु ॥ हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥१३॥ बिनु
भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ जिन कउ
नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु
पके हट नाले ॥ गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइ
दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥१५॥ आपे सचा है सुखदाता ॥ पूरे
गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा
॥ १६ ॥ ७ ॥ २१ ॥ मारू महला ३ ॥ निरंकारि आकारु उपाइआ ॥
माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता

सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥ १ ॥ माइआ माई त्रैगुण परसूति जमाइआ ॥ चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ ॥ वरे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥ २ ॥ गुर सेवा ते करणी सार ॥ राम नामु राखहु उरिधार ॥ गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥ ३ ॥ वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ नामु न चेतै बधा जम काले ॥ दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रैगुण भरमि भुलाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥ त्रिबिधि मनसा मनहि समाए ॥ साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥ ५ ॥ जो धुरि राते से हुणि राते ॥ गुरपरसादी सहजे माते ॥ सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥६॥ माइआ मोहि भरमि न पाए ॥ दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥ ७ ॥ एहु मनु भै भाइ रंगाए ॥ इतु रंगि साचे माहि समाए ॥ पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥ ८ ॥ मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ दरगह कबही न पावै मानु ॥ दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥ ९ ॥ मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुरपरसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥ १० ॥ इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥ ११ ॥ काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥ १२ ॥ सचा महलु सचे भंडारा ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥ १३ ॥ काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥ १४ ॥ हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ गुर परसादी पाइआ जाई ॥ आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा ॥ १५ ॥ आपे सचा सबदि मिलाए ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही

सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ ८ ॥ २२ ॥ मारू महला ३ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥ १ ॥ तुधु नो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर कै सबदे सचि समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥२॥ सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ हरि के गुण हिरदै उरधारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि जीउ मेले आपि मिलाए ॥ गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा पाइआ ॥४॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥ ५ ॥ इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥६॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥७॥ तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥ ८ ॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा ॥ आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥ ९ ॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥ १० ॥ जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ इसु बिखु महि अंमृतु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥११॥ जिसनो बुझाए सोई बूझै ॥ हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥१२॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी॥मरि मरि जंमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥ १३ ॥ बहुते भेख करे भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥ १४ ॥ अगिआनु तृसना इसु तनहि जलाए ॥ तिसदी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥ १५ ॥ सचा साहिबु सची

वडिआई ॥ गुर परसादी विरलै पाई ॥ नानकु एक कहै बेनंती नामे नामि समाइआ ॥ १६ ॥ १ ॥ २३ ॥ मारू महला ३ ॥ नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥ २ ॥ हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ करमु होवै भेटै गुरु पूरा ॥ अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ मनमुखु अंधा अंधु कमाए ॥ बहु संकट जोनी भरमाए ॥ जम का जेवड़ा कदे न काटै अते बहु दुखु पाइआ ॥ ४ ॥ आवण जाणा सबदि निवारे ॥ सचु नामु रखै उरधारे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥५॥ आवण जाणै परज विगोई ॥ बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥६॥ पंच दूत चितवहि विकारा ॥ माइआ मोह का एहु पसारा ॥ सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ ॥७॥ बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ फिरि फिरि डुबै वारोवारा ॥ सतिगुर भेटे सचु दृड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥८॥ साचा दरु साचा दरवारा ॥ सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥ ९ ॥ घरै अंदरि को घरु पाए ॥ गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥ १० ॥ दूजै भाइ दुसटा का वासा ॥ भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥ १२ ॥ काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ अंमृतु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ उडहि न मूले न आवहि न जाही निजघरि वासा पाइआ ॥ १३ ॥ काइआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ आपे कृपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ ॥ १४ ॥ सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि

देखाइआ ॥१५॥ आपे करता सचा सोई ॥ आपे मारि जीवाले अवरु न कोई
॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥१६॥२॥२४॥

मारू सोलहे महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सचा आपि सवारणहारा ॥ अवर
न सूझसि बीजी कारा ॥ गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि
समाई हे ॥ १ ॥ सभना सचु वसै मन माही ॥ गुर परसादी सहजि
समाही ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥
२ ॥ सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ सतिगुरु सेवी अवरु न
दूजा ॥ सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥
३ ॥ बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥
नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥ ४ ॥
गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥
होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥
५ ॥ अंम्रित रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ
आइआ ॥ तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि
समाई हे ॥ ६ ॥ जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ अनदिनु गुरु गुरु
करत विहाई ॥ बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई
हे ॥ ७ ॥ जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥
आपे क्रिपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥ ८ ॥ गिआन रतनु
मनि परगटु भइआ ॥ नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ एह वडिआई
गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥ ९ ॥ प्रगटिआ सूरु
निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥
सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥ १० ॥
गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥
नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥ ११ ॥
गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि
नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥ १२ ॥ भगता
मुखि अंम्रित है बाणी ॥ गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥

हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥ १३ ॥
हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पड़ी
मन माही ॥ होहु दइआलु कृपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई
हे ॥ १४ ॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ सरबे रवि
रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति समाई
हे ॥ १५ ॥ जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ
लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे
॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी
॥ सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि
तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥ १ ॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ ता कउ
कोइ न साकसि मारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी
हे ॥ २ ॥ जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि समाही ॥
सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥ ३ ॥
जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ तिसु
आगै जन करि बेनंती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥ ४ ॥ जो जीए
की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु न कहीऐ अजाणै ॥ मूरख सिउ
नह लूझु पराणी हरि जपीऐ पदु निरबाणी हे ॥ ५ ॥ ना करि चिंत
चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥ अचिंत दानु देइ
प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे॥६॥ ना करि आस मीत सुत भाई
॥ ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को
बेली नाही हरि जपीऐ सारंगपाणी हे॥७॥ अनदिनु नामु जपहु बनवारी
॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी॥ जन नानक नामु जपहु भवखंडनु सुखि
सहजे रैणि विहाणी हे ॥ ८ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ
पूछहु वेद पुराणी हे ॥ ९ ॥ जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ गुर
कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे गृह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै
विचि पाणी हे ॥१०॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ जनमि मरै फिरि
आवै जाए ॥ सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी

॥ ११ ॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीआ का अंतरजामी॥हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥१२॥ किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥१३॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होरि केती झखि झखि आवै जावै ॥ जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥१४॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ तिनी गुरपरसादि परम पदु पाइआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥ १५ ॥ तू सभ महि वरतहि हरि जगंनाथु ॥ सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥१६॥२॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे॥१॥जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करणकारण समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥२॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइ संगि समालिआ ॥ सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥ ३ ॥ सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥४॥ सो पतिवंता सो धनवंता ॥ जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह सृसटि उपाई हे ॥ ५ ॥ प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ साध संगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥ ६ ॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा तृपति रहे आघाई हे ॥ ७ ॥ मीतु हमारा सोई सुआमी ॥ थान थनंतरि अंतरजामी ॥ सिमरि

सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥ ८ ॥ हरि का नामु कोटि
लखबाहा ॥ हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ गिआन खड़गु करि
किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥९॥ हरि का जापु जपहु जपु जपने
॥जीति आवहु वसहुघरि अपने॥लख चउरासीह नरक न देखहु रसकिरसकि
गुण गाई हे॥१०॥खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ ऊच अथाह अगंम अपारा
॥ जिसनो कृपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥११॥ बंधन
तोड़ि लीए प्रभि मोले॥करि किरपा कीने घर गोले ॥ अनहद रुणझुणकारु
सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥१२॥ मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥
बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि
सोभ सुहाई हे ॥१३॥ जैजैकारु जपहु जगदीसै ॥ बलि बलि जाई प्रभ
अपुने ईसै ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे
॥१४॥ सति सति सति प्रभु जाता ॥ गुर परसादि सदा मनु राता ॥
सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥१५॥ भगत जना
का प्रीतमु पिआरा ॥ सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ सिमरि नामु पुंनी
सभ इछा जन नानक पैज रखाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ संगी जोगी नारि लपटाणी ॥
उरझि रही रंग रस माणी॥किरत संजोगी भए इकत्रा करते भोग बिलासा
हे ॥१॥ जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै
॥ मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि दिलासा हे ॥ २ ॥ धन
मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ जो पावै सो आणि दिखावै॥एक वसतु कउ
पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे॥३॥धन करै बिनउ दोऊ कर
जोरै ॥ प्रिअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ ऐसा बणजु करहु गृह
भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥४॥ सगले करम धरम जुग साधा
॥ बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ भई कृपा नानक सतसंगे तउ
धन पिर अनंद उलासा हे ॥५॥ धन अंधी पिरु चपलु सिआणा ॥

पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ
सतिगुर पासा हे ॥६॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥ प्रिअ सुख वासी बाल
गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे
॥७॥ पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न
छंदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे
॥८॥ जउ प्रिअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चंचलि काचे
॥ बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥ ९ ॥
आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥
ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे॥१०॥ रे मन
लोभी सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ बिनु सतिगुर
पचि मूए साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥ ११ ॥ मनमुखि आवै
मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से
मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥१२॥ गुरमुखि सोइ जि हरि
जीउ भाइआ ॥ तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ सदा अनंदु
करे आनंदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥१३॥ हउ बलिहारी
सतिगुर पूरे ॥ सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ ऐसा प्रभु मिलिआ
सुखदाता विछुड़ि न कतही जासा हे ॥१४॥ गुण निधान किछू कीम न
पाई ॥ घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई॥ नानक सरणि दीन दुख भंजन
हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥१५॥१॥२॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ घटि घटि
पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही
को दूजा हे ॥ १ ॥ हरखवंत आनंत दइआला ॥ प्रगटि रहिओ प्रभु
सरब उजाला ॥ रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥
२ ॥ आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥
आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥ ३ ॥
साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना साचा साही ॥
आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥ ४ ॥

सचु तपावसु सचे केरा ॥ साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥५॥ एको आपि तू है वडराजा ॥ हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥६॥ तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ तू निरबाणु तू है ही जोगी ॥ सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी द्रिसटीजा हे ॥ ७॥ तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ देहि दानु सभसै जंत लोऐ॥तोटि न आवै पूर भंडारै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥८॥ जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ जाचहि जती सती सुखवासी ॥ इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु स्रिसटीजा हे ॥६॥ करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे॥ १० ॥ जिसु देहि दरसु सोई तुधु जाणै ॥ ओहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥ ११ ॥ जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥१२॥ त्रिसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥१३॥ मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ अमरु भइआ अबिनासी थीवै॥ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥१४॥ पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे॥ १५॥ बारहा कंचनु सुधु कराइआ ॥ नदरि सराफ वंनीस चड़ाइआ ॥ परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥१६॥ अंम्रित नामु तुमारा सुआमी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ संत संगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥१७॥१॥३॥

मारू महला ५ सोलहे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ गुरु दइआलु सदा बखसिंदा ॥ गुरु सासत सिम्रित खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे ॥ १ ॥ गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुरु सिमरत

जम संगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥ २ ॥ गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए ॥ गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥३॥ गुरदुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर द्रिड़ाइआ गिआनां हे ॥५॥ गुरि द्रिसटाइआ सभनी ठांई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे ॥६॥ गुरि मिलिऐ सभ तृसन बुझाई ॥ गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अंमृतु पीपानां हे ॥७॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे ॥ ८ ॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानां हे ॥ ९ ॥ १ ॥ ४ ॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभु हुकमे सृसटि उपाइदा ॥ १ ॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥२॥ कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥ ३ ॥ हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ त्रिहा गुण ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥ ४ ॥ अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ कुरुता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥ ५ ॥ कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि

जपीऐ लाइ धिआना ॥ आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ ६ ॥ खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥७॥ हरि का सेवकु सो हरि जेहा॥भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥८॥ इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ देहु दरसु जितु मनु तृपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥९॥ रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥ १० ॥ जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥ ११ ॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥ १२ ॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥ १३ ॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥ अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥ १४ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥१५॥ तू आपे करता कारण करणा ॥ सृसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा॥ १६ ॥ १ ॥ ५ ॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो दीसै सो एको तू है ॥ बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥ १ ॥ आपि चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥ २ ॥ इकि उपाए वड दरवारी ॥ इकि उदासी

इकि घरबारो ॥ इकि भूखे इकि तृपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥३॥ आपे सति सति सति साचा ॥ ओति पोति भगतन संगि राचा ॥ आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥ ४ ॥ सदा सदा सद होवणहारा ॥ ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥ ५ ॥ मुखि सालाही सचे साहा ॥ नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥ ६ ॥ करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ जीअ जंत सोई है जपणा ॥ अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥ ७ ॥ संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ अनंद मंगल हरि चलत तमासे ॥ गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥ ८ ॥ आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ करि करि देखै खेलु अपारा ॥ आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥ ९ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥ १० ॥ तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ एको एकु जपी मन माही ॥ हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥ ११ ॥ गुर उपदेसि जपीऐ मनि साचा ॥ गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥१२॥ जह राखै सोई सुख थाना ॥ सहजे होइ सोई भल मांना ॥ बिनसे बैर नाही को वैरी सभु एको है भालणा ॥१३॥ डर चूके बिनसे अंधिआरे॥ प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे॥आपु छोडि पए सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥१४॥ ऐसा को वडभागी आइआ ॥ आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥१५॥ इह बखसीस खसम ते पावा ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥ १६ ॥ १ ॥ ६ ॥ मारू महला ५ ॥ सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ जग महि कोई रहणु न पाए निहचलु एकु नाराइणा ॥ १ ॥ गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ एको मंत्रु दृड़ाए

अउखधु सचु नामु रिद गाइणा ॥ २ ॥ जिसु नामै कउ तरसहि वहु देवा
॥ सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो
गुर पूरे ते पाइणा ॥३॥ होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ त्रिभवण धावै ता
किछू न बूझै॥ सतिगुरु साहु भंडारु नाम जिसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा
॥४॥ जा की धूरि करे पुनीता ॥ सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ सति
पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइणा ॥५॥ पारजातु लोड़हि
मन पिआरे ॥ कामधेनु सोही दरबारे ॥ तृपति संतोखु सेवा गुर पूरे
नामु कमाइ रसाइणा ॥६॥ गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ भै पारब्रहम
होवहि निरमलातू॥ पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइणा
॥ ७ ॥ कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ मुकति बपुड़ी भी गिआनी
तिआगे ॥ ऐकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा
॥ ८ ॥ गुर की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥
जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ॥ ९ ॥ गुर की
महिमा बेद न जाणहि ॥ तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ पारब्रहम
अपरंपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥ १० ॥ जा की सोइ
सुणी मनु जीवै ॥ रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ गुर मुखहु अलाए ता सोभा
पाए तिसु जम कै पंथि न पाइणा ॥ ११ ॥ संतन की सरणाई पड़िआ
॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ सेवा सुरति न जाणा काई तुम
करहु दइआ किरमाइणा ॥ १२ ॥ निरगुण कउ संगि लेहु रलाइ ॥
करि किरपा मोहि टहलै लाए ॥ पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण
धोइ सुखु पाइणा ॥ १३ ॥ बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ ॥ तुमरी
कृपा ते तुम सरणाइआ ॥ सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दाउ
देवाइणा ॥ १४ ॥ भए कृपाल गुसाई मेरे ॥ दरसनु पाइआ सतिगुर
पूरे ॥ सूख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥१५॥२॥७॥

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सिमरै
धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ पउण

पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥ १ ॥ सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥ सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥ २ ॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥३॥ सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥४॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥५॥ सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥ ६ ॥ सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥ ७ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥ ८ ॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥९॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना॥१०॥सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साध संगु पाइआ॥पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करंमा ना छिना ॥११॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीऐ दूजा कोई॥गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥१२॥ ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥ १३ ॥ तू करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ आदि मधि अंति प्रभु तू है सगल पसारा तुम तना ॥ १४ ॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साध संगि हरि कीरतनु गावै ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन जोहवणी प्रभ का जसु रुना ॥१५॥ तू सभना का प्रभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर

गंभीरा ॥ कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना
॥ १६ ॥ १ ॥ ८ ॥ मारू महला ५ ॥ प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥
सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु
बांछै जाचंगना ॥१॥ मागउ जन धूरि परमगति पावउ ॥ जनम जनम
की मैलु मिटावउ ॥ दीरघ रोग मिटहि हरि अउखधि हरि निरमलि रापै
मंगना ॥२॥ स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ एका ओट तजउ
बिखु कामी ॥ निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुक्रितु नाही संगना
॥३॥ रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ सिमरि
सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥ ४ ॥ चरन कमल
जपि बोहथि चरीऐ ॥ संत संगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ अरचा बंदन
हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥५॥ दास दासन को करि
लेहु गुोपाला ॥ क्रिपा निधान दीन दइआला ॥ सखा सहाई पूरन
परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥६॥ मनु तनु अरपि धरी हरि आगै
॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति
तिआगी हउमै हंतना ॥७॥ जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ घटि घटि
रविआ अछल सुआमी ॥ भरम भीति खोई गुरि पूरै एकु रविआ
सरबंगना ॥ ८ ॥ जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ हरि तोटि भंडार
नाही रतनागर ॥ अगह अगाह किछु मिति नही पाईऐ सो बूझै जिसु
किरपंगना ॥६॥ छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ जनम मरण की मिटवी
डंझा ॥ करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि द्रिसटंगना
॥१०॥ एको एकु रविआ सभ ठाई ॥ तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥
आदि मधि अंति प्रभु रविआ त्रिसन बुझी भरमंगना ॥ ११ ॥ गुरु
परमेसुरु गुरु गोबिंदु ॥ गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ गुर जपु जापि
जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥१२॥ जो पेखा सो सभु
किछु सुआमी ॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ जो कीनो सो तुमहि
कराइओ सरणि सहाई संतह तना ॥ १३ ॥ जाचकु जावै
तुमहि अराधै ॥ पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ एको दातु
सरब सुख गुण निधि आन मंगन निह किंचना ॥

१४।। काइआ पात्रु प्रभु करणैहारा।। लगी लागि संत संगारा ।। निरमल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना।।१५।। सोलह कला संपूरन फलिआ ।। अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ।। अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अंमृत रसु हरि भुंचना ।।१६।।२।।९।।

मारू सोलहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। ।। तू साहिबु हउ सेवकु कीता ।। जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ।। करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ।। १ ।। तुमहि पठाए ता जग महि आए ।। जो तुधु भाणा से करम कमाए ।। तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ।।२।। ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ।। ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ।। आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ।। ३ ।। तू पिता सभि वारिक थारे ।। जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ।। उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ।।४।। इकि बैसाइ रखे गृह अंतरि ।। इकि पठाए देस दिसंतरि ।। इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीऐ किआ कूड़ा ।।५।। कवन सु मुकती कवन सु नरका।। कवनु सैसारी कवनु सु भगता ।। कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ।।६।। हुकमे मुकती हुकमे नरका ।। हुकमि सैसारी हुकमे भगता ।। हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ।।७।। सागरु कीना अति तुम भारा ।। इकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ।। इकना पारि लंघावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ।। ८ ।। कउतकु कालु इहु हुकमि पठाइआ ।। जीअ जंत ओपाइ समाइआ ।। वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इकु अखाड़ा ।। ९ ।। वडा साहिबु वडी नाई ।। वड दातारु वडी जिसु जाई ।। अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ।। १० ।। कीमति कोइ न जाणै दूजा ।। आपे आपि निरंजन पूजा ।। आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ।। ११ ।। केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ।।

केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥ केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता
परगटड़ा ॥ १२ ॥ आपे सकती सबलु कहाइआ ॥ आपे सूरा अमर
चलाइआ ॥ आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा
॥ १३ ॥ जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ नामु वस तिसु अनहद वाजे
॥ तिसही सुखु तिसही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥ १४ ॥
कीमति कागद कही न जाई ॥ कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ आदि मधि
अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥ १५ ॥ तिसहि सरीकु नाही
कोई॥ किसही बुतै जबाबु न होई ॥ नानक का प्रभु आपे आपे करि करि
वेखै चोज खड़ा ॥१६॥१॥१०॥ मारू महला ५ ॥ अचुत पारब्रहम
परमेसुर अंतरजामी॥मधुसूदन दामोदर सुआमी॥रिखीकेस गोवरधनधारी
मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीस
हरि जीउ असुर संघारे ॥ जगजीवन अबिनासी टाकुर घट घट वासी
है संगा ॥२॥ धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे पृथमि
धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु करते सभही सेती है चंगा ॥ ३ ॥
स्री राम चंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्र पाणि दरसि
अनूपिआ ॥ सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥ ४ ॥
भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपी नाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव
निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥ ५ ॥ मुकंद मनोहर लखमी
नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमला कंत करहि कंतूहल
अनद बिनोदी निह संगा ॥ ६ ॥ अमोघ दरसन आजूनी संभउ ॥
अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ अबिनासी अबिगत अगोचर
सभु किछु तुझही है लगा ॥ ७ ॥ स्री रंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु कछु
कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ केसव चलत करहि निराले कीता
लाड़हि सो होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि खेल
चतुरभुजु कहाइआ ॥ सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत
सभ मोहैगा ॥ ९ ॥ बन माला बिभूखन कमल नैन ॥ सुंदर
कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र गदा है धारी महासारथी सतसंगा ॥
१० ॥ पीत पीतंबर त्रिभवण धणी ॥ जगंनाथु गोपालु मुखि

भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥
निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ धनंजै जलि थलि है महीऐ ॥ मिरत
लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥ १२ ॥ पतित
पावन दुख भै भंजनु ॥ अहंकार निवारणु है भवखंडनु ॥ भगती तोखित
दीन क्रिपाला गुणे न कितही है भिगा ॥ १३ ॥ निरंकारु अछल
अडोलो ॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि
मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना ॥
आपि गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु
नही इकु तिलु रंगा ॥१५॥ एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी
सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ
कहि संगा ॥१६॥ ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक
जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै
संगि संगा ॥१७॥ द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु
गोबिद संत रेना ॥ मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो
पावैगा ॥१८॥ जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै
रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ अनहद सबद मनि
वाजंगा ॥१९॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सतिनामु तेरा परा
पूरबला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा
॥२०॥ तेरी गति मिति तू है जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि
वखाणहि ॥ नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा
॥२१॥२॥११॥ मारू महला ५ ॥ अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि
खिआल दुनीआ के धंधे ॥ होइ पैखाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु
दरा ॥१॥ सचु निवाज यकीन मुसला ॥ मनसा मारि निवारिहु आसा
॥ देहि मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥ २ ॥ सरा
सरीअति ले कंमावहु ॥ तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ मारफति
मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥ ३ ॥
कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बदराही ॥
पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥४॥ मका

मिहर रोजा पैखाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥ हूर नूर
मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आलाहु जरा ॥ ५ ॥ सचु कमावै सोई
काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ सो मुला मलऊन निवारै सो
दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥६॥ सभे वखत सभे करि वेला ॥ खालकु
यादि दिलै महि मउला ॥ तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु
बंधानि बरा ॥७॥ दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना
बिरादर हमू जंजाला ॥ मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ
दरा ॥ ८ ॥ अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥
पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥ ९ ॥ सगली
जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ खुदाइ एकु
बुझि देवहु बांगां बुरगू बरखुरदार खरा ॥ १० ॥ हकु हलालु बखोरहु
खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई
अजराईलु न दोजठरा ॥ ११ ॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥
रंग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत
सूरति दसतार सिरा ॥१२॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की
मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ
पाकु हरा ॥१३॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु
मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥ १४ ॥
कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु
हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥१५॥३॥१२॥
मारू महला ५ ॥ पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ आपे थापि उथापे साजे
॥ प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥१॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ रकत किरम महि नही
संघारिआ ॥ अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का
मालका ॥ २ ॥ चरण कमल सरणाई आइआ ॥ साध संगि
हरि जसु गाइआ ॥ जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि
हरि भउ नही काल का ॥ ३ ॥ समरथ अकथ अगोचर देवा ॥
जीअ जंत सभि ताकी सेवा ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परका

पालका ॥ ४ ॥ तिसहि परापति होइ निधाना ॥ राम नाम रसु अंतरि
माना ॥ करु गहि लीने अंध कूप ते विरले केई सालका ॥ ५ ॥ आदि
अंति मधि प्रभु सोई॥ आपे करता करे सु होई ॥ भ्रमु भउ मिटिआ साध
संग ते दालिद न कोई घालका ॥६॥ ऊतम बाणी गाउ गुोपाला॥ साध
संगति की मंगहु रवाला ॥ बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले
जालका ॥७॥ संता की इह रीति निराली ॥ पारब्रहमु करि देखहि नाली
॥ सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत कीजै आलका ॥ ८ ॥
जह देखा तह अंतरजामी॥ निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ सिमरि
सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥ ९ ॥ तती वाउ न
ता कउ लागै ॥ सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ अनद बिनोद करे हरि
सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥ १० ॥ रोग सोग दूख तिसु
नाही ॥ साध संगि हरि कीरतनु गाही ॥ आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम
सुणि बेनंती खालका ॥ ११ ॥ नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ रंगि रते
तेरै दास अपारे ॥ तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥ १२ ॥
तिन की धूड़ि मांगै मनु मेरा ॥ जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ तिन
कै संगि परमपदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥ १३ ॥ साजनु मीतु
पिआरा सोई ॥ एकु दृड़ाए दुरमति खोई ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजाए
तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥ १४ ॥ तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥
गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ
भरमु अनालका ॥ १५ ॥ सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ आठ पहर
हरि हरि कउ धिआई ॥ नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका
॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥

मारू महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चरन कमल हिरदै नित
धारी ॥ गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ तनु मनु अरपि
धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥ १ ॥ सो ठाकुरु किउ
मनहु विसारे ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ सासि गिरासि समाले
करता कीता अपणा पावणा ॥ २ ॥ जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥

आठ पहर हरि रखु मन माही ॥ साध संगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥३॥ चारि पदारथ असटदसा सिधि॥ नामु निधानु सहज सुखु नउनिधि ॥ सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥४॥ सासत सिंमृति बेद वखाणी ॥ जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥ ५ ॥ जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥ ६ ॥ जिसनो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ जलता फिरै रहै नित ताता ॥ अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥७॥ जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥ ८ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ घटि घटि वसहि सभन कै नेरे॥ हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥ ९ ॥ जाकै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ तिसही पुरख न विआपै माइआ ॥ नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥ १० ॥ आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ अंम्रित नामु बिरलै ही चीने ॥ ता की कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥ ११ ॥ सोई भगतु सोई वड दाता ॥ सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥ १२ ॥ मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वंञावणा ॥ १३ ॥ अंध कूप ते सेई काढे ॥ जनम जनम के टूटे गांढे ॥ किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥ १४ ॥ तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ अचरज रूपु वडा वडिआई ॥ भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥ १५ ॥ १ ॥ १४ ॥ ६२ ॥

मारू वार महला ३ सलोकु म० १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ गुण का गाहकु

जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥ गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ मुोलि अमुोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥ नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥१॥ म० ४ ॥ नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ इकि बांधे इकि ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥१॥ सलोकु म० ३ ॥ केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ सत संगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ॥ गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा दूजै न धरे पिआरु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ ॥ २ ॥ म० ४ ॥ चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ सचै तखति बैठा निआउ करि सत संगति मेलि मिलाई ॥ सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ ऐथै सुख दाता मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥२॥ सलोकु म० १ ॥ भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मरा कोइ ॥ सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ ॥ नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ आपे किसही बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ अगिआनी अंधु न बूझई सिर

ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ गुरपरसादी उबरे जिनि हरि रसु चखा ॥ आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥ ३ ॥ सलोकु म० ३ ॥ जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥१॥ म० ३ ॥ त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धंनु धंनु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥४॥ सलोकु म० १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुध ॥ १ ॥ म० १ ॥ साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ हरि रसु जिनी चाखिआ अनरस ठाकि रहाइआ ॥ हरि रसु पी सदा तृपति भए फिरि तृसना भुख गवाइआ ॥५॥ सलोकु म० ३ ॥ पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥१॥ म० १ ॥ ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक धंनु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥२॥ पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥६॥ सलोकु म० ३ ॥ सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥१॥ म० ३ ॥ मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ नानक गुरपरसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु

है किउ कीमति कीजै ॥ आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ गुरसबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥७॥ सलोकु म० १ ॥ ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥ जिन गुरपरसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥ ८ ॥ सलोकु म० ३॥ जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जम कालि ॥ नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ॥ ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ सचु दृड़ाए सचु दृड़ु सचा ओहु सबदु देइ॥ हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइ ॥ सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरे एहि न आखअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥९॥ सलोकु म० ३॥ कागउ होइ न ऊजला लोहे नाव न पारु॥ पिरम पदारथु मंनि लै धंनु सवारणहारु॥हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पार ॥ तृसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥१॥ म०३॥ मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवारि ॥ नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी

॥ दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न
पाइओ फिरि जनमि बिनासा ॥ गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास
गिरासा ॥ सिमृति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ नानक नाम
बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥ १० ॥ सलोकु म० ३ ॥ होवा
पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि॥ नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि
वीचारि ॥ मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ झूठे चउके
नानका सचा एको सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ आपि उपाए करे आपि आपे
नदरि करेइ ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइ ॥२॥पउड़ी॥
कंटकु कालु ऐकु है होर कंटकु न सूझै ॥ अफरिओ जग महि वरतदा
पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ॥ सो हरि
सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥ मनि वीचारि हरि जपु करे हरि
दरगह सीझै ॥११॥ सलोकु म० १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु
कबूलु ॥ साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ दिल दरवानी जो
करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥१॥
म० १॥ अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ हीरै हीरा बेधिआ
नानक कंठि सुभाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुख कालु विआपदा मोहि
माइआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ फिरि वेला
हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ तिन जम डंडु न लगई जो हरि
लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥१२॥ सलोकु म०
१ ॥ सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु
लाघणउ लाभु न पूजी साथि ॥ १ ॥ म० १ ॥ पूंजी साचउ नामु त
अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु निरमलउ धंनु साहु वापारु ॥२॥
म० १ ॥ पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ माथै ऊभै जमु
मारसी नानक मेलणु नामि ॥३॥ पउड़ी ॥ आपे पिंडु सवारिओनु विचि
नवनिधि नामु ॥ इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥
इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु॥ इकनी सुणि कै मंनिआ हरि
ऊतम कामु ॥ अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥
१३ ॥ सलोकु म० १ ॥ भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु

अति ढाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥ १ ॥ म० १ ॥ मांदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोई ॥ नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥२॥ म० १॥ सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ मझ भरि दुख बदुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ जो इछनि सो पाइदे हरिनामु धिआवै ॥ जिसनो कृपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ धरमराइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ हरिनामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥ १४ ॥ सलोकु म० १ ॥ सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥१॥ म० १ ॥ हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ तृसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ लोइण रते लोइणी कंनी सुरति समाइ ॥ जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ अंदरु सुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ हरिजन नेड़ि न आवई जम कंकर जम कलै ॥ से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥ १५ ॥ सलोकु म० ३ ॥ मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥ १ ॥ म० ३ ॥ दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मंने दुखु जाइ ॥ आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरिनाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै तृपति नाही ॥ दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा

किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि
छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥१६॥ सलोकु म०
३॥ इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ
॥ सतिगुरि सचु दृड़ाइआ इस धन की कीमति कही न जाइ ॥ इतु धनि
पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिन्हा कउ धुरि लिखिआ
तिनी पाइआ आइ ॥ मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ
॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ सांति न कदे आवई
नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ
॥ नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥
सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिनि
उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु
न कोइ ॥ खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा तृपति होइ ॥
पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥
सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है
जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जिसनो आपि
विखाले सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै
॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ अंदरु अंमृति
भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि
रसि ध्रापै ॥ हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥१७॥
सलोकु म० ३ ॥ लोकु अवगणा की बंन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ
॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण
पाईअनि जिसनो नदरि करेइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ गुण अवगुण समानि
हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर
सबदी वीचारि ॥२॥पउड़ी॥ अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥
गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ खरे परखि खजानै
पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु
निआउ ॥ अमृत का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥ १८ ॥
सलोक म० १ ॥ हउमै करी तां तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ बूझहु

गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥ बिनु गुर ततु न पाईऐ
अलखु वसै सभ माहि ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जां सबदु वसै मन
माहि ॥ आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ गुरमति
अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ नानक सोहं हंसा जपु जापहु
त्रिभवण तिसै समाहि ॥१॥ म० ३ ॥ मनु माणकु जिनि परखिआ गुर
सबदी वीचारि ॥ से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥
आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ नानक नामि रते
दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥२॥ पउड़ी ॥ मनमुख अंदरु न भालनी
मुठे अहंमते ॥ चारे कुंडा भवि थके अंदरि तिख तते ॥ सिमृति सासत
न सोधनी मनमुख विगुते ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ हरिनामु हरि सते
॥ ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥१९॥ सलोक म० २ ॥
आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ तिसै अगै नानका खलिइ
कीचै अरदासि ॥१॥ म० १ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे
जाणै सोइ ॥ किसनो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ मनु तनु होइ निहालु
पापा दहै हरि ॥ आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ सचु नामु
आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि
॥२०॥ सलोक म० ५ ॥ माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमा दंम ॥ सो
प्रभु चिति न आवई नानक नही करंम ॥१॥ म० ५ ॥ माइआ साथि
न चलई किआ लपटावहि अंध॥गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ
बंध ॥२॥ पउड़ी ॥ भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ भाणै
सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ भाणै जेवड होर दाति नाही
सचु आखि सुणाइआ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइआ
॥ नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥ २१ ॥ सलोक म०
३ ॥ जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ नानक मुइआ
का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥१॥ म० ३ ॥ मन की पत्री
वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ सो ब्रहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु
बीचारु ॥ हरि सालाहे हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ॥ आइआ

ओहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ जो हुकमु न बुझै खसम का सोई नरु कचा ॥ जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ सभना का साहिबु एकु है गुरसबदी रचा ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिसदे जचा ॥ जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु ॥

मारू वार महला ५ डखणे म० ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि॥नैण महिजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥१॥ म० ५॥ नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥ २ ॥ म० ५ ॥ उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ हरि आगिआ होए बेद पापु पुंनु वीचारिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रैगुण बिसथारिआ ॥ नवखंड पृथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥१॥ डखणे म० ५ ॥ जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी न वेछोड़ि ॥ जीउ महिजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥१॥ म० ५॥ दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥ २ ॥ म० ५ ॥ दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ सजणु सचा पतिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै

तू अबिनासी जग उधरण ॥ तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै तृण ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी सृसटि करण ॥ २ ॥ डखणे म० ५ ॥ जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥ २ ॥ म० ५ ॥ सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ तू हुकमी साजहि सृसटि साजि समावही ॥ तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥ ३ ॥ डखणे म० ५ ॥ जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ नानक बैठा भखे वाउ लंमे सेवहि दरु खड़ा ॥ पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥ २ ॥ म० ५ ॥ किआ गालाइओ भूछ परवेलि न जोहे कंत तू ॥ नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥३॥पउड़ी॥ सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ सभु ब्रहम पसारु पसारिओ आपे खेलंता ॥ इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखंता ॥ तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥ ४ ॥ डखणे म० ५ ॥ कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥ नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पवणि जिउ जुंमिओ ॥ २ ॥ म० ५ ॥ भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥

मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै रुति ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥ ५ ॥ डखणे म० ५ ॥ गहडड़ा तृणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥ १ ॥ म० ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥ २ ॥ म० ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ जिनी गुरू मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु जग मैं खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ एकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लुोभाईआ ॥ एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ इकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल विचहु बिंबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥६॥ डखणे म० ५ ॥ आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥१॥ म० ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चित ॥२॥ म० ५॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ॥ सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥३॥ पउड़ी॥ जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज सवारिए जा तुधु भावंदा ॥ ७ ॥ डखणे म० ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा

कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ जाणा लख भवे पिरी ढिखंदो ता जीवसा ॥ २॥ म० ५ ॥ ढहदी जाइ करारि वहणि बहंदे मै डिठिआ ॥ सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥३॥ पउड़ी ॥ जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ जो नरु उस की सरणी परै तिसु कंबहि पापै ॥ जनम जनम की मलु उतरै गुर धड़ी नापै ॥ जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ ऐसी सोभा जनै की जेरडु हरि परतापै ॥ सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥८॥ डखणे म० ५ ॥ जिना पिछै हउ गई से मैं पिछै भी रविआसु ॥ जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥१॥ म० ५ ॥ गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥२॥ म० ५॥ डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ॥तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥३॥पउड़ी॥ हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै॥प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै॥सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी तृपतावै॥अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै॥सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥९॥ डखणे म०५॥ जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही॥ दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥१॥ म०५॥ नानक जिसु विनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीए जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ म० ५॥ रते रंगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥ ३ ॥ पवड़ी ॥ हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ गुरि भउजलु पारि लंघाइआ जिता पावाड़ा ॥ गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा॥सभि इंद्रीआ वसि करि दितीओ सतवंता साड़ा ॥ जितु लाईअनि तितै लगदीआ

नह खिंजोताड़ा ॥ जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥ १० ॥ डखणे म० ५ ॥ जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥ २ ॥ म० ५ ॥ किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ तिचरु थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥ ११ ॥ डखणे म० ५ ॥ लोड़ीदो हभ जाइ सो मीरा मीरंन सिरि ॥ हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ माणिकू मोहि माउ डिंना धणी अपाहि ॥ हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥ २ ॥ म० ५ ॥ मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ॥ नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥१२॥ डखणे म० ५॥ मू थीआऊ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥ पाव मिलावे कोलि कवल जिवै विगसावदो ॥ १ ॥ म० ५॥ पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ जाणु मिठाई इख बेई पीड़े ना हुटै ॥२॥ म० ५ ॥ ठगा नीहुम त्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ सुख घटाऊ डूइ इसु पंधाणू घर घणे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख

अलेखं ॥ खटु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ वरत करहि चंद्राइणा से किते न लेखं ॥ बेद पड़हि संपूरना ततु सार न पेखं ॥ तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥१३॥ डखणे म० ५ ॥ सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ कार कूड़ावी छडि संमलु सचु धणी ॥ १ ॥ म० ५ ॥ हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥ २ ॥ म० ५ ॥ मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ नानक दरगह मंनीअहि मिली निथावे थाउ ॥३॥ पउड़ी ॥ बाहर भेख न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ मनु रता कुटंब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी॥ करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥ १४ ॥ डखणे म० ५ ॥ मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणंदो कोइ ॥ नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥१॥ म० ५ ॥ जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥ २ ॥ म० ५ ॥ मतड़ी कांढ कुआह पाव धोवंदो पीवसा ॥ मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥३॥ पउड़ी ॥ निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ आवै जाइ भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥ अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा॥मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ जम दूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥१५॥ डखणे म० ५॥ परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइ ॥ जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ॥१॥ म० ५ ॥ देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी॥२॥म० ५॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ ओहु आपि तरिआ कुटंब सिउ सभु जगतु तराई ॥ ओनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ ओनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ ओसु सदा सदा घरि अनंदु है हरि सखा सहाई ॥ ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥ १६ ॥ डखणे म० ५ ॥ सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपनै हउ खंनीऐ ॥ २ ॥ म० ५ ॥ सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ मंन मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥३॥ पउड़ी ॥ धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥१७॥ डखणे म० ५ ॥ डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥१॥ म० ५ ॥ आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥२॥ म० ५ ॥ विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओदि॥बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥३॥पउड़ी॥ तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी॥कोटि तेतीसा देवते सणु इद्रै जासी॥सिमृति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी॥ मुनि जोगी दिगंबरा जमै सणु जासी॥ जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि विनासी ॥ थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥१८॥ सलोक डखणे म० ५॥ सै नंगे नह नंग भुखे लख न भुखिआ ॥ डुखे कोड़ि न डुख नानक पिरी पिखंदो सुभ दिसटि ॥

१॥ म० ५॥ सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ नानक हभो रोगु
मिरतक नाम विहुणिआ ॥२॥ म० ५ ॥ हिकस कूं तू आहि पछाणू भी
हिकु करि ॥ नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥ ३ ॥
पउड़ी ॥ निहचलु एकु नाराइणो हरि अगम अगाधा ॥ निहचलु नामु
निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद
गुरमुखि गावाधा ॥ सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि आराधा ॥
दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ निहचलु मसतकि
लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ निहचलु संगति साध जन बचन
निहचलु गुर साधा॥जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सदा सदा आराधा
॥१९॥ सलोक डखणे म० ५ ॥ जो डुबंदो आपि सो तराए किन्हखे ॥
तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥१॥ म० ५ ॥ जिथै कोइ
कथंनि नाउ सुणदो मा पिरी॥मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिआ
थीओसि ॥२॥ म० ५॥ मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह॥नानक
नाम विहूणीआ निगुणीआदी देह ॥३॥ पउड़ी॥ नैनी देखउ गुरदरसनो
गुरचरणी मथा॥पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा॥ अकाल मूरति
रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपंथा ॥ मै छडिआ सगल अपाइणो भरवासै
गुर समरथा ॥ गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ भोगहु
भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ नामु दानु इसनानु दृड़ु सदा
करहु गुर कथा ॥ सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥२०॥
सलोक डखणे म० ५ ॥ लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ
॥ हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइ ॥१॥ म० ५ ॥ कथड़ीआ
संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ नानक लधड़ीआ तिंनाह जिना भागु
मथाहड़ै ॥ २ ॥ म० ५ ॥ डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥
पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ नानक पेखि जीओ इकतु सूति
परोतीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ
प्रतिपालक॥हरिजी मेरी सारकरे हमहरिके बालक॥सहजिसहजिखिलाइदा
नही करदा आलक ॥ अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ मुहि
मंगां सोई देवदा हरि पिता सुखदाइक ॥ गिआनु रासि नामु धनु

सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ साझी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥२१॥ सलोक डखणे म० ५ ॥ नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥१॥ म० ५ ॥ नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरन्हि घटा अति कालीआ ॥ बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहंदीआ ॥२॥ म० ५॥ जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ सेजड़ीआ सोइंन हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु तरणा ॥२२॥ सलोक म० ५ ॥ पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥ म०५॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि॥ जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥ २ ॥ म० ५ ॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥पउड़ी॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै॥ सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधु नो तोलै ॥ भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥ करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ गहिर गंभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥१॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ बूडहुगे परवार सकल सिउ राम

न जपहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥१॥ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥२॥ मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥३॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥४॥१॥ बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥१॥ सार सुखु पाईऐ रामा ॥ रंगि रवहु आतमै राम ॥१॥ रहाउ ॥ जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु जीतिआ जांते बिखिआ ते होइ उदासु ॥२॥ अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥ १ ॥ रामु जिह पाइआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥१॥ रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥ २ ॥ गुरप्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥ ३ ॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ कहु कबीर कंचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥ ४ ॥ ३ ॥ उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ सुंनहि सुंनु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥ १ ॥ बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥ २ ॥ जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम कमावहिगे ॥ हरि जी कृपा करें

जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥ ३ ॥ जीवत मरहु मरहु फुनि
जीवहु पुनरपि जनम न होई ॥ कहु कबीर जो नामि समाने सुंन रहिआ
लिव सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ जउ तुम्ह मोकउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति
बतावहु ॥ एक अनेक होइ रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥
१ ॥ राम मोकउ तारि कहां लै जईहै ॥ सोधउ मुकति कहा देउ कैसी
करि प्रसादु मोहि पाई है ॥१॥रहाउ॥ तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब
लगु ततु न जानिआ ॥ अब तउ बिमल भए घट ही मह कहि कबीर
मनु मानिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ जिनि गड़ कोट कीए कंचन के छोडि
गइआ सो रावनु ॥ १ ॥ काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ जब जमु आइ
केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु अकालु
खसम का कीना इहु परपंचु बधावनु ॥ कहि कबीर ते अंते मुकते जिन
हिरदै राम रसाइनु ॥ २ ॥ ६ ॥ देही गावा जीउ धर महतउ बसहि
पंच किरसाना ॥ नैनू नकटू स्रवनू रसपति इंद्री कहिआ न माना ॥१॥
बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू
नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरमराइ जप लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥
पंच क्रिसानवा भागि गए लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥ २ ॥ कहै कबीर
सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ अब की बार बखसि बंदे कउ
बहुरि न भउजलि फेरा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े
॥ बिनु भै अनभउ होइ वणाहंबै ॥ १ ॥ सहु हदूरि देखै तां भउ पवै
बैरागीअड़े ॥ हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाहंबै ॥ २ ॥ हरि पाखंड
न कीजई बैरागीअड़े ॥ पाखंडि रता सभु लोकु वणाहंबै ॥ ३ ॥ तृसना
पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ ममता जालिआ पिंडु वणाहंबै ॥४॥ चिंता
जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ जे मनु मिरतकु होइ वणाहंबै ॥५॥
सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ जे लोचै सभु कोइ
वणाहंबै ॥ ६ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ सहजे
पावै सोइ वणाहंबै ॥ ७ ॥ कहु कबीर इक बेनती बैरागीअड़े

॥ मोकउ भउजलु पारि उतारि बणाहंबै ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥ राजन कउनु तुमारै आवै ॥ ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसती देखि भरम ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ तुमरो दूधु बिदर को पान्हो अंमृतु करि मै मानिआ ॥१॥ खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥ २ ॥ ६ ॥ सलोक कबीर ॥ गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥ १ ॥ सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥२॥२॥

कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥ १ ॥ राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥रहाउ॥ संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥ २ ॥ अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ नउनिधि ठाकुरि दई सुदामै धूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥ ३ ॥ भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥ नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू कबीर जीउ ॥ दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगति कबहू नही कीनी रचिओ धंधै झूठ ॥ सुआन सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥ १ ॥ आपस कौ दीरघ करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥ २ ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम॥ निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ रामु ॥ ३ ॥ कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ रामु नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥४॥१॥

रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सादतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥ १ ॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा द्रसटि संमानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि संमानि आइआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहमु निरबाणु लिवलीणु पाइआ ॥२॥१॥ कबीरु ॥ मारू ॥ रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥१॥ रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥१॥ जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा॥ सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा॥२॥ धरमराइ जब लेखा मागै किआ मुखु ले कै जाहिगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साध संगति तरि जांहिगा ॥३॥१॥

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ १ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ २ ॥ १ ॥ मारू ॥ सुखसागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जाके रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नवनिधि करतल ता कै ॥१॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भागी ॥ ३ ॥ २ ॥ १५ ॥

तुखारी छंत महला १ बारह माहा

१ओंसतिगुरप्रसादि॥

तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अंमृतु पीवां ॥ रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सु करमा ॥ नानक पंथु निहाले साधन तू सुणि आतमरामा ॥१॥ बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ साधन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महल घरु ऊचउ निजघरि वासु मुरारे ॥ सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसिबासुर रंगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥२॥ तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥ मनि तनि रवत रवंनै घड़ी न बीसरै॥किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए॥ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक हसटि दीरघ सुखु पावै गुरसबदी मनु धीरा ॥ ३ ॥ बरसै अंमृत धार बूंद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥

नानक वरसै अंमृत बाणी करि किरपा घरि आवै ॥४॥ चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥ बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥ पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥५॥ वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो॥कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखी प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना॥६॥माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ थल तापहि सर भार साधन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥७॥ आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे॥रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे॥अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥९॥ भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥१०॥ असुनि आउ पिरा साधन झूरि मुई ॥ ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती कुकह

काह सि फुले ॥ आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥
दहदिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ नानक असुनि
मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥ ११ ॥ कतकि किरतु पइआ जो
प्रभ भाइआ ॥ दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो
धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ अवगण मारी मरै न सीझै गुणि
मारी ता मरसी ॥ नामु भगति दे निजघरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥१२॥ मंघर माहु
भला हरि गुण अंकि समावए ॥ गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु
भावए॥ निहचलु चतरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ॥ गिआनु
धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित
कवे सुणि राम नामि दुखु भागै॥नानक साधन नाह पिआरी अभ भगती
पिर आगै ॥ १३ ॥ पोखि तुखारु पड़ै वणु तृणु रसु सोखै ॥ आवत
की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु
गुरसबदी रंगु माणी ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति
समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावहु मति देहो ॥ नानक
रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥ १४ ॥ माघि पुनीत भई
तीरथु अंतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि
समानिआ ॥ प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ पुंन दान पूजा
परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ नानक माघि महारसु हरि जपि
अठसठि तीरथ नाता ॥ १५ ॥ फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥
अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु
भाइआ करि किरपा घरि आओ॥बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा
न थाओ ॥ हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक
मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥ १६ ॥ बेदस माह रुती
थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले
पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि
पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी

गुरमुखि मसतकि भागो ॥ नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७॥१॥ तुखारी महला १ ॥ पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिआरी राम ॥ वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥१॥ दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम ॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥ २ ॥ तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ जंमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥ ३ ॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ तिन घरु राखिअड़ा जु अनदिनु जागे राम ॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ कर कंपि चरण सरीरु कंपै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥ ४ ॥ खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥५॥ २ ॥ तुखारी महला १ ॥ तारा चड़िआ लंमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ सेवक पूर.करंमा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करंमा ॥ नानक

हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लंमा ॥१॥ गुरमुखि जागि रहे चूकी
अभिमानी राम ॥ अनदिनु भोरु भइआ साचि समानी राम ॥ साचि
समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ साचु नामु अंमृतु
गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ प्रगटी जोति जोति महि जाता
मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत
रैणि विहाणी ॥ २ ॥ अउगुण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ एको
रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ रवि रहिआ सोई अवरु न कोई
मनही ते मनु मानिआ ॥ जिनि जल थल त्रिभवण घटु घटु थापिआ
सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ करणकारण समरथ अपारा त्रिबिधि
मेटि समाई ॥ नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥
आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ हउमै मारि मिले साचा चोला राम
॥ हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ जोती अंदरि जोति
समाणी आपु पछाता आपै ॥ पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर
भाणी ॥ नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥ ४ ॥
२ ॥ तुखारी महला १ ॥ भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ पिरि
छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ पिरि छोडी सुती अवगणि
मुती तिसु धन विधण राते ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगुती
हउमै लगी ताते ॥ उडरि हंसु चलिआ फुरमाइआ भसमै
भसम समाणी ॥ नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥
१ ॥ सुणि नाह पिआरे इक बेनंती मेरी ॥ तू निजघरि
वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ बिनु अपने नाहै कोइ न
चाहै किआ कहीऐ किआ कीजै ॥ अंमृत नामु रसन रसु रसना
गुरसबदी रसु पीजै ॥ विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइ
घनेरी ॥ नानक लाहा लै घरि जाईऐ साची सचु मति तेरी ॥२॥ साजन
देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण
भरेदी ॥ मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ मारगु
पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे॥सतिगुर सबदी मिलै विछुंनी
तनु मनु आगै राखै ॥ नानक अंमृत बिरखु महा रस फलिआ

मिलि प्रीतमु रसु चाखै॥३॥महलि बुलाइड़ीए बिलमु न कीजै॥अनदिनु
रतड़ीए सहजि मिलीजै ॥ सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि
समाणी ॥ साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ जब नाची
तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी॥नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि
ततु बीचारी॥४॥४॥तुखारी महला १॥ मेरे लाल रंगीले हम लालन के
लाले॥गुर अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले॥गुरि अलखु लखाइआ
जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी॥जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता
सहजि मिले बनवारी॥नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन
दइआला ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला
॥१॥ भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ सबदे रवि रहिआ गुर रूपि
मुरारे ॥ गुर रूप मुरारे त्रिभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ रंगी
जिनसी जंत उपाए नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ अपरंपरु आपे थापि उथापे
तिसु भावै सो होवै ॥ नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥२॥
गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ सचु साचि समाइआ चूका
आवण जाणो ॥ सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥
साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु
मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ
अति पिआरे ॥३॥ सचु घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ मनमुखि
नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ देवै सचु दानो सो परवानो
सद दाता वड दाणा॥अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा
॥ दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ नानक साचा
साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥४॥५॥ तुखारी महला १ ॥ ए मन
मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम॥ ए मन मेरिआ छडि अवगण
गुणी समाणिआ राम ॥ बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ
नही मेला ॥ किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥
मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥
बंधन बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥ १ ॥
ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ ए मन

मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइआ ॥ आचारि तू वीचारि आपे हरिनामु संजम जप तपो ॥ सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥२॥ ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ गुण गाइ राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥ ३ ॥ ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम ॥ ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अंमृत पी रसो ॥ हरिनामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥ ४ ॥ ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अंबड़ै राम ॥ पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ मिलि साध संगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ करि दइआ दानु दइआल साचा हरिनाम संगति पावओ ॥ नानकु पइअंपै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावओ ॥५॥६॥

तुखारी छंत महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ जब लगु दरसु न होइ किउ अंमृतु पीवीऐ राम ॥ किउ अंमृतु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ अपणी कृपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ गुर कै सबदि मिलिआ मैं प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥ १ ॥ जब देखां

पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥ प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे तृपति न आवए ॥ सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥२॥ हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीऐ राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड़ निसतारीऐ राम ॥ हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगंमु वड जाणिआ ॥ तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आए ॥ दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥३॥ गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम॥ जोती जोति मिलाइ काइआ गड़ु सोहिआ राम ॥ काइआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीऐ ॥ अदृसटु अगोचरु पकड़िआ गुरसबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ तुखारी महला ४ ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुरवाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ जोती जोति मिलि जोति समाणी हरि कृपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ १ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु धंनु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संत संगति मिलि गुण रवे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥

तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन मनि चिति इकु अराधिआ ॥ तिन का जनमु सफलिओ सभु कीआ करतै जिन गुरबचनी सचु भाखिआ ॥ ते धंनु जन वडपुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ ३ ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला॥जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ नानक दइआलु होआ तिन उपरि जिन गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ ४ ॥ २ ॥ तुखारी महला ४॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥ तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ तिनके पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ धनु धंनु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥१॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिनके ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखन हारि॥हरि संत संगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बनी ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धनी ॥ २ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ वणि तृणि त्रिभवणि सभ सृसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ सभ चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवए ॥ सो धंनु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावए ॥ सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ ३ ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण

टिकहि ॥ हरिगुण हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ बिनु भै किनै न प्रेम पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥४॥३॥

तुखारी महला ४ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ जनम मरणु दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ १ ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ २ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ खबरि भई संसारि आए त्रैलोआ ॥ देखणि आए तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ जोगी दिगंबर संनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ ३ ॥ दुतीआ जमुन गए गुर हरि हरि जपनु कीआ ॥ जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइ दीआ ॥ सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइ लइऐ सभि छुटकि गइआ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥४॥ तृतीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ भाई हम करह किआ किसु पासि मांगह सभ

भागि सतिगुर पिछै पई ॥ जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ तृतीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ ५ ॥ मिलि आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही ॥ गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिमृति कीता सही ॥ सिमृति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्री राम करि गुर गोविदु धिआइआ ॥ देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ मिलि आए नगर महाजना गुर सतिगुर ओट गही ॥ ६ ॥ ४ ॥ १० ॥

तुखारी छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥ देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥ १ ॥ इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खंनीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख द्रसटि पेखि जीवा ॥ अंमृत नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चातृकु बूंदेरे ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥ २ ॥ तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आए ॥ सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ जा कउ कृपा करी जगदीसुरि तिनि साध संगि मनु जिता ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥ ३ ॥ निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ सतिगुर ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ उसतति कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कदका ॥ नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

केदारा महला ४ घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ अगम अगोचरु न जाई हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥१॥ हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ जिसनो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥ २ ॥ हरिनामु अराधहि से धंनु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥ ४ ॥ १ ॥

केदारा महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु

॥ मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥१॥ अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे॥जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ माई संत संगि जागी ॥ प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ दरसन पिआस लोचन तार लागी बिसरी तिआस बिडानी ॥ १ ॥ अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अंमृत बानी ॥ २ ॥ १ ॥

केदारा महला ५ घर ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन गवनु करउ ॥ खटु करम जुगति धिआनु धरउ॥उपाव सगल करि हारिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥१॥ सरणि बंदन करुणापते ॥ भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ एक तूही दीन दइआल ॥ प्रभ चरन नानक आसरो ॥ उधरे भ्रम मोह सागर ॥ लगि संतना पग पाल ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

केदारा महला ५ घरु ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सरनी आइओ नाथ निधान॥नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥१॥रहाउ॥ सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥१॥ गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निरमल कथा गिआन ॥ नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ३ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के

दरसन को मनि चाउ ॥ करि किरपा सत संगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ करउ सेवा सतपुरख पिआरे जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥ १ ॥ सरब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ४ ॥ केदारा महला ५ ॥ प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ खूले कपट धपट बुझि तृसना जीवउ पेखि दरसारी ॥१॥ कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ करहु कृपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साध संगि मनु लावहु ॥ भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥ १ ॥ सभ की रेन होइ मनु मेरा अहंबुधि तजावहु ॥ अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ धनु जोबनु संपै सुखु भुोगवै संगि न निबहत मात ॥ मृग तृसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥ १ ॥ मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥ २ ॥ ५ ॥ ७ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ दीनानाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ सुत संपति बिखिआ रस भुोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ नामु निधानु गाउ गुन गोबिद उधरु सागर के खात ॥ १ ॥ सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ नानक दीन धूरि जन बांछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥ २ ॥ ६ ॥ ८ ॥

केदारा महला ५ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बिसरत नाहि मन ते हरी
॥ अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ बूंद कहा
तिआगि चातृक मीन रहत न घरी ॥ गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह
परी ॥१॥ महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ प्रभ चरन
कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥ केदारा महला
५ ॥ प्रीतमु बसत रिद महि खोर ॥ भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु
अपनी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक गरत संसार सागर करि दइआ
चारहु धोर ॥ संत संगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥ १ ॥ गरभ
कुंट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ हरि सकत सरन
समरथ नानक आन नही निहोर ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥ केदारा महला ५
॥ रसना राम राम बखानु ॥ गुन गुोपाल उचारु दिनु रैनि भए कलमल
हान ॥ रहाउ ॥ तिआगि चलना सगल संपत कालु सिरपरि जानु ॥
मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥ १ ॥ सति पुरख अकाल
मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह
परवानु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम को
आधारु ॥ कलि कलेस न कछु बिआपै संत संगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥
करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ जिसु परापति होइ
सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥ १ ॥ सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ
चरन अंमृत सारु ॥ नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥२॥
४ ॥ १२ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम बिनु धृगु स्रोत ॥ जीवन
रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ खात पीत अनेक
बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ आठ पहर महा स्रमु पाइआ जैसे
बिरख जंती जोत ॥ १ ॥ तजि गुपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी
रोत ॥ कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥ २ ॥ ५ ॥
१३॥ केदारा महला ५ ॥ संतह धूरि ले मुखि मली॥ गुणा अचुत सदा
पूरन नह दोख बिआपहि कली॥रहाउ॥ गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत

ऊत न हली॥ प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥१॥ गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि संगि चली ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥ केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि सांति अनंद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥ १ ॥ चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

केदारा छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भंनै घालिआ ॥ हरि गुणनिधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चातृक बूंद पिआसिआ ॥ कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ हरि दरसि मनु लागा दिनसु सुभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ नानक दासु कहै बेनंती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥ २ ॥ सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ॥ हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ हरि सिउ जाइ मिलणा साध संगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ होहु क्रिपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु

बखानिआ ॥ भगति वछलु सुनि अंचलो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ सुख सागरो पाइआ सहज सुभाइआ जनम मरन दुख हारे ॥ करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥४॥१॥

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥१॥ तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीनै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीनै तिन ही परम पदु पाइआ ॥२॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ तृसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥ ३ ॥ जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥४॥१॥ किनही बनजिआ कांसी तांबा किन ही लउग सुपारी ॥ संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥१॥ हरि के नाम के बिआपारी ॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥ २ ॥ आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ आपै दहदिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥३॥ मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ २ ॥ री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अंमृत धार चुआवउ ॥१॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ जेते घट अंमृतु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥२॥ नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ त्रिकुटी छूटै दसवा दरु खूल्है ता मनु खीवा भाई ॥ ३ ॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥

उलट चलंते इहु मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥ काम क्रोध
तृसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ फूटी आखै कछू न सूझै बूडि
मूए बिनु पानी ॥१॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के
मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥१॥ रहाउ ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम
ते कालु न दूरे ॥ अनिक जतन करि इह तनु राखहु रहै अवसथा पूरे
॥२॥ आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ जा तिसु भावै
सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥ ३ ॥ बलूआ के घरूआ महि बसते
फुलवत देह अइआने ॥ कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु
सिआने ॥४॥४॥ टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाउ भगति
सिउ काजु न कछूऐ मेरो कामु दीवान॥१॥रामु बिसारिओ है अभिमानि
॥ कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ कहि कबीर
अंत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥ २ ॥ ५ ॥ चारि दिन अपनी
नउबति चले बजाइ ॥ इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु
लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संग माइ ॥
मरहट लगि सभु लोगु कुटंबु मिलि हंसु इकेला जाइ ॥ १ ॥ वै सुत वै
बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ कहतु कबीरु राम की न
सिमरहु जनमु अकारथ जाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

रागु केदारा बाणी रविदास जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति
हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १ ॥
चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति
किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआन स
अजातु सभ ते कृस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लो
प्रवेस ॥२॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास ॥
दुरमति निसतरे तू किउ न तरहहि रविदास ॥३॥१॥

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ तू करि करि देखहि जाणहि सोइ॥
१॥ किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ॥
१॥रहाउ॥ जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ किसु आगै कीचै अरदासि
॥२॥ आखणु सुनणा तेरी बाणी॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥३॥
करे कराए जाणै आपि ॥ नानक देखै थापि उथापि ॥४॥१॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु भैरउ
महला १ घरु २ ॥ गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि
तरे ॥ सनक सनंदन तपसी जन केते गुरपरसादी पारि परे ॥ १ ॥
भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ
दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु देवा गुर अलख
अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ आपे दाति करी गुरि दातै
पाइआ अलख अभेवा ॥ २ ॥ मनु राजा मनु मन ते मानिआ
मनसा मनहि समाई ॥ मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु
समझै गुण गाई ॥ ३ ॥ गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले
संसारा ॥ नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥ ४ ॥
१ ॥ २ ॥ भैरउ महला १ ॥ नैनी द्रसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ

सिरि कालो ॥ रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥ १ ॥
प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥ साच सबद बिनु कबहु न छूटसि
बिरथा जनमु भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन महि कामु क्रोधु हउ ममता
कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन विधि तरु
तू तारी ॥ २ ॥ बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही
बूझिआ ॥ जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ
॥ ३ ॥ रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ प्रणवति
नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥
भैरउ महला १ ॥ भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥
नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥ १ ॥ अंधुले
किआ पाइआ जगि आइ ॥ रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु
गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब
फीके ॥ संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥ २
अंमृत का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥ जब लगु सबद
भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥ ३ ॥ अन को दरु घरु कबहु
न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ गुरपरसादि परम पदु पाइआ नानकु
कहै विचारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ भैरउ महला १ ॥ सगली रैणि सोवत
गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइआ ॥ खिनु पलु घड़ी नही प्रभु
जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटसि दुखु
भारी ॥ किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥ १
॥ रहाउ ॥ ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥
कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥ २ ॥ डगरी चाल
नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई॥ सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ
अंधुलउ धंधु कमाई ॥ ३ ॥ खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुरमति
गिआन विहूणे ॥ सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे
॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ भैरउ महला १ ॥ गुर कै संगि रहै दिन राती रामु
रसनि रंगि राता ॥ अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि
पछाता॥१॥ सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥ आपु मारि अपरंपरि राता गुर

का कार कमावै ॥१॥ रहाउ॥ अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरख
आदेसो ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥ २ ॥
साचि रते सचु अंमृतु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ निरमल नामु
अंमृत रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥३॥ गुणी गुणी मिलि लाहा
पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु
सखाई ॥४॥५॥६॥ भैरउ महला १ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु
गुरपरसादी पाईऐ ॥ अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव
लाईऐ ॥१॥ मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि
हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न
छूटसि आवत जात न जानो ॥ बिनु हरिनाम को मुकति न पावसि डूबि
मुए बिनु पानी ॥२॥ धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि
गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति नही कबही अंधुले धंधु पसारा ॥ ३ ॥
अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि
बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ भैरउ
महला १ ॥ जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ राम
नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥ १ ॥ राम
नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु
नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण
वखाणै संधिआ करम तिकाल करै ॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी
राम नाम बिनु उरझि मरै ॥ २ ॥ डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि
गवनु अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि
नामु सु पारि परै ॥ ३ ॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि
तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु तृपति न आवै किरत कै बांधै
भेखु भइआ ॥ ४ ॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू
सरब जीआ ॥ गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक
झोलि पीआ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ८ ॥

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जाति का गरबु न करीअहु
कोई ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥ जाति का गरबु न करि मूरख
गवारा ॥ इसु गरब ते चलहि बहुतु बिकारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे वरन
आखै सभु कोई ॥ ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥ २ ॥ माटी एक
सगल संसारा ॥ बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥ पंच ततु मिलि देही
का आकारा ॥ घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥ कहतु नानक इहु जीउ
करम बंधु होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ ५ ॥ १ ॥ भैरउ
महला ३ ॥ जोगी गृही पंडित भेख धारी ॥ ए सूते अपणै अहंकारी
॥१॥ माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ जागतु रहै न मूसै कोइ ॥१॥
रहाउ ॥ सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ पंच दूत ओहु वसगति करै
॥२॥ सो जागै जो ततु बीचारै ॥ आपि मरै अवरा नह मारै ॥३॥ सो
जागै जो एको जाणै ॥ परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥ ४ ॥ चहु वरना
विचि जागै कोइ ॥ जमै कालै ते छूटै सोइ ॥ ५ ॥ कहत नानक जनु
जागै सोइ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥६॥२॥ भैरउ महला
३ ॥ जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ साचे लागै साचा फलु पाई ॥१॥
रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥ १ ॥ रहाउ
॥ एहु आकारु तेरा है धारा ॥ खिन महि बिनसै करत न लागै बारा
॥२॥ करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ गुर किरपा ते परमपदु पाइआ
॥३॥ कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु
कोइ ॥४॥३॥ भैरउ महला ३ ॥ मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ जेहा
कराए ॥ तेहा करी सीगारु ॥ १ ॥ जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥
तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसतति निंदा करे
किआ कोई ॥ जां आपे वरतै एको सोई ॥ २ ॥ गुरपरसादी पिरम
कसाई ॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥ ३ ॥ भनति नानकु करे
किआ कोइ॥जिसनो आपि मिलावै सोइ ॥४॥४॥ भैरउ म० ३॥ सो मुनि
जि मन की दुबिधा मारे॥ दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥१॥ इसु मन कउ

कोई खोजहु भाई ॥ मनु खोजत नामु नउनिधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ ममता लाइ भरमि भुोलाइआ ॥
२ ॥ इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा
॥ ३ ॥ करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा
मरै ॥ ४ ॥ मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु
अनरागी ॥ ५ ॥ कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन
देउ ॥ ६ ॥ ५ ॥ भैरउ महला ३ ॥ राम नामु जगत निसतारा ॥
भवजलु पारि उतारणहारा ॥ १ ॥ गुरपरसादी हरि नामु सम्हालि ॥
सद ही निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु न चेतहि मनमुख
गावारा ॥ बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥ २ ॥ आपे दाति करे दातारु
॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ३ ॥ नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ नानक
हिरदै नामु वसाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ३ ॥ नामे उधरे सभि
जितने लोअ ॥ गुरमुखि जिना परापति होइ ॥ १ ॥ हरि जीउ
अपणी क्रिपा करेइ ॥ गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु
॥ २ ॥ बिनु नावै मनमुख जमपुरि जाहि ॥ अउखे होवहि चोटा
खाहि ॥ ३ ॥ आपे करता देवै सोइ ॥ नानक नामु परापति होइ ॥४॥
७ ॥ भैरउ महला ३ ॥ गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ राम नाम
सबदि बीचारे ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ गुरमुखि नामे
लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ पूरै
गुरि मेलावा होइ ॥ २ ॥ निजघरि वसै सहजि सुभाइ ॥ गुरमुखि नामु
वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु रखहु
उरधारि ॥४॥८॥ भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि राम नामु उरधारु ॥
बिनु नावै माथै पावै छारु ॥१॥ राम नामु दुलभु है भाई ॥ गुर परसादि
वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि सोइ ॥ पूरे गुर
ते प्रापति होइ ॥ २ ॥ हरि का भाणा मंनहि से जन परवाणु ॥
गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥ ३ ॥ सो सेवहु जो
कल रहिआ धारि ॥ नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥ ४ ॥ ९ ॥

भैरउ महला ३॥ कलजुग महि बहु करम कमाहि॥ना रुति न करम थाइ पाहि ॥१॥ कलजुग महि राम नामु है सारु॥गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥२॥ गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥३॥ कलिजुग महि हरि जीउ ऐकु होर रुति न काई ॥ नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥४ १०॥

भैरउ महला ३ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दुबिधा मनमुख रोगि विआपे तृसना जलहि अधिकाई ॥ मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंमृति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ त्रैगुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥ २ ॥ इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आए ॥ ३ ॥ चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निजघरि वासा पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एकसु की सिरिकार एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ११ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥ १ ॥ हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ नानक तिसनो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरिकारा ॥ गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरिधारा ॥ २ ॥ जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुख पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ३ ॥ दुख विचि जं

दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ गरभ जोनी विचि कदे न निकल
बिसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ धृगु धृगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ पूरे
गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का
सबदु सभि रोग गवाए जिसनो हरि जीउ लाए ॥ नामे नामि मिलै
वडिआई जिसनो मंनि वसाए ॥२॥ सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु
करणी सुख सारु ॥ से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि
पिआरु ॥३॥ तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा
धिआइआ ॥ नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि
चितु लाइआ ॥४॥३॥१३॥ भैरउ महला ३ ॥ सबदु बीचारे सो जनु
साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ साची भगति करहि दिनु राती तां
तनि दूखु न होई ॥१॥ भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे
भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ मनमुख मूलु
गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ जमकालु सदा है सिर
ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥२॥ बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु
न जाई ॥ पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति
गवाई ॥३॥ सतिगुरु सेवहि परमगति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥
नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४ ॥
भैरउ महला ३ ॥ मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ उदरु
नैसाणु न भरीऐ कबहू तृसना अगनि पचाए ॥१॥ सदा अनंदु राम रसि
राते ॥ हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अंमृतु पी तृपताते
॥१॥ रहाउ ॥ आपे पारब्रहमु सृसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए
॥ माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥ २ ॥
तिसनो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥
गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥ ३ ॥ सो
प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ नानक सतिगुरि
सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १५ ॥ भैरउ महला
३ ॥ कलि महि प्रेत जिनी रामु न पछाता सतजुग परमहंस
बीचारी ॥ दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥१॥ कलि महि

राम नामि वडिआई ॥ जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै
मुकति न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि
मंनि वसाई ॥ आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई
॥२॥ मेरा प्रभु है गुण का दाता अवगण सबदि जलाए ॥ जिन मनि
वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥ ३ ॥ घरु दरु महलु सतिगुरू
दिखाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ जो किछु कहै सु भला करि मानै
नानक नामु वखाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥ भैरउ महला ३ ॥ मनसा
मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै
न वारोवार ॥ १ ॥ मन मेरे राम नामु आधारु ॥ गुरपरसादि
परमपदु पाइआ सभ इछ पुजावनहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि एको
रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि
प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ सुखदाता हरि एकु है होरथै
सुखु न पाहि ॥ सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि
॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ ॥
नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥
भैरउ महला ३ ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ मरि
मरि जंमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥ १ ॥ मेरे मन सदा
रहहु सतिगुर की सरणा ॥ हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे
भवजलु तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु
क्रोधु अहंकारु ॥ अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दरबारु
॥२॥ गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥
अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उरधारि ॥ ३ ॥ जिउ
तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ नानक गुरमुखि
सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ८ ॥ १८ ॥ भैरउ महला
३ ॥ हउमै माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥
अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥ १ ॥
मनमुखि धृगु जीवणु सैसारि ॥ राम नामु सुपनै नही चेतिआ
हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पसूआ करम

करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइ ॥ सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥२॥ हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥ ३ ॥ आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ॥ आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाए ॥४॥९॥१९॥ भैरउ महला ३॥ मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरै नाला ॥ १ ॥ गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै॥ सासना ते बालकु गमु न करै ॥१॥रहाउ॥ माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥ २ ॥ संडा मरका सभि जाइ पुकारे ॥ प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ॥ प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥ ३॥ हाथि खड़ग करि धाइआ अति अहंकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि॥हरनाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥ ४ ॥ संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ नानक राम नामि संत निसतारे ॥५॥ १० ॥ २० ॥ भैरउ महला ३ ॥ आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥ १ ॥ जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥२॥ मूरख दुबिधा पढ़हि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥३॥ प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ ॥ ४ ॥ आपणी पैज आपे राखै भगतां देइ वडिआई ॥ नानक हरनाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥ ५ ॥ ११ ॥ २१ ॥

रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि जन संत करि किरपा पगि
लाइणु ॥ गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु
नामु नराइणु ॥ हरि हरि कृपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि
नामि तराइणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति साध मेलि हरि गाइणु॥ गुरमती
ले राम रसाइणु ॥ २ ॥ गुर साधू अंमृत गिआन सरि नाइणु ॥ सभि
किलविख पाप गए गवाइणु ॥ ३ ॥ तू आपे करता सृसटि धराइणु ॥
जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥ ४ ॥ १ ॥ भैरउ महला ४ ॥
बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥ १ ॥
मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति
संगि सिंधु भउ तरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगजीवनु धिआइ मनि हरि
सिमरी ॥ कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥ २ ॥ सत संगति साध धूरि
मुखि परी ॥ इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥ ३ ॥ हम मूरख कउ
हरि किरपा करी ॥ जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥ ४ ॥ २ ॥
भैरउ महला ४ ॥ सुकृतु करणी सारु जप माली ॥ हिरदै फेरि चलै तुधु
नाली ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ करि किरपा मेलहु
सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सेवा
घाल जिनि घाली ॥ तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली॥२॥हरि अगम
अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ विचि काइआ नगर लधा हरि भाली
॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ जन नानक तारहु नदरि
निहाली ॥ ४ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सभि घट तेरे तू सभना माहि
॥ तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ १ ॥ हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥
हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा
तह हरि प्रभु सोइ ॥ सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जिस
कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ तिस कै नेड़ै कोइ न जावै ॥ ३ ॥ तू
जलि थलि महीअलि सभतै भरपूरि ॥ जन नानक हरि जपि
हाजरा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥

भैरउ महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि का संतु हरि की हरि मूरति
जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ सो
गुरमति हिरदै हरि नामु सम्हारि ॥ १ ॥ मधुसूदनु जपीऐ उरधारि ॥
देही नगरि तसकर पंच धातू गुरसबदी हरि काढे मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ तिन
चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥ २ ॥ मता
मसूरति तां किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करे सोई
भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥ ३ ॥ हरि जो किछु
करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु
सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥
भैरउ महला ४ ॥ ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिनि जपिआ गति होइ
हमारी ॥ तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ
बलिहारी ॥१॥ हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ कृपा कृपा करि जगत
पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ तिन मति
ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ तिन की सेवा
लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥ २ ॥ जिन ऐसा
सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ
न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥ ३ ॥ हरि आपि बुलावै आपे
बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि
सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥ ४ ॥ २ ॥
६ ॥ भैरउ महला ४ ॥ सत संगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति
हरि सुनणे ॥ जिन हरिनामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह
नित चरणे ॥ १ ॥ जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम
हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥१॥ रहाउ ॥ गुरसिख हरि बोलहु
हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु
पावै हरि सुख घणे ॥२॥ धंनु सु वंसु धंनु सु पिता धंनु सु माता जिनि
जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची

दरगह हरि जन बणे ॥३॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

भैरउ महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सगली थीति पासि डारि राखी ॥ असटम थीति गोविंद जनमासी ॥१॥ भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ जनम मरण ते रहत नाराइण॥१॥ रहाउ ॥ करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥ २ ॥ सगल पराध देहि लोरोनी ॥ सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥३॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥४॥१॥ भैरउ महला ५ ॥ ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नाही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥१॥ राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहां प्रभु तूं वरतंता ॥ २ ॥ घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥३॥२॥ भैरउ महला ५ ॥ वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥१॥ एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहां नेबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥२॥ पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥३॥ ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंड परान ॥४॥ कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥ ५ ॥ ३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ पांच मिरग बेधे सिव की बानी ॥ १ ॥ संत संगि ले चड़िओ सिकार ॥ मृग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥१॥ रहाउ ॥ आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ अहेरा पाइओ घर कै गांइ ॥ २ ॥ मृग पकरे घरि आणे हाटि ॥ चुख चुख ले गए बांढे बाटि ॥३॥ एहु अहेरा कीनो दानु ॥ नानक कै घरि केवल नामु ॥४॥४॥ भैरउ महला ५ ॥ जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥ १ ॥

संत जना की लेहु मते ॥ साध संगि पावहु परमगते ॥ १ ॥ रहाउ ॥
पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ नह भीगै अधिक सूकाइआ ॥ २ ॥ खटु
सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ जैसे दहदिस पवनु झुलाइआ ॥३॥ बिनु कण
खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥ ४ ॥
तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ
॥५॥५॥ भैरउ महला ५ ॥ जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ जिनहि
उपाए तिस कउ पीर ॥ १ ॥ गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ हलति
पलति जा की सद छाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आराधन निरमल रीति ॥
साध संगि बिनसी बिपरीति ॥ २ ॥ मीत हीत धनु नह पारणा ॥ धंनि
धंनि मेरे नाराइणा ॥ ३ ॥ नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ एक बिना
दूजा नही जाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ आगै दयु पाछै
नाराइण ॥ मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥ १ ॥ प्रभू हमारै सासत्र
सउण ॥ सूख सहज आनंद गृह भउण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना नामु
करन सुणि जीवे ॥ प्रभ सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥ २ ॥ जनम
जनम के दूख निवारे ॥ अनहद सबद वजे दरबारे ॥ ३ ॥ करि किरपा
प्रभि लीए मिलाए ॥ नानक प्रभ सरणागति आए ॥ ४ ॥ ७ ॥
भैरउ महला ५ ॥ कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ जम मारग कै
संगी पांथ ॥ १ ॥ गंगाजलु गुर गोबिंद नाम ॥ जो सिमरै तिस
की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा
जाप ताप इसनान ॥ सिमरत नाम भए निहकाम ॥ २ ॥ राज
माल सादन दरबार ॥ सिमरत नाम पूरन आचार ॥ ३ ॥ नानक
दास इहु कीआ वीचारु ॥ बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥
४ ॥ ८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ दुसटु
ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥ १ ॥ हरि जन राखे पारब्रहमि
आपि ॥ पापी मूआ गुर परतापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणा खसमु जनि
आपि धिआइआ ॥ इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥ २ ॥ प्रभ
मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ निंदक का माथा ईहां ऊहा
काला ॥ ३ ॥ जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ मलेछु पापी

पचिआ भइआ निरासु ॥४॥६॥ भैरउ महला ५ ॥ खूबु खूबु खूबु खूबु
खूबु तेरो नामु ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ नगज
तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥ १ ॥ अचरज
तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥
२ ॥ नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ गरीब निवाज दिनु रैणि धिआइ ॥
३ ॥ नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ अलहु न विसरै दिल जीअ
परान ॥ ४ ॥ १० ॥ भैरउ महला ५ ॥ साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥
प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥ १ ॥ जीवत जीवत जीवत रहहु ॥
राम रसाइणु नित उठि पीवहु हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥
२ ॥ ११ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ जनम
जनम की मैलु मिटाए ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ पूरबि
करम लिखे गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगि होवै उधारु ॥ सोभा
पावै प्रभ के दुआर ॥ २ ॥ सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ धूरि
बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥ ३ ॥ नानक पाइआ नाम निधानु ॥ हरि
जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥ ४ ॥ १२ ॥ भैरउ महला ५ ॥
अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ निंदक कउ अगनि महि पावै ॥ १ ॥
पापी ते राखे नाराइण ॥ पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप
कमाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ निंदक की
होई बिपरीति ॥ २ ॥ पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥ दोखी
अपणा कीता पाइआ ॥ ३ ॥ आइ न जाई रहिआ समाई ॥
नानक दास हरि की सरणाई ॥ ४ ॥ १३ ॥

रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २
१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ स्रीधर मोहन सगल
उपावन निरंकार सुखदाता ॥ ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा
कवन बिखिआ रस माता ॥ १ ॥ रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥
अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीऐ तितु बिगरसि काजु ॥ १
॥ रहाउ ॥ ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख

अंध

अगिआना ॥ हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना
॥२॥ जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा ॥ अहंबुधि
दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥३॥ होम जग जप तप सभि
संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ मिटिआ आपु पए सरणाई गुरमुखि
नानक जगतु तराइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ बन महि
पेखिओ तृणि महि पेखिओ गृहि पेखिओ उदासाए ॥ दंडधार जटधारै
पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥१॥ संत संगि पेखिओ मन माएं ॥ ऊभ
पइआल सरब महि पूरन रसि मंगल गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग
भेख संनिआसै पेखिओ जति जंगम कापड़ाए ॥ तपी तपीसुर मुनि महि
पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥२॥ चहु महि पेखिओ खट महि पेखिओ
दसअसटी सिम्रृताए ॥ सभ मिलि एको एकु वखानहि तउ किस ते
कहउ दुराए॥३॥अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए॥जन
नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआए ॥ ४ ॥ २ ॥
१५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ बिखु संचै
नित डरता फिरै ॥ है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ बिनु सतिगुर सभ
मोही माइआ ॥१॥ नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ गुरमुखि भेदु विरला को
लहै ॥१॥ रहाउ ॥ निकटि न देखै पर गृहि जाइ ॥ दरबु हिरै मिथिआ
करि खाइ ॥ पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ बाझु गुरू है भरमि
भुलानिआ ॥२॥ निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ माइआ मोहि मूठा है
मूड़ु ॥ अंतरि वसतु दिसंतरि जाइ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलाइ ॥३॥
जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ सतिगुरु सेवे खुले कपाट ॥
अंतरि बाहरि निकटे सोइ ॥ जन नानक आवै न जावै कोइ ॥४॥३॥
१६॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ सभ तुझ
ही अंतरि सगल संसारै ॥ कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ सो
होवै जि करै चोज विडाणी ॥१॥ राखहु राखहु किरपा धारि ॥
तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥१॥ रहाउ ॥ जिनि सेविआ निरभउ
सुखदाता ॥ तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ॥ जो तू करहि सोई
फुनि होइ॥मारै न राखै दूजा कोइ॥२॥किआ तू सोचहि माखस बाणि॥

अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ एक टेक एको आधारु ॥ सभ किछु जाणै जिरजणहारु ॥३॥ जिसु ऊपरि नदरि करे करतारु ॥ तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ तिस का राखा एको सोइ ॥ जन नानक अपड़ि न साकै कोइ ॥४॥४॥१७॥ भैरउ महला ५ ॥ तउ कड़ीऐ जे होवै बाहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे विसरै नरहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा भाए ॥ किआ कड़ीऐ जा रहिआ समाए ॥१॥ माइआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥१॥ रहाउ ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा करता ॥ तउ कड़ीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कड़ीऐ जां भरपूरि समाही ॥ २ ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु होइ धिङाणै ॥ तउ कड़ीऐ जे भूलि रंञाणै ॥ गुरि कहिआ जो होइ सभु प्रभ ते ॥ तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥३॥ प्रभ तू है ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ राखहु पैज नानक सरणाइ ॥४॥५॥१८॥ भैरउ महला ५ ॥ बिनु बाजे कैसो निरतकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ नाम बिना बिरथे सभि काज ॥१॥ नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥१॥रहाउ॥ बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ नाम बिना नरु कही न लेखै ॥ २ ॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना ॥३॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥ ४ ॥ बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ कहु नानक दर का बीचार ॥ ५ ॥ ६ ॥ १६ ॥ भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥ १ ॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ हेत रोग का

सगल संसारा ॥ त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥ २ ॥ रोगे मरता
रोगे जनमै ॥ रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ रोग बंध रहनु रती न
पावै ॥ बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥ ३ ॥ पारब्रहमि जिसु कीनी
दइआ ॥ बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ ॥ तूटे बंधन साध संगु
पाइआ ॥ कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २० ॥ भैरउ
महला ५ ॥ चीति आवै तां महा अनंद ॥ चीति आवै तां सभि दुख
भंज ॥ चीति आवै तां सरधा पूरी ॥ चीति आवै तां कबहि न झूरी ॥
१ ॥ अंतरि रामराइ प्रगटे आइ ॥ गुरि पूरै दीओ रंगु लाइ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ चीति आवै तां सरब को राजा ॥ चीति आवै तां पूरे काजा ॥
चीति आवै तां रंगि गुलाल ॥ चीति आवै तां सदा निहाल ॥२॥ चीति
आवै तां सद धनवंता ॥ चीति आवै तां सद निभरंता ॥ चीति आवै तां
सभि रंग माणे ॥ चीति आवै तां चूकी काणे ॥३॥ चीति आवै तां सहज
घरु पाइआ ॥ चीति आवै तां सुंनि समाइआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु
करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥४॥८॥२१॥ भैरउ महला ५ ॥
बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ भाई हमारे सदही जीवी ॥ मीत हमारे सदा
अबिनासी ॥ कुटंबु हमारा निजघरि वासी ॥ १ ॥ हम सुखु पाइआ तां
सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदर मेरे
सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ राजु हमारा सद ही निहचलु ॥
मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥ सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज
हमारी थान थनंतरि ॥ कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी
सभनी लोई ॥ ३ ॥ पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ पिता पूत रलि कीनी
सांझ ॥ कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ पिता पूत एकै रंगि लीने ॥४॥
९ ॥ २२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ हम
अपराधी तुम बखसाते ॥ जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ सरणि आवै
तां निरमलु होई ॥ १ ॥ सुख पाइआ सतिगुरू मनाइ ॥ सभ फल पाए
गुरू धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम सतिगुर आदेसु ॥ मनु तनु तेरा
सभु तेरा देसु ॥ चूका पड़दा तां नदरी आइआ ॥ खसमु तूहै सभना
के राइआ ॥ २ ॥ तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ तिसु भाणा तां

थलि सिरि सरिआ ॥ तिसु भाणा तां सभि फल पाए ॥ चिंत गई लगि
सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ मनु तनु सीतलु
मनि अंमृतु वूठा ॥ पारब्रहम गुर भए दइआला ॥ नानक दास देखि
भए निहाला ॥ ४ ॥ १० ॥ २३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु मेरा
बे मुहताजु ॥ सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ सतिगुरु मेरा सभस का दाता
॥ सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ गुर जैसा नाही को देव ॥
जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मेरा सरब
प्रतिपालै ॥ सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ सतिगुर मेरे की वडिआई ॥
प्रगटु भई है सभनी थाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ सतिगुरु
मेरा घरि दीबाणु ॥ सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ प्रगटु मारगु
जिनि करि दिखलाइआ ॥ ३ ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न
बिआपै ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे
सिंमृति बेद ॥ पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ ४ ॥ ११ ॥ २४ ॥ भैरउ
महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ नामु लैत पापु तन ते
गइआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइआ
॥ १ ॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि उपदेसिआ ततु गिआन
॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ नामु लैत अति मूड़
सुगिआना ॥ नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ नामु लैत छुटे जंजारा
॥ २ ॥ नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥
नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ नामु हमारी साची रासि ॥ ३ ॥
गुरि उपदेसु कहिओ इहु सारु ॥ हरि कीरति मन नामु अधारु ॥
नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ अवरि करम लोकह पतीआर ॥ ४
॥ १२ ॥ २५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नमसकार ता कउ लख बार ॥ इहु
मनु दीजै ता कउ वारि ॥ सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ होइ
अनंदु न विआपहि ताप ॥ १ ॥ ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ जासु जपत
पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की दृसटि दुख डेरा ढहै ॥ अंमृत
नामु सीतलु मनि गहै ॥ अनिक भगत जाके चरन पूजारी ॥ सगल
मनोरथ पूरनहारी ॥ २ ॥ खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ खिन महि

सूके कीने हरिआ ॥ खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ खिन महि
निमाणे कउ दीनो मानु ॥३॥ सभ महि एकु रहिआ भरपूरा ॥ सो जापै
जिसु सतिगुरु पूरा ॥ हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ कहु नानक जिसु
आपि दइआरु ॥४॥१३॥२६॥ भैरउ महला ५ ॥ मोहि दुहागनि आपि
सीगारी ॥ रूप रंग दे नामि सवारी ॥ मिटिओ दुखु अरु सगल संताप
॥ गुर होए मेरे माई बाप ॥१॥ सखी सहेरी मेरै ग्रसति अनंद ॥ करि
किरपा भेटे मोहि कंत ॥१॥ रहाउ ॥ तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥
मिटे अंधेर भए परगासा ॥ अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ गुरु पूरा
पूरा परसाद ॥२॥ जा कउ प्रगट भए गोपाल ॥ ता कै दरसनि सदा
निहाल ॥ सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ जा कउ सतिगुरि दीओ
नाम ॥३॥ जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ मनु तनु सीतलु हरि हरि
जपना ॥ कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ ता की रेनु बिरला को पाए
॥४॥१४॥२७॥ भैरउ महला ५ ॥ चितवत पाप न आलकु आवै ॥
बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ सारो दिनसु मजूरी करै ॥ हरि
सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥ १ ॥ माइआ लगि भूलो संसारु ॥
आपि भुलाइआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥
अंध बिउहार बंध मनु धावै॥ करणैहारु न जीअ महि आवै ॥२॥ करत
करत इव ही दुखु पाइआ। पूरन होत न कारज माइआ ॥ कामि क्रोधि
लोभि मनु लीना ॥ तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥ ३ ॥ जिस के
राखे होए हरि आपि ॥ हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ साध संगि
हरि के गुण गाइआ ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥
२८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ आपणी दइआ करे सो पाए ॥ हरि का नामु
मंनि वसाए ॥ साचु सबदु हिरदे मन माहि ॥ जनम जनम के
किलविख जाहि ॥१॥ राम नामु जीअ को आधारु ॥ गुरपरसादि
जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ
लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ से जन दरगह पावहि मानु ॥ सूख
सहज आनंद गुण गाउ ॥ आगै मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ जुगह

जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ हरि सिमरणु साचा बीचारु ॥ जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ तेरे भगत भगतन का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही साथि ॥४॥१६॥२९॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥१॥ नामु रतनु मेरै भंडार ॥ अगम अमोला अपर अपार ॥१॥ रहाउ ॥ नामु हमारै निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥ नामु हमारै बेपरवाहु ॥२॥ नामु हमारै भोजन भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते नामु नउनिधि पाई ॥ गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ धनवंते सोई परधान ॥ नानक जाकै नामु निधान ॥४॥१७॥३०॥ भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तू है मेरा माता॥तू मेरे जीअ पान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥ १ ॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ परसादि रंग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥२॥ तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ साध संगि तुमरे गुण गाउ ॥ तुमरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ तुमरी मइआ ते कमल बिगासु ॥३॥ हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ गुण गावै नानकु नित तेरे ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥ १ ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु होइ ॥ करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ प्रगट भइआ साधू कै संगि ॥ भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥ २ ॥ देदे तोटि नही भंडार ॥ खिन महि थापि उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ सिरि

पातिसाहा साचा सोइ ॥ ३ ॥ जिस की ओट तिसै की आसा ॥ दुखु
सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ नानकु
तिस की उसतति करदा ॥ ४ ॥ १६ ॥ ३२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ रोवन
हारी रोजु बनाइआ ॥ बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि
बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥ १ ॥ बिखिआ
का सभु धंधु पसारु ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥१॥ रहाउ ॥ त्रिबिधि
माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही
बिनु नाम धिआए ॥ नाम निधानु बडभागी पाए ॥ २ ॥ स्वांगी सिउ
जो मनु रीझावै ॥ स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ मेघ की छाइआ
जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह बिकार ॥ ३ ॥ एक वसतु जे पावै
कोइ ॥ पूरण काजु ताही का होइ ॥ गुरप्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥
नानक आइआ सो परवानु ॥ ४ ॥ २० ॥ ३३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ संत
की निंदा जोनी भवना ॥ संत की निंदा रोगी करना ॥ संत की निंदा
दूख सहाम ॥ डानु दैत निंदक कउ जाम ॥ १ ॥ संत संगि करहि जो
बादु ॥ तिन निंदक नाही किछु सादु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत की निंदा
कंधु छेदावै ॥ भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ भगत की निंदा गरभ
महि गलै ॥ भगत की निंदा राज ते टलै ॥ २ ॥ निदक की गति कतहू
नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ चोर जार जूआर ते बुरा ॥
अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम के भगत निरवैर ॥
सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ नानक
किरतु न जाइ मिटाइआ ॥४॥२१॥३४॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै
बेद अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु
हमारै गुर की सेव ॥ १ ॥ गुरि पूरै द्रिड़िओ हरि नामु ॥ सभ ते ऊतमु
हरि हरि कामु ॥ १ ॥रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इसनानु ॥ नामु हमारै
पूरन दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥
२ ॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥ नामु हमारै तृपति सु भोग ॥ नामु
हमारै सगल आचार ॥ नामु हमारै निरमल बिउचार ॥ ३ ॥ जा कै
मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि

नानक हरिगुण गाउ ॥ साध संगि जिसु देवै नाउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ निरधन कउ तुम देवहु धना ॥ अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ सगल मनोरथ पूरन काम ॥ भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥ १ ॥ सफल सेवा गोपालराइ ॥ करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥ दास अपने कउ भगती लावहु ॥२॥ निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ मूड़ मुगध होइ चतुर सुगिआनु ॥ सगल भइआन का भउ नसै॥जन अपने कै हरि मनि बसै ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥ ततु गिआनु हरि अंमृत नाम ॥ करि किरपा संत टहलै लाए ॥ नानक साधू संगि समाए ॥४॥२३॥३६॥ भैरउ महला ५ ॥ संत मंडल महि हरि मनि वसै॥ संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ संत मंडल महि निरमल रीति ॥ संत संगि होइ एक परीति ॥ १ ॥ संत मंडलु तहा का नाउ ॥ पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ संत संगि होइ निरमल बाणी ॥ संत मंडल महि नामु वखाणी ॥ २ ॥ संत मंडल का निहचल आसनु ॥ संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ संत मंडल महि निरमल कथा ॥ संत संगि हउमै दुख नसा ॥ ३ ॥ संत मंडल का नही बिनासु ॥ संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ नानक ओति पोति भगवानु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ रोगु कवन जां राखै आपि ॥ तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥ १ ॥ सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब इहु न सो तब किनहि उपाइआ ॥ कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ आपहि मारि आपि जीवालै ॥ अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥ २ ॥ सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥ ३ ॥ सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ जीउ प्रान धन तुम्हरै

पासि ॥ इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥ करि किरपा नानक सुखु
पाए ॥४॥२५॥३८॥ भैरउ महला ५ ॥ तेरी टेक रही कलि माहि ॥
तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै
जंजालु ॥ १ ॥ दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ सभ महि रविआ साहिबु एक
॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आनंद ॥ तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥
तेरी टेक तरीऐ भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुखसागरु ॥ २ ॥ तेरी
टेक नाही भउ कोइ ॥ अंतरजामी साचा सोइ ॥ तेरी टेक तेरा मनि
ताणु ॥ ईहां ऊहां तू दीबाणु ॥ ३ ॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल
धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ सिमरि
नानक साचे गुणतासा ॥४॥२६॥३९॥ भैरउ महला ५ ॥ प्रथमे छोडी
पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ लोभु मोहु सभु कीनो
दूरि ॥ परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥ १ ॥ ऐसो तिआगी विरला कोइ
॥ हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि का छोडिआ
संगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ नाम धिआए हरि हरि हरे ॥
साध जना कै संगि निसतरे ॥ २ ॥ वैरी मीत होए संमान ॥ सरब महि
पूरन भगवान ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै हरि
नामु दृड़ाइआ ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ सोई भगतु
जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ताकी पूरी
पई ॥ ४ ॥२७॥४०॥ भैरउ महला ५ ॥ सुखु नाही बहुतै धनि खाटे
॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब
सुखा हरि हरि गुण गाए ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद लहहु ॥ साध
संगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ बंधन करम धरम हउ करता ॥
बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निजघरि बसै ॥
२ ॥ सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार
॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु तिनै जनि
जपना ॥ ३ ॥ गुर अपने आगै अरदासि करि किरपा पुरख
गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई

॥ ४ ॥ २८ ॥ ४१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर मिलि तिआगिओ दूजा
भाउ ॥ गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रंगु लागा
॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ १ ॥ करि किरपा अपनी सेवा
लाए ॥ साधू संगि सरब सुख पाए ॥१॥ रहाउ ॥ रोग दोख गुर सबदि
निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे॥ गुर भेटत मनि भइआ अनंद
॥ सरब निधान नाम भगवंत ॥२॥ जनम मरण की मिटी जम तास ॥
साध संगति ऊंध कमल बिगास ॥ गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥
पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई
जपि हरि हरि नामु ॥ कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि
जपउ हरि हरी ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४२ ॥ भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊचा
जा का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला
दुखु जाइ॥सरब सूख वसहि मनि आइ ॥१॥ सिमरि मना तू साचा सोइ
॥ हलति पलति तुमरी गति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुरख निरंजन
सिरजनहार ॥ जीअ जंत देवै आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार
॥ भगति भाइ सदा निसतार ॥२॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर
पूरे ते निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ ता का
सगल मिटै अंधिआरा ॥३॥ पारब्रहम सिउ लागो धिआन ॥ पूरन
पूरि रहिओ निरबान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर
भए दइआल ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४३ ॥ भैरउ महला ५ ॥ जिसु सिमरत
मनि होइ प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि परापति
जिसु प्रभु देइ ॥ पूरे गुर की पाए सेव ॥१॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ
॥ आठ पहर मेरे मन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ जो इछहि सोई फलु पाए ॥
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ भगति
भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥ २ ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ तूटे
माइआ मोह पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रहमु करे
जिसु दाति ॥ ३ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के
अंतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ नानक दास
तेरी सरणाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४४ ॥ भैरउ महला ५

॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि
सिमरनु छाडि परमगति चाहै ॥ मूल ब्रिना साखा कत आहै ॥ १ ॥
गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि
हरि संगि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ मन
कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन
ब्रिनु बिरथा पूलु ॥ २ ॥ ब्रिनु खाए बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ तां
उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि ब्रिआपिआ ॥ जिनि प्रभि कीना
सो प्रभु नही जापिआ ॥ ३ ॥ धनु धनु साध धंनु हरि नाउ ॥ आठ
पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ सरणि
नानक प्रभ पुरख अपार ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४५ ॥ भैरउ महला ५ ॥ गुर
सुप्रसंन होए भउ गए ॥ नाम निरंजन मन महि लए ॥ दीन दइआल
सदा किरपाल ॥ बिनसि गए सगले जंजाल ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद
घने ॥ साध संगि मिटे भै भरमा अंमृतु हरि हरि रसन भने ॥ १ ॥
रहाउ ॥ चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिओ महा
परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ राखनहार गोविद गुर आपि
॥ २ ॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ भगत जना के सास निहारै ॥
मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥ ३ ॥ निरमल
सोभा निरमल रीति ॥ पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा
गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४६ ॥
भैरउ महला ५ ॥ करणकारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीउ प्राण सुखदाता
नेरा ॥ भैभंजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥ १ ॥
जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥
१ ॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरदेव ॥ सभि फलदाता निरमल
सेव ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीओ
निवास ॥ २ ॥ सदा अनंदु नाही किछु सोगु ॥ दूखु दरदु नह
बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रहम गुर अगम
अपार ॥ ३ ॥ निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रहम पूरन मनि
भाणी ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ नानक सभु

किछु प्रभ ते होइ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४७ ॥ भैरउ महला ५ ॥ मनु तनु राता
राम रंगि चरणे ॥ सरब मनोरथ पूरण करणे ॥ आठ पहर गावत
भगवंतु ॥ सतिगुरु दीनो पूरा मंतु ॥ १ ॥ सो वडभागी जिसु नामि
पिआरु ॥ तिस कै संगि तरै संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी जि
सिमरै एक ॥ सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवंता जि सिमरै
सुआमी ॥ सो पतिवंता जे आपु पछानी ॥ २ ॥ गुर परसादि परमपदु
पाइआ ॥ गुण गुोपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ तूटे बंधन पूरन आसा
॥ हरि के चरन रिद माहि निवासा ॥३॥ कहु नानक जा के पूरन करमा
॥ सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु पावन सभि कीने ॥
राम रसाइणु रसना चीने ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४८ ॥ भैरउ महला ५ ॥ नामु
लैत किछु बिघनु न लागै ॥ नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत
सभ दूखह नासु ॥ नामु जपत हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ निरबिघन
भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥१॥ रहाउ
॥ हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥
हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥२॥
हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ जाति
अजाति जपै जनु कोइ ॥ जो जापै तिस की गति होइ ॥ ३ ॥ हरि का
नामु जपीऐ साध संगि ॥ हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ नानक कउ प्रभ
किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४९ ॥
भैरउ महला ५ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥
जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ करणकारण पूरन समरथु ॥ १ ॥ प्रभ
की ओट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु
न आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे वणु तृणु त्रिभवण सारु ॥ जा
कै सूति परोइआ संसारु ॥ आपे सिव सकती संजोगी ॥ आपि
निरबाणी आपे भोगी ॥ २ ॥ जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥
तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ गुण
गावै नानकु साध संगि ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥
ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइ सुप्रसंन ॥

नानक दास सेई जन धंन ॥४॥३७॥५०॥ भैरउ महला ५ ॥ भगता
मनि आनंदु गोबिंद ॥ असथिति भए बिनसी सभ चिंद ॥ भै भ्रम
बिनसि गए खिन माहि ॥ पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ १ ॥ राम
राम संत सदा सहाइ ॥ घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ
ठाइ ॥१॥ रहाउ ॥ धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण
नित सुख प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न छोडै
सद ही साथ ॥२॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ सारि सम्हाले साचा
सोइ ॥ मात पिता सुत बंधु नराइणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइणु
॥३॥ तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ एक बिना दूजा नही होरु ॥
नानक कै मनि इहु पुरखारथु ॥ प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥४॥३८॥
५१ ॥ भैरउ महला ५ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥
सगल बिआधि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥ १ ॥
रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम
॥ जन का दरसु बांछै दिन राती होइ पुनीत धरमराइ जान ॥ १ ॥
काम क्रोध लोभ मद निंदा साध संगि मिटिआ अभिमान ॥ ऐसे संत
भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥ २ ॥ ३९ ॥ ५२ ॥
भैरउ महला ५ ॥ पंचम जमी जो पंचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित
उठि भाखै ॥ चक्र बणाइ करै पाखंड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रंड
॥ १ ॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे मुकति न पाईऐ
साची दरगहि साकत मूठु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नही
जानै ॥ लीपिऐ थाइ न सुचि हरि मानै ॥ अंतरु मैला बाहरु नित धोवै
॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥ २ ॥ माइआ कारणि करै
उपाउ ॥ कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ जिनि कीआ तिसु चीति न
आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥ ३ ॥ जिसनो करमु करे करतारु ॥
साध संगि होइ तिसु बिउहारु ॥ हरिनाम भगति सिउ लागा रंगु ॥
कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५३ ॥ भैरउ महला ५
॥ निंदक कउ फिटके संसारु ॥ निंदक का झूठा बिउहारु ॥ निंदक
का मैला आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥ १ ॥ निंदकु

मुआ निंदक कै नालि ॥ पारब्रहम परमेसरि जन राखे निंदक कै सिरि
कड़किओ कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥
निंदक झूठ बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निंदक
कउ दई छोडै नाहि ॥२॥ हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ निंदक कउ
लागै दुख सांगै ॥ बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ मुख ते बोलिआ
तां कढिआ बीचारि ॥ ३ ॥ अंतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु
निहचलु होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु
बीचारि ॥४॥४१॥५४॥ भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि
॥ जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ कोटि
बार जाई बलिहार ॥१॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार मिटहि
प्रभ सिमरत जनम जनम को मैलु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ जा कै गृह महि
सगल निधान ॥ जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरन
हार ॥ जीअ प्रान भगतन आधार ॥२॥ घटि घटि अंतरि सगल
प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न बिरथी
जाइ ॥ मन तन अंतरि एकु धिआइ ॥ ३ ॥ गुर उपदेसि दइआ
संतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥ करि किरपा लीजै लड़ि
लाइ ॥ चरन कमल नानक नित धिआइ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५५ ॥ भैरउ
महला ५ ॥ सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ कारजु आइआ सगला
रासि ॥ मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ
॥ १ ॥ सभ ते वड समरथ गुर देव ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥
रहाउ ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥
पारब्रहमु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥ २ ॥ जा
कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु ॥ बीस
बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रहम का निवासु ॥ ३ ॥
तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥
सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा
॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५६ ॥

रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥ अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ अनिक गुनित धुनित ललति अनिक धार मुनी ॥ १ ॥ अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥

भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ अंम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥१॥ नानक हउमै रोग बुरे ॥ जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥१॥ रहाउ ॥ आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ जिन कउ नदरि भई गुर मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥२॥ पउणु पाणी बसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटंब संजोगी ॥३॥ रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥५॥ रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥ ६ ॥ मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ नामु विसारि चलहि अनमारगि अंत कालि पछुताही ॥७॥ तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥८॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ नानक हरिजन अनदिनु निरमल जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥९॥१॥

भैरउ महला ३ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ
॥ अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ
॥ कारणु करता करदा आइआ ॥१॥ गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु
॥ हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥१॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलादु पड़ण
पठाइआ ॥ लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार ॥
मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥२॥ पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ
माइ ॥ परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ निरभउ दाता हरि जीउ
मेरै नालि ॥ जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥ ३ ॥ प्रहलादि
सभि चाटड़े विगारे ॥ हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥
सभ नगरी महि भगति दृड़ाई ॥ दुसट सभा का किछु न वसाई ॥४॥
संडै मरकै कीई पूकार ॥ सभे दैत रहे झख मारि ॥ भगत जना की पति
राखै सोई ॥ कीते कै कहिऐ किआ होई ॥५॥ किरत संजोगी दैति राजु
चलाइआ ॥ हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ पुत्र प्रहलाद सिउ
वादु रचाइआ ॥ अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥ ६ ॥ प्रहलादु
कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ निरभउ बालकु मूलि न डरइ
मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ
धराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ
॥७॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई
॥ जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥
८ ॥ थंम्हु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहंकारी दैतु मारि
पचाइआ ॥ भगता मनि आनंदु वजी वधाई ॥ अपने सेवक कउ
दे वडिआई ॥ ९ ॥ जंमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ आवणु जाणा
करतै लिखि पाइआ ॥ प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥
भगता का बोलु आगै आइआ ॥ १० ॥ देव कुली लखिमी
कउ करहि जैकारु ॥ माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ लखिमी
भउ करै न साकै जाइ ॥ प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥

११ ॥ सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइआ ॥ राजु मालु झूठी सभ माइआ
॥ लोभी नर रहे लपटाइ ॥ हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥
१२ ॥ कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ से परवाणु जिनी हरि सिउ
चितु लाइआ ॥ भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ करतै अपणा
रूपु दिखाइआ ॥ १३ ॥ १ ॥ २ ॥ भैरउ महला ३ ॥ गुर सेवा ते
अंमृत फलु पाइआ हउमै तृसन बुझाई ॥ हरि का नामु हिदै मनि वसिआ
मनसा मनहि समाई ॥१॥ हरि जीउ कृपा करहु मेरे पिआरे ॥ अनदिनु
हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना
कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ आपि तरहि सगले
कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥ २ ॥ भगता की पैज रखहि तू आपे
एह तेरी वडिआई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती
न राई ॥ ३ ॥ हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई
॥ जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥ ४ ॥ जगतु उपाइ
तुधु धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई ॥ जनमु पदारथु जूऐ हारिआ
सबदै सुरति न पाई ॥ ५ ॥ मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति
अगिआन अंधारा ॥ भवजलु पारि न पावहि कबही डूबि मुए बिनु गुर
सिरि भारा ॥ ६ ॥ साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए
॥ गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥ ७ ॥ तूं आपि
निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानकु तिन कै
सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ जिसु
नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥
नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥ १ ॥ तिसु सालाही जिसु हरि धनु
रासि ॥ सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ १ ॥रहाउ॥ जिसु नामु
रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना॥ जिसु
नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना धृगु जीवणु मूआ ॥ २ ॥

जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता
॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउनिधि पाई ॥ नाम बिना भ्रमि आवै जाई
॥ ३ ॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही
लाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ नाम बिना मनमुख
गावारा ॥ ४ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ जिसु नामु
रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नाम
हीण नाही पति वेसाहु ॥ ५ ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥
जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा
॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥ ६ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि
पहारा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो
पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥ ७ ॥ तिनि नामु
पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ साध संगति महि लखे गुोपाल ॥
आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥ ८
॥ १ ॥ ४ ॥ भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार ॥ कोटि
ब्रहमंड जाके ध्रमसाल ॥ कोटि महेस उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रहमे जगु
साजणु लाए ॥ १ ॥ ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुण
बिसथारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ कोटि जीअ
जा की सिहजाइ ॥ कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत
हरि संगि ॥ २ ॥ कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है
दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जाकी द्रसटी माहि ॥ कोटि नाम जा की कीमति
नाहि ॥ ३ ॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ कोटि अखारे चलित
बिसमाद ॥ कोटि सकति सिव आगिआकार ॥ कोटि जीअ देवै आधार
॥ ४ ॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र जपत नाम चार
॥ कोटि पूजारी करते पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥ ५ ॥
कोटि महिमा जा की निरमल हंस ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस
॥ कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि
॥ ६ ॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी धरत धिआनु
॥ कोटि तपीसर तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मुोनि महि रहते ॥ ७ ॥

अबिगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरि मोकउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज आनंता ॥ नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥ १ ॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ अचिंत हमारै भरे भंडार ॥ २ ॥ अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ अचिंत हमारे लथे विसूरे ॥ अचिंत हमारै वैरी मीता ॥ अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥ ३ ॥ अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ अचिंत हम्हा कउ सगल सिधांतु ॥ अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥ ४ ॥ अचिंत हमारे बिनसे वैर ॥ अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥ ५ ॥ अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥ अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥ ६ ॥ अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥ ७ ॥ अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ चिंत अचिंता सगली गई ॥ प्रभ नानक नानक नानक मई ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ बाणी भगता की कबीर जीउ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ गांठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ भगति करउ जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी ॥ तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥ २ ॥ नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ नाउ मेरे संगि अंति होइ सखाई ॥ ३ ॥ माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ कहि कबीर हउ ता को दासु ॥४॥१॥ नांगे आवनु नांगे जाना ॥ कोइ न रहिहै राजा राना ॥ १ ॥ रामु राजा नउनिधि मेरै ॥ संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥

॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत संग न जात संगाती ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी ॥२॥ लंका गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥३॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥४॥२॥ मैला ब्रहमा मैला इंदु ॥ रवि मैला मैला है चंदु ॥ १ ॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥ १ ॥ ॥रहाउ॥ मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ मैले निसिबासुर दिन तीस ॥ २ ॥ मैला मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥ ३ ॥ मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक अरु भेख ॥ ४ ॥ मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ हंस समेति ॥ ५ ॥ कहि कबीर ते जन परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥६॥३॥ मनु करि मका किबला करि देही ॥ बोलनहारु परम गुरु एही ॥१॥ कहु रे मुलां बांग निवाज ॥ एक मसीति दसै दरवाज ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥२॥ हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ कह करै मुलां कह करै सेख ॥३॥ कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥४॥४॥ गंगा के संग सलिता बिगरी ॥ सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥१॥ बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन कै संगि तरवरु बिगरओ ॥ सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥ २ ॥ पारस के संग तांबा बिगरिओ ॥ सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ ॥ ३ ॥ संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥४॥ ५ ॥ माथे तिलकु हथि माला बानां ॥ लोगन रामु खिलउना जानां ॥१॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥ २ ॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ ऐसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥ ३ ॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम पहिचानां ॥ ४ ॥ ६ ॥ उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ सुंन सहज महि बुनत हमारी ॥१॥ हमरा झगरा रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलां छाडे दोऊ ॥१॥रहाउ॥

बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥ २
॥ पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥ छाडि चले हम कछू न लीआ ॥ ३
॥ रिदै इखलासु निरख ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥
४॥७॥ निरधन आदरु कोई न देइ ॥ लाख जतन करै ओहु चिति न
धरेइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगै बैठा पीठि
फिराइ ॥ १ ॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ
बुलाइ ॥ २ ॥ निरधन सरधनु दोनउ भाई ॥ प्रभ की कला न मेटी जाई
॥ ३ ॥ कहि कबीर निरधन है सोई ॥ जा कै हिरदै नामु न होई ॥
४ ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस
देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥ १ ॥ भजहु
गोबिंद भूलि मत जाहु ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ
॥ जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥
२॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न भजिआ जाई ॥
जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥ ३
॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन ही पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि
ता के खुल्हे कपाट ॥ बहुरि न आवै जोनी बाट ॥ ४ ॥ इही तेरा अउसरु
इह तेरी बार ॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै
हारि॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥५॥१॥९॥ सिव की पुरी बसै
बुधि सारु ॥ तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ ईत ऊत की सोझी परै
॥कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥ १ ॥ निजपद ऊपरि लागो धिआनु
॥ राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूल दुआरै
बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपर गहि राखिआ चंदु ॥ पछम दुआरै सूरजु
तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥ २ ॥ पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥
तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ कहि
कबीर ता का अंतु न पारु ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥ सो मुलां जो मन
सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ काल पुरख का मरदै
मानु ॥ तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥१॥ है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥

दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ ॥ काजी सो जु काइआ बीचारै
॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥ सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु
काजी कउ जरा न मरना ॥२॥ सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ बाहरि
जाता भीतरि आनै ॥ गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ सो सुरतानु
छत्रु सिरि धरै ॥३॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ हिंदू राम नामु उचरै
॥ मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥४॥
३ ॥ ११ ॥ महला ५ ॥ जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा
होवै सेव ॥ जो पाथर की पांई पाइ ॥ तिस की घाल अजांई जाइ
॥ १ ॥ ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता
॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ भ्रम का मोहिआ पावै
फंधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव
॥ २ ॥ जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उसते कहहु कवन फल पावै ॥
जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ तां मिरतक का किआ घटि जाई
॥३॥ कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥
दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥४॥१२॥
जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥
काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ भुइअंगम भृंग माइआ महि
खापे ॥ १ ॥ माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते
डहकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंखी मृग माइआ महि राते ॥ साकर माखी
अधिक संतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासी
माइआ महि खेला ॥ २ ॥ छिअ जती माइआ के बंदा ॥ नवै नाथ
सूरज अरु चंदा ॥ तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ माइआ महि
कालु अरु पंच दूता ॥३॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥
बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ मांजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख
मूल माइआ महि परा ॥ ४ ॥ माइआ अंतरि भीने देव ॥ सागर
इंद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब
छूटे जब साधू पाइआ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १३ ॥ जब लगु मेरी मेरी
करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥

तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि
की न सिमरहु दुख भंजना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लग सिंघु रहै बन
माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ
॥ फूलि रही सगली बनराइ ॥ २ ॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर
परसादी पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु
लिव लाइ ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४ ॥ सतरि सैइ सलार है जा के ॥ सवा
लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि
जा कै खेल खासी ॥ १ ॥ मो गरीब की को गुजरावै ॥ मजलसि दूरि
महलु को पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है खेलखाना ॥ चउरासी
लख फिरै दिवानां ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि
भी भिसति घनेरी पाई ॥ २ ॥ दिल खलहलु जा कै जरद रूबानी ॥
छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ अपना कीआ
पावै सोई ॥ ३ ॥ तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ
बजगारी ॥ दासु कबीरु तेरी पनह समानां ॥ भिसतु नजीकि राखु
रहमाना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १५ ॥ सभु कोई चलन कहत है ऊहां ॥ ना
जानउ बैकुंठु है कहां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानां
॥ बातन ही बैकुंठु बखानां ॥ १ ॥ जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥
तब लगु नाही चरन निवास ॥ २ ॥ खाई कोटु न परलपगारा ॥ ना
जानउ बैकुंठ दुआरा ॥ ३ ॥ कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ साध
संगति बैकुंठै आहि ॥ ४ ॥ ८ ॥ १६ ॥ किउ लीजै गढु बंका भाई ॥
दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥१॥ रहाउ ॥ पांच पचीस मोह मद मतसर
आडी परबल माइआ ॥ जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ
रघुराइआ ॥१॥ कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा ॥
क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥२॥ स्वाद सनाह
टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाइ ॥ तिसना तीर रहे घट भीतर इउ
गढु लीओ न जाइ ॥ ३ ॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु
चलाइआ ॥ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥४॥ सतु
संतोखु लै लरने लागा तोर दुइ दरवाजा ॥साध सगति अरु गुरकी कृपा त

पकरिओ गढ को राजा ॥ ५ ॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी
काल भै फासी ॥ दासु कमीरु चड़िओ गढ़ ऊपरि राजु लीओ अबनासी
॥६॥९॥१७॥ गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे
कबीर ॥ १ ॥ मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु
रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥ गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला
पर बैठे कबीर ॥२॥ कहि कबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन
है रघुनाथ ॥ ३ ॥ १० ॥ १८ ॥

भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अगम द्रुगम गड़ि रचिओ
बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥
जिह पउड़े प्रभ बाल गोबिंद ॥१॥ इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥
जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥१॥ रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति
॥ हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार ॥ जिह
पउढ़े प्रभ स्री गोपाल ॥२॥ खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ त्रिअ असथान
तीनि त्रिअ खंडा ॥ अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै
को धरनीधर मंत ॥ ३ ॥ कदली पुहप धूप परगास ॥ रज पंकज महि
लीओ निवास॥दुआदस दल अभ अंतरि मंत॥जह पउड़े स्री कमलाकंत
॥४॥ अरध उरध मुखि लागो कासु ॥ सुंन मंडल महि करि परगासु ॥
ऊहां सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु करै अनंद ॥ ५ ॥ सो ब्रहमंडि
पिंडि सो जानु ॥ मानसरोवरि करि इसनानु ॥ सोहं सो जा कउ है जाप
॥ जा कउ लिपत न होइ पुंन अरु पाप ॥६॥ अबरन बरन घाम नही
छाम ॥ अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइ ॥
सुंन सहज महि रहिओ समाइ ॥७॥ मन मधे जानै जे कोइ ॥ जो बोलै
सो आपै होइ ॥ जोति मंत्रि मनि असथिरु करै ॥ कहि कबीर सो प्रानी
तरै ॥८॥१॥ कोटि सूर जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास
॥ दुरगा कोटि जाकै मरदनु करै ॥ ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥ १ ॥
जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥ १ ॥

रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव
ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जाकै प्रतिहार ॥ २ ॥ पवन कोटि
चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि
जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार ॥ ३ ॥ कोटि कमेर
भरहि भंडार ॥ कोटिक लखमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुंन बहु
हिरहि ॥ इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥४॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार
॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि
कला खेलै गोपाल ॥५॥ कोटि जग जाकै दरबार ॥ गंध्रब कोटि करहि
जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै
॥६॥ बावन कोटि जाकै रोमावली ॥ रावन सैना जह ते छली ॥ सहस
कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥७॥ कंद्रप कोटि
जाकै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि
सारिगपान ॥ देहि अभै पदु मांगउ दान ॥८॥२॥१८॥२०॥

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामि न
उचरसि स्री गोबिंद ॥१॥ रंगीले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले
हरि हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण
पदु इकु हरि को नामु ॥२॥ असंख कोटि अनपूजा करी ॥ एक न पूजसि
नामै हरी ॥३॥ प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ अनंत रूप तेरे नाराइणा
॥४॥१॥ परधन परदारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥ जो
न भजंते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥ जिन
कै भीतरि है अंतरा ॥ जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥ २ ॥ प्रणवति नामदेउ
नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥ दूधु कटोरै गडवै पानी
॥ कपल गाइ नामे दुहि आनी ॥ १ ॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ सुोइन कटोरी अंमृत भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥
२ ॥ एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु

हसै ॥ ३ ॥ दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥ १ ॥ भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ रसना राम रसाइनु पीजै ॥२॥ अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥ ३ ॥ उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ कबहू घर घर टूक मगावै ॥ कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १ ॥ जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २ ॥ कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ ३ ॥ भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥४॥५॥ हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥१॥ हीनड़ी जात मेरी जादिम राइआ ॥ छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥ २ ॥ जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ ३ ॥ ६ ॥

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ तृखावंत जल सेती काज ॥ जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥ नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २ ॥ साई प्रीति जि आपे लाए ॥ गुरपरसादी दुबिधा जाए ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ ३ ॥ जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥ १ ॥

घर की नारि तिआगै अंधा ॥ परनारी सिउ घालै धंधा ॥ जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥ पापी का घरु अगने माहि ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि की भगति न देखै जाइ ॥ मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ मूलहु भूला आवै जाइ ॥ अंम्रितु डारि लादि बिखु खाइ ॥२॥ जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ कापरु पहिरि करहि सींगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वा के गले जम का है फास ॥ ३ ॥ जाके मसतकि लिखिओ करमा ॥ सो भजि परि है गुर की सरना ॥ कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ इन बिधि संतहु उतहु पारि ॥४॥२॥ संडा मरका जाइ पुकारे ॥ पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ राम कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥ राम नामा जपिबो करै ॥ हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥ दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥ काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बतावउ जु तुहि राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥४॥ हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवहि रामु अभै पद दाता ॥ ५ ॥ ३ ॥ सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥ नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥२॥ बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥ मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करिहै रामु होइ है सोइ ॥ ४ ॥ बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥ ५ ॥ रुदनु करै नामे की माइ ॥ छोडि राम की न भजहि खुदाइ ॥ ६ ॥ न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥ ७ ॥ करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ ८ ॥ काजी मुलां करहि सलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥ ९ ॥ बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ नामे

सर भरि सोना लेहु ॥ १० ॥ मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु
छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥ ११ ॥ पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ नामा
गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥ गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा
हरि करता रहै ॥ १३ ॥ सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न
आइओ त्रिभवन धणी ॥ १४ ॥ पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चड़े
गोबिंद आइला ॥ १५ ॥ अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ़े
आए गोपाल ॥ १६ ॥ कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त ले
करि ऊपरि धरउ ॥ १७ ॥ कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ सभु कोई
देखै पतीआइ ॥ १८ ॥ नामा प्रणवै सेलमसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा
मेलि ॥ १९ ॥ दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे
धरी ॥ २० ॥ बादिसाहु महल महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी
आइ ॥ २१ ॥ काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ बखसी हिंदू मै तेरी गाइ
॥ २२ ॥ नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ
॥ २३ ॥ इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितान
॥ २४ ॥ नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि
॥ २५ ॥ जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ
॥ २६ ॥ नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पारि
॥ २७ ॥ सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ नामे नाराइन नाही भेदु
॥ २८ ॥ १ ॥ १० ॥ घरु २ ॥ जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ जउ
गुरदेउ त उतरै पारि ॥ जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ जउ गुरदेउ त
जीवत मरै ॥ १ ॥ सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ झूठु झूठु
झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै
॥ जउ गुरदेउ न दहदिस धावै ॥ जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ जउ
गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥ २ ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी ॥ जउ
गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित देह ॥ जउ गुरदेउ
नामु जपि लेहि ॥ ३ ॥ जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ जउ
गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ जउ
गुरदेउ सदा साबासि ॥ ४ ॥ जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ जउ

गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥ जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥ ५ ॥ जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥ ६ ॥ जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥७॥ जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ जउ गुरदेउ त भउ जल तरै ॥ जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥८॥ जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ नामदेउ गुर की सरणाई ॥ ९ ॥ १ ॥ २ ॥ ११॥

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहति जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकाम ॥ १ ॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै रहै ॥ २ ॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३॥ घृत कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥

नामदेव ॥ आउ कलंदर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥रहाउ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ चमरपोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥१॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥ २ ॥ देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥ भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥ १ ॥ भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥ २ ॥ अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥ ३ ॥ माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ महला १ बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥ किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥ १ ॥ तेरा दासनिदासा कहउ राइ ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ तेरा दासनिदासा कहउ राइ ॥ २ ॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा ॥ तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥ ३ ॥ नानकु वेचारा किआ कहै ॥ सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला १

॥ सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥
गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥१॥
रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥ जामि न भीजै साच नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
दसअठ लीखे होवहि पासि ॥ चारे बेद मुखागर पाठि ॥ पुरबी नावै
वरनां की दाति ॥ वरत नेम करे दिन राति ॥२॥ काजी मुलां होवहि
सेख़ ॥ जोगी जंगम भगवे भेख ॥ को गिरही करमा की संधि ॥ बिनु
बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥३॥ जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ करणी
उपरि होवगि सार ॥ हुकमु करहि मूरख गावार ॥ नानक साचे के
सिफति भंडार ॥४॥३॥ बसंतु महला ३ तीजा ॥ बसत्र उतारि दिगंबरु
होगु ॥ जटा धारि किआ कमावै जोगु ॥ मनु निरमलु नही दसवै दुआर
॥ भ्रमि भ्रमि आवै मूड़ा वारो वार ॥१॥ एकु धिआवहु मूढ़ मना ॥
पारि उतरि जाहि इक खिनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र करहि
वखिआण ॥ नादी बेदी पढ़हि पुराण ॥ पाखंड द्रिसटि मनि कपटु कमाहि
॥ तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥ २ ॥ जे को ऐसा संजमी होइ ॥ किआ
विसेख पूजा करेइ ॥ अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ ओइ निरंजनु
कैसे पाहि ॥३॥ कीता होआ करं किआ होइ ॥ जिसनो आपि चलाए
सोइ ॥ नदरि करे तां भरमु चुकाए ॥ हुकमै बूझै तां साचा पाए ॥ ४ ॥
जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ नानक मिलीऐ
सतिगुर संग ॥ तउ भवजल के तूटसि बंध ॥५॥४॥ बसंतु महला १ ॥
सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ तू सुरि
नाथा देवा देव ॥ हारनामु मिलै गुर चरन सेव ॥१॥ मेरे सुंदर गहिर
गंभीर लाल॥गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरंपर सरब पाल ॥१॥
रहाउ ॥ बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ बिनु गुर मैल मलीन अंगु
॥ बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥२॥ जा
कउ तू राखहि रखनहार ॥ सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ बिखु हउमै
ममता परहराइ ॥ सभि दूख बिनासे रामराइ ॥ ३ ॥ ऊतम गति
मिति हरि गुन सरीर ॥ गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ लिव
लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ

॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला १॥ मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ मेरा पिर
रीसालू संगि साइ ॥ ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥ गुरि संगि
दिखाइओ रामराइ ॥ १ ॥ मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ हरि प्रभ
संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥१॥रहाउ॥ मनमुखी
दुहागणि नाहि भेउ॥ ओहु घटि घटि रावै सरब प्रेउ॥ गुरमुखि थिरु चीनै
संगि देउ ॥ गुरि नामु दृड़ाइआ जपु जपेउ ॥ २ ॥ बिनु गुर भगति न
भाउ होइ ॥ बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥
मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥ ३ ॥ गुरि मनु मारिओ करि
संजोगु ॥ अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु
॥ जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥४॥ ६ ॥ बसंतु महला १ ॥ आपे
कुदरति करे साजि ॥ सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ गुरमति ऊतम
संगि साथि ॥ हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥ १ ॥ मत बिसरसि
रे मन राम बोलि ॥ अपरंपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि
तुलाए अतुलु तोलि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरन सरेवहि गुर सिख तोर
॥ गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ गुर
सेव न भाई सि चोर चोर ॥ २ ॥ गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ गुरि
तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ हरि
भगति सुहावी करमि भागु ॥ ३ ॥ गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ गुर
सिख पिआरे दिनसु राति ॥ फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ कहु
नानक पावहि विरले केइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३ इक तुका ॥
साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥ १ ॥ तेरी
भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ तैसे संत जन राम नाम
रवत रहै ॥ २ ॥ मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ तउ सरणागति
रहउ पइआ ॥ ३ ॥ कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ गुरप्रसादि
को पावै अंम्रित नामा ॥ ४ ॥ ८ ॥

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सालग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला॥ राम नामु जपि बेड़ा बांधहु दइआ करहु दइआला ॥१॥ काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥१॥ रहाउ ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ अंमृतु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥३॥ बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला॥प्रणवति नानकु दासनिदासा दइआ करहु दइआला ॥४॥ १ ॥ ९ ॥ बसंतु महला १ हिंडोल ॥ साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥१॥ मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कढि कसीदा पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥ जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥ २ ॥ जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ प्रणवति नानकु एकु लंघाए जे करि सचि समावां ॥३॥२॥१०॥ बसंत हिंडोल महला १ ॥ राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥१॥ सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती ॥ किन बिधि पावउ प्रानपती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥ चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥ २ ॥ राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥ ३ ॥ कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा ॥ प्रणवति नानकु दासनिदासा खिनु तोला खिनु मासा ॥ ४ ॥ ३ ॥११॥ बसंतु हिंडोल महला १ ॥ साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ करि क्रिपा हरि भगति द्रिड़ाए अनदिनु हरिगुण गाए ॥१॥ मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ

नामु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरिनामु हरी ॥२॥ घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अंमृत नामु मना ॥३॥ जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥ पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुरि संगि थीए ॥४॥४॥१२॥

बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ माहा रुती महि सद बसंतु ॥ जितु हरिआ सभु जीआ जंतु ॥ किआ हउ आखा किरम जंतु ॥ तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥१॥ तै साहिब की करहि सेव ॥ परमसुख पावहि आतमदेव ॥१॥ रहाउ ॥ करमु होवै तां सेवा करै ॥ गुरपरसादी जीवत मरै ॥ अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ इन बिधि प्रानी दुतरु तरै ॥२॥ बिखु अंमृतु करतारि उपाए ॥ संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥३॥ नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अंमृत नामु आपे देइ ॥ बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ आपणा भाणा आपि करेइ ॥४॥१॥ बसंतु महला ३॥ राते साचि हरि नामि निहाला ॥ दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ तिसु बिनो अवरु नही मै कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥१॥ गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ बिछुरत मिलाइ गुर सेव रांगे ॥ हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥२॥ पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥३॥ चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ तृसना जलत जलै अहंकारे ॥ गुरि राखे वडभागी तारे ॥ जन नानक उरि हरि अंमृतु धारे ॥ ४ ॥ २ ॥ बसंतु महला ३ ॥ हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ मनमुख मुए नाही हरि मन माहि

॥ मरि मरि जंमहि भी मरि जाहि ॥ १ ॥ से जन जीवे जिन हरि मन
माहि ॥ साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि न सेवहि
ते हरि ते दूरि ॥ दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ हरि आपे जन
लीए लाइ ॥ तिन सदा सुखु है तिलु न तमाइ ॥ २ ॥ नदरि करे चूकै
अभिमानु ॥ साचो दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ गुर
कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥३॥ जीअ जंत की करे प्रतिपाल॥गुरपरसादी
सद सम्हाल ॥ दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ नानक नामि वडाई
पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ३ ॥ अंतरि पूजा मन ते होइ ॥ एको
वेखै अउरु न कोइ ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ सतिगुरि मैनो
एकु दिखाइआ ॥१॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ
गाइ गुण गोबिंद ॥१॥ रहाउ ॥ गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ तां
प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ तउ जगजीवनु
वसै मनि आइ ॥२॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ
भरपूरि ॥ इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ सभु मेरा प्रभु आतम देउ
॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ जगजीवन सिउ आपि चितु
लाए ॥ मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ नानक नामि रहे लिव लाए
॥४॥४॥ बसंतु महला ३ ॥ भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ गुर
किरपा ते सहज सुभाइ ॥ भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ तदही साचि
मिलावा होइ ॥१॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ गुर कै हेति
साचै प्रेम पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥
गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ सदा
सांति सुखि सहजि समाइ ॥ २ ॥ साचि रते तिन सद बसंत ॥ मनु तनु
हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि तृसना
जलै वारोवार ॥ ३ ॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ सदा सुखु
सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥
नानक नामु वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ बसंतु महला ३ ॥
माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर
भाए ॥ सफलिओ बिरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम

पिआरि ॥ १ ॥ ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ सच फलु लागै सतिगुर
भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ गुर कै सबदि वेखै सद
हजूरि ॥ छाव घणी फूली बनराइ ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ
॥ २ ॥ अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ सतिगुरि गवाई विचहु
जूठि भरांति ॥ परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ गुरमुखि पाईऐ नाम
प्रसादु ॥ ३ ॥ आपे करता सभि रस भोग ॥ जो किछु करे सोई परु
होग ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥४॥
६ ॥ बसंतु महला ३ ॥ पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ एको चेतै फिरि
ज़ोनि न आवै ॥ सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ साचि नामि
सहजि समाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ हरिनामु
सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन की है साची बाणी
॥ गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ चहु जुग पसरी साची सोइ ॥
नामि रता जनु परगटु होइ ॥ २ ॥ इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥
से जन साचे साचै भाइ ॥ साचु धिआइनि देखि हजूरि ॥ संत जना
की पग पंकज धूरि ॥ ३ ॥ एको करता अवरु न कोइ ॥ गुर सबदी
मेलावा होइ ॥ जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ नानक सहजे
नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ३॥ भगति करहि जन देखि
हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ हरि सेती सद रहहि लिव लाइ
॥ पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ दासा का दासु विरला कोई होइ
॥ ऊतम पदवी पावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सेवहु अवरु न कोइ ॥
जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ तिसु बिनु
अवरु सेवी किउ माइ ॥ २ ॥ से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥
आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ गुरमुखि नामु परापति होइ ॥
मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥ ३ ॥ जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि
तू जाणु ॥ साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ॥ हरि रसु चाखै तां सुधि
होइ ॥ नानक नामि रते सचु सोइ ॥ ४ ॥८॥ बसंतु महला ३ ॥ नामि
रते कुलां का करहि उधारु ॥ साची बाणी नाम पिआरु ॥ मनमुख भूले
काहे आए ॥ नामहु भूले जनमु गवाए ॥ १ ॥ जीवत मरै मरि

मरणु सवारै ॥ गुर कै सबदि साचु उरधारै ॥१॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ जंमै मरै न आवै जाइ ॥ गुरपरसादी साचि समाइ ॥२॥ साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥३॥ आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी ॥४॥९॥ बसंतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥ १ ॥ हुकमु मंने सो जनु परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ साचि रते जिना धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥ २ ॥ एकु नामु तारे संसारु ॥ गुरपरसादी नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ सतिगुर सेवा नामु दृढ़ाए ॥ जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसंतु मरला ३ ॥ कृपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरिगुण गावै गुणी गहीर ॥१॥ नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ वृथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि सांति न होइ ॥ बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥ २ ॥ घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ नामु नवनिधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रंगि राते सचि समाहि ॥ ३ ॥ आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥ बसंतु महला ३ ॥ गुरसबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥ १ ॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि इहु

मनु मउलिआ हरि गुण दाता नामु वखाणै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ बहु संजमि सांति न पावै कोइ ॥ गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥ २ ॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥ ३ ॥ वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ छूटै राम नामि दुखु सारा ॥ हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥ ४ ॥ १२ ॥ बसंतु महला ३ इक तुके ॥ तेरा कीआ किरम जंतु ॥ देहि त जापी आदि मंतु ॥ १ ॥ गुण आखि वीचारी मेरी माइ॥हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ गुरप्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥२॥ गुरि किरपा कीनी चूका अभिमानु ॥ सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥३॥ ऊतम ऊचा सबद कामु ॥ नानकु वखाणै साचु नामु ॥४॥१३॥ बसंतु महला ३ ॥ बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥१॥ तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥ तां सुखु पावहु मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥ अंमृत फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥२॥ एको एकु सभु आखि वखाणै ॥ हुकमु बूझै तां एको जाणै ॥ ३ ॥ कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ बसंतु महला ३ ॥ सभि जुग तेरे कीते होए ॥ सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥१॥ हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ॥ गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥ फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥ २ ॥ सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ राम नामु राखै उरधारे ॥३॥ मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥ ४ ॥ १५ ॥ बसंतु महला ३ ॥ तिन बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥१॥ इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु धंधै बांधा करम कमाइ ॥ माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥ २ ॥ फिरि इहु मनु छूटै जां सतिगुरु भेटै ॥ जम काल की

आवै न फेटै ॥३॥ इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥४॥१६॥ बसंतु महला ३ ॥ बसंतु चड़िआ फूली बनराइ॥ एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥१॥ इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥ २ ॥ फल फूल लागे जां आपे लाए ॥ मूलि लगै तां सतिगुरु पाए ॥ ३ ॥ आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ नानक पूरै भागि भगति निराली ॥ ४ ॥ १७ ॥

बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि॥ गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुरसबद विटहु बलि जाई ॥ गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥ १॥ मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥ मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अंमृतु पीआइ ॥ विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥२॥ धुरि आपे जिना नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥ धूड़ि तिना की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥३॥ आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥ नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥४॥१॥१८॥१२॥१८॥३०॥

रागु बसंतु महला ४ घरु १ इक तुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥ १ ॥ एको हरि रविआ स्रब थाइ ॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥ गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥ २ ॥ एको एकु रहिआ भरपूरि॥साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥३॥ एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ नानक हरि एको करे सु होइ ॥४॥१॥ बसंतु महला ४॥ रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लए ॥ १ ॥ हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइआ गुरमति

गावहु गुण प्रभ केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख फिरि फिरि हउमै मुए ॥
कालि दैति संघारे जमपुरि गए ॥२॥ गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे
॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥३॥ भगत जना कउ हरि किरपा धारी
॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥४॥२॥

बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि
एक लुकानी ॥ सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥
१॥ माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र
परमपदु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम
धनु हिरिआ ॥ गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ
॥२॥ पाखंड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि माइआ माइआ ॥ साध
पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अधेरु गवाइआ ॥ ३ ॥ जगंनाथ
जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ नानक सांति होवै मन
अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥४॥१॥३॥ बसंतु महला ४ हिंडोल
॥ तुम्ह वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किरम तुमनछे ॥ हरि दीन
दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥ १ ॥ गोबिंद
जीउ सतसंगति मेलि करि क्रिपछे॥जनम जनम के किलविख मलु भरिआ
मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥१॥रहाउ॥ तुम्हरा जनु जाति अविजाता
हरि जपिओ पतित पवीछे॥हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा
हरि प्रभ दिनछे ॥ २ ॥ जाति अजाति कोई प्रभु धिआवै सभि पूरे
मानस तिनछे ॥ से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन हरि धारिओ हरि
उरछे ॥३॥ हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि क्रिपा प्रभ मिलछे
॥ जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीए पतित पवीछे ॥ ४ ॥२॥
४ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै
नित हरिहरि नाम रसि गीधे॥जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि
काढे बिलल बिलीधे॥१॥ गोविंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे॥वडै

भागि गुरु सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥ १ ॥ रहाउ
॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ जिउ जल
कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥ २ ॥ जन जपिओ
नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की
हउमै मलु निकसी हरि अंमृति हरि जलि नीधे ॥ ३ ॥ हमरे करम न
बिचरहु ठाकुर तुम्म पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनउ
बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ बसंतु हिंडोल
महला ४ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही
वासा पाईऐ ॥ गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि
आणि वसाईऐ ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न
सकाईऐ ॥ जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु
लहाईऐ ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते धृगु धृगु नर
जीवाईऐ ॥ जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ
॥ ३ ॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥
जन नानक निरबाणु पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥ ४ ॥
॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ आवन जाणु भइआ दुखु
बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ
जमि पकरे कालि सलुंञु ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु
॥ सत संगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंञु ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ हम
डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम्ह दीनदइआल दुख भंञु ॥ २ ॥ हरि
उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लंञु
॥ हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु
॥ ३ ॥ जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लंञु ॥
जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीओ हरि भंञु
॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥ आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥ आजु हमारै गृहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥ आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥ २ ॥ मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥ सगली रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥ बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥ तृपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥१॥ बसंतु महला ५ ॥ हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ जूआरी जूए माहि चीतु ॥ अमली जीवै अमलु खाइ ॥ तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥१॥ अपनै रंगि सभु को रचै ॥ जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेघ समै मोर निरतिकार ॥ चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ माता बारिक देखि अनंद ॥ तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥ २ ॥ सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ रणु देखि सूरे चित उलास ॥ किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥३॥ सरब रंग इक रंग माहि॥ सरब सुखा सुख हरि कै नाइ ॥ तिसहि परापति इहु निधानु॥ नानक गुरु जिसु करे दानु ॥४॥२॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु बसंतु जिसु प्रभु कृपालु ॥ तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥ मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥ तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥ १ ॥ गृहि ता के बसंतु गनी ॥ जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥१॥ रहाउ ॥ प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ गिआनु कमाईऐ पूछि जनां ॥ सो तपसी जिसु साध संगु॥ सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥ २ ॥ से निरभउ जिन भउ पइआ ॥ सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ सो इकांती जिसु रिदा थाइ ॥ सोई निहचलु साच ठाइ ॥ ३ ॥ एका खोजे एक प्रीति ॥ दरसन परसन हीत चीति ॥ हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ नानक दास तिसु जन कुरबाणु ॥ ४ ॥ ३ ॥ बसंतु महला ५

॥ जीअ प्राण तुम्ह पिंड दीन ॥ मुगध सुंदर धारि जोति कीन ॥ सभि जाचिक प्रभ तुम्ह दइआल ॥ नामु जपत होवत निहाल ॥१॥ मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥१॥ रहाउ ॥ नामु जपत होवत उधार ॥ नामु जपत सुख सहज सार ॥ नामु जपत पति सोभा होइ ॥ नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥२॥ जा कारणि इह दुलभ देहि ॥ सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ साध संगति महि इहु बिस्रामु ॥ सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥३॥ तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥ ४ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ५ ॥ प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥१॥ मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥१॥ रहाउ ॥ जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥२॥ जा के भगत आनंद मै ॥ जा के भगत कउ नाही खै ॥ जा के भगत कउ नाही भै ॥ जा के भगत कउ सदा जै ॥ ३ ॥ कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ नानकु जाचै एकु दानु ॥ करि किरपा मोहि देहु नामु ॥४॥५॥ बसंतु महला ५ ॥ मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ साध संगति तिउ हउमै छूट ॥ जैसी दासे धीर मीर ॥ तैसे उधारन गुरह पीर ॥ १ ॥ तुम दाते प्रभ देनहार ॥ निमख निमख तिसु नमसकार ॥१॥रहाउ॥ जिसहि परापति साध संगु ॥ तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ ते बंधन ते भए मुकति॥ भगत अराधहि जोग जुगति ॥ २ ॥ नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ रसना गाए गुण अनेक ॥ तृसना बूझी गुर प्रसादि ॥ मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥ ३ ॥ सेवकु लागो चरन सेव ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ सगल उधारण तेरो नामु ॥ नानक पाइओ इहु निधानु ॥ ४ ॥ ६ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तुम बड दाते दे रहे ॥ जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ दीने सगले भोजन खान ॥ मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥ १ ॥ हउ कछू न जानउ तेरी सार ॥ तू करि गति मेरी

प्रभ दइआर ॥१॥ रहाउ ॥ जाप न ताप न करम कीति ॥ आवै नाही
कछू रीति ॥ मन महि राखउ आस एक ॥ नाम तेरे की तरउ टेक ॥२॥
सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ अगम
अगम ऊचह ते ऊच ॥ हम थोरे तुम बहुत मूच ॥३॥ जिन तू धिआइआ
से गनी ॥ जिन तू पाइआ से धनी ॥ जिनि तू सेविआ सुखी से ॥
संत सरणि नानक परे ॥ ४ ॥ ७ ॥ बसंतु महला ५ ॥ तिसु तू सेवि
जिनि तू कीआ ॥ तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ तिस का चाकरु
होहि फिरि डानु न लागै ॥ तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै
॥ १ ॥ एवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ सो पाए इहु पदु निरबाणी
॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ कछू न होईहै पूरन अरथा
॥ माणस सेवा खरी दुहेली ॥ साध की सेवा सदा सुहेली ॥ २ ॥ जे
लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ साधू संगति गुरहि बताई ॥ ऊहा जपीऐ
केवल नाम ॥ साधू संगति पारगराम ॥ ३ ॥ सगल तत महि ततु
गिआनु ॥ सरब धिआन महि एकु धिआनु ॥ हरि कीरतन महि ऊतम
धुना ॥ नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥ ४ ॥ ८ ॥ बसंतु महला ५ ॥
जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥ जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥ जिसु
अराधे जमु किछु न कहै ॥ जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥ १ ॥ राम
राम बोलि राम राम ॥ तिआगहु मन के सगल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जिस के धारे धरणि अकासु ॥ घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ जिसु
सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ अंतकाल फिरि फिरि न रोइ ॥२॥ सगल
धरम महि ऊतम धरम ॥ करम करतूति कै ऊपरि करम ॥ जिस कउ
चाहहि सुरि नर देव ॥ संत सभा की लगहु सेव ॥ ३ ॥ आदि पुरखि
जिसु कीआ दानु ॥ तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ तिस की गति
मिति कही न जाइ ॥ नानक जन हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ९ ॥
बसंतु महला ५ ॥ मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ गुरि दइआलि
पूरी मेरी आस ॥ किलविख काटे साध संगि ॥ नामु
जपिओ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ गुरपरसादि बसंतु बना ॥ चरन
कमल हिरदै उरिधारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥

समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीअ जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥ २ ॥ भवखंडन दुखनास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ताकी सेव ॥ धरणि आकासु जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ जपि जीवै नानक तेरो नामु ॥ ४ ॥ १० ॥ बसंतु महला ५ ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नही संताप ॥ गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥ १ ॥ बसंतु हमारै राम रंगु ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ हरि भगति हीन उदिआन थानु ॥ गुरप्रसादि घटि घटि पछानु ॥ २ ॥ हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥ निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥ ३ ॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥४॥११॥ बसंतु महला ५ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर किरपा ते नितचवा ॥ प्रभ रखवाले माई बाप ॥ जाकै सिमरणि नही संताप ॥ १ ॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ दुखु देस देसंतरि रहे धाइ ॥ २ ॥ किरतु ओन्हा का मिटसि नाहि ॥ ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥ ३ ॥ प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जाको प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ बसंतु महला ५ ॥ गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ जपि जीवै नानकु राम नाम ॥ १ ॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललांती साकतु फिरि

फिरि आवै जावै ॥१॥ रहाउ ॥ से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम
क्रोध गुर सबदि नासि॥भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि
खसमु धिआइआ॥२॥साध संगति प्रभि कीओ निवास॥हरि जपि जपि
होई पूरन आस॥जलिथलि महीअलि रवि रहिआ॥गुर मिलि नानकि हरि
हरि कहिआ॥३॥असट सिधि नवनिधि एह॥करमि परापति जिसुनामु देह
॥प्रभ जपिजपि जीवहि तेरे दास॥गुरमिलि नानक कमल प्रगास॥४॥१३॥

बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सगल इछा जपि पुंनीआ ॥ प्रभि मेले
चिरी विछुंनिआ ॥१॥ तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ जितु रविऐ
सुख सहज भोगु ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ अपणा
दासु आपि सम्हालिआ ॥२॥ सेज सुहावी रसि बनी ॥ आइ मिले प्रभ
सुख धनी ॥ ३ ॥ मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ प्रभ नानक चरण
पूजारिआ ॥४॥१॥१४॥ बसंतु महला ५ ॥ किलबिख बिनसे गाइ गुना
॥ अनदिनु उपजी सहज धुना ॥ १ ॥ मनु मउलिओ हरि चरन संगि ॥
करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥ २ ॥
इहु मनु होआ साध धूरि ॥ नित देखै सुआमी हजूरि ॥ ३ ॥ काम
क्रोध तृसना गई ॥ नानक प्रभ किरपा भई ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥ बसंतु
महला ५ ॥ रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ बालक राखे अपने कर थापि
॥१॥ सांति सहज गृह सद बसंतु ॥ गुर पूरे की सरणी आए कलिआण
रूप जपि हरि हरि मंतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग संताप कटे
प्रभि आपि ॥ गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥ २ ॥ जो जनु तेरा
जपे नाउ ॥ सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥ ३ ॥ नानक
भगता भली रीति ॥ सुखदाता जपदे नीत नीति ॥ ४ ॥ ३ ॥
१६ ॥ बसंतु महला ५ ॥ हुकमु करि कीने निहाल ॥ अपने
सेवक कउ भइआ दइआलु ॥ १ ॥ गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥
अंमृत नामु रिद महि दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु

धरमु मोरा कछु न बीचारिओ।। बाह पकरि भवजलु निसतारिआ ।।२।। प्रभि काटि मैलु निरमल करे ।। गुर पूरे की सरणी परे ।। ३ ।। आपि करहि आपि करणै हारे ।। करि किरपा नानक उधारे ।।४।।४।।१७।।

बसंतु महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। देखु फूल फूल फूले ।। अहं तिआगि तिआगे ।। चरन कमल पागे ।। तुम मिलहु प्रभ सभागे ।। हरि चेति मन मेरे ।। रहाउ ।। सघन बासु कूले ।। इकि रहे सूकि कठूले ।। बसंत रुति आई ।। परफूलता रहे ।।१।। अब कलू आइओ रे ।। इकु नामु बोवहु बोवहु ।। अन रूति नाही नाही ।। मतु भरमि भूलहु भूलहु ।। गुर मिलि हरि पाए ।। जिसु मसतकि है लेखा ।। मन रुति नाम रे ।। गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ।। २ ।। १८ ।।

बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। ।। होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ।। हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ।।१।। इन बिधि पासा ढालहु बीर।।गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ।। १ ।। रहाउ ।। करम धरम तुम्ह चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम्ह सारी ।। कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी।।२।।उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ।। बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ।। ३ ।। हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ।। जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ।।४।।१।।१६।। बसंतु महला ५ हिंडोल ।। तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ।। जिस नो क्रिपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ।। १ ।। तेरिआ भगता कउ बलिहारा ।। थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे आपारा ।। १ ।। रहाउ ।। तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ।। भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिसनो तू रंगु धरता ।। २ ।। तू वड दाता तू वड दाना

अउरु नही को दूजा ॥ तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥ ३ ॥ तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥ बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहंमनो ॥ १ ॥ पिता पारब्रहम प्रभ धनी ॥ मोहि निसतारहु निरगुनी ॥१॥ रहाउ॥ ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥२॥ नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥३॥ अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनो ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बसंतु हिंडोल महला ६ ॥ साधो इह तनु मिथिआ जानउ ॥ या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ परहर हरि कीरति उर आनो ॥ जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥ बसंतु महला ६ ॥ पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥ १ ॥ जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ ते भवसागर उतरे पारि ॥ २ ॥ जन नानक हरि की सरनाइ ॥ दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥ ३ ॥ २ ॥ बसंतु महला ६ ॥ माई मै धनु पाइओ हरिनामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥ १ ॥ जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२ ॥ जा कउ होत दइआलु किरपानिधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि की संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥ ३ ॥३॥ बसंतु महला ६ ॥ मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥

इहु जगु धूए का पहार ॥ तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥ १ ॥ धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥ २ ॥ इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥ ३ ॥ ४ ॥ बसंतु महला ९ ॥ कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरिओ नाहनि अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥ सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥ संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ निसबासुर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥ बार अंत की होइ सहाइ ॥ कहु नानक गुन ता के गाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥

बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥ १ ॥ कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ नाम बिना कैसे गुन चारु ॥१॥ रहाउ ॥ घरु बालू का घूमनघेरि ॥ बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ सरब जोति नामै की चेरि ॥ २ ॥ सरब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ भगति करउ पग लागउ तोर ॥ नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥३॥ पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ जो किछु कीनसि प्रभु रजाइ ॥ भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥४॥ कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ पान फूल मीठे रस रोग ॥ खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥५॥ कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ माटी फूली रूपु बिकारु ॥ आसा मनसा बांधो बारु ॥ नाम बिना सूना घरु बारु ॥ ६ ॥ गाछहु पुत्री राजकुआरि ॥ नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥ ७ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ गुरकै सबदि पछाना तोहि ॥ नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥ ८ ॥ १ ॥ बसंतु महला १ ॥ मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥ १ ॥ मनु भूलउ समझसि

साच नाइ ॥ गुर सबदु बीचारे सहज भाइ ॥१॥रहाउ॥ मनु मूलउ भरमसि
भवरतार ॥ बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ मैगल जिउ फासमसि
कामहार ॥ कड़ि बंधनि बाधिओ सीस मार ॥ २ ॥ मनु मुगधौ दादरु
भगति हीनु ॥ दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ ता कै जाति न पाती नाम
लीन ॥ सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥ ३ ॥ मनु चलै न जाई ठाकि
राखु ॥ बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ तू आपे सुरता आपि राखु
॥ धरि धारण देखै जाणै आपि ॥ ४ ॥ आपि भुलाए किसु कहउ जाइ
॥ गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ अवगण छोडउ गुण कमाइ ॥ गुर
सबदी राता सचि समाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊतम होइ ॥
मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ सदा मुकतु बंधि न सकै कोइ ॥ सदा
नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥ ६ ॥ मनु हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ सभ
महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ दूख
सूख सभ तिसु रजाइ ॥ ७ ॥ तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ गुर सबदु
सुणाए मति अगाहि ॥ तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ मनु नानक
मानिआ सचु सलाहि ॥ ८ ॥ २ ॥ बसंतु महला १ ॥ दरसन की
पिआस जिसु नर होइ ॥ एकतु राचै परहरि दोइ ॥ दूरि दरदु मथि
अंमृतु खाइ ॥ गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥ १ ॥ तेरे दरसन कउ केती
बिललाइ ॥ विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद
वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ ॥ एको
करता जिनि जगु कीआ ॥ बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥२॥ एको
गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ एको
सबदु सचा नीसाणु ॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥३॥ एको धरमु दृड़ै सचु
कोई ॥ गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ अनहदि राता एक लिवतार ॥
ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥ ४ ॥ एको तखतु एको पातिसाहु ॥
सरबी थाई वे परवाहु ॥ तिस का कीआ त्रिभवण सारु ॥ ओहु अगमु
अगोचरु एकंकारु ॥ ५ ॥ एका मूरति साचा नाउ ॥ तिथै निबड़ै साचु
निआउ ॥ साची करणी पति परवाणु ॥ साचौ दरगह पावै माणु ॥
६ ॥ एका भगति एको है भाउ ॥ बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥

गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥ हरि रसि राता जनु परवाणु ॥ ७ ॥ इत
उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ नानक
हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥ ८ ॥ ३ ॥
बसंतु महला १ ॥ चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै
बारा ॥ दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥१॥
सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥ १ ॥
रहाउ ॥ अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥
बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥ २ ॥ रोगु
वडो किउ बांधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ मै अवगण मन
माहि सरीरा ॥ ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥ ३ ॥ गुर का सबदु
दारू हरि नाउ ॥ जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु रोगी कह देखि
दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥ ४ ॥ घर महि घरु जो देखि
दिखावै ॥ गुर महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि
चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥ ५ ॥ हरख सोग ते रहहि निरामा
॥ अंमृतु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥
जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥ ६ ॥ गुरि दीआ सचु अंमृतु पीवउ
॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ॥ अपणो करि राखउ गुर भावै ॥ तुमरो
होइ सु तुझहि समावै ॥ ७ ॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि घटि
रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ नानक
रामु रवै हित चीता ॥ ८ ॥ ४ ॥ बसंतु महला १ इकतुकीआ ॥ मतु
भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥ १ ॥ मूढ़े
काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ अंत कालि तेरै आवै काम ॥ १ ॥
रहाउ ॥ गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥
२ ॥ किआ हउ आखा जां कछू नाहि ॥ जाति पति सभ तेरै नाइ ॥
३ ॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि॥
४॥ पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति की इहै पांइ ॥ ५ ॥
हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥
६ ॥ मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ अंत कालि मूड़े चोट खाहि

॥ ७ ॥ गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ साच जोगु मनि वसै आइ ॥
८ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ मड़ी मसाणी मूड़े
जोगु नाहि ॥ ९ ॥ गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ तुम होहु सुजाखे
लेहु पछाणि ॥ १० ॥ ५ ॥ बसंतु महला १ ॥ दुबिधा दुरमति अंधुली
कार ॥ मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥ १ ॥ मनु अंधुला अंधुली मति
लागै ॥ गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि अंधुले
गुरमति न भाई ॥ पसू भए अभिमानु न जाई ॥ २ ॥ लख चउरासीह
जंत उपाए ॥ मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥ ३ ॥ सगली भूलै नही
सबदु अचारु ॥ सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥ ४ ॥ गुर के चाकर
ठाकुर भाणे ॥ बखसि लीए नाही जम काणे ॥ ५ ॥ जिन कै हिरदै
एको भाइआ ॥ आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥ ६ ॥ बेमुहताजु बेअंतु
अपारा ॥ सचि पतीजै करणैहारा ॥ ७ ॥ नानक भूले गुरु समझावै ॥
एकु दिखावै साचि टिकावै ॥ ८ ॥ ६ ॥ बसंतु महला १ ॥ आपे भवरा
फूल बेलि ॥ आपे संगति मीत मेलि ॥ १ ॥ ऐसी भवरा बासु ले ॥
तरवर फूले बन हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे कवला कंतु आपि ॥ आपे
रावे सबदि थापि ॥ २ ॥ आपे बछरू गऊ खीरु ॥ आपे मंदरु थम्हु
सरीरु ॥ ३ ॥ आपे करणी करणहारु ॥ आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥
४ ॥ तू करि करि देखहि करणहारु ॥ जोति जीअ असंख देइ अधारु
॥ ५ ॥ तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ तू अकुल निरंजनु परम हीरु ॥
६ ॥ तू आपे करता करण जोगु ॥ निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥ ७ ॥
नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि
॥ ८ ॥ ७ ॥

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नउ सत चउदह
तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ चारे दीवे चहु हथि दीए
एका एका वारी ॥ १ ॥ मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति
तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे
सिकदारी ॥ धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥ २ ॥

नासाबूरु होवै फिरि मंगै नारदु करे खुआरी ॥ लबु अंधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥ ३ ॥ पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुटवारी ॥ भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥ ४ ॥ आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥ देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥ ५ ॥ कूजा बाग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ ६ ॥ जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥ ७ ॥ तीरथ सिंमृति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

बसंतु हंडोलु घरु २ महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कांइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ अनिक उपाव जतन करि थाके बारंबार भरमाई॥१॥मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ॥२॥मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥३॥ दीना दीन दइआल भए है जिउ कृसनु बिदर घरि आइआ ॥ मिलिओ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ॥४॥राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥ ५ ॥ जन की उसतति है राम नामा दहदिसि सोभा पाई ॥ निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥६॥जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनिदासा ॥ ७ ॥ आपे जलु अपरंपरु करता आपे मेलि मिलावै ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु जलहि समावै ॥८॥१॥९॥

बसंतु महला ५ घरु १ ॥ दुतुकीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ बालमीकै होआ साध संगु ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥१॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ लै मसतकि लावउ करि कृपा देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥ २ ॥ बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ॥३॥प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥ धंनै सेविआ बालबुधि ॥ त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥ ५ ॥ जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥ नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥ मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तैं लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥ बसंतु महला ५ ॥ अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ भगति बिहूना खंड खंड ॥ बिनु बूझे जमु देत डंड ॥ १ ॥ गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ साच सबद कार सदा प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ संतोखु न आवत कहूं काज ॥ धूंम बादर सभि माइआ साज ॥ पाप करंतौ नह संगाइ ॥ बिखु का माता आवै जाइ॥२॥ हउ हउ करत बधे बिकार॥मोह लोभ डूबौ संसारि ॥ कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ सुपनै नामु न हरि लीआ ॥३॥ कबही राजा कब मंगनहारु ॥ दूख सूख बाधौ संसार ॥ मन उधरण का साजु नाहि ॥ पाप बंधन नित पउत जाहि ॥ ४ ॥ ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खांहि ॥ जा कै कीनै होत बिकार ॥ सेछोडि चलिआ खिन महि गवार ॥ ५ ॥ माइआ मोहि बहु

भरमिआ ॥ किरत रेख करि करमिआ ॥ करणैहारु अलिपतु आपि ॥ नही लेपु प्रभ पुंन पापि ॥ ६ ॥ राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ तेरी सरणि पूरन क्रिपाल ॥ तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥ ७ ॥ तू करता तू करणहारु ॥ तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ करि किरपा लड़ि लेहु लाइ ॥ नानक दास प्रभ की सरनाइ ॥८॥२॥

बसंत की वार महलु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहिनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

बसंतु बाणी भगतां की ॥ कबीर जी ॥ घर १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥ १ ॥ राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ जह देखउ तह रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुतीआ मउले चारि बेद ॥ सिंम्रिति मउली सिउ कतेब ॥ २ ॥ संकरु मउलिओ जोग धिआन ॥ कबीर को सुआमी सभ समान ॥ ३ ॥ १ ॥ पंडित जन माते पढ़ि पुरान ॥ जोगी माते जोग धिआन ॥ संनिआसी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप कै भेव ॥ १ ॥ सभ मदमाते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥ हणवंतु जागै धरि लंकूरु ॥ संकरु जागै चरन सेव ॥

कलि जागे नामा जैदेव ॥ २ ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरमुखि
जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि कबीर भजि राम
नाम ॥ ३ ॥ २ ॥ जोइ खसमु है जाइआ ॥ पूति बापु खेलाइआ ॥
बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥१॥ देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ सुति
मुकलाई अपनी माउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥
बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन
खीरु बिलोवै ॥ २ ॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु बाट घनेरी
॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥ ३ ॥ ३ ॥
प्रहलाद पठाए पड़नसाल ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥ मोकउ कहा
पढ़ावसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गुोपाल ॥ १ ॥
नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरो अउर पढ़न सिउ नही कामु ॥ १
॥ रहाउ ॥ संडै मरकै कहिओ जाइ ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ तू
राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥ २
॥ मोकउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥
इकु रामु न छोडउ गुरंहि गारि ॥ मोकउ घालि जारि भावै मारि डारि
॥ ३ ॥ काढि खडगु कोपिओ रिसाइ ॥ तुझ राखनहारो मोहि बताइ
॥ प्रभ थंम ते निकसे कै बिसथार ॥ हरिनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥
४ ॥ ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥ भगति हेत नरसिंघ भेव ॥ कहि
कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥ ५ ॥ ४ ॥ इसु
तन मन मधे मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै
अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥ १ ॥
माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥
१॥रहाउ॥ सनक सनंदन सिव सुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥
कबि जन जोगी जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥ २ ॥ तू
अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ प्रभ दीनानाथ दुखु कहउ काहि ॥ मोरो जनम
मरन दुखु आथि धीर ॥ सुखसागर गुन रउ कबीर ॥३॥५॥ नाइकु एकु
बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच॥ नउ बहीआं दस गोनि आहि
॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥ मोहि ऐसे बनज सिउ नही न काजु

॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु॥रहाउ॥सात सूत मिलि बनजु कीन॥
करम भावनी संग लीन ॥ तीनि जगाती करत रारि ॥ चलो बनजारा
हाथ झारि ॥२॥ पूंजी हिरानी बनजु टूट॥दहदिस टांडो गइओ फूटि ॥
कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥३॥६॥

बसंतु हिंडोलु घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ माता जूठी पिता भी जूठा
जूठे ही फल लागे ॥ आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥
१ ॥ कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ इंद्री की जूठि
उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूटे ॥ २ ॥ अगनि भी जूठी पानी जूठा
जूठी बैसि पकाइआ ॥ जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ
॥ ३ ॥ गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ कहि कबीर तेई
नर सूचे साची परी बिचारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

रामानंद जी ॥ घर १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक दिवस मन भई
उमंग ॥ घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ सो
ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥ १ ॥ जहा जाईऐ तह जल पखान
॥ तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहां
तउ जाईऐ जउ ईहा न होइ ॥ २ ॥ सतिगुर मैं बलिहारी तोर ॥ जिनि
सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥ गुर का
सबदु काटै कोटि करम ॥ ३ ॥ १ ॥

बसंतु बाणी नामदेउ जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ साहिबु संकटवै
सेवकु भजै ॥ चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥ तेरी भगति
न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥ १ ॥
रहाउ ॥ जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै ॥ तैसे संत जना राम
नामु न छाडैं ॥ २ ॥ गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥ नाराइणु

सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा ॥३॥१॥ लोभ लहरि अति नीझर बाजै काइआ डूबै केसवा ॥ १ ॥ संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ तारि लै बाप बीठला ॥१॥ रहाउ ॥ अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥ २ ॥ होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू ॥ मोकउ पारि उतारे केसवा ॥ ३ ॥ नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ मोकउ बाह देहि बीठुला ॥४॥२॥ सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हांकती ॥१॥ जैसे पनकत थरुटिटि हांकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु राता ॥२॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

बसंतु बाणी रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१॥ तू कांइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूंब राजु तू तिसते खरी उतावली ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे कुरंक नही गाइओ भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ अपतन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही जम कंकरु करे खुआरु ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ साधू की जो लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदासु जो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥१॥

बसंतु कबीर जीउ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपर झमक बाल ॥ १ ॥ इस घर मह है सु तू ढूंढि खाहि ॥ अउर किसही के तू मति ही जाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥ २ ॥ छीके पर तेरा बहुतु डीठि ॥ मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥ कहि कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥१॥

रागु सारग चउपदे महला १ घरु १

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥ १ ॥ मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥ २ ॥ हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लुोकानी ॥३॥ भूत भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥ १ ॥ ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥ २ ॥ कुचिल कुरूप कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ हरि रस रंगि रसन नही तृपती दुरमति दूख समानिआ ॥ ३ ॥ आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ

देखत ही मनु धीरे ॥ ४ ॥ २ ॥ सारग महला १ ॥ दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ सतिगुर बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥ १॥ रहाउ ॥ इन बिधि हरि मिलीऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥ १ ॥ जिसु मनु मानै अभिमानु न ताकउ हिंसा लोभु विसारे ॥ सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥ २ ॥ जारहु ऐसी प्रीति कुटंब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥ जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥३॥ अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥४॥३॥

सारंग महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि के संत जना की हम धूरि ॥ मिलि सतसंगति परमपदु पाइआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु संतु मिलै सांति पाईऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ आतम जोति भई परफुलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि॥१॥वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥२॥ दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुध लागा मोह कूरु ॥ बिनु करमा किउ संगति पाईऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥३॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ नानक संतु मिलै हरि पाईऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥४॥१॥ सारंग महला ४ ॥ गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥१॥ प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥ २ ॥ अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ त्रिसना जलत न कबहू बूझहि जूऐ बाजी हारी ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुन

गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥४॥२॥ सारग महला ४ ॥ हरि हरि अंमृत नामु देहु पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ हिरदै नामु अंमृत रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुरपरसादि अंमृत रसु चीनिआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥२॥ सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु दड़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥ ४ ॥ सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥५॥३॥ सारग महला ४ ॥ गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामु रहहु लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ जब गुण गाइ तब ही मनु तृपतै सांति वसै मनि आइ ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ २ ॥ मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिवलाइ ॥ अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥ ३ ॥ हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥ ४ ॥ जब सुप्रसंन भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥५॥४॥ सारग महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ संत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥ १ ॥ हरि कै रंगि रते बैरागी जिन गुरमति नामु पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण

जानी ॥२॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनुराती हिरदै हरिहरि भानी॥३॥पंच जना गुरि वसगति आणे कउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥४॥५॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन राम नामु पढ़ु सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥ १ ॥ तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥ २ ॥ संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥ ३ ॥ राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥ १ ॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जपि मन जगंनाथ जगदीसरो जग जीवनो मन मोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥१॥रहाउ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि अपनी भांति॥१॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरिके जन साधू

हरि भगात ॥ ते हरि के जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥ सारंग महला ४ ॥ जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु ग्रिहि वाजे पंच सबद वडभाग मथोरा ॥ तिन जन के सभि पाप गए सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥ १ ॥ हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनंदु जपि जगदीसुोरा ॥ मन इछे फल पावहु सभै फल पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥२॥२॥९॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ सभ दूखन को हंता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को चाओ ॥ कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाओ ॥ १ ॥ हरिजन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ मेरै मनि तनि आनंद भए मै देखिआ हरि राओ ॥ जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १० ॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥ निरवैरु अकाल मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ मेरे मन अनदिनुो धिआइ निरंकारु निराहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ तिन जन की सेवा थाइ पई जिन कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥ १ ॥ हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥

जिन का अंगु करै मेरा सुआमी तिन की नानक हरि पैज सवारी ॥२॥ ४ ॥ ११ ॥ सारग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ सृसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु अंमृतु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अंमृत नामु चखासी ॥ १ ॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै जिउ चातृकु जलि पीऐ तृपतासी ॥ २ ॥ ५ ॥१२॥ सारग महला ४ ॥ जपि मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि कृपा करे मेरा राम राम रामराइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥ १ ॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अंगु कीआ मेरै रामराइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सनिगुर प्रसादि ॥ सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पांउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥ १ ॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दहदिस जांउ तहां तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥ २ ॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥ ३ ॥ साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥ ४ ॥ १ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा की

निंदा करते डूबे सभ अगिआन ॥ १ ॥ करहि सोमपाकु हिरहि परदरबा
अंतरि झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै
मान ॥२॥ संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दंफान ॥ प्रभू
भुलाए ऊझड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥ ३ ॥ सो गिआनी सो
बैसनो पढ़िआ जिसु करी कृपा भगवान ॥ उनि सतिगुरु सेवि परमपदु
पाइआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥ ४ ॥ किआ हम कथहि किछु कथि
नही जाणह प्रभ भावै तिवै बुोलान ॥ साध संगति की धूरि इक मांगउ
जन नानक पइओ सरान ॥ ५ ॥ २ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोरो
नाचनो रहो ॥ लालु रंगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥ १ ॥
रहाउ ॥ कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥
जउ सुरिजनु गृह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो ॥ १ ॥ जिउ
कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भए है बारहि
तब ते थान थिरो ॥ २ ॥ जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी
पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥ ३ ॥
जैसे कुंभ उदक पूरि आनिओ तब उहु भिंन द्रसटो ॥ कहु नानक कुंभु
जलै महि डारिओ अंभै अंभ मिलो ॥ ४ ॥ ३ ॥ सारग महला ५ ॥
अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अंमृत रसु नीको बावर बिखु सिउ
गहि रहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ जातउ कउडी
बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिरख जिवहा
॥ १ ॥ आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा
॥ काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥२॥ सगल
पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजह ॥ आई मसटि जड़वत
की निआई जिउ तसकरु दरिसांन्हिा ॥ ३ ॥ आन उपाउ न कोऊ
सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ
सगले अउगन मेटि धरह ॥ ४ ॥ ४ ॥ सारग महला ५ ॥ माई धीरि
रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ अनिक भांति आनूप रंग रे तिन्ह
सिउ रुचै न लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर प्रिअ प्रिअ
मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिओ ॥ हार कजर

बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ ॥ १ ॥ पूछउ
पूछउ दीन भांति करि कोऊ कहै प्रिअ देसांगिओ ॥ हींओ देंउ सभु मनु
तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥२॥ चरण बंदना अमोल दासरो
देंउ साध संगति अरदागिओ ॥ करहु कृपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख
दरसु पेखागिओ ॥ ३ ॥ दृसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु
अनदिनु सीतलागिओ ॥ कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु
बाजिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सारग महला ५ ॥ माई सति सति सति हरि
सति सति सति साधा ॥ बचनु गुरू जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी
बाधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसिबासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर
बेनाधा ॥ गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा
॥१॥ अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ चारि बिनासी
खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥ २ ॥ राज बिनासी ताम
बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ दृसटिमान है सगल बिनासी इकि साध
बचन आगाधा॥३॥आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा
॥ पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥४॥६॥
सारग महला ५ ॥ मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ जहां सिमरनु
भइओ है ठाकुर तहां नगर सुख आनंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जहां बीसरै
ठाकुरु पिआरो तहां दूख सभ आपद ॥ जह गुन गाइ अनंद मंगल रूप
तहां सदा सुख संपद ॥ १ ॥ जहां स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा
भइआन उदिआनद ॥ जहां कीरतनु साध संगति रसु तह सघन बास
फलांनद ॥ २ ॥ बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध बृथानद
॥ एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥ ३ ॥
सरनि सरनि सरनि प्रभ पावहु दीजै साध संगति किरपानद ॥ नानक
पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणाबिधि जांनद ॥ ४ ॥ ७ ॥ सारग
महला ५ ॥ अब मोहि राम भरोसउ पाए ॥ जो जो सरणि परिओ
करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखि सोइओ अरु
सहजि समाइओ सहसा गुरहि गवाए ॥ जो चाहत सोई हरि कीओ मन
बांछत फल पाए ॥ १ ॥ हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी

कथा सुनाए ॥ चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥२॥ देखिओ द्रसटि सरब मंगल रूप उलटी संत कराए ॥ पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥ ३ ॥ कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाए ॥ होत कृपाल दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥ ४ ॥ ८ ॥ सारग महला ५ ॥ ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ पीओ अंमृत नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥१॥ जैसे पवनु बंध कर राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥ २ ॥ आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ अचिंत लालु गृह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत॥३॥ निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत॥ कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥ ४ ॥ ९ ॥ सारग महला ५ ॥ बिखई दिनु रैनि इवही गुदारै ॥ गोबिंदु न भजै अहंबुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥१॥ रहाउ ॥ नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ परनिंदा हितकारै ॥ छापरु बांधि सवारै तृण को दुआरै पावकु जारै ॥१॥ कालर पोट उठावै मूंडहि अंमृतु मन ते डारै ॥ ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥ २ ॥ काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥ गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥३॥ निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥४ ॥ १० ॥ सारग महला ५ ॥ अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥ १ ॥ जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जांमै ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥ २ ॥ नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत नही जगदीसै ॥ ३ ॥

खोजत खोजत इहै बीचारिओ सरब सुखा हरि नामा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥ ४ ॥ ११ ॥ सारग महला ५ ॥ अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बांछत फल लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिओ घट वासी ॥ १ ॥ गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥ ३ ॥ तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ पूरि रहिओ सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥४॥१२॥ सारग महला ५ ॥ बलिहारी गुर देव चरन ॥ जा कै संगि पारब्रहमु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥१॥ रहाउ ॥ दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥१॥ जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥ २ ॥ भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ जा कउ भइओ क्रिपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥ ३॥ हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन॥ गुरप्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥ ४ ॥ १३ ॥ सारग महला ५ ॥ गाइओ री मै गुणनिधि मंगल गाइओ ॥ भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरन मोरलो माथा ॥ हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥ १ ॥ साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ ताते गतु होए त्रै गुनीआ ॥ २ ॥ भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥ ३ ॥ कहु नानक सुख सहज अनंदा ॥ खोल्हि भीति मिले परमानंदा ॥ ४ ॥ १४ ॥

सारग महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर

मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥ १ ॥ जप तप संजम पुंन सभि होमउ तिसु अरएउ सभि सुख जांई ॥ एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जांई ॥ २ ॥ करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥ ३ ॥ देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ प्रभ रंग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े तू किउ सिमरत अब नाही ॥ नरक घोर महि उरध तप करता निमख निमख गुण गाही ॥ १ ॥ रहाउ । अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाई ॥ गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठांही ॥ १ ॥ करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पांही ॥ २ ॥ मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमांही ॥ धरमराइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखांही ॥ कहु नानक तिन्ह जन बलिहारी जो अलिप रहे मन मांही ॥४॥२॥१६॥ सारग महला ५ ॥ किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ जाके बिछुरत होत मिरतका गृह महि रहनु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ जीअ हींअ प्रान को दाता जाकै संगि सुहाई ॥ करहु कृपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥१॥ चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बांझाईं ॥ जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ताकै हउ जाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १७ ॥ सारग महला ५ ॥ उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भलो कबीरु दासु दासन कौ ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणिआई ॥ १ ॥ जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ संत प्रतापि भरम सभि नासे नानक मिले गुसाई

आइओ सरब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचांगै ॥
हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभांगै
॥ १ ॥ गुण निधान मन मोहन लालन सुखदाई सरबांगै ॥ गुरि
नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥ २ ॥ ५ ॥ २८॥
सारग महला ५ ॥ अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानां ॥ साध क्रिपाल
दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमही
सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ सगल जोग अरु
गिआन धिआन इक निमख न कीमति जाना ॥ १ ॥ तुमही नाइक
तुमहि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ पावउ दानु संत सेवा हरि
नानक सद कुरबानां ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि
चीति आए प्रिअ रंगा ॥ बिसरिओ धंधु बंधु माइआ को रजनि
सबाई जंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ
सतसंगा ॥ ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥ १ ॥
प्रिउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ निरभउ
भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाठंगा ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥
सारग महला ५ ॥ हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ बचन नाद
मेरे स्रवनहु पूरे देहा प्रिअ अंकि समानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छूटरि ते
गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ जिह घर
महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥ १ ॥ उन कै बसि
आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ कहु नानक हरि
संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥ २ ॥ ८ ॥ ३१ ॥
सारग महला ५ ॥ अब मेरो पंचा ते संगु तूटा ॥ दरसनु देखि भए
मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखम थान
बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ बिखम गार करु पहुचै
नाही संत सानथ भए लूटा ॥ १ ॥ बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ
अमोल लाल आखूटा॥ जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि
रसु घूटा ॥२॥९॥ ३२ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु

लीना ॥ प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु कीना ॥ मंत्रु दृड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥ १ ॥ गृहु तेरा तू ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥ २ ॥ १० ॥ ३३ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहि अरदासि बहुतु बेनंती निमख निमख साम्हारहि ॥ होहु कृपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥ १ ॥ किआ ए भूपति बपुरे कहीअहि कहु ए किसनो मारहि ॥ राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥ २ ॥ ११ ॥ ३४ ॥ सारग महला ५ ॥ अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ भए अचिंत तृसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ गुरि कृपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥ १ ॥ आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ गोबिंद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥२॥१२॥३५॥ सारग महला ५॥ मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ माणु ताणु सभु तू है तू है इकु नामु तेरा मै ओल्हा ॥१॥ जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला॥जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥ २ ॥ १३ ॥ ३६ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम कहत गुण सोहं ॥ एक निमख ओपाइ समावै देखि चरित मन मोहं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सुणिऐ मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहं ॥ सुखु पाइओ दुखु दूरि पराइओ बणिआई प्रभ तोहं ॥ १ ॥ किलविख गए मन निरमल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहं ॥ कहु नानक मै सो प्रभु पाइआ करण कारण समरथोहं ॥ २ ॥ १४ ॥ ३७ ॥ सारग महला ५ ॥ नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ सभहू

दूरि सभहू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अभूलु न
भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ खिन महि साजि
सवारि बिनाहे भगति वछल गुणतासा ॥ १ ॥ अंध कूप महि दीपकु
बलिओ गुरि रिदै कीओ परगासा ॥ कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ
सभ पूरन होई आसा ॥ २ ॥ १५ ॥ ३८ ॥ सारग महला ५ ॥ चरनह
गोबिंद मारगु सुहावा ॥ आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु
हावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा
॥ रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥ १ ॥ सरब
निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ जन
नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥ २ ॥ १६ ॥
३९ ॥ सारग महला ५ ॥ धिआइओ अंति बार नामु सखा ॥ जह मात
पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥१॥ रहाउ ॥ अंध कूप गृहि
महि तिनि सिमरिओ जिसु समतकि लेखु लिखा ॥ खूल्हे बंधन मुकति
गुरि कीनी सभ तू है तूही दिखा ॥१॥ अंमृत नामु पीआ मनु तृपतिआ
आघाए रसन चखा ॥ कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही
सगल तिखा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४० ॥ सारग महला ५ ॥ गुर मिलि ऐसे
प्रभू धिआइआ ॥ भइओ कृपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती
बाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ
॥ निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥ १ ॥
हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ
॥ कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥ २ ॥ १८ ॥
४१ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरै मनि सबदु लगो गुर
मीठा ॥ खुल्हिओ करमु भइओ परगासा घटि घटि हरि हरि
डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट
बीठा ॥ भइओ परापति अंमृत नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥
१ ॥ सत संगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा ॥
कहु नानक रंगि चलूल भए है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥ २ ॥
१९ ॥ ४२ ॥ सारग महलो ५ ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥

निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कृपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ एक आस मोहि
तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥ १ ॥ नैण तृपतासे देखि
दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ
जनम मरण भै लाथे ॥ २ ॥ २० ॥ ४३ ॥ सारग महला ५ ॥ रे
मूड़े आन काहे कत जाई ॥ संगि मनोहरु अंमृतु है रे भूलि भूलि
बिखु खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुंदर चतुर अनूप विधाते तिस
सिउ रुच नही राई ॥ मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि
ठगउरी पाई ॥ १ ॥ भइओ दइआलु कृपालु दुख हरता संतन सिउ
बनिआई ॥ सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई
॥ २ ॥ २१ ॥ ४४ ॥ सारग महला ५ ॥ ओअं प्रिअ प्रीति चीति
पहिलरीआ ॥ जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ
॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम भूलहि तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित
उधरीआ ॥ हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ
॥१॥ तुम गंभीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ गुर कृपाल
नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥ २ ॥ २२ ॥ ४५ ॥
सारग महला ५ ॥ मन ओइ दिनस धंनि परवानां ॥ सफल ते घरी
संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धंनि
सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानां ॥ इहु तनु
तुम्हरा सभु गृहु धनु तुमरा हींउ कीओ कुरबानां ॥ १ ॥ कोटि
लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि द्रसटाना ॥ जउ कहहु मुखहु
सेवक इह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानां ॥ २ ॥ २३ ॥ ४६ ॥ सारग
महला ५ ॥ अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ अउर उपाउ सगल तिआगि
छोडे सतिगुर सरणि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब सिधि कारज सभि
सवरे अहंरोग सगल ही खइआ ॥ कोटि पराध खिन महि खउ भई है
गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥ १ ॥ पंच दास गुरि वसगति कीने मन
निहचल निरभइआ ॥ आइ न जावै न कतही डोलै थिरु नानक
राजइआ॥२॥२४॥४७॥सारग महला ५॥ प्रभु मेरो इतउत सदा सहाई ॥

मन मोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
खेलि खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ प्रतिपालै बारिक की
निआई जैसे मात पिताई ॥ १ ॥ तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ
बिसरि न कबहू जाई ॥ कहु नानक मिलि संत संगति ते मगन भए
लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥४८॥ सारग महला ५ ॥ अपना मीतु सुआमी
गाईऐ ॥ आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिसही सरणी पाईऐ ॥
तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥ १ ॥
एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ गुण निधान
नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥ २ ॥ २६ ॥४९॥ सारग
महला ५ ॥ ओट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ दृसटि न लिआवउ अवर
काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि
अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ अंमृत नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ
पइआ गुर पैरै ॥ १ ॥ कवन उपमा कहउ एक मुख निरगुण के दातेरै
॥ काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥ २ ॥ २७ ॥
५० ॥ सारग महला ५ ॥ प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ भइओ कृपालु
जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरु न कोऊ
सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ जिउ जाणहु तिउ राखहु
ठाकुर सभु किछु तुमही पासी ॥ १ ॥ हाथ देइ राखे प्रभि अपुने सद
जीवन अबिनासी ॥ कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की
फासी ॥ २ ॥ २८ ॥ ५१ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरो मनु जत कत
तुझहि सम्हारै ॥ हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै
॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब भूखो तब भोजनु मांगै अघाए सूख सघारै ॥
तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइ रवारै ॥ १ ॥ कवन
बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ नामु न बिसरै तब जीवनु
पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥ २ ॥ २९ ॥ ५२ ॥ सारग
महला ५ ॥ मन ते भै भउ दूरि पराइओ ॥ लाल दइआल गुलाल
लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर बचनाति

क्रमात कृपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु गृहि पाइओ ॥ १ ॥ नाद बिनोद कोड आनंदा सहजे सहजि समाइओ ॥ करना आपि करावन आपे कहु नानक आपि आपाइओ ॥ २ ॥ ३० ॥ ५३ ॥ सारग महला ५॥ अंमृत नामु मनहि आधारो ॥ जिनि दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूझी तृसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥१॥ एकै परगटु एकै गुपता एकै धुंधूकारो ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥ २ ॥ ३१ ॥ ५४ ॥ सारग महला ५ ॥ बिनु प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥ १ ॥ थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुम्हारे ॥२॥३२॥ ५५ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना जपती तूही तूही ॥ मात गरभ तुमही प्रतिपालक मृत मंडल इक तुही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥ १ ॥ तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुमही माणिक लाला ॥ तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥२॥३३ ॥५६॥ सारग महला ५ ॥ जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥१॥ रहाउ ॥ अपुने पहि दूख अपने पहि सूखा अपुने ही पहि बिरथा ॥ अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥ १ ॥ किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ सरब थोक नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥ २ ॥ ३४ ॥ ५७ ॥ सारग महला ५ ॥ झूठो माइआ को मद मानु ॥ ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥ १ ॥ दीनबंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ मांगनि मांगउ होइ अचिंता मिलु नानक

के हरि प्रान ॥ २ ॥ ३५ ॥ ५८ ॥ सारग महला ५ ॥ अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ अनिक काज अनिक धावरता उरझिओ आन जंजारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीउस चारि के दीसहि संगी ऊहां नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥ १ ॥ हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥ २ ॥ ३६ ॥ ५९ ॥ सारग महला ५ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥ १ ॥ अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परमगति मोरी ॥ साध संगति नानक भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥ २ ॥ ३७ ॥ ६० ॥ सारग महला ५ ॥ कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिओ अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥ १ ॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुल्है तेरी गांठुली ॥ २ ॥ ३८ ॥ ६१ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर जीउ संगि तुहारै जानिओ ॥ कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ तां दरगह भी मानिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु दृसटानिओ ॥ जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिओ ॥ १ ॥ तुमते सेव तुमते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥ २ ॥ ३९ ॥ ६२ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि महाजनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥ १ ॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥ आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥ २ ॥ ४० ॥ ६३ ॥ सारग महला ५ ॥ तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु

तनु सीतो तुमरै धान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमही दीए अनिक प्रकारा तुमही दीए मान ॥ सदा सदा तुमही पति राखहु अंतरजामी जान ॥ १ ॥ जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ जन का संगु पाईए वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥ २ ॥ ४१ ॥ ६४ ॥ सारग महला ५ ॥ करहु गति दइआल संतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन करना तूटी तुमही जोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥ १ ॥ जो जो संगि मिले साधू कै तेते पतित पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥ २ ॥ ४२ ॥ ६५ ॥ सारग महला ५ ॥ ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ सरब सूख आनंद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपानिधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ संत संगि रंग तुम कीए अपना आपु दृसटाइओ ॥ १ ॥ नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इहु पाइओ ॥ २ ॥ ४३ ॥ ६६ ॥ सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ वडभागी ॥ १ ॥रहाउ॥ रहित बिकार अलप माइआ ते अहंबुधि बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस एकहि की टेक हीऐं प्रिअ पागी ॥१॥ अचिंत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी ॥२॥४४॥६७॥ सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ताकउ मारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥ १ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै ॥ २ ॥ ४५ ॥ ६८ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥

मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल संभाखन जापु ॥ १ ॥ तपति
बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ अनदु
भइआ नानक मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥ २ ॥ ४६ ॥ ६९ ॥ सारग
महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ तिसु गुर कै जाईऐ
बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का नामु
जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ
नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥ १ ॥ गुर पूरे की करउ नित
सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ सरब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक
गुरि निसतारिआ ॥ २ ॥ ४७ ॥ ७० ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरत
नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साध संगि हितु
लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु
गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासदेव रंगु लावै ॥ १ ॥
दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सोहावै ॥ कहु नानक सभ की
होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥ २ ॥ ४८ ॥७१॥ सारग महला ५ ॥
अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै
॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥
आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥ १ ॥ प्रान
अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का
बार बार नमसकारै ॥२॥४९॥७२॥ सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को
कहा बतावहु ॥ सुख समूह करुणामै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु
॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥
सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥ १ ॥
सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बांछत फल पावहु ॥ कहु नानक लाभु
लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥ २ ॥ ५० ॥ ७३ ॥ सारग
महला ५ ॥ ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन का
संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा
ज़ानी अपना नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए
अनद अनद गुण गाइआ ॥ १ ॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने गृह

अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ २ ॥ ५१ ॥ ७४ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की गति ठांढी ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥१॥ रहाउ ॥ सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥ १ ॥ जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक की बेनंती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥ २ ॥ ५२ ॥ ७५ ॥ सारग महला ५ ॥ जिहवे अंम्रित गुण हरि गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ॥आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥१॥ जीअ प्रान मुकति को दाता एकस सिउ लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥ २ ॥ ५३ ॥ ७६ ॥ सारग महला ५ ॥ होती नही कवन कछु करणी ॥ इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल एक की सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥ १ ॥ अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सरब दोख भै हरणी ॥ मनि बांछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥ २ ॥ ५४ ॥ ७७ ॥ सारग महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंम्रित रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनिसि पूरन नाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सांति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साध संगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥ १ ॥ सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥ २ ॥ ५५ ॥ ७८ ॥ सारग महला ५ ॥ आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अनलालचि बिरथा जनमु पराणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥१॥ उदमु सकति सिआणप तुम्हरी देहि त नामु वखाणी ॥ सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥ २ ॥ ५६ ॥७९॥ सारग

महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ सांझी करहु नाम धनु खाटहु
गुर का सबदु बीचारे ॥१॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु
संगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे
॥१॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ कहु
नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥ २ ॥ ५७ ॥ ८० ॥
सारग महला ५ ॥ प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल
ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब
के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक
सरब घटां आधारा ॥१॥ कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक
पसारा ॥ साध नांव बैठावहु नानक भवसागरु पारि उतारा ॥२॥५८॥
८१ ॥ सारग महला ५ ॥ आवै राम सरणि वडभागी ॥ एकस बिनु
किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥१॥ रहाउ ॥ मन बच क्रम
आराधै हरि हरि साध संगि सुखु पाइआ ॥ अनद बिनोद अकथ कथा
रसु साचै सहजि समाइआ ॥१॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की
ऊतम बाणी ॥ साध संगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी
॥२॥५९॥८२॥ सारग महला ५ ॥ जाते साधू सरणि गही ॥ सांति
सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥१॥ रहाउ ॥ होहु कृपाल
नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत
पाइओ लाभु सही ॥ १ ॥ जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु
अही ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥२॥६०॥
८३ ॥ सारग महला ५ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद
बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥१॥रहाउ॥ चरन कमल बसाइ हिरदै
एक सिउ लिव लाउ ॥ साध संगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ
॥ १ ॥ जीउ प्राण अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि सम्हालि
हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥ २ ॥ ६१ ॥ ८४ ॥ सारग
महला ५ ॥ बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु
साधू संगति अंमृतु हरि का नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम कथा
सुणीजै स्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ पख

पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥ १ ॥ सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥ २॥६२॥८५॥ सारग महला ५ ॥ साचे सतिगुरू दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ ॥ १ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ताकउ जाका अंतु न पारु ॥२॥ ६३ ॥ ८६ ॥ सारग महला ५ ॥ गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि राम लिव लाई संत संगि बनिआई ॥ जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥ १ ॥ जा कउ कृपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥ २ ॥ ६४ ॥ ८७ ॥ सारग महला ५ ॥ जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ करहु कृपा प्रीतम मन मोहन फोरि भरम की रेखा ॥१॥रहाउ॥ कहत सुनत किछु सांति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखां ॥ प्रभू तिआगि आन जो चाहत ताकै मुखि लागै कालेखा ॥ १ ॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ बिसेखा ॥ २ ॥ ६५ ॥ ८८ ॥ सारग महला ५ ॥ सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जंजार बृथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥ १ ॥ तेरी सरनि पूरन सुखसागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥ २ ॥ ६६ ॥ ८९ ॥ सारग महला ५ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूढ़ा ॥ सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥ १ ॥ सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानां ॥ साध संगि

जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥ २ ॥ ६७ ॥ ९० ॥
सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै रस भोग
अंमृत सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संचनि राम
नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ हरि रंग रांग भए मन
लाला राम नाम रस खीवनि ॥ १ ॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो
राम नाम संगि लीवनि ॥ नानक संत चातृक की निआई हरि बूंद पान
सुख थीवनि ॥ २ ॥ ६८ ॥ ९१ ॥ सारग महला ५॥ हरि के नाम हीन
बेताल ॥ जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बिनु प्रभ सेव करत अनसेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु आइ संघारै
प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥ १ ॥ राखि लेहु दास अपने कउ सदा
सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु मेरा साध संगि धन माल
॥ २ ॥ ६९ ॥ ९२ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु
॥ प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवणी
कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति
रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥ १ ॥ प्रभ दीन दइआल सुनहु
बेनंती किरपा अपनी धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक
सद बलिहारु ॥ २ ॥ ७० ॥ ९३ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम
हीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी
॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु
जोरी ॥ तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥ १ ॥
करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास
तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥ २ ॥ ७१ ॥ ९४ ॥ सारग
महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ होइ इकत्र मिलहु संत
साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥१॥रहाउ॥ बिनु हरि भजन जेते काम
करीअहि तेते बिरथे जांहि ॥ पूरन परमानंद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर
नाहि ॥ १ ॥ जप तप संजम करम सुख साधन तुलि न कछूए लाहि ॥
चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि समाहि ॥ २ ॥
७२ ॥ ९५ ॥ सारग महला ५ ॥ मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥

आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गुोपाल हरि राइआ ॥ बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥१॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै॥ एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥२॥७३॥९६॥ सारग महला ५ ॥ जाकै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥१॥रहाउ॥ जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवां तिसु सोइ ॥ उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥१॥ गुरपरसादी द्रिसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवां संत धोइ ॥२॥७४॥९७॥ सारग महला ५ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु क्रिपा गोपाल बीठुले बिसरि न कबही जाइ ॥१॥रहाउ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुम्हरा पैन्है खाइ ॥ १ ॥ साध संगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥ ७५ ॥ ९८ ॥ सारग महला ५ ॥ मन रे नाम को सुख सार ॥ आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥१॥ रहाउ ॥ ग्रिहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥ १ ॥ पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै साध संगि उधार ॥२॥७६॥९९॥ सारग महला ५ ॥ बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥ २ ॥ ७७ ॥ १०० ॥ सारग महला ५ ॥ आतुरु नाम बिनु संसार ॥ त्रिपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारोबार ॥ हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥ १ ॥ होहु क्रिपाल दीन

दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार ॥ नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन
तन को आधार ॥ २ ॥ ७८ ॥ १०१ ॥ सारग महला ५ ॥ मैला हरि
के नाम बिनु जीउ ॥ तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी
पीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमतौ बहु भांती थिति नही कतहू
पाई ॥ पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥ १ ॥ राखि
लेहु प्रभ संम्रिथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ नानक दास तेरी सरणाई
भवजलु उतरिओ पार ॥२॥७९॥१०२॥ सारग महला ५ ॥ रमण कउ
राम के गुण बाद ॥ साध संगि धिआईऐ परमेसरु अंम्रित जा के
सुआद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत एकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ
माद ॥ सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥ १ ॥
सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ पीवत अमिउ
मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥ २ ॥ ८० ॥ १०३ ॥
सारग महला ५ ॥ कीने पाप के बहु कोट ॥ दिनसु रैनी थकत नाही
कतहि नाही छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बजर बिख बिआधी सिर
उठाई पोट ॥ उघरि गईआं खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥ १ ॥
पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ भजु साध संगि गोबिंद
नानक कछु न लागै फेट ॥२॥८१॥१०४॥ सारग महला ५ ॥ अंधे
खावहि बिसू के गटाक ॥ नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ
तत घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ
गईआ हाटि ॥ किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि
॥१॥ निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ नानक
आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥ २ ॥ ८२ ॥
१०५ ॥ सारग महला ५ ॥ टूटी निंदक की अधबीच ॥ जन का राखा
आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उस का
कहिआ कोइ न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ ईहां दुखु आगै नरकु
भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥ १ ॥ प्रगटु भइआ खंडी ब्रहमंडी कीता
अपणा पाइआ ॥ नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल
गुण गाइआ ॥ २ ॥ ८३ ॥ १०६ ॥ सारग महला ५ ॥

तृसना चलत बहु परकारि ॥ पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ आप परका कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥ १ ॥ संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥ चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥ २ ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ सारग महला ५ ॥ रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ गरभ उदर बिललाट करता तहां होवत दीन ॥ १ ॥ महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्ह ॥ २ ॥ ८५ ॥ १०८ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री चरनह ओट गही ॥ दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ स्रब मही ॥ १ ॥ दीन दइआल प्रीतम मन मोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥ २ ॥ ८६ ॥ १०९ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री मनु मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥ १ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइओ उजारो ॥ नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहां तारो ॥ २ ॥ ८७ ॥ ११० ॥ सारग महला ५ ॥ माई री आन सिमरि मरि जांहि ॥ तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइआ संगि लपटाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु बिसारि चलहि अनमारगि नरक घोर महि पाहि ॥ अनिक सजांई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥१॥ से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ गुरप्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जांहि ॥ २ ॥ ८८ ॥ १११ ॥ सारग महला ५ ॥ हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध

निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥ जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥ १ ॥ आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥ २ ॥ ८६ ॥ ११२ ॥ सारग महला ५ ॥ पोथी परमेसर का थानु ॥ साध संगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ जिसहि कृपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥ १ ॥ जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु मांगै दानु ॥ २ ॥ ९० ॥ ११३ ॥ सारग महला ५ ॥ वूठा सरब थाई मेहु ॥ अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि कुंट दहदिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ कृपानिधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥ १ ॥ सति सति हरि सति सुआमी सति साध संगेहु ॥ सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥ २ ॥ ९१ ॥ ११४ ॥ सारग महला ५ ॥ गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमही तू मेरो परवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारिओ मेरै माथै साध संगि गुण गाए ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥ १ ॥ अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ गुर नानक जब भए दइआरा सरब सुखानिधि पांही ॥ २ ॥ ९२ ॥ ११५ ॥ सारग महला ५ ॥ निबही नाम की सचु खेप ॥ लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइ ॥ रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥ १ ॥ भए कृपाल दइआल गोबिद भइआ साधू संगु ॥ हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥२॥९३॥११६॥ सारग महला५॥ माई री पेखि रही बिसमाद ॥ अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ साध संगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सभु परमाद ॥ १ ॥ डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ एकु

अधारु नानक जन कीआ बहुरि न जोनि भ्रमाद ॥ २ ॥ ९४ ॥ ११७॥ सारग महला ५ ॥ माई री माती चरण समूह ॥एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥१॥ रहाउ ॥ तिआगि गुोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ दरस पिआस मेरा मनु मोहिओ काढी नरक ते धूह ॥ १ ॥ संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ राम रंगि राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥ २ ॥ ९५ ॥ ॥११८॥ सारग महला ५ ॥ बिनसे काच के बिउहार ॥ राम भजु मिलि साध संगति इहै जग महि सार ॥१॥ रहाउ ॥ ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ गुर चरन बोहिथ मिलिओ भागी उतरिओ संसार ॥१॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिओ सरब नाथ अपार ॥ हरि नामु अंमृतु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥ २ ॥ ९६ ॥ ११९ ॥ सारग महला ५ ॥ ता ते करणपलाह करे ॥ महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साध संगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ सफल देह धंनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥ १ ॥ चारि पदारथ असटदसासिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ नानक दास धूरि जन बांछै उधरहि लागि पलै ॥ २ ॥ ९७ ॥ १२०॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम के जन कांखी ॥ मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥१॥ रहाउ ॥ तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरब सु अंतरि राखी ॥१॥ बेद पुरान सिमृति साधू जन इह बाणी रसना भाखी ॥ जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥ २ ॥ ९८ ॥ १२१ ॥ सारग महला ५ ॥ माखो राम की तू माखी ॥ जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह बिधि देखी आखी ॥ संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥ १ ॥ जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥ २ ॥ ९९ ॥ १२२ ॥ सारग महला ५ ॥ माई री काटी जम की फास ॥ हरि हरि जपत सरब सुख पाए बीचे ग्रसत

उदास ॥१॥ रहाउ ॥ करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस
॥ संत संगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥ १ ॥ महा
उदिआन अटवी ते काढ़े मारगु संत कहिओ ॥ देखत दरसु पाप सभि
नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥२॥१००॥१२३॥ माई री अरिओ
प्रेम की खोरि ॥ दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि
॥१॥ रहाउ ॥ प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥
धृगु सरीरु असत बिसटा कृम बिनु हरि जानत होर ॥ १ ॥ भइओ
कृपाल दीन दुख भंजनु परापूरबला जोर ॥ नानक सरणि कृपानिधि
सागर बिनसिओ आन निहोर ॥२॥१०१॥१२४॥ सारग महला ५ ॥
नीकी राम की धुनि सोइ ॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइ
॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ जनम
मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइ ॥ १ ॥ परा पूरबि जिसहि
लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ रवण गुण गोपाल करते नानका सचु
जोइ ॥२॥१०२॥१२५॥ सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की मति सार
॥ हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥ १ ॥ रहाउ ॥
साध संगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ चरनारबिंद बसाइ हिरदै
बहुरि जनम न मार ॥ १ ॥ करि अनुग्रह राखि लीने एक नाम अधार
॥ दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबार ॥ २ ॥ १०३ ॥
१२६ ॥ सारग महला ५ ॥ मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ साध
संगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
धारि अनुग्रहु अपुनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ सरब सूख
आनंद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥ १ ॥ निकटि वरतनि सा सदा
सुहागनि दहदिस साई जानी ॥ प्रिअ रंग रंगि रती नाराइन
नानक तिसु कुरबानी ॥२॥ १०४ ॥ १२७ ॥ सारग महला ५ ॥
तुअ चरन आसरो ईस ॥ तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि
राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ तू हमरो हम तुमरे
कहीऐ इत उत तुमही राखे ॥ तू बेअंतु अपरंपरु सुआमी
गुर किरपा कोई लाखै ॥ १ ॥ बिनु बकने बिनु कहन

कहावन अंतरजामी जानै ॥ जा कउ मेलि लए प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥ २ ॥ १०५ ॥ १२८ ॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि भजि आन करम बिकार ॥ मान मोहु न बुझत तृसना काल ग्रस संसार ॥१॥ रहाउ ॥ खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ नरक उदर भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥१॥ परद्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार ॥२॥ बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ गोबिंद गुपत होइ रहिओ निआरो मातंग मति अहंकार ॥३॥ करि कृपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ कर जोरि नानकु सरनि आइओ गुोपाल पुरख अपार ॥४॥१॥१२९॥

सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ किंकरी बिकार ॥ देखु री बीचार ॥ गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ हरि संगि रंग करती महा केल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपन री संसारु ॥ मिथनी बिसथारु ॥ सखी काइ मोहि मोहि ली प्रिअ प्रीति रिदै मेल ॥ १ ॥ सरब री प्रीति पिआरु ॥ प्रभु सदा री दइआरु ॥ कांएं आन आन रुचीऐ ॥ हरि संगि संगि खचीऐ ॥ जउ साध संग पाए ॥ कहु नानक हरि धिआए ॥ अब रहे जमहि मेल ॥२॥ १ ॥ १३० ॥ सारग महला ५ ॥ कंचना बहु दत करा ॥ भूमि दानु अरपि धरा ॥ मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥१॥रहाउ॥ चारि बेद जिहव भने ॥ दस असट खसट स्रवन सुने ॥ नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ मन चरन कमल लागे ॥१॥ बरत संधि सोच चार ॥ क्रिआ कुंट निराहार ॥ अपरस करत पाकसार ॥ निवली करम बहु बिसथार ॥ धूप दीप करते हरिनाम तुलि न लागे ॥ राम दइआर सुनि दीन बेनती ॥ देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥ सारग महला ५ ॥ राम राम राम

जापि रमत राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन कै चरन लागे काम
क्रोध लोभ तिआगे ॥ गुर गोपाल भए कृपाल लबधि अपनी पाई ॥
१ ॥ बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह
कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए संतन कै
चरन लागि नानक गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥ सारग महला ५ ॥
हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवन
सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन
बानि बिसारे ॥ १ ॥ हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा
पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ कहत मुकत सुनत
मुकत रहत जनम रहते ॥ राम राम सारभूत नानक ततु बीचारे ॥ २ ॥
४ ॥ १३३ ॥ सारग महला ५ ॥ नाम भगति मागु संत तिआगि
सगल कामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गोबिंद
सदा गाइ ॥ हरि जन की रेन बांछु दैनहार सुआमी ॥ १ ॥ सरब
कुसल सुख बिस्राम आनदा आनंद नाम जम की कछु नाहि त्रास
सिमरि अंतरजामी ॥ एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥
नाव रूप साध संग नानक पारगरामी ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥ सारग
महला ५ ॥ गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पंचा ते एकु छूटा जउ साध
संगि पगरउ ॥१॥रहाउ॥ दृसटउ कछु संगि न जाइ मानु तिआगि मोहा
॥ एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साध संगि सोहा ॥ १ ॥ पाइओ है
गुणनिधानु सगल आस पूरी ॥ नानक मनि अनंद भए गुरि बिखम
गार तोरी ॥ २ ॥ ६ ॥ १३५ ॥ सारग महला ५ ॥ मनि बिरागैगी ॥
खोजती दरसार ॥१॥रहाउ॥ साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ
॥ आनंद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥१॥ कामकरी सभ तिआगि
कै हउ सरणि परंउगी ॥ नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी
॥ २ ॥ ७ ॥ १३६ ॥ सारग महला ५ ॥ ऐसी होइ परी ॥ जानते
दइआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि
बेचाइओ ॥ जाति जनम कुल खोईऐ हउ गावउ हरि हरी ॥
१ ॥ लोक कुटंब ते टूटीऐ प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मोकउ

उपदेसिआ नानक सेवि एक हरी ॥२॥८॥१३७॥ सारग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥१॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥१॥ नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥ २ ॥ ९ ॥ १३८ ॥ सारग म० ५ ॥ करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥१॥ उधारे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥२॥१०॥१३९॥३॥१३॥१५५॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सारंग महला ९ ॥ हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई॥१॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुच न बढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥ सारंग महला ९ ॥ कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ या जग मै कोऊ रहनु न पावै इक आवहि इक जाही ॥१॥ रहाउ ॥ कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥ तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥ सारंग महला ९ ॥ कहा नर अपनो जनमु गवावै॥माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै॥१॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै॥जन नानक सोऊ जग मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥ सारंग महला ९॥ मन कर कबहू न हरि गुन गाइओ ॥ बिखिआ सकति रहिओ निस

बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि परदारा लपटाइओ ॥ परनिंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइउ ॥१॥ कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥ कहि नानक सभ अउगन मो मै राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥ ३ ॥ १३ ॥ १३९ ॥ ४ ॥ १५९ ॥

रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥रहाउ॥ हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥ १ ॥ गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पांई॥होहु दइआल कृपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहां समाई ॥२॥ ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥३॥ हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ४ ॥ प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ जब की उपजी तब की तैसी रंगल भई मनि भाई ॥ ५ ॥ सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवां हरि गुन गाई ॥ गुर कै सबदि रता बैरागी निजघरि ताड़ी लाई ॥ ६ ॥ सुध रस नामु महारसु मीठा निजघरि ततु गुसांईं ॥ तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ७ ॥ सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनिआई ॥ नानक हरि बिनु घरी न जीवां हरि का नामु वडाई ॥ ८ ॥ १ ॥ सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ कोटि कलप के दूख बिनासन साचु दृड़ाइ निबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउरंगी ॥ अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥ १ ॥ चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ हरि रसु चाखि तृखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥ २ ॥ अभरत सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि

रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥ ३ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु
मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु
निरमलु अनरागी ॥ ४ ॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन
पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥ ५ ॥
मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ एकस बिनु
मै अवरु न जानां सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ६ ॥ अगम अगोचरु अनाथु
अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते
मनु मानिआ ॥ ७ ॥ गुरपरसादी अकथउ कथीऐ कहउ कहावै सोई ॥
नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥८॥२॥

सारग महला ३ असटपदीआ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥
हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सबदि भउ भंजनु जम काल निखंजनु हरि सेती लिव लाई
॥ हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ भगतां
का भोजनु हरिनाम निरंजनु पैन्हणु भगति बडाई ॥ निजघरि
वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥ २ ॥ मनमुख बुधि
काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ गुरमति निहचलु हरि
मनि वसिआ अंमृत साची बानी ॥ ३ ॥ मन के तरंग सबदि निवारे
रसना सहजि सुभाई ॥ सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि
सेती लिव लाई ॥ ४ ॥ मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी
चितु लाई ॥ हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥
५ ॥ सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारी ॥ अंतरि
निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥ ६ ॥ सेवक सेवि
रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी
गुण अवगण न पछाणे ॥ ७ ॥ आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु
सबदु सचु बाणी ॥ नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥
८ ॥ १ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि का नामु अति मीठा

॥ जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि एको डीठा ॥१॥रहाउ॥ कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ ॥ हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥ १ ॥ प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥२॥ रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु तृपतिआ सांति आई ॥ ३ ॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ गुर परसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥ ४ ॥ आवागउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ ५ ॥ साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥ ६ ॥ एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥ ७ ॥ जिसनो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥ ८ ॥ २ ॥ सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गहिर गंभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछाणिआ ॥ बहु बिधि करम करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥ १ ॥ हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥ २ ॥ किआ दृड़ां किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ होहि दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥ ३ ॥ सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ लाए ॥ गुरू दुआरै सोई बूझै जिसनो आपि बुझाए ॥ ४ ॥ देखि बिसमादु इहु मनु नही चेते आवागउणु संसारा ॥ सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा ॥ ५ ॥ जिन दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥ ६ ॥ से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ॥ मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा

॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥ ८ ॥ ३ ॥

सारग महला ५ असटपदीआ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गुसाईं परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥ १ ॥ उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥ २ ॥ पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किसही संगे ॥ ३ ॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ जीअ जंत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहां ॥ ४ ॥ जो किछु करना सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ही ॥ अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥ ५ ॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीए रुढ़ाई ॥ ६ ॥ मुकति भए साध संगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भवसागरु तरिआ ॥ ७॥ हम नान्हे नीच तुम्हे वड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥ ८॥ १ ॥

सारग महला ५ असटपदी घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रहम की अचरज सभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥ १ ॥ मिति नाही जा का बिसथारु ॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥ २ ॥ अनिक ब्रहमे जाके बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि धिआनु धरहि ॥ अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥ ३ ॥ अनिक पवन पावक

अरु नीर ॥ अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ अनिक सूर ससीअर
नखिआति ॥ अनिक देवी देवा बहु भांति ॥ ४ ॥ अनिक बसुधा
अनिक कामधेन ॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ अनिक
अकास अनिक पाताल ॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥ ५ ॥ अनिक
सासत्र सिमृति पुरान ॥ अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ अनिक
सरोते सुनहि निधान ॥ सरब जीअ पूरन भगवान ॥ ६ ॥ अनिक धरम
अनिक कुमेर ॥ अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ अनिक सेख नवतन
नामु लेहि ॥ पारब्रहम का अंतु न तेहि ॥ ७ ॥ अनिक पुरीआ अनिक
तह खंड ॥ अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ अनिक बना अनिक फल मूल ॥
आपहि सूखम आपहि असथूल ॥ ८ ॥ अनिक जुगादि दिनस अरु
राति ॥ अनिक परलउ अनिक उपाति ॥ अनिक जीअ जाके गृहि माहि
॥ रमत राम पूरन स्रब ठांइ ॥ ९ ॥ अनिक माइआ जाकी लखी न
जाइ ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ अनिक धुनित ललित संगीत ॥
अनिक गुपत प्रगटे तह चीत ॥१०॥ सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥
आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ अनिक अनाहद आनंद झुनकार ॥
उआ रस का कछु अंतु न पार ॥११॥ सति पुरखु सति असथानु ॥ ऊच
ते ऊच निरमल निरबानु॥अपुना कीआ जानहि आपि॥ आपे घटि घटि
रहिओ बिआपि ॥ कृपा निधान नानक दइआल ॥ जिनि जपिआ
नानक ते भए निहाल ॥१२॥१॥२॥

सारग छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ घटि
घटि पूरन है अलिपाता॥घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ
रचनु कीआ ॥ हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥
हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संत संगि प्रभु जाता॥नानक दरसि लीना जिउ
जल मीना सभ देखीऐ अन भै का दाता ॥ १ ॥ कउन उपमा देउ कवन
बडाई॥पूरन पूरि रहिओ स्रब ठाई॥पूरन मन मोहन घट घट सोहन जब
खिंचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला

आई ॥ अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ कहु
नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥२॥ पूछउ संत
मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हीउ अरापउं देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ
कैसा कह मोहन परवेसा ॥ अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान
थानंतर देसा ॥ बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि
जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा
॥ ३ ॥ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ धंनि सु रिदा जिह चरन
बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ
॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ दुखु नाठा सुखु
घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ
करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहु
निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै
अवर न कुंजी हथि ॥ १ ॥ महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न
भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै
रूपीं मालीं रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ न भीजै दातीं कीतै
पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि
सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक
भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥ महल १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु ॥
निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ नाम
बिहूण मुकति किउ होइ ॥ नाभि वसत ब्रहमै अंतु न जाणिआ ॥
गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि निरंजना
जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥
त्रैगुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुरपरसादी उबरे
जिन भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा सभ सचि समाइआ ॥
१ ॥ सलोक महला २ ॥ आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥

मंदा किसनो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥ सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ॥ किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ आवहि नंगे जाहि नंगे विचे करहि विथार ॥ नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥१॥ महल १ ॥ जिनसि थापि जीआं कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखि सुणाए ॥ करणी ऊपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ ॥ गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइआ ॥ सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ जिन कै पोतै पुंनु है गुरु पुरखु मिलाइआ ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥ २ ॥ सलोक महल २ ॥ साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥ १ ॥ महला १ ॥ जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूए ॥ आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि दूजा भरमु है दूजै लोभाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइआ ॥ पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइआ ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥ ३ ॥ सलोक महल २ ॥ जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ नानक अंमृतु एकु है दूजा अंमृतु नाहि ॥ नानक अंमृतु मनै माहि पाईऐ गुरपरसादि ॥ तिन्ही पीता रंग सिउ जिन कउ लिखिआ आदि ॥ १ ॥ महला २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ नानक एकी

बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥
दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ नानक आपि सदीव है पूरा
जिसु भंडारु ॥ वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ नामु निरंजन उचरां पति
सिउ घरि जांई ॥ गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ मति
पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआईं ॥ नानक आपि दइआलु होइ नामे
लिव लाई ॥ ४ ॥ सलोक महल २ ॥ तिसु सिउ कैसा बोलणा जि
आपे जाणै जाणु ॥ चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ चीरी
जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ जो तिसु भावै नानका साई भली
कार ॥ जिना चीरी चलणा हथि तिना किछु नाहि ॥ साहिब का
फ़ुरमाणु होइ उठी कर लै पाहि ॥ जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु
कमाहि ॥ घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥ १ ॥ महला २ ॥
सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ कुंजी जिन कउ दितीआ
तिन्हा मिले भंडार॥ जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥
नदरि तिना कउ नानका नामु जिना नीसाणु ॥२॥पउड़ी॥ नामु निरंजनु
निरमलो सुणिऐ सुखु होई ॥ सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥
बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ भगता कउ नाम अधारु
है नामे सुखु होई ॥ नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥
५ ॥ सलोक महला १ ॥ नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥
इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ वडा आखणु भारा तोलु
॥ होर हउली मती हउले बोल ॥ धरती पाणी परबत भारु ॥ किउ कडै
तोलै सुनिआरु ॥ तोला मासा रतक पाइ ॥ नानक पुछिआ देइ पुजाइ
॥ मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥ १
॥ महला १ ॥ आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि
॥ इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति ॥ जे किहु
होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ सभि कारण करता करे घट
अउघट घट थापि ॥ आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥
२ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ नाइ

सुणिऐ मनु तृपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे
वडिआई ॥ नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ गुरमुखि नामु
धिआईऐ नानक लिव लाई ॥ ६ ॥ सलोक महला १ ॥ जूठि न रागीं
जूठि न वेदीं ॥ जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ जूठि न अंनी जूठि न
नाई ॥ जूठि न मीहु वरिऐ सभ थाई ॥ जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥
जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि
फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥१॥ महला १ ॥ नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि
जाणै कोइ ॥ सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ ब्रहमण
चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ राजे चुली निआव की पड़िआ
सचु धिआनु ॥ पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता
जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सभ सिधि
है रिधि पिछै आवै ॥ नाइ सुणिऐ नाउनिधि मिलै मन चिंदिआ पावै
॥ नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ नाइ सुणिऐ सहजु
ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥ ७ ॥
सलोक महला १ ॥ दुख विचि जंमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि
॥ दुखु दुखु अगै आखीऐ पढ़ि पढ़ि करहि पुकार ॥ दुख कीआ पंडा
खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ
चलिआ रोइ ॥ नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ दुख
कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥ १ ॥ महल १ ॥ नानक
दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ
देह ॥ जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ अगै लेखै मंगिऐ
होर दसूणी पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ सुणीऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि
न आवै ॥ नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ नाइ सुणिऐ
आपु बुजीऐ लाहा नाउ पावै ॥ नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निरमल
सचु पावै ॥ नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि
धिआवै ॥ ८ ॥ सलोक महला १ ॥ घरि नाराइणु सभा नालि ॥
पूज करे रखै नावालि ॥ कुंगू चंनणु फुल चड़ाए ॥ पैरी पै पै बहुतु
मनाए ॥ माणूआ मंगि मंगि पैन्है खाइ ॥ अंधी कंमी अंध सजाइ ॥

मुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥ १ ॥ महल १ ॥ सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभे जीअ जहान ॥ हुकमि चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥२॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ नाइ मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भवजलु लंघीऐ फिरि बिघनु न होई॥ नाइ मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभि लोई ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥९॥ सलोक म० १ ॥ पुरीआ खंडा सिरि करे इक पैरि धिआए ॥ पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंडी तलै देइ ॥ किसु उपरि ओहु टिक टिकै किसनो जोरु करेइ ॥ किसनो कहीऐ नानका किसनो करता देइ ॥ हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ है है आखां कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ आखूं आखां सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ ना हउ थकां न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥ नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुटंबु सबाइआ ॥ नाइ मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रमाइआ ॥ नाइ मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइआ ॥ नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ ॥ १० ॥ सलोक म० १ ॥ सभे राती सभि दिह सभि थिती सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि सभि धरतीं सभि भार ॥ सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतीं वीचार ॥ तृणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥ १ ॥ म० १ ॥ अखीं परणै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ पुछा गिआनी पंडितां पुछां बेद बीचार ॥ पुछा देवां माणसां जोध करहि अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुणी जाइ

देखां दरबारु ॥ अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ होर कची
मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ नानक करमी बंदगी नदरि
लंघाए पारि ॥ २ ॥ पउड़ी नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी
आइआ ॥ नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥ नाइ मंनिऐ
नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि
वसाइआ ॥ नानक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ॥ ११ ॥
सलोक म० १ ॥ होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखां ॥
तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ जेता आखणु साही
सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी
वडिआई ॥१॥ म० १॥ जां न सिआ किआ चाकरी जां जंमे किआ कार
॥ सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे
दातारु ॥ इकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ नानक एवै
जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे
मति होई ॥ नाइ मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भ्रमु
कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ नाइ मंनिऐ सालाहीऐ पापां मति धोई ॥
नानक पूरे गुर ते नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥ १२ ॥ सलोक म० १ ॥
सासत्र बेद पुराण पढ़ंता ॥ पूकारंता अजाणंता ॥ जां बूझै तां सूझै
सोई ॥ नानकु आखै कूक न होई ॥ १ ॥ म० १ ॥ जां हउ तेरा तां सभु
किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु
परोवहि ॥ आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ नानक सचा सची
नांई सचु पवै धुरि लेखै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु निरंजन अलखु है किउ
लखिआ जाई ॥ नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ नामु
निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइ दिखाई
॥ नानक नदरी करमु होइ गुर मिलिऐ भाई ॥ १३ ॥ सलोक म० १ ॥
कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ कूड़ु बोलि बोलि
भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ
मंदी सोइ ॥ लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥ १ ॥
म० १ ॥ रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ सीलु संजमु

सुन्न भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥ सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि
चली नालि ॥ नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥२॥ पउड़ी ॥
बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ खिंथा झोली बहु भेख करे
दुरमति अहंकारी ॥ साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥
अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ नानक नामु न चेतई जूऐ
बाजी हारी ॥ १४ ॥ सलोक म० १ ॥ लख सिउ प्रीति होवै लख
जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा
एक घड़ी महि जाइ ॥ जे सउ वर्हिआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा
खाइ ॥ मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ मिठा कउड़ा
दोवै रोग ॥ नानक अंति विगुते भोग ॥ झखि झखि झखणा झगड़ा
झाख ॥ झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥१॥ म० १ ॥ कापड़ु
काठु रंगाइआ रांगि ॥ घर गच कीते बागे बाग ॥ साद सहज करि मनु
खेलाइआ ॥ तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ मिठा करि कै कउड़ा
खाइआ ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ
॥ तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ जिस नो
प्रापति लिखिआ होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिन कै हिरदै मैलु कपटु है
बाहरु धोवाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ अंदरि
होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ कूड़ै लालचि लगिआ फिरि
जूनी पाइआ ॥ नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ॥१५॥
सलोक म० २ ॥ कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुंनु बीचारु ॥ दे दे लैणा
लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै
संसारु ॥अंमृत बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई॥गुरमुखि
आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि
रखै हुकमै अंदरि वेखै॥नानक अगहु हउमै तुटै तां को लिखीऐ लेखै ॥१॥
म० १ ॥ बेदु पुकारे पुंनु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ जो बीजै सो उगवै
खांदा जाणै जीउ ॥ गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ सचु बीजै
सचु उगवै दरगह पाईऐ थाउ ॥ बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ
॥ नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥२॥ पउड़ी ॥ निमु बिरखु

बहु संञीऐ अंमृत रसु पाइआ ॥ बिसीअरु मंत्रि विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ मनमुखु अभिंनु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ बिखु महि अंमृतु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥ १६ ॥ सलोक म० १ ॥ मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ इकनी लदिआ इकि लदि चले इकनी बधे भार ॥ इकना होई साखती इकना होई सार ॥ लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥ १ ॥ म० १ ॥ नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥२॥ पउड़ी ॥ जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥ १७ ॥ सलोक म० ४ ॥ सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ म० ४ ॥ सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥२॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ जप तप तीरथ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥१८॥ सलोक म० १ ॥ धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥ १ ॥ म० १ ॥ सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थंम्हीऐ ॥ नानक वेखै आपि फूक कढाए ढहि पवै ॥२॥ पउड़ी ॥ सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ ॥ गुरपरसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ

नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १९ ॥ सलोक म० १ ॥ धृगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पढ़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥ १ ॥ म० २ ॥ जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीअहि सूरति ॥ जो ओसु इछे सो फलु पाए तां नानक कहीऐ मूरति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुरु अंमृत बिरखु है अंमृत रसि फलिआ ॥ जिसु परापति सो लहै गुरसबदी मिलिआ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥ २० ॥ सलोक म० १ ॥ सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥ जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥ १ ॥ महला ३ ॥ नउमी नेमु सचु जे करै ॥ काम क्रोधु तृसना उचरै ॥ दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ करि करि हेतु वधाइदे परदरबु चुराइआ ॥ पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥ २१ ॥ सलोक म० १ ॥ गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलां घरे मसीति ॥ मखटू होइकै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसनि

खरे करूप ॥ इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नाद न बेद न गीअरसु रस कस न जाणंति ॥ इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि सभ पवितु है धनु संपै माइआ ॥ हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ जो हरिनामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ नानक भगतां होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥२२॥ सलोक म० ४ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै सबदि जिन्हा एक लिवलागी ॥ गिरह कुटंब महि सहजि समाधी ॥ नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥ १ ॥ म० ४ ॥ गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥ सतिगुरु पिआरा न लगई मन हठि आवै जाइ ॥ जे इक विख अगाहा भरे तां दस विखां पिछाहा जाइ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ गढ़ मंदर गचगीरीआ किछु साथि न जाई ॥ सोइन साखति पउण वेग धृगु धृगु चतुराई ॥ छतीह अंमृत परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ नानक जो देवै तिसहि न जाणनी मनमुखि दुखु पाई ॥२३॥ सलोक म० ३ ॥ पढ़ि पढि पंडित मुोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥ नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥१॥ म० ३ ॥ नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ गुरमुखि होवै सु भाणा मंने सहजे हरि रसु पीजै ॥ नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु रवीजै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गढ़ि काइआ सीगार बहु भांति बणाई ॥ रंग परंग कतीफिआ

पहिरहि धरमाई ॥ लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ नानक नामु न चेतिओ अंति लए छडाई ॥ २४ ॥ सलोक म० ३ ॥ सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ ॥ दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ अंतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ ॥ नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई ॥ नानक जीवदा पुरखु धिआइआ अमरापदु होई ॥ २५ ॥ सलोक म० ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥ नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही उपरि चोर ॥ १ ॥ म० ५ ॥ धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥ नानक नाम विहूणिआ तिन तन खावहि काउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नामु सलाहनि भाउ करि निज महली वासा ॥ ओइ बाहुड़ि जोनि न आवनी फिरि होहि न बिनासा ॥ हरि सेती रंगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ हरि का रंगु कदे न उतरै गुरमुखि परगासा ॥ ओइ किरपा करि कै मेलिअनु नानक हरि पासा ॥ २६ ॥ सलोक म० ३ ॥ जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥ सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ सेवा थाइ न पवई तिस की खपि खपि होइ खुआरु ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लए सबदु रखै उरधारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ आपे बखसे मेलि लए आपतु गवावै ॥ मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ॥ नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को लेखे विचि है मनमुखु अहंकारी ॥ हरिनामु कदे न चेतई जमकालु सिरि मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा किउ

तरीऐ तारी ॥ नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥ २७ ॥
सलोक म० ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥
मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ इकि गुरपरसादी उबरे
तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ
तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥ १ ॥ म० ३ ॥ माइआ मोहि
विसारिआ सचु मरणा हरिनामु ॥ धंधा करतिआ जनमु गइआ अंदरि
दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि लिखिआ
करामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ लेखा पड़ीऐ हरिनामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि
न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई
॥ पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी
दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥ २८ ॥ सलोक म० ३ ॥ गुर का
कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ कटीऐ नानक
पावहि पारु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ
॥ गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ नानक नामि विसारिऐ
आवण जाणा दोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु
सुभाइ ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि तृपताइ ॥ खिनु पलु घड़ी
न जीवउ बिनु देखे मरां माइ ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि
रहिआ सभ थाइ ॥ सुतिआ आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥२९॥
सलोक म० ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अंदरि कामु क्रोधु
अहंकारु ॥ थाउ कुथाउ न जाणन्ही सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह
लेखा मंगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ आपे सृसटि उपाइअनु आपि करे
वीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥ १ ॥
म० ३ ॥ हरि गुरमुखि तिनी अराधिआ जिन करमि परापति होइ ॥
नानक हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वसिआ सोइ ॥ २
॥ पउड़ी ॥ आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित
जीवण कउ चितु गढ़ मंडप सवारिआ ॥ वलवंच करि उपाव
माइआ हिरि आणिआ ॥ जमकालु निहाले सास आव घटै
बेतालिआ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥ ३० ॥

सलोक म० ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥
दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि कीते तिसै
न सेवनी देदा रिजकु समाइ ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि
फिरि आवहि जाइ ॥ जिन कउ पूरवि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन
आइ ॥ अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥
सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ नानक गुर कै भाणै
जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आसा विचि अति दुखु
घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ
॥ विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥ ओना सोगु विजोगु
न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि
लए मिलाइआ ॥ ३१ ॥ सलोक म० ३ ॥ पराई अमाण किउ रखीऐ
दिती ही सुखु होइ ॥ गुर का सबदु गुर थै टिकै होरथै परगटु न होइ ॥
अंन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ ओना परख न
आवई अढु न पलै पाइ ॥ जे आपि परख न आवई तां पारखीआ
थावहु लइउ परखाइ ॥ जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउनिधि
पलै पाइ ॥ घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न
होइ ॥ सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ वसतु
पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥ नानक बिनु बुझे किनै न
पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मनि अनदु भइआ
मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे सजण संत पिआरे ॥ जो धुरि मिले न
विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ अंतरि सबदु रविआ गुरु
पाइआ सगले दूख निवारे ॥ हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखां
उरधारे ॥ मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥
ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुरदुआरे ॥
नानक गुरमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल दरबारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ पुत्रु कलत्रु नित
वेखै विगसै मोहि माइआ ॥ देसि परदेसि धनु चोराइ आणि मुहि
पाइआ ॥ अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु

नावै धृगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥ ३२ ॥ सलोक म० ३ ॥
गुरमुखि अंमृतु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ तृसना मूलि न
होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै
तनि धाइ ॥ नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥ १ ॥
म० ३ ॥ जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ बिनु
सबदै जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके
भेख थके तनु धोइ ॥ बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥
नानक नदरी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै
अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ
भाइआ ॥ किउ रहीऐ थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ गुर पूरे की
चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि
समाइआ ॥ ३३ ॥ सलोक म० ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ गुर का
भउ हेतु अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥
गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ नानक आपे
मेलि लए आपे बखसणहारु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी
न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि
हमारी चिंद ॥ २ ॥ म० ४ ॥ सावणु आइआ झिम झिमा हरि गुरमुखि
नामु धिआइ ॥ दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥
सभ धरति भई हरीआवली अंनु जंमिआ बोहल लाइ ॥
हरि अचिंतु बुलावै कृपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि
धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ हरि कीरति भगति अनंदु है
सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना
दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु तृपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु
सुभाइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥
तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु
उनमनि लिव लाईआ ॥ जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ
॥ नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ ॥ ३४ ॥
सलोक म० ३ ॥ अमरु वे परवाहु है तिसु नालि सिआणप

न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए
रजाइ ॥ गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ नानक सेवकु
सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥१॥ म० ३ ॥ दाति जोति सभ
सूरति तेरी ॥ बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ बहु करम कमावहि लोभि
मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ नानक आपि कराए करता जो
तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥ २ ॥ पउड़ी म० ५ ॥ सचु खाणा सचु
पैनणा सचु नामु अधारु ॥ गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवण हारु ॥ भागु
पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ साधू संगति लगिआ तरिआ
संसारु ॥ नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥३५॥ सलोक म०
५॥ सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख
दालदु भंनि तरु ॥ अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ लेवहु
कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु
॥ १ ॥ म० ५ ॥ वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ रिजकु
उपाइओनु अगला ठांढि पई संसारि ॥ तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत
अगम अपार ॥ करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ कीता
लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडा आपि
अगंमु है वडी वडिआई ॥ गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि सांति
आई ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ आपि नाथु सभ
नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई
॥ ३६ ॥ १ ॥ सुधु

रागु सारंग बाणी भगतां की कबीर जी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ मन
दस नाजु टका चरि गांठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुतु
प्रतापु गांउ सउ पाए दुइ लख टका बरात ॥ दिवस चारि की करहु
साहिबी जैसे बनहर पात ॥ १ ॥ ना कोऊ लै आइओ इहु धनु न कोऊ
लै जातु ॥ रावन हूँ ते अधिक छत्रपति खिन महि गए बिलात ॥ २ ॥
हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ

कृपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥ ३ ॥ मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलत संगात ॥ कहत कबीर राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥ ४ ॥ १ ॥ राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥१॥ जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकास चढावै चढे अकास गिरावै ॥२॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥ ३ ॥ नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधू को पीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥ ४ ॥ २ ॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौ रे ठग मूरी खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ काल जाल की सुधि नही लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥ १ ॥ जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥२॥ माइआ कारन स्रमु अति करै ॥ सो माइआ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही मूढ़॥धनु धरती तनु होई गइओ धूड़ि॥३॥ काम क्रोध तृसना अति जरै ॥ साध संगति कबहू नही करै ॥ कहत नामदेउ ताची आणि ॥ निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥४॥१॥ बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥ आपहि गावै आपहि नाचै आप बजावै तूरा ॥ कहत नाम देउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥२॥२॥ दास अनिंन मेरो निज रूप ॥ दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत गृह कूप ॥१॥ रहाउ ॥ मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि॥ एक समै मोकउ गहि बांधै तउ फुनि मोपै

जबाबु न होइ ॥ १ ॥ मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ नामदेव जाके जीअ ऐसी तैसो ताकै प्रेम प्रगास ॥ २ ॥ ३ ॥

सारंग

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अन पावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ परनिंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ १ ॥ बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥ हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ परमानंद साध संगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥

सारंग महला ५ सूरदास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि के संग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥ १ ॥ सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोंक ॥ सूर दास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥ २ ॥ १ ॥

सारंग कबीर जीउ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगे कउ किछु तुलहा बांधहु किआ भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥ १ ॥ सगल धरम पुंन फल पावहु धूरि बांछहु सभ जन का ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥ २ ॥ १ ॥

रागु मलार चउपदे महला १ घरु १

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

खाणा पाणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी धृगु जीवणु नही रहणा ॥ १ ॥ प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥ २ ॥ गुरमुखि धिआवहि सि अंमृतु पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥३॥ जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला १ ॥ करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ सुणि घनघोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ अंमृत बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुरबचनी मनु मानिआ ॥ हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥ २ ॥ अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥ ३ ॥ आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥

नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥ ४ ॥
॥ २ ॥ मलार महला १ ॥ साची सुरति नामि नही तृपते हउमै करत
गवाइआ ॥ परधन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ सबदु
चीनि भै कपट न छूटे मनिमुखि माइआ माइआ ॥ अजगरि भारि लदे
अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ मनि भावै सबदु
सुहाइआ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइआ ॥
१ ॥ रहाउ ॥ तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइआ ॥
रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥ बिसटा
कीट भए उत ही ते उतही माहि समाइआ ॥ अधिक सुआद रोग
अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥ २ ॥ सेवा सुरति रहसि गुण
गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि
बलि गुर करतारा ॥ हम नीचु होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा
॥ आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥ ३ ॥ बैसि
सुथानि कहां गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ अलखु न लखीऐ
अगमु अजोनी तूं नाथां नाथणहारा ॥ किसु पहि देखि कहउ तू कैसा
सभि जाचक तू दातारा ॥ भगति हीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै
उरिधारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला १ ॥ जिनि धन पिर का सादु न
जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी
बिनु गुर भरमि भुलानी ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥
बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति
भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥ २ ॥ हम थारे
त्रिभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइआ
बहुरि न भवजलि फेरा ॥३॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु
सीगारो ॥ अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥ ४ ॥
मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ नानक राम नामु
रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ४ ॥ महला १ मलार ॥
परदारा परधनु परलोभा हउमै बिखै बिकार ॥ दुसट भाउ तजि निंद

पराई कामु क्रोधु चंडार ॥ १ ॥ महल महि बैठे अगम अपार ॥ भीतरि
अंमृतु सोई जनु पावै जिसु गुर का सबदु रतनु आचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥
दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ सुधि बुधि सुरति
नामि हरि पाईऐ सत संगति गुर पिआर ॥ २ ॥ अहिनिसि लाहा हरि
नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ गुरमुखि सिख सोई जनु पाए
जिसनो नदरि करे करतारु ॥ ३ ॥ काइआ महलु मंदरु घरु हरि का
तिसु महि राखी जोति अपार ॥ नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि
मेले मेलणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

मलार महला १ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पवणै पाणी जाणै जाति ॥ काइआं
अगनि करे निभरांति ॥ जंमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ सुरता पंडितु
ता का नाउ ॥१॥ गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ अनडीठा किछु
कहणु न जाइ ॥ किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥१॥ रहाउ ॥ ऊपरि
दरि असमानि पइआलि ॥ किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ बिनु जिहवा
जो जपै हिआइ ॥ कोई जाणै कैसा नाउ ॥ २ ॥ कथनी बदनी रहै
निभरांति ॥ सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ अहिनिसि अंतरि रहै लिव
लाइ ॥ सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥३॥ जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥
ता का कहणा कहहु न कोइ॥विचि सनातीं सेवकु होइ ॥ नानक पणहीआ
पहिरै सोइ ॥४॥१॥६॥ मलार महला १ ॥ दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख
॥ इकु दुखु सकत वार जमदूत ॥ इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ वैद
न भोले दारू लाइ ॥१॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ दरदु होवै दुखु रहै
सरीर ॥ ऐसा दारू लगै न बीर ॥१॥ रहाउ ॥ खसमु विसारि कीए रस
भोग ॥ तां तनि उठि खलोए रोग ॥ मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ वैद
न भोले दारू लाइ ॥ २ ॥ चंदन का फलु चंदन वासु ॥ माणस का
फलु घट महि सासु ॥ सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ ता
कै पाछै कोइ न खाइ ॥ ३ ॥ कंचन काइआ निरमल हंसु ॥
जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥
नानक छूटसि साचै नाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ मलार महला १ ॥ दुख

महुरा मारण हरि रामु ॥ सिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ नित नित लेहु न छीजै देह ॥ अंत कालि जमु मारै ठेह ॥ १ ॥ ऐसा दारू खाहि गवार ॥ जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥१॥ हाउ ॥ राजु मालु जोबनु सभु छांव ॥ रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ देह न नाउ न होवै जाति ॥ ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥२॥ साद करि समधां तृसना घिउ तेलु ॥ कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ होम जग अरु पाठ पुराण ॥ जो तिसु भाव सो परवाण ॥ ३ ॥ तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ नानक जननी धंनी माइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥ मलार महला १ ॥ बागे कापड़ बोलै बैण ॥ लंमा नकु काले तेरे नैण ॥ कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥ १ ॥ ऊडां ऊडि चड़ां असमानि ॥ साहिब संमृथ तेरै ताणि ॥ जलि थलि डूंगरि देखां तीर ॥ थान थनंतरि साहिबु बीर ॥ २ ॥ जिनि तनु साजि दीए नालि खंभ ॥ अति तृसना उडणै की डंझ ॥ नदरि करे तां बंधां धीर ॥ जिउ वेखाले तिऊ वेखां बीर ॥ ३ ॥ ना इहु तनु जाइगा न जाहिगे खंभ ॥ पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ सचि समावै एहु सरीरु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मलार महला ३ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥ १ ॥ आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ एह त्रिगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥ २ ॥ हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुम्हारी ॥ एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥ ३ ॥ कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ जिउ जल

ऊपरि फेनु बुदबुदा तैसा इहु संसारा ॥ जिस ते होआ तिसहि समाणा
चूकि गइआ पासारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ३ ॥ जिनी हुकमु
पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ सची भगति करहि दिनु राती
सचि रहे लिव लाइ ॥ सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥१॥
मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे
तिसु बिघनु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ त्रैगुण सभा धातु है ना हरि भगति
न भाइ ॥ गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ साहिब
भावै सो थीऐ पइऐ किरति फिराहि ॥ २ ॥ सतिगुर भेटिऐ मनु मरि
रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ तिस की कीमति न पवै कहणा किछू न
जाइ ॥ चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥ ३ ॥ मेरा हरि प्रभु
अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ गुर परसादी बुझीऐ सबदे
कार कमाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥ ४ ॥
२ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि
करेइ ॥ गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ गुर मिलिऐ
सांति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि अंम्रित नामु
धिआइ ॥ सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किसही नालि ॥ हउमै
वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ गुरमति सत संगति न विछुड़हि
अनदिनु नामु सम्हालि ॥ २ ॥ सभना करता एकु तू नित करि देखहि
वीचारु ॥ इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥
तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥ ३ ॥ हरि
हरि नामु अंम्रितु है नदरी पाइआ जाइ ॥ अनदिनु हरि हरि
उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु निधानु है नामे
ही चितु लाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ३ ॥ गुरु सालाही सदा
सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ गुर परसादि परमपदु पाइआ
वडी वडिआई होई ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै
सोई ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ तजि कूड़ु कुटंबु हउमै
बिखु तृसना चलणु रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु

दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाही ॥ जीअ दानु देइ तृपतासे सचै नामि समाही ॥ अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥ २ ॥ सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंग पाणी ॥ ३ ॥ आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मंनु समाइआ ॥ साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ एको नामु अंमृतु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥ नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ३ ॥ गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरिधारि ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु बाणी सबदे गांवै साचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाए ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरिधारि ॥ मनु तनु निरमलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥ ३ ॥ आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ३ दुतुके ॥ सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सुथानु ॥ गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ १ ॥ जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की बिधि सतिगुर ते जाणै

अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ गुर सबदि रते सदा बैरागी
हरि दरगह साची पावहि मानु ॥ २ ॥ इहु मनु खेल हुकम का बाधा
इक खिन महि दहदिस फिरि आवै ॥ जां आपे नदरि करे हरि प्रभु
साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥ ३ ॥ इसु मन की
बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू
भवसागरु जितु पावहि पारि ॥ ४ ॥ ६ ॥ मलार महला ३ ॥ जीउ पिंडु
प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ एकसु बिनु मै अवरु न
जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥
अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ गुर परसादी
भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥ २ ॥ गुरबचनी सचु कार कमावै
गति मति तबही पाई ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि
लिव लाई ॥ ३ ॥ जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि
पाई ॥ मनु तनु प्रान धरीं तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ ७ ॥
मलार महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥
भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥ १ ॥ मन रे मन सिउ
रहउ समाई ॥ गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥ १
॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ सचु
संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥ २ ॥ आपे सबदु सचु
साखी आपे जिन जोती जोति मिलाई ॥ देही काची पउणु वजाए
गुरमुखि अंमृतु पाई ॥ ३ ॥ आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ
समाई ॥ नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥ ४ ॥
८ ॥ मलार महला ३ ॥ हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर
भारी ॥ गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥ १ ॥
मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ इहु भवजलु जगतु न जाई
तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ
मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ तुरीआ गुणु सतसंगति पाईऐ
नदरी पारि उतारी ॥ २ ॥ चंदन गंध सुगंध है बहु बासना

बहकारि ॥ हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥३॥ कृपा कृपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उरधारि ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥ ४ ॥ ९ ॥

मलार महला ३ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥१॥ कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥ १ ॥ पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ ममता करतै लाई ॥ एहु हुकमु करि सृसटि उपाई ॥ गुर परसादी बूझहु भाई ॥ सदा रहहु हरि की सरणाई ॥ २ ॥ सो पंडितु जो तिहां गुणा की पंड उतारै ॥ अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ ॥ सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ सो पंडितु दरगह परवाणु ॥३॥ सभनां महि एको एकु वखाणै ॥ जां एको वेखै तां एको जाणै ॥ जाकउ बखसे मेले सोइ ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥४॥ कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ सोई मुकति जाकउ किरपा होइ ॥ अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥५॥१॥ १० ॥ मलार महला ३ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ अंतरि भगति हरि हरि उरिधारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ दरि साचै दिसै सचिआरु ॥ २ ॥ बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥ ३ ॥ आपे करता अगम अथाहा ॥ गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥ नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥ ४ ॥

२ ॥ ११ ॥ मलार महला ३ ॥ जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥१॥ हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ मरि मरि जंमहि मिलै सजाइ ॥२॥ गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥३॥ कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ नानक हरि हरि नामि समाई ॥४॥३॥१२॥ मलार महला ३ ॥ रसना नामु सभु कोई कहै ॥ सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥ १ ॥ मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ ॥ २ ॥ नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ तृसना जलिआ भूख न जाइ ॥ विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥ ३ ॥ त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ गुरमुखि तुरीआ गुणु उरिधारु ॥ ४ ॥ गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ९ ॥ १३ ॥ २२ ॥

रागु मलार महला ४ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ सतिगुरु देखि

मेरा मनु विगसिओ जनु हरि भेटिओ बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥ २ ॥ हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरिधारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥ ३ ॥ धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥ ४ ॥ १ ॥ मलारु महला ४ ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥ १ ॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सत संगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा हरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥ २ ॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥३॥ जितनी सृसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिआं सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥ २ ॥ हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु तृपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥ ३ ॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥ ४ ॥ ३ ॥ मलार महला ४ ॥ जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हारे कारै लावै ॥ १ ॥ सतिगुरु

हरि हरि नामु दृड़ावै ॥ हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥ २ ॥ भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥ ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै ॥ ४ ॥ सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अंमृत बचन सुणाव ॥ नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥ ५ ॥ ४ ॥ मलार महला ४ ॥ जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥ १ ॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति रांम रसु खांति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ॥ जिउ जल दुध भिंन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥२॥ जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ॥ ३ ॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जनमहि आपु रखांति ॥ धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तरांति ॥ ४ ॥ ५ ॥ मलार महला ४ ॥ अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ सत संगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ गुरपरसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥ २ ॥ जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ ओइ आपि तरे स्रिसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥ ३ ॥ तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु आपे वसि करि लइआ

॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥ ४ ॥
६ ॥ मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अंमृतु नही पीआ तृसना भूख न
जाई ॥ मनमुख मूढ़ जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत
जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ जिस ते उपजे
तिसहि न चेतहि धृगु जीवणु धृगु खाई॥१॥प्राणी गुरमुखि नामु धिआई
॥ हरि हरि कृपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि
डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न बुधि भई मति
मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे
बिललाई ॥२॥ हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई
॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ सदा
अनदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु सहजे
पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥३॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ
सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर
चरणी चितु लाई ॥ अपणी कृपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥
हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

मलार महला ४ पड़ताल घर ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि जन बोलत स्री राम नामा
मिलि साध संगति हरि तोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु
संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥ १ ॥ चातृक मोर बोलत दिनु राती
सुनि घनिहर की घोर ॥ २ ॥ जो बोलत है मृग मीन पंखेरू सु
बिनु हरि जापत है नही होर ॥ ३ ॥ नानक जन हरि कीरति गाई छूटि
गइओ जम का सभ सोर ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ मलार महला ४ ॥
राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ हरि का पंथु कोऊ
बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हमारो

मीतु सखाई हम हरि सिउ प्रीति लागी ॥ हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अवरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥ १ ॥ मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागो ॥२॥२॥९॥९॥१३॥९॥३१॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाए ॥ ताकउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥१॥ बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ मोहि दीन कृपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥२॥ दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाए ॥ जउ गृह लालु रंगीओ आइआ तउ मैं सभि सुख पाए ॥ ३ ॥ संत सभा ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ जन नानक कंतु रंगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥ ४ ॥ १ ॥ मलार महला ५ ॥ खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु तृपति अघाई ॥ १ ॥ हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मेलै ॥ माता पिता कंठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै ॥ २ ॥ जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ नव निधि नामु निधानु गृहि तेरै मनि बांछै सो लैसी ॥ ३ ॥ पिता कृपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि हृदै बसहि नित चरना ॥ ४ ॥ २ ॥ मलार महला ५ ॥ सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अंदेसा ॥ कारजु सगल अरंभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥ १ ॥ सुनीऐ बाजै बाज सुहावी ॥ भोरु भइआ मै प्रिअ मुख पेखे

गृह मंगल सुहलावी ॥१॥ रहाउ ॥ मनूआ लाइ सवारे थानां पूछउ संता जाए ॥ खोजत खोजत मै पाहुन मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥२॥ जब प्रिअ आइ बसे गृहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥ मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइआ ॥३॥ सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥४॥३॥ मलार महला ५ ॥ राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ कृपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥ १ ॥ हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥१॥ रहाउ ॥ तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खरते ॥ कागर नाव लंघहि कत सागरु बृथा कथत हम तरते ॥२॥ सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ प्रभ मेरे ओइ बैरागी तिआगी ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रंगि रांगी ॥ १ ॥ इहु मनु देइ कीए संत मीता कृपाल भए बडभागीं ॥ महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥ मलार महला ५ ॥ माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रातीं इह हउमै की ढीठाई ॥ १ ॥ भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ मलार महला ५ ॥

॥ बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ
अनदु सदा मनि चाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरी धर सुआमीआ मेरे
तू किउ मनहु बिसारे ॥ इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु
भरतारे ॥ १ ॥ बिनउ सुनिओ जब ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा
धारे ॥ कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥ २ ॥
३ ॥ ७ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ दूख दरद
बिनसै भवसागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुसमन हते
दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ राखन हारै हाथ दे
राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा किल विख सभि
काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ गुण निधानु नानक मनि वसिआ
बाहुड़ि दूख न थीआ ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥ मलार महला ५ ॥ प्रभ मेरे
प्रीतम प्रान पिआरे ॥ प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु
धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥
संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥ १ ॥ बिछुरत
मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ नाम अधारु जीवन
धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥ २ ॥ ५ ॥ ९ ॥ मलार महला ५ ॥
अब अपने प्रीतम सिउ बनिआई ॥ राजा रामु रमत सुखु पाइओ
बरसु मेघ सुखदाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु
नामु नवै निधि पाई ॥ उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई
॥ १ ॥ सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ तरिओ
संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥ २ ॥ ६ ॥
१० ॥ मलार महला ५ ॥ घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥
भए कृपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइआ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ मिटे कलेस तृसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥
साध संगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥ १ ॥
मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥
अंगीकारु कीओ प्रभि अपनै नानक दास सरणाइआ ॥ २ ॥ ७ ॥
११ ॥ मलार महला ५ ॥ बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ चितहि

उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥१॥ रहाउ ॥ जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ जिन कउ बिसरै मेरो रामु पिआरा से मूए मरि जांही ॥१॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ नानक रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥२॥८॥१२॥ मलार महला ५ ॥ हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव कुल दैत कुल जख्य किंनर नर सागर उतरे पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥ १ ॥ काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन दइआल जपहि करुणामै नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ १३ ॥ मलार महला ५ ॥ आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ नामु रासि साझी करि जन सिउ जांउ न जम कै घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुल्हे कपाट ॥ बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥ १ ॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छांटि ॥ कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥ २ ॥ १० ॥ १४ ॥ मलार महला ५ ॥ बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई हो तौ संगि न जानो ॥ १ ॥ मृग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साध संगति सुख मानो ॥ २ ॥ ११ ॥ १५ ॥ मलार महला ५ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै तां भउ कैसा भाई ॥ संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥ १ ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १२ ॥ १६ ॥ मलार महला ५ ॥ मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव

करीजै ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महारसु पीजै ॥ १ ॥ त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो कीजै ॥२॥१३॥ १७ ॥ मलार म० ५ ॥ प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ॥ निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥१॥रहाउ॥ जै जैकारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि पाइओ ॥ कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वाउ न लाइओ ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइओ ॥ महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥२॥१४॥१८॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ साची दरगह पाईऐ मानु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु भवजल तारनहारु ॥ गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ गुर की सेवा सो जनु पाए ॥ जाकउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥ ३ ॥ गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ नानक गुरु पारब्रहमु जाकी कीम न पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥ मलार महला ५ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ ताकी कीमति कही न जाइ ॥ १ ॥ करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ तुम्हरी कृपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ जपि जपि जीवहि तेरा नांउ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही थाउ

॥२॥ दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ दुहां सिरिआ का करता आपि ॥ कुरबाणु जांई तेरे परताप ॥ ३ ॥ तेरी कीमति तू है जाणहि ॥ तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ सेई भगत जो तुधु भाणे ॥ नानक तिनकै सद कुरबाणे ॥४॥२॥२०॥ मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥ मेघु वरसै अंमृतधार ॥ सगले जीअ जंत तृपतासे ॥ कारज आए पूरे रासे ॥१॥ सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु भंना भै भंजनहार ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥ २ ॥ कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिसनो जापि ॥ दृसटि धारि राखे सभि जंत ॥ गुण गावहु नित नित भगवंत ॥ ३ ॥ एको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की पैज रखदा आइआ ॥ नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥४॥३॥२१॥ मलार महला ५ ॥ गुर सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साध संगि सद हरिगुण गाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥२॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ सचु संजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ २२ ॥

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ गुर मनारि प्रिअ दइआल सिउ रंगु कीआ ॥ कीनो री सगल सींगार

॥ तजिओ री सगल बिकार ॥ धावतो असथिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ बाजे बजहि
मृदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥ १
॥ ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे ही संगि संत
बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ रम राम राम माल ॥ मनि फेरते हरि
संगि संगीआ ॥ जन नानक प्रिउ प्रीतमु थीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २३ ॥
मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमकित रसि चालै ॥ प्रभ
मिलबे की चाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुन माई मोहि आई कहंउ बेदन
काहि ॥ १ ॥ आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ भजु
सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥ २ ॥ २ ॥ २४ ॥
मलार महला ५ ॥ प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ हाहा हूहू गंध्रब
अपसरा अनंद मंगल रस गावनी नीकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनित ललित
गुनज्ञ अनिक भांति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥ १ ॥ गिरि तर
थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साध संगि
रामईआ रस पाइओ नानक जा कै भावनी नीकी ॥ २ ॥ ३ ॥ २५ ॥
मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥
१ ॥ रहाउ ॥ दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ मन
निरमल उजीआरे ॥ १ ॥ बिसम बिसमै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते
नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ एक तूंही एक तुही ॥
भगत टेक तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥ २ ॥ ४ ॥ २६ ॥
मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु आगिआ ॥ होहि आनंद सगल भाग ॥
१ ॥ रहाउ ॥ संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥ १ ॥ घन
घोर प्रीति मोर ॥ चितु चातृक बूंद ओर ॥ ऐसो हरि संगे मन मोह ॥
तिआगि माइआ धोह ॥ मिलि संत नानक जागिआ ॥ २ ॥ ५ ॥
२७ ॥ मलार महला ५ ॥ गुन गुोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि
चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ
कै संगि ॥ हरि सिमरि एक रंगि मिटि जांहि दोख मीत ॥ १ ॥
पारब्रहम भए दइआल ॥ बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ साध जनांकै

चरन लागि ॥ नानक गावै गोविंद नीत ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥ मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ गुन गावत सुख चैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥१॥ पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥ २ ॥ ७ ॥ २९ ॥ मलार महला ५ ॥ हे गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ १ ॥ हे समृथ अगम पूरन मोहि मइआ धारि ॥२॥ अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥३॥८॥३०॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ सूरु चहैं प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पांई ॥ १ ॥ पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ प्रीतम प्रीत बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ चातृकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥ ३ ॥ मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु तांई ॥ ४ ॥ धन वांढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठांई ॥ गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥ ५ ॥ प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाईं ॥ प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥ ६ ॥ सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥ ७ ॥ अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसांईं ॥ गुरपरसादि घर ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥ ८ ॥ १ ॥ मलार महला १ ॥ जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को

नाही ॥ अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पांही ॥ १ ॥ इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥१॥ रहाउ ॥ जै दगदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ अमरु अनाथ सरब सिरिमौरा काल बिकाल भरम भै खंजनु ॥ ३ ॥ कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ नानी सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥ ४ ॥ नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ उलटी नदी कहां घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन मांही ॥ ५ ॥ गारड़ु गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ मन तन हेंव भए सचु पाइआ हरि की भगति निरारी ॥६॥ जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआं दइआला ॥ तुम्हरी सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥ ७ ॥ बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥८॥ निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ नानक सो प्रभु प्रभु दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥९॥२॥ मलार महला १ ॥ चातृक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥ १ ॥ रैनि बबीहा बोलिओ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ प्रिअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥२॥ नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥३॥ रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥ ४ ॥ लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥५॥ प्रिअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥ ६ ॥ अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकउं बिन मिले नींद न पाई ॥ ७ ॥ पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ८ ॥ सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ तृसना सबदि बुझाई ॥९॥ कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥१०॥३॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥
डूगरु ऊचउ गड़ु पातालि ॥ सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ मारगु
मुकता हउमै मारि ॥१॥ मै अंधुले नावै की जोति ॥ नाम अधारि चला
गुर कै भै भेति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै
तकीऐ साचै ताणि ॥ नामु सम्हालसि रूड़ी बाणि ॥ थैं भावै दरु लहसि
पिराणि ॥२॥ ऊडां बैसा एक लिवतार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥
ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार
॥ ३ ॥ जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥
सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ करण पलाव
करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पंकज महि नामु छडाए
जे गुर सबदु सिञापै ॥ ४ ॥ इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ इकि
सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अंम्रित धार ॥ जिनि
पीती तिसु मोखदुआर ॥ ५ ॥ नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु
बाणी ॥ इंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि
बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर बाझहु घोर अंधारा
डूबि मुए बिनु पाणी ॥ ६ ॥ जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ जो धुरि
लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ॥ एक सबदि राचै
सचि समाइ ॥७॥ चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं
॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ जांमणु मरणा
दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै
साची नदरि रसालं ॥८॥१॥४॥ मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति
सार न जानै ॥ कंठे बैठो गुर सबदि पछानै ॥ १ ॥ तू कैसे आड़ि फाथी
जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक जीअ कै
जीआ खाही ॥ जलि तरती बूडी जल माही ॥ २ ॥ सरब जीअ कीए
प्रतपानी ॥ जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥ ३ ॥ जब गलि फास पड़ी
अति भारी ॥ ऊडि न साकै पंख पसारी ॥ ४ ॥ रसि चूगहि मनमुखि

गावार ॥ फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥५॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु सम्हालु ॥ ६ ॥ गुरमति साची सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरिधारि ॥ ७ ॥ से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥८॥२॥५॥

मलार महला ३ असटपदीआ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जां हरि की होइ रजाइ ॥१॥ मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सतिगुर ते गिआनु ऊपजै तां इह संसा जाइ ॥ सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥ २ ॥ गुरपरसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥ ३ ॥ गुर परसादी सिव घरि जंमै विचहु सकति गवाइ ॥ अचरु चरै बिबेक बुधि पाए पुरखै पुरखु मिलाइ ॥४॥ धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ लाहा हरि सत संगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥ ६ ॥ हरि नामां हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ कृपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोखदुआरु ॥७॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥८॥ १॥ मलार महला ३ ॥ बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारोवार ॥ सतिगुर भेटै मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥१॥ मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपणै भाणै स्रिसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु

भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥२॥ वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि
बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु माहरो
सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अंमृतु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव
लाइ ॥ हरि कै नाइ सदा हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥ ४ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु पतीआइ ॥ हरि किरपा
ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु
भागा हरि धनु न पाइ ॥ ५ ॥ त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि
वीचारु ॥ मुकति कदे न होवई नहु पाइनि मोखदुआरु ॥ बिनु सतिगुर
बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी
थके बेदां का अभिआसु ॥ हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि
होवै वासु ॥ जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥ ७ ॥ हरि
नावै नो सभको परतापदा विणु भागां पाइआ न जाइ ॥ नदरि करे गुरु
भेटीऐ हरिनामु वसै मनि आइ ॥ नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ
रहां समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

मलार महला ३ असटपदी घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हरि हरि कृपा करे गुर की
कारै लाए ॥ दुखु पल्हरि हरि नामु वसाए॥साची गति साचै चितु लाए॥
गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥
गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥१॥रहाउ॥
बिनु पिर कामणि करे सींगारु ॥ दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥
मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ बहु करम द्रड़ावहि नामु विसारि
॥ २ ॥ गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ सबदे पिरु राखिआ
उरधारि ॥ एकु पछाणै हउमै मारि ॥ सोभावंती कहीऐ नारि ॥ ३ ॥
बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥
ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥
४ ॥ कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ बिनु मन मूए भगति न
होइ ॥ गिआन मती कमल परगासु ॥ तितु घटि नामै नामि

निवासु ॥ ५ ॥ हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥ ६ ॥ से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ सदही नामु वेखहि हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ७ ॥ आपे बखसे देइ पिआरु ॥ हउमै रोगु वडा संसारि ॥ गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु मलार छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ अपने जन संगि राते ॥ जन संगि राते दिनसुराते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गोपाल गुण निधि सदा संगे सरब गुण जगदीसरै ॥ मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जनमाते ॥ नानक प्रीतम कृपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते॥१॥ प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ महा पतित तुम्ह तारे॥पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंधु सुआमीआ॥ संत संगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्हारे ॥ २ ॥ हरि चरन कमल मनु लीना ॥ प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ जल मीन प्रभ जीउ एक तू है भिन आन न जानीऐ ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऐ ॥ भजु साध संगे एक रंगे क्रिपाल गोबिद दीना ॥ अनाथ नाच सरणाइ नानक करि महआ अपुना कीना ॥ ३ ॥ आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ भ्रम भंजन हरि राइआ ॥ आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुणनिधि पिआरिआ ॥ महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

वार मलार की महला १

राणे कैलास तथा मालदे की धुनि

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक महला ३ ॥

गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ सभ

दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ अंदरु रचै सच रंगि जिउ मजीठै लालु ॥ कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि निहालु ॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दिसै जमकालु ॥ खुधिआ तृसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करै बीचारु ॥ तुधु भावै संतोखीआं चूकै आल जंजालु ॥ मूलु रहै गुरु सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥१॥ महल १ ॥ हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ अंबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ विणु थंम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥ तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥ १ ॥ सुलोक म० १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ नागां मिरगां मछीआं रसीआं घरि धनु होइ ॥१॥ म० १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइ ॥ गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ बैठा ताड़ी लाइ कवलु छपाइआ ॥ ब्रहमै वडा कहाइ अंतु न पाइआ ॥ न तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ ना तिसु भुख पिआस रजा धाइआ ॥ गुर महि आपु समोइ सबदु वरताईआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥ २ ॥ सलोक म० १॥ वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥ भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥ म० २ ॥ वैदा वैदु सु वैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥ ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥ रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ ब्रहमे दिते बेद पूजा लाइआ ॥ दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ दैंता मारे धाइ हुकमि सबाइआ ॥ ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न

पाइआ ॥ सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ दुनीआ धंधै लाइ आपु
छपाइआ ॥ धरमु कराए करम धुरहु फुरमाइआ ॥ ३ ॥ सलोक म० २
॥ सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ नानक झूरि मरहि
दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥१॥ म० २ ॥ सावणु आइआ हे
सखी जलहरु बरसनहारु ॥ नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह
नालि पिआरु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥
लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ
॥ आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ सभना खसमु एकु है
गुरमुखि जाणीऐ ॥ हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥
सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥ नानक सचा सबदु
सलाहि सचु पछाणीऐ ॥४॥ सलोक म० ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ
अवरि करेंदा वंन ॥ किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥
रंगु रहिआ तिन्ह कामणी जिन्ह मनि भउ भाउ होइ ॥ नानक भै भाइ
बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥ १ ॥ म० ॥ ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि
आइआ वरसै नीरु निपंगु ॥ नानक दुखु लागा तिन्ह कामणी जिन्ह
कंतै सिउ मनि भंगु ॥२॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥
बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥ परविरति निरविरति हाठा
दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ही
निहचउ दरगह हारिआ ॥ गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ही
मारिआ ॥ सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ से भगत तुधु भावदे
सचै नाइ पिआरिआ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा विटहु हउ
वारिआ ॥५॥ सलोक म० ३॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी॥
नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥ १ ॥ म० ३ ॥ किआ
उठि उठि देखहु बपुड़े इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ जिनि एहु मेघु
पठाइआ तिसु राखहु मन मांहि ॥ तिस नो मंनि वसाइसी जा कउ नदरि
करेइ ॥ नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥ आडाणे
आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ आपे जगतु उपाइ कै

कुदरति करे वीचार ॥ मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै मार ॥ गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ ओथै सतिगुरु बेली होवै कढि लए अंती वार ॥ एना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥ ६ ॥ सलोक म० ३॥ बाबीहा जिसनो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ अपणी किरपा करि कै वससी वणु तृणु हरिआ होइ ॥ गुरपरसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ॥ बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक अंमृतु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव लाइ ॥ सचै सुणिआ कंनु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु संबाहि ॥ जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइ ॥ दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥ आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहे लिव लाइ ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ से सुखीए सदा सोहणे जिन्ह विचहु आपु गवाइ ॥ तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइ ॥ ७ ॥ सलोक म० ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां सदा सदा सुखु होइ ॥ सहसा मूलि ना होवई सभ चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ सचा साहिबु मनि वसै तां मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ अंमृतु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ गुरमुखि जिनी बुझिआ हरि अंमृतु रखिआ उरि धारि ॥ हरि अंमृतु पीवहि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारि ॥ अंमृतु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि

आतम रामु मुरारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले
पाइआ न जाइ ॥ गुरकै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ अपणा
आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ तिस की कीमति ना पवै
कहणा किछू न जाइ ॥ हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ
दिती बुझाइ ॥ जगतु मुसै अंमृतु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ विणु
नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ गुरमती जागे तिनी घरु
रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥ ८ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहा ना
बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ नानक हुकमि
मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वंनु ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बाबीहा जल
महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ जल की सार न जाणही तां
तूं कूकण पाहि ॥ जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि
॥ एते जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिन्हा के नाहि ॥ नानक गुरमुखि
तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नाथ जती
सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ
॥ जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ जला बिंबु असरालु तिनै
वरताइआ ॥ नीलु अनीलु अगंमु सरजीतु सबाइआ ॥ अगनि उपाई
वादु भुख तिहाइआ ॥ दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ रखै
रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥ ९ ॥ सलोक म० ३ ॥ इहु जलु
सभतै वरतदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि
रहे समाइ ॥ नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥ १ ॥
म० ३ ॥ भिंनी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ जितु वुठै अनु
धनु बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ॥ जितु खाधै मनु तृपतीऐ जीआं
जुगति समाइ ॥ इहु धनु करते का ख़ेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥
गिआनी का धनु नामु है सदही रहै समाइ ॥ नानक जिन कउ नदरि
करे तां इहु धनु पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपि कराए करे आपि
हउ कै सिउ करी पुकार ॥ आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥
जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ
आपे बखसणहारु ॥ आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ सभ

महि एकु वरतदा सिरि सिरि करे बीचारु ॥ गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ नानक किसनो आखीऐ आपे देवणहारु ॥ १० ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ अंमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ साति होइ ॥ हरि जीउ आपणी कृपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुरपरसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ आवागउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥ ११ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बाबीहा भिंनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ खंड पताल असंख मैं गणत न होई ॥ तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥ १२ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरी नदरि

निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥१॥ म० ३ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुण दाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥२॥ पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ त्रै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अवगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ जिनी पुरखी उरिधारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ जिसु बखसे सो पाइसी गुरसबदी वीचारु ॥१३॥ सलोक म० ५ ॥ राति न विहावी साकतां जिना विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरिगुण गांउ ॥ १ ॥ म० ५ ॥ रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहंनि ॥२॥ पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ॥पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥ १४ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनां जीआ रिजकु समाइ ॥१॥ म० ३ ॥ चातृक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ दूजै भाइ भरंमिआ अंमृत जलु पलै न पाइ ॥ नदरि करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ नानक सतिगुर ते अंमृत जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि वणखंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ इकि भसम चढ़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ इकि जटा बिकट

बिकराल कूतु घरु खोवही ॥ इकि नगन फिरहि दिन राति नींद न
सोवही ॥ इकि अगनि जलावहि अंगु आपु बिगोवही ॥ विणु नावै
तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु
सेवही ॥ १५ ॥ सलोक म० ३ ॥ बाबीहा अंमृत वेलै बोलिआ तां दरि
सुणी पुकार ॥ मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ हउ तिन
कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरधारि॥ नानक नामे सभ हरीआवली
गुर कै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ बाबीहा इव तेरी तिखा न
उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु
॥ नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि
जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ तिन मुखि नाही नामु न तीरथि
न्हाइआ ॥ हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥ कुचिल रहहि दिन
राति सबदु न भाइआ ॥ तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ
॥ मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ बिनु सबदै आचारु न किन ही
पाइआ ॥ गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥१६॥ सलोक म० ३ ॥
सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ नानक सदा सुहागणी गुर
कै हेति अपारि ॥ १ ॥ म० ३ ॥ सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै
भाइ पिआरु ॥ नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥२॥
पउड़ी॥ सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ इकि गावहि राग परीआ
रागि न भीजई ॥ इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ इकि
अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ तृसना होई बहुतु किवै न
धीजई ॥ करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ लाहा नामु संसारि
अंमृतु पीजई ॥ हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥ १७ ॥ सलोक
म० ३ ॥ गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥
गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ मनु तनु सचा सचु मनि
सचे सची सोइ ॥ अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ कलिजुग
महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ से वडभागी नानका जिन
गुरमुखि परगटु होइ ॥ १ ॥ म० ३ ॥ इंदु वरसै करि दइआ
लोकां मनि उपजै चाउ ॥ जिस कै हुकमि इंदु वरसदा तिस कै

सद बलिहारै जांउ ॥ गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥ दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ पुछि न सकै कोइ जां खसमै भाइआ ॥ नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥ १८ ॥ सलोक म० १ ॥ कुलहां देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ चूहा खड न मावई तिकलि बंन्है छज ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जांहि ॥ केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधी फूकि मुई देवानी ॥ खसम मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी विललाइ ॥ खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ गला वाले हैनि घनेरे छडि न सकै कोई ॥ मखीं मिठै मरणा ॥ जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥२॥ पउड़ी ॥ अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ देहि दानु संतोखीआ सचा नामु मिलै आधारु ॥१९॥

सलोक म० १ ॥ राती कालु घटै दिनि कालु ॥ छिजै काइआ होइ परालु ॥ वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ भुलिआ चुकि गइआ तपतालु ॥ अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ मोइआ रोंहि रोंदे मरि जांही ॥ नानक खसमै एवै भावै ॥ सेई मुए जिन चिति न आवै ॥ १ ॥ म० १ ॥ मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ वंनु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ मनिमुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंमृत नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे रजाई ॥ २० ॥ सलोक म० १ ॥ सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ सो धनु मित्रु न कांढीऐ जितु सिरि चोटां खाइ ॥ जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥१॥ म० १ ॥ दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ रूपी भुख न उतरै जां देखां तां भुख ॥ जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥ २॥ म० १ ॥ अंधी कंमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ चिकड़ि लाइऐ किआ थीऐ जां तुटै पथर बंधु ॥ बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥ ३ ॥ म० १ ॥ लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ इकन्हा गली जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥ लिखिआ पलै पाइ सो सचु

जाणीऐ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ भउजल तारण हारु सबदि पछाणीऐ ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ निंदक लाइतबार मिले हड़वाणीऐ ॥ गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥ २१ ॥ सलोक म० २ ॥ नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥ १ ॥ म० १ ॥ हरणां बाजां तै सिकदारां एन्हा पढ़िआ नाउ ॥ फांधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिनी कमाणा नाउ ॥ पहिलो दे जड़ अंदरि जमै ता उपरि होवै छाउ ॥ राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥ रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ जिथै जीआं होसी सार ॥ नकीं वढीं लाइतबार ॥२॥ पउड़ी ॥ आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ भै ते निरभउ पाईऐ जिसदा अंतु न पारावारु ॥ मनमुख भै की सार न जाणन्ही तृसना जलते करहि पुकार ॥ नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरिधार ॥२२॥ सलोक म० १ ॥ रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊघै सउड़ि पलंघु ॥ भंउ कै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥ १ ॥ म० १ ॥ राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं ॥ सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं ॥ गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥ २३ ॥ सलोक म० १ ॥

॥ पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीऐ किउ आखीऐ जापै सचो सचु ॥ करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेइ ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ कहां ते आइआ कहां एहु जाणु ॥ जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ इहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ ना हउ ना मैं जूनी पाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पढ़ीऐ नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अंतु न पारावारु न किनही पाइआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु तिन सच न भाइआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥ २४ ॥ सलोक म० १ ॥ पहिलां मासहु निमिआ मासै अंदरि वासु ॥ जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥ मासहु बाहरि कढिआ ममा मासु गिरासु ॥ मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तांको आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥ १ ॥ म० १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ फड़ु करि लोका नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै ॥ अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रकतु निपंने मछी मासु न खांही ॥ इसत्री पुरखै जां

निसि मेला ओथै मंधु कमाही ॥ मासहु निमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ जीअ जंत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥ मासहु निमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानां ॥ जे ओइ दिसहि नरकि जांदे तां उन का दानु न लैणा ॥ देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा ॥ आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा ॥ पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ॥ तोइअहु अंनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना ॥ तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंतु न किनही पाइआ ॥ सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर का सबदु रतनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइआ ॥ आवागउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ॥इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥ २५ ॥ सलोक म० १ ॥ नानक माइआ करम बिरखु फल अंमृत फल विसु ॥ सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥१॥ म० २ ॥ नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥ एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥ तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ कालु चलाए बंन्हि कोइ न रखसी ॥ जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥ २६ ॥ सलोक म० १ ॥ घर

महि घरु दिखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ उलटि कमलु अंमृति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥ १ ॥ म० १ ॥ चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ पूराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी नवी म० ५ ॥ सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥ २७ ॥ सलोक म० १ ॥ धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥ धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥ १ ॥ म० १ ॥ आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ तेरी गति मिति तू है जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ तू करता पुरखु अगंमु है रविआ सभ ठाई ॥ जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥ २८ ॥ १ ॥ सुधु

रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जांचै घरि दिगदिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ जांचै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कंउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करासिरी ॥ सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥ १ ॥ जांचै घरि कुलालु ब्रहमा चतुरमुखु डांवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ जांकै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ पापु पुंनु जांचै डांगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ धरमराइ परुली प्रतिहारु ॥ सो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥ २ ॥ जांचै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ चउर ढूल जांचै है पवणु ॥ चेरी सकति जीतिले भवणु ॥ अंड टूक जाचै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥३॥ जाचै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणी हारीआ ॥ नख प्रसेव जाचै सुरसरी ॥ सपत समुंद जांचै घड़थली ॥ एते जीअ जांचै वरतणी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥४॥ जांचै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ एते जीअ जांचै हहि घरी ॥ सरब बिआपिक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ तांची आणि ॥ सगल भगत जाचै नीसाणि ॥ ५ ॥ १ ॥ मलार ॥ मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ तू न बिसारे रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपर सभ कोपिला ॥ सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥१॥ मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥ २ ॥ तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अति भुज भइओ अपारला ॥ फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ १ ॥ तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥ २ ॥ मेरी जाति कुटबांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ ३ ॥ १ ॥ मलार ॥ हरि जपत तेऊ जनां पदम कवलास पति तास समतुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक होइ बिसतरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥ १ ॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥ २ ॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥ ३ ॥ २ ॥

मलार

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साध संगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥ १ ॥ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २ ॥ कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

मेरा मनु साध जनां मिलि हरिआ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि साध जनां कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनां पग परिआ ॥ धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥ १ ॥ मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ जिउं जलतंतु पसारिओ बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥ २ ॥ हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥ ३ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उरधरिआ ॥ सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित चितेन ॥ प्रभि दीन दइआलि कीओ अंगीकृतु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥ १ ॥ हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥ २ ॥ हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन

मिलिआ पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥ ३ ॥ तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥ ४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि क्रिपा करी किरपास ॥ अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥ १ ॥ हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥ २ ॥ किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥ ३ ॥ जेती सृसटि करी जगदीसर ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥ ४ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि राम नामु जपिओ गुरवाक ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥ १ ॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरिधारिओ हरि रसिक रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥ २ ॥ हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥ ३ ॥ तुम्हरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु माइआ गढ़ि वेढ़ी गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह पीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ

देह भीति ॥१॥ हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ
प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि असथिरु रामु रविआ रंगि
प्रीति ॥२॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआं मनु रंगि रंगीति
॥ हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥ ३ ॥
हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु
दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥ ४ ॥ ५ ॥ कानड़ा
महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगंनाथ॥घूमन घेर परे बिखु बिखिआ
सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरंजन
नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ॥काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते
कासट लोह तरे संगि साथ ॥१॥ तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर
हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन
जानहि आपि जगंनाथ ॥२॥ अद्रसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति
मिलि साधू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ
अकथ कथ काथ ॥ ३ ॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु
जगंनाथ ॥ जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु कृपा राखहु
जन साथ ॥ ४ ॥ ६ ॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि
रतन जवेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो
किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ
कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ तुमरी जी अकथ कथा तू
तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥
हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि
हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि लीओ री सुहागु
हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले
जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥
कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥ एका जीह कीचै
लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस

॥१॥ रहाउ ॥ हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥ १ ॥ हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ जन नानक अंमृतु पीआ गुरमती धनु धंनु धनु धंनु धंनु गुरू साबीस ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ भजु रामो मनि राम ॥ जिसु रूप न रेख वडाम ॥ सत संगति मिलु भजु राम ॥ बड हो हो भाग मथाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु गृहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥ राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥ १ ॥ सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ हरि हो हो लिखे लिलाट ॥१॥ रहाउ॥खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ करि भेख न पाईऐ हरि ब्रहम जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥१॥ तू अपरंपरु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥२॥४॥१०॥ कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन गोबिद माधो ॥ हरि हरि अगम अगाधो ॥ मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमतो सुध हाधो ॥ १ ॥ जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥२॥५॥११॥

कानड़ा महला ४ ॥ हरि जसु गावहु भगवान ॥ जसु गावत पाप लहान
॥ मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ हरि हो हो किरपान ॥ १ ॥ रहाउ
॥ तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चित ते साधू सुख पावहि जपि
हरि हरि नामु निधान ॥ उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध
जना गुर सतिगुरू भगवान ॥१॥ जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुखफल
पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे
हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥२॥६॥१२॥

कानड़ा महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गाईऐ गुण गोपाल कृपानिधि
॥ दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जाकउ भेटत होइ सगल सिधि ॥ १
॥ रहाउ ॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै
१ ॥ जाकउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ताकउ दूखु नही तिलु सुपना ॥
२ ॥ जाकउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥
३ ॥ कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल
भइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी
अपने ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥
१ ॥ रहाउ ॥ ताकै हिरदै बसिओ नामु ॥ जाकउ सुआमी कीनो
दानु ॥ १ ॥ ताकै हिरदै आई सांति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनांति ॥
२ ॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मंत्रु जाकउ गुरि दीन ॥ ३ ॥
कहु नानक ताकै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥
४ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनां ॥
अनिक बार करि बंदन संतन ऊहां चरन गोबिंद जी के बसना ॥
१ ॥ रहाउ ॥ अनिक भांति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ
क्रिपालु त हरि हरि धिआवउ ॥ १ ॥ कोटि करम करि देह न
सोधा ॥ साध संगति महि मनु परबोधा ॥ २ ॥ तृसन न बूझी
बहु रंग माइआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम
जब भए दइआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥ ४ ॥ ३ ॥
कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी मांगु गोबिद ते ॥ टहल संतन की संगु

साधू का हरि नामां जपि परमगते ॥१॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥१॥ सफल होत इह दुरलभ देही ॥ जाकउ सतिगुरु मइआ करेही ॥२॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जाकै हृदै बसहि गुर पैरा ॥३॥ साध संगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ भगति भगतन हूं बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥ १ ॥ पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते तृपतारै ॥ २ ॥ अनिक स्वांग काछे भेखधारी ॥ जैसो सा तैसो दृसटारी ॥ ३ ॥ कहन कहावन सगल जंजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥ ४ ॥ ५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिओ ॥१॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गंभीर अथाहिओ ॥ २ ॥ ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिओ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ संतन पहि आपि उधारन आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु दृड़ाइओ ॥ १ ॥ काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥ २ ॥ असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥ ३ ॥ संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥ ४ ॥ ७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ १ ॥ जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥ २ ॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपर तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥ १ ॥ तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ

होहु कृपाल त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥ २ ॥ ९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्रु सतिगुरू दृड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह तृपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ सुखु पाइआ तृसना सभ बुझी है सांति पाई गुन गाइआ ॥ १ ॥ बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ माइआ ॥ साध संगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ सीतला सुख सांति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥ १ ॥ पुंन दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥ २ ॥ ११ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कथीऐ संत संगि प्रभ गिआनु ॥ पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रंगि ॥ १ ॥ जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ताकी दुरमति नास ॥ सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥ २ ॥ १ ॥ १२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साध संगति निधि हरि को नाम ॥ संगि सहाई जीअ कै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत रेनु निति मजनु करै ॥ जनम जनम के किलबिख हरै ॥ १ ॥ संत जना की ऊची बानी ॥ सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥ २ ॥ २ ॥ १३ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत कहा लोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥ १ ॥ महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥ २ ॥ सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ पेखि

पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकांत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भांति ॥ १ ॥ सिमरत इक बार हरि हरि मिटि कोटि कसमल जांति ॥ २ ॥ गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत सांति ॥ ३ ॥ अंमृता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ साजना संत आउ मेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥ १ ॥ संत चरन धरउ माथै चांदना ग्रिहि होइ अंधेरै ॥ २ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥ ३ ॥ प्रभ कृपा ते संत पाए वारि वारि नानक उह बेरै ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन गोपाल तेरी ॥ मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥ १ ॥ सीतला हरि नामु तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ २ ॥ दीन दरद निवारि तारन ॥ हरि कृपा निधि पतित उधारन ॥ ३ ॥ कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ सुखी नानक गुरि नामु दृड़ाइओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बड भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ भोर भरम काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥ १ ॥ तू अथाहु अति बडो सुआमी कृपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥ २ ॥ ७ ॥ १७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुचिल कठोर कपट कामी ॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥ १ ॥ जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥ गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥ २ ॥ ८ ॥ १६ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ४ ॥ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ नाराइन नरपति नमसकारै ॥ ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ

आपि मुकतु मोहि तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन कवन कवन गुन कहीऐ
अंतु नही कछु पारै ॥ लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै
॥१॥ बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ कहु नानक
संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥२॥१॥२०॥ कानड़ा
महला ५॥ न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ ऊच नीच सभ पेखि समानो
मुखि बकनो मनि मान ॥१॥ रहाउ ॥ घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै
भंजन मेरे प्रान ॥ मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु नासिओ मंत्रु दीओ गुर
कान ॥ १ ॥ करत रहे क्रतज्ञ करुणा मै अंतरजामी ज्ञान ॥ आठ पहर
नानक जसु गावै मांगन कउ हरि दान ॥२॥२॥२१॥ कानड़ा महला
५ ॥ कहन कहावन कउ कई केतै ॥ ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत
जोग कउ बेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी
नेतै ॥ बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥१॥ सोगु नाही
सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ कहु नानक जन हरि हरि
हरि है कत आवै कत रमतै ॥२॥३॥२२॥ कानड़ा महला ५॥ हीए को
प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ तन मन गलत भए तिह संगे मोहनी मोहि
रही मोरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ जै जै पहि कहउ बृथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ
गहे रहे अटकाइ ॥ अनिक भांति की एकै जाली ताकी गंठि नही छोराइ
॥ १ ॥ फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ काटे
अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कंठि लगाइ ॥२॥४॥२३॥ कानड़ा
महला ५ ॥ आनद रंग बिनोद हमारै ॥ नामो गावनु नामु धिआवनु
नामु हमारे प्रान अधारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो गिआनु नामु इसनाना
हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ हरिनामो सोभा नामु बडाई
भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥ १ ॥ अगम पदारथ लाल
अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ कहु नानक प्रभ भए
कृपाला मगन भए हीअरै दरसारै ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥ कानड़ा
महला ५ ॥ साजन मीत सुआमी नेरो ॥ पेखत सुनत सभन
कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना
जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ आगै द्रसटि

आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो ॥ १ ॥ अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहारु दातारु बिसेरो ॥ कहु नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥२॥ ६ ॥ २५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ बिखै दलु संतनि तुम्हरै गाहिओ ॥ तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिओ ॥ भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥ १ ॥ कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिओ ॥ कृपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिओ ॥२॥७॥२६॥कानड़ा महला ५ ॥ बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥ १ ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ चरन संतन कै माथा मेरो ॥१॥ पारब्रहम कउ सिमरहु मनां ॥ गुरमुखि नानक हरि जसु सुनां ॥ २ ॥ ९ ॥२८॥ कानड़ा महला ५ ॥ मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ रसना हरि हरि भोजनि तृपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन ॥ १ ॥ सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ करु गहि लीए नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥ २ ॥ १० ॥ २९ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहंमत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥ १ ॥ अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ करुण क्रिपाल गुोपाल दीनबंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥ कानड़ा महला ५ ॥ जीअ प्रान मान दाता ॥ हरि बिसरते ही हानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद

तिआगि आन लागहि अंमृतो डारि भूमि पागहि ॥ बिखै रस सिउ
आसकत मूड़े काहे सुख मानि ॥ १ ॥ कामि क्रोधि लोभि बिआपिओ
जनम ही की खानि ॥ पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि
॥२॥१२॥३१॥ कानड़ा महला ५ ॥ अविलोकउ राम को मुखारबिंद
॥ खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन
कमल रिदै धारि ॥ उतरिआ दुखु मंद ॥ १ ॥ राज धनु परवारु मेरै
सरबसो गोबिंद ॥ साध संगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरंद
॥ २ ॥ १३ ॥ ३२ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ गुर
सतिगुर चरनी लागि ॥ हरि पावहु मनु अगाधि ॥ जगु जीतो हो हो
गुर किरपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ अनिक पूजा मैं बहुबिधि खोजी सा पूजा
जि हरि भावासि ॥ माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह करम कमासि
॥ प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥ १ ॥
अवर ओट मैं कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ किआ दीनु
करे अरदासि ॥ जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ प्रभ चरनन की मनि
पिआस ॥ जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद
बलि जास ॥ २ ॥ १ ॥ ३३ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥
नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ हरि रंग रंग रंग अनूपेरै ॥
काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ सो पावै
जिसु लिखतु लिलेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवउ साध संत चरनेरै ॥
बांछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ सासि
सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ किछु संगि चालै लाख करोरै ॥
प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥ १ ॥ मनसा मानि एक
निरंकेरै ॥ सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ कवन कहां हउ गुन

प्रिअ तेरै ॥ बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ मिलु नानकदेव जगत गुर केरै ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥ १ ॥ दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ हरि संतना की रेन ॥ हीउ अरपि देन ॥ प्रभ भए है किरपेन ॥ मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ कीटा हसत पूरन सभ संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम तीरथ सहित गंगा ॥ जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ पूजाचार करत मेलंगा ॥ चक्र करम तिलक खाटंगा ॥ दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥ १ ॥ हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ काम क्रोध अति तृसन जरंगा ॥ सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ७

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥ १ ॥ पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंत न करि बीचारु ॥ अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ एक तूही तूही तूही ॥ २ ॥ १ ॥ ३७ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ८

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हां हां मन चरन रेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥ १ ॥ हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ कृपाल दइआ मइआ धारि ॥ नानकु मागै नामु दानु ॥ तजि मोहु

भरमु सगल अभिमानु ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ प्रभ
कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तटन खटन जटन होमन नाही डंड धार सुआउ ॥ १ ॥ जतन भांतन
तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ सोधि सगर
सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ३९ ॥

कानड़ा महला ५ घरु ६

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पतित पावनु भगति बछलु भै
हरन तारन तरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि
सुनत करन ॥ १ ॥ प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ आस
पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥ २ ॥ १ ॥ ४० ॥
कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥
पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सैसार
गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ बिकल माइआ संगि धंध
॥ करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥ १ ॥ अनाथ
नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ मनि दरसनै की पिआस ॥ प्रभ
पूरन गुनतास ॥ क्रिपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ
॥ २ ॥ २ ॥ ४१ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ वारि वारउ अनिक डारउ ॥
सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक मंदर पाट सेज
सखी माहि नाहि इन सिउ तात ॥ १ ॥ मुकत लाल अनिक भोग
बिनु नाम नानक हात ॥ रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ
संगि सूखि बिहात ॥ २ ॥ ३ ॥ ४२ ॥ कानड़ा महला ५ ॥
अहं तोरो मुखु जोरो ॥ गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ प्रिअ प्रीति
पिआरो मोरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गृहि सेज सुहावी आगनि चैना
तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥ १ ॥ आइ न जाइ बसे
निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ छुटकी हउमै सोरो ॥ गाइओ
री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥ २ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

कानड़ा म० ५ घरु ६ ॥ तां ते जापि मना हरि जापि ॥ जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहंताप ॥ रहाउ ॥ जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥ १ ॥ नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ बिनसि जाइ मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

कानड़ा महला ५ घर १०

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम जोनि भ्रमिओं हारि परिओ दुआरि ॥ १ ॥ किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु ॥ दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ४५ ॥

कानड़ा महला ५ घर ११

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सहज सुभाए आपन आए ॥ कछू न जानौ कछू दिखाए ॥ प्रभु मिलिओ सुख बाले भोले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संजोगि मिलाए साध संगाए ॥ कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥ १ ॥ चरन लुभाए आन तजाए ॥ थान थनाए सरब समाए ॥ रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥ २ ॥ १ ॥ ४६ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ परमिति रूपु अगंम अगोचर रहिओ सरब समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति चतुराई ॥ १ ॥ जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओं जउ किरपाई ॥ प्रभू दइआर कृपार कृपानिधि जन नानक संत रेनाई ॥ २ ॥ २ ॥ ४७ ॥ कानड़ा महला ५ ॥ माई सिमरत राम राम राम ॥ प्रभ बिना नाही होरु ॥ चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ प्रान मनु धनु सरबसो हरि गुननिधे सुख मोर ॥ १ ॥ ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥ २ ॥ ३ ॥ ४८ ॥

कानड़ा महला ५ ॥ जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ साजनो तू मीतु मेरा गृहि तेरै सभु केहु ॥१॥ रहाउ ॥ मानु मांगउ तानु मांगउ धनु लख्मी सुत देह ॥१॥ मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद परम निधान ॥ भै भाइ भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥२॥४॥४९॥ कानड़ा महला ५ ॥ करत करत चरच चरच चरचरी ॥ जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥१॥ रहाउ ॥ अहं अहं अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल हई ॥१॥ मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥२॥५॥५०॥

कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ भगत जनां की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ अनरस साद गए सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो॥१॥ गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥ २ ॥ गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो॥ तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥३ ॥ राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही तृपतावैगो ॥ ४ ॥ कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भांति बनावैगो ॥ नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥५॥ माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावेगो ॥ पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥ ६ ॥ भउ बैरागु भइआ है बोहिथु गुरु खेवट

सबदि तरावैगो ॥ राम नामु हरि भेटीऐ हरि रामै नामि समावैगो ॥ ७
॥ अगिआनि लाइ सवालिआ गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ नानक
भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥ ८ ॥ १ ॥ कानड़ा महला
४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ जो जो जपै सोई गति पावै
जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कृपा कृपा कृपा करि हरि
जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलावहु
मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥ १ ॥ जनम जनम की हउमै मलु
लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ जिउ लोहा तरिओ संगि
कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥ २ ॥ संगति संत मिलहु सत
संगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ बिनु संगति करम करै
अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥ ३ ॥ भगत जना के हरि
रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ खिनु खिनु नामु देइ वडिआई
सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥ ४ ॥ भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ
जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ जो निंदा दुसट करहि भगता की
हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥ ५ ॥ ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा
तपु तापन पूज करावैगो ॥ जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु
चुकावैगो ॥ ६ ॥ जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं
लगि धिआवैगो ॥ जूठनजूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न
डुलावैगो ॥ ७ ॥ जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै
लावैगो ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥
८ ॥ २ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥
जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥ १ ॥ रहाउ
॥ सहस फनी जपिओ सेख नागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ तू
अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥ १ ॥
जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥
बिदर दासी सुत छोक छोहरा कृसनु अंकि गलि लावैगो ॥ २ ॥
जल ते ओपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ राम जना
हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥ ३ ॥ हम पाथर लोह

लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ जिउ सत संगति तरिओ
जुलाहो संतजना मनि भावैगो ॥ ४ ॥ खरे खरोए बैठत ऊठत मारगि
पंथि धिआवैगो ॥ सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति
जनावैगो ॥ ५ ॥ सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु
धिआवैगो ॥ गुरपरसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि समावैगो ॥ ६ ॥
सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ फिरि एह
वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥ ७ ॥ जे को भला लोड़ै भल
अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि ठाकुर
मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥ ८ ॥ ३ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु हरि
रंगि राता गावैगो॥भै भै त्रास भए है निरमल गुरमति लागि लगावैगो
॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि
आवैगो ॥ तिन की पंक मिलै तां जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो
॥१॥ दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ फिरि
उलटिओ जनमु होवै गुरबचनी गुरपुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥ २ ॥ इंद्री
दसे दसे फुनि धावत त्रैगुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ सतिगुर परचै
वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥ ३ ॥ ओअंकारि एको रवि
रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ एको रूपु एको बहुरंगी सभु एकतु
बचनि चलावैगो॥४॥गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो
॥ गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥५॥ जीअ
जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ बिनु गुर भेटे को महलु
न पावै आइ जाइ दुखु पावैगो ॥ ६ ॥ अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम
करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति
मलीन बिगसावैगो ॥ ७ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मै
सरधा नामि लगावैगो ॥ नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु
सरनि मिलावैगो ॥ ८ ॥ ४ ॥ कानड़ा महला ४ ॥ मन
गुरमति चाल चलावैगो ॥ जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि
कुंडे गुर अंकसु सबदु दृड़ावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलतौ चलै
चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ सतिगुरु सबदु

देइ रिद अंतरि मुखि अंमृतु नामु चुआवैगो ॥१॥ बिसीअर बिखु भरे
है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ माइआ भुइअंग तिसु नेड़ि
न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥२॥ सुआनु लोभु नगर महि
सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ सतु संतोखु धरमु आनि राखे
हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥ ३ ॥ पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु
निघरत काढि कढावैगो ॥ त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुर हाथी दे
निकलावैगो ॥४॥ सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो
॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥ ५ ॥
हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ आइआ कालु
दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥ ६ ॥ संतहु राम नामु धनु
संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि
देदे तोटि न आवैगो ॥ ७ ॥ राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर
सरणाई पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि
समावैगो ॥८॥५॥ कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो
॥ लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥ १ ॥
रहाउ ॥ सतिगुरु महापुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ
गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥ १ ॥ सतिगुर
बचनु बचनु है नीको गुरबचनी अंमृतु पावैगो ॥ जिउ अंबरीकि
अमरापद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥ २ ॥ सतिगुर सरनि
सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दइआल दीन भए है
सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥ ३ ॥ सतिगुर सरनि पए से थापे
तिन राखन कउ प्रभु आवैगो जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो
तिसै लगावैगो ॥ ४ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह
मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि
मिलि मेलि मिलावैगो ॥ ५ ॥ गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि
गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै
हरि जन कउ पूज करावैगो ॥६॥ साकत नर सतिगुरु नही कीआ
ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु

माइआ करंगि लगावैगो ॥ ७ ॥ राम नामु सभ जग का तारकु लगि
संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे सत संगति राखि
समावैगो ॥८॥६॥ छका १

कानड़ा छंत महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ से उधरे जिन राम धिआए ॥
जतन माइआ के कामि न आए ॥ राम धिआए सभि फल पाए धनि
धंनि ते बडभागीआ ॥ सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ लिव
लागीआ ॥ तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाए ॥
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥१॥ मिलि साधू
नित भजह नाराइण ॥ रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ गुण गाइ
जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ सतसंगि पाईऐ हरि
धिआईऐ बहुड़ि दूखु न लागए ॥ करि दइआ दाते पुरख बिधाते संत
सेव कमाइण ॥ बिनवंति नानक जन धूरि बांछहि हरि दरसि सहजि
समाइण ॥२॥ सगले जंत भजहु गोपालै ॥ जप तप संजम पूरन घालै
॥ नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ गोबिदु
गाईऐ नित धिआईऐ परवाणु सोई आइआ ॥ जप ताप संजम हरि हरि
निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ बिनवंति नानक करि दइआ दीजै
हरि रतनु बाधउ पालै ॥ ३ ॥ मंगलचार चोज आनंदा ॥ करि किरपा
मिले परमानंदा ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ
॥ बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुनीआ ॥ ले कंठि
लाइ सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा ॥ बिनवंति नानक मिले सुआमी
पुरख परमानंदा ॥ ४ ॥ १ ॥

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सलोक म० ४ ॥ राम नामु निधानु
हरि गुरमति रखु उरधारि ॥ दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि
॥ जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ धनु धनु वडभागी

नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ गोविंदु गोविदु
गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ गोविदु गोविदु गुरमति धिआईऐ
तां दरगह पाईऐ मानु ॥ गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला
परधानु ॥ नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥ २
॥ पउड़ी ॥ तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ तू
आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ तू आपे आपि
वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ सतसंगति सतिगुर धंनु धंनो धंन
धंन धनो जितु मिलि हरि बुलग बलोगीआ ॥ सभि कहहु मुखहु हरि
हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥ १ ॥
सलोक म० ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥
हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ नानक अनदिनु गुण
उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि आपे आपि
दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ हरि आपे आपि वरतदा हरि
जेवडु अवरु न कोइ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ जो हरि प्रभु
करे सु होइ ॥ कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥
नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना
॥ सभि धिआवहि तुधु मेरे पीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥
इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥
सेवकु ठाकुरु सभु तू है तू है गुरमती हरि चंग चंगना ॥ सभि
कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥
२ ॥ सलोक म० ४ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि
मानु ॥ जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥
किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु
विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ
जन नानक जपि हरि नामु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि हरि नामु पवितु है
नामु जपत दुखु जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ
आइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ आपणै

भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ तूं थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भांति उपावणी ॥ सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥ ३ ॥ सलोक म० ४ ॥ हरि हरि अंमृतु नामरसु हरि अंमृतु हरि उरधारि ॥ विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ गुरि तुठै हरि चेताइआ हरिनामा हरि उरधारि ॥ जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥१॥ म० ४ ॥ हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरिहारु ॥ वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ बिनु नावै जि करम कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकंकारु ॥ जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥२॥ पउड़ी ॥ राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा॥सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ सभि चवहु मुखहु जगंनाथु जगंनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥ ४ ॥ सलोक म० ४ ॥ हमरी जिहबा एक प्रभ हरिके गुण अगम अथाह ॥ हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥१॥ म० ४ ॥ हरि

करहु क्रिपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ गुर सेवा हरि हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ गुरि तुठै नामु द्रिड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरिनामा हरिधनु मालु ॥२॥पउड़ी ॥ हरि तुम्ह वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ जो धिआवहि हरि अपरंपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥ ५ ॥ सलोक म० ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मंत ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवलाकंत ॥ हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि मांगहि हरि जन संत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि सम्हाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥६॥ सलोक म० ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि

प्रभु भजिआ ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ सभि धंनु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥ ७ ॥ सलोकु म० ४ ॥ भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहंनि ॥ जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वडभाग लहंनि ॥१॥ म० ४ ॥ हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरिगुण सिखा ॥ धनु धंनु सु रसना धंनु कर धंनु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥ ८ ॥ सलोक म० ४ ॥ हरि हरिनामु अंमृतु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ हरिनामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ सांति वसी मनि आइ ॥ नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ हरि अगमु धिआइआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ गुरबचनि धिआइआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ सभि कहहु मुखहु नर नर हरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥ ९ ॥ सलोक म० ४ ॥ राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ हरि निकटि वसै जग

जीवना परगासु कीओ गुरमीति ॥ हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले
जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरबचनि
जपिओ मनि चीति ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि
वसै वडभागि ॥ गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ हरि
कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरिप्रभ अकथ कहाणी ॥ किउ पाईऐ
किउ देखीऐ मेरा हरिप्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ हरि मेलि दिखाए आपि
हरि गुरबचनी नामि समाणी ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे
हरि निरबाणी ॥ १० ॥ सलोक म० ४ ॥ हरिप्रभ रते लोइणा गिआन
अंजनु गुरु देइ ॥ मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥
१ ॥ म० ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥
नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ
चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तृसना भुख सभ
जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु आपे
ज़गतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ इकि मनमुख करि हाराअनु
इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ हरि ऊतमु हरिप्रभ नामु है गुरबचनि
सभागै लीता ॥ दुखु दालदु सभो लहि गइआ जां नाउ गुरू हरि दीता
॥ सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो
वसि कीता ॥ ११ ॥ सलोक म० ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि
भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु वञाए मिलि सतिगुर साधू सजना
॥ १ ॥ म० ४ ॥ मनु तनु तामिस गारवा जां देखा हरि नैणे ॥ नानक
सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जगंनाथ
जगदीसर करते अपरंपर पुरखु अतोलु ॥ हरिनामु धिआवहु मेरे
गुरसिखहु हरि ऊतमु हरिनामु अमोलु ॥ जिन धिआइआ हिरदै दिनसु
राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर
पूरा बोलु ॥ सभि धिआवहु नरनाराइणो नाराइणो जितु चूका
जम झगड़ु झगोलु ॥ १२ ॥ सलोक म० ४ ॥ हरिजन हरि हरि
चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ नानक हरिजन हरि लिव उबरे

जिन संधिआ तिसु फिरि मार ॥ १ ॥ म० ४ ॥ अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जलि थलि महीअलि पूरनो अपरंपरु सोई ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥ १३ ॥ सलोक म० ४ ॥ गुरमुखि मिले सि सजना हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥ १ ॥ म० ४ ॥ हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ अंनु जंमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुखसागरु ॥ हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जमकागरु ॥ जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥ १४ ॥ सलोक म० ४ ॥ हउ ढूंढेदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥ १ ॥ म० ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै को उचरि सुणावै ॥ जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटंबु तरावै ॥ जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥ १५ ॥ १ ॥ सुधु

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ ऐसो रामराइ अंतरजामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ बंधन मुकता जातु न दीसै ॥ १ ॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ २ ॥ १ ॥

रागु कलिआन महला ४

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाया ॥१॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ तू अमिति अतोलु अपरंपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥ २ ॥ उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ तुम्ह जलनिधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥३॥ जन कउ कृपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥१॥ हरिजन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥ २ ॥ जन के तुम्ह हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन रखिआ ॥ कहा भइआ दैति करी

बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥३॥जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि
कालै मुखि ग्रसिआ॥हरिजन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि
पइआ ॥४॥२॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपु जपि जगंनाथे ॥
गुर उपदेसि हरिनामु धिआइओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥१॥ रहाउ
॥ रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसु नथे ॥ बार बार
खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥ १ ॥ हम बहु
प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचहि प्रभु दिखनथे ॥ तुम बड दाते
जीअ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥२॥ कोई मारगु पंथु बतावै
प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि
अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥३॥ हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा
हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक
के प्रभ समरथे ॥४॥३॥ कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन
अकथ सुनथई ॥ धरमु अरथु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई
॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरिजनु जिसु बड भाग
मथई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइ थई ॥ १ ॥
हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ गुरि धारि
क्रिपा हरि जलि नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥ २ ॥ जन कै रिद
अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ जह अंती अउसरु
आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥३॥ जन तेरा जसु गावहि हरि
हरि प्रभ हरि जपिओ जगंनथई ॥ जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम
पाथर रखु बुडथई ॥४॥४॥ कलिआन महला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि
प्रभु जानै ॥ अउरु कोई निंद करै हरिजन की प्रभु ताका कहिआ इकु
तिलु नही मानै ॥१॥ रहाउ ॥ अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो
सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी
आइ पवै हरि जानै ॥१॥ जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ताकउ सुमति
देइ पै कानै ॥ ताकउ कोई अपरि न साकै जाकी भगति मेरा प्रभु मानै
॥ २ ॥ हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इक निमख
पछानै ॥ ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे

पछुतानै ॥ ३ ॥ तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै ॥४॥५॥ कलिआन महला ४ ॥ प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरिगुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गल लावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥ १ ॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगति तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १

कलिआनु भोपाली महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥ १ ॥ जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भवनिधि पारि परे ॥ भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि कृपा करे ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

रागु कलिआनु महला ५ घरु १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हमारै एह किरपा कीजै ॥ अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जला सिउ काजु न कछूऐ हरि बूंद चातृक कउ दीजै ॥ १ ॥ बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥ २ ॥ १ ॥ कल्यान महला ५ ॥ जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते॥ १ ॥ रहाउ ॥ केती केती मांगनि मागै भावनीआ सो पाईऐ ॥१॥ सफल

सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईऐ ॥ नानक तत तत सिउ मिलीऐ हीरै हीरु बिधाईऐ ॥ २ ॥ २ ॥ कलिआन महला ५ ॥ मेरे लालन की सोभा ॥ सद नवतन मनरंगी सोभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥ १ ॥ जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥ २ ॥ ३ ॥

कलिआन महला ५ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत दहदिसि रविओ मेर तिनहि समानि ॥१॥ जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ साध संगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन ॥२॥१॥४ ॥ कलिआन महला ५ ॥ गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ कथत सुनत मुनिजना मिलि संत मंडली ॥१॥ रहाउ ॥ गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली॥१॥जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ ओति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥२॥२॥५॥ कलिआनु महला ५ ॥ कउनु बिधि ताकी कहा करउ ॥ धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥१॥ रहाउ ॥ बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥ १ ॥ काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ॥कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ॥२॥३॥६॥कलिआन महला ५ ॥ प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ गरभ जोनि कलिकाल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥१॥ रहाउ ॥ नामधारी सरनि तेरी॥ प्रभ दइआल टेक मेरी ॥ १ ॥ अनाथ दीन आसवंत ॥ नामु सुआमी मनहि मंत ॥ २ ॥ तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ सरब जुग महि तुम पछानू ॥३॥ हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ गोबिंद नानक आसरो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ कलिआन महला ५ ॥ मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥

सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ मिलि साध संगति प्रभू
सिमरे नाठिआ दुख काल ॥ १ ॥ करि कृपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु
रैनि सेव ॥ नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥ २ ॥ ५ ॥
८ ॥ कलिआनु महला ५ ॥ प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ करि किरपा
पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु
आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ सरब घटा के दाते
सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥ १ ॥ सुरति मति चतुराई सोभा रूपु
रंगु धनु माणु ॥ सरब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु
॥ २ ॥ ६ ॥ ९ ॥ कलिआणु महला ५ ॥ हरि चरन सरन कलिआन
करन ॥ प्रभ नामु पतित पावनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंग जपि निसंग
जमकालु तिसु न खावनो ॥ १ ॥ मुकति जुगति अनिक सूख हरि
भगति लवै न लावनो ॥ प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न
धावनो ॥ २ ॥ ७ ॥ १० ॥

कलिआन महला ४ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ हरि
हरि नामु अंमृतु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासट
महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ राम नामु है जोति
सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥ १ ॥ नउ दरवाजे नवे दर फीके रसु
अंमृतु दसवे चुईजै ॥ कृपा कृपा किरपा करि पिआरे गुरसबदी हरिरसु
पीजै ॥ २ ॥ काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरिरसु कीजै ॥
रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥ ३ ॥ सतिगुरु अगमु
अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ कृपा कृपा करि दीन हम
सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥ ४ ॥ लालनु लालु लालु है रंगनु
मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ राम राम राम रंगि राते रस रसिक
गटक नित पीजै ॥ ५ ॥ बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु
काढि धरीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि
रसु दीजै ॥ ६ ॥ साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥

धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिधि दीजै ॥ ७ ॥
हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥ राम नाम
तुलि अउरु न उपमा जन नानक कृपा करीजै ॥ ८ ॥ १ ॥ कलिआन
महला ४ ॥ राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर अति
फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग मुकति बैकुंठ
सभि बांछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न
मांगहि मिलि दरसन तृपति मनु धीजै ॥ १ ॥ माइआ मोहु सबलु है
भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन अलिपत है
मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥ २ ॥ चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी
किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु
छेदि छेदि रसु पीजै ॥ ३ ॥ आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर
भसम करीजै ॥ महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥
४ ॥ साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ परसनि
परसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥ ५ ॥ साकत सूतु बहु
गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसै नाही
साकत संगु न कीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर साध संगति है नीकी मिलि
संगति रामु रवीजै ॥ अंतरि रतन जवेहर माणकु गुर किरपा ते लीजै
॥ ७ ॥ मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै
॥ नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥ ८ ॥ २ ॥
कलिआनु महला ४ ॥ रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध
जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभु
जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि साधु
मिलावहु जगु थंमन कउ थंमु दीजै ॥ १ ॥ बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि
मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि
चरन तल दीजै ॥ २ ॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी
सकति भरीजै ॥ मैनदंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि
रसु पीजै ॥ ३ ॥ राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख
मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन

जसु दीजै ॥४॥ साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥
जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि मरीजै ॥ ५ ॥
महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना
जलत जलत नही बूझहि डंडु धरमराइ का दीजै ॥ ६ ॥ सभि तीरथ
बरत जग्य पुंन कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ अतुला तोलु
रामनामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥ ७ ॥ तव गुन ब्रहम
ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जलनिधि मीन हम तेरे
करि किरपा संगि रखीजै ॥ ८ ॥ ३ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा रम
रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु
द्रड़ीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम नाम गुण साख सरोवर नित चुनि चुनि
पूज करीजै ॥ आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥१॥
बिबेक बुधि सभ जगमहि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै॥गुर परसादि
पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥ २ ॥ निरमोलकु अति
हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोती सालु है गुरसबदी जितु
हीरा परखि लईजै ॥ ३ ॥ संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास
खाइ लीजै ॥ सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै रामनामै बासु बसीजै ॥४॥
निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ धरमु फुलु
फलु गुरि गिआनु द्रड़ाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥ ५ ॥ एक जोति
एको मनि वसिआ सभ ब्रहम द्रसटि इकु कीजै ॥ आतमरामु सभ एकै
है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥ ६ ॥ नाम बिना नकटे नर देखहु
तिन घसि घसि नाक वडीजै ॥ साकत नर अहंकारी कहीअहि
बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥ ७ ॥ जब लग सासु सासु मन अंतरि
ततु बेगल सरनि पीरीजै ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि धारहु मै साधू
चरन पखीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥ कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू
चरन धुवीजै ॥ किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर
किरपा कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति
तरसन कउ दानु दीजै ॥ त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मोकउ गुरमति
नामु द्रड़ीजै ॥ १ ॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि

ऊठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥ २ ॥ अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ तनि मनि सांति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥ ३ ॥ जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥४॥ जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अंमृतु पीजै ॥५॥ साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥ ६ ॥ साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरिरसु काढि कढीजै ॥ परउपकार बोलहि बहुगुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥ ७ ॥ तू अगम दइआल दइआपति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ सरब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥ कलिआनु महला ४ ॥ रामा हम दासन दास करीजै ॥ जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥१॥ तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ धरमराइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै॥२॥भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ ताते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥ ३ ॥ राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥ ४ ॥ संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुर सरनि पवीजै ॥५॥ जे वडभागु होइ अति नीका तां गुरमति नामु दृड़ीजै ॥ सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरिरसु पीजै ॥ ६ ॥ माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥ ७ ॥ नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै॥ सतिगुरो मिलै ता नामु दृड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

रागु परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥ नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ नाइ तेरै नाउ मंने सभ कोइ ॥ विणु नावै पति कबहु न होइ ॥ १ ॥ अवर सिआणप सगली पाजु ॥ जै बखसे तै पूरा काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ नाइ तेरै मानु महत परवाणु ॥ तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ नाउ तेरा अंमृतु बिखु उठि जाइ ॥ नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ बिनु नावै बाधी जमपुरि जाइ ॥ ३ ॥ नारी बेरी घर दर देस ॥ मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ जां सदे तां ढिल न पाइ ॥ नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला १ ॥ तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥ १ ॥ इहु संसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाताल पुरीआ

एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति ता पवै जां सिरै
होवहि होरि ॥२॥ दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ जितु मुखि
तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥३॥ नानक मूरखु एकु तू अवरु
भला सैसारु ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥ ४ ॥
२॥ प्रभाती महला १॥ जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइआ
॥ जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥ १ ॥
बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ दुसमनु
दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ अगनि बिंब पवणै
की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि
कोट पंचासा ॥२॥ जेको एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥
एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै ॥ ३ ॥ तुधु
सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ जे को जीउ कहै
ओना कउ जम की तलब न होई ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला १ ॥
जाकै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ सतिगुरि मिले
निरंजनु पाइआ तेरै नामि है निवासा ॥ १ ॥ अउधू सहजे ततु बीचारि
॥ जाते फिरि न आवहु सैसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाकै करमु नाही
धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ सिव जोति कंनहु बुधि पाई सतिगुरू
रखवाला ॥ २ ॥ जाकै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ गति
अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥ ३ ॥ जाकै आस नाही
निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ तंत कउ परमतंतु मिलिआ नानका
बुधि पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ ताका कहिआ दरि परवाणु
॥ बिखु अंमृतु दुइ समकरि जाणु ॥ १ ॥ किआ कहीऐ सरबे रहिआ
समाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगटी जोति
चूका अभिमानु ॥ सतिगुरि दीआ अंमृत नामु ॥२॥ कलि महि आइआ
सो जनु जाणु॥साची दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ कहणा सुनणा अकथ घरि
जाइ ॥ कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥
अंमृतु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥ गुर उपदेसि
जवाहर माणक सेवे सिखु सुो खोजि लहै ॥ १ ॥ गुर समानि

तीरथु नही कोइ ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥ रता सचि नामि तलहीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ जाकी वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥ ३ ॥ गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गुरपरसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अंमृतु नामु ॥ १ ॥ करता तू मेरा जजमानु ॥ इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥ २ ॥ जतु सतु चावल दैआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ दूधु करमु संतोखु घीओं करि ऐसा मांगउ दानु ॥ ३ ॥ खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ सिफति सरम का कपड़ा मांगउ हरिगुण नानक रवतु रहै ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला १ ॥ आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ जिस ते होआ सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥ १ ॥ तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥ २ ॥ सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ मनि वीचारि देखु ब्रहमगिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥ ३ ॥ जिस की आसा तिसही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला १ ॥ दिसटि बिकारी बंधनि बांधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ पाप पुंन की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥ १ ॥ बोलहु सचु नामु करतार ॥ फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ जिनी जाणु सु जाणिआ जगि ते पूरे परवाणु

॥ २ ॥ ताकउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥ आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥ प्रणवति नानक दासनिदासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥ ४ ॥९॥ प्रभाती महला १ ॥ मनु माइआ मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ जा तू राखहि राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ गुरमति देहि लगउ पगि तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु ॥ २ ॥ घटि घटि एकु वखाणीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ जा तू मेलहि तां मिलि रहां जां तेरी होइ रजाइ ॥ ३ ॥ जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥ जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥ ४ ॥ १० ॥ प्रभाती महला १ ॥ जागतु बिगसै मूठो अंधा ॥ गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ आसा आवै मनसा जाइ ॥ उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥ १ ॥ जागसि जीवण जागणहारा ॥ सुख सागर अंमृत भंडारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहिओ न बूझै अंधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥२॥ दिनु दिनु आवै आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥ ३ ॥ अहिनिसि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ करमहीणु सचु भीखिआ मांगै नानक मिलै वडाई ॥ ४ ॥ ११ ॥ प्रभाती महला १ ॥ मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ भूल चूक तेरै दरबारि ॥ नाम बिना कैसे आचार ॥ १ ॥ ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ निंदकु निंदै मुझै पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ कारण नामु अंतरिगति जाणै ॥ जिसनो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥ २ ॥ मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ मनमुखु खूल्हि महा बिखु खाइ ॥ गुरमुखि

होइ सु राचै नाइ ॥३॥ अंधौ बोलौ मुगधु गवारु ॥ हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥ ४ ॥ उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ तू बखसहि जाति पति होइ ॥ नानकु कहै कहावै सोइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ प्रभाती महला १ ॥ खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ बकि बकिवादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥ १ ॥ बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ जमदरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥ २ ॥ जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ जगु खोटौ सचु निरमलौ गुरसबदीं वीचारि ॥ ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥४॥ अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद सरूप ॥ नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥ ५ ॥ १३ ॥ प्रभाती महला १ ॥ गीत नाद हरख चतुराई ॥ रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ पैन्हणु खाणा चीति न पाई ॥ साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥ १ ॥ किआ जानां किआ करै करावै ॥ नाम बिना तनि किछू न सुखावै ॥१॥ रहाउ ॥ जोग बिनोद स्वाद आनंदा ॥ मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ कीरति करम कार निज संदा ॥ अंतरि रवतौ राज रवंदा ॥२॥ प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उरधारी ॥ दीनानाथु पीउ बनवारी ॥ अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ तृपति तरंग ततु बीचारी ॥ ३ ॥ अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ भगति करी कराइहि मोर ॥ अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ किसु सेवी दूजा नही होरु ॥ ४ ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ ऐसा अंमृतु अंतरि डीठा ॥ जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ नानक ध्रापिओ तनि सुखु होइ ॥ ५ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला १ ॥ अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न रांगनहारा ॥ अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥ १ ॥ मेरा प्रभु रांगि णौ अति रूड़ौ ॥ दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि कूपु गगन पनिहारो अंमृतु

पीवणहारा ॥ जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥२॥ पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुरप्रसादि प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥४॥१५॥ प्रभाती महला १ ॥ बाहर महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ जोगी कापड़ीआ सिर खूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥ १ ॥ सबदि रते पूरे बैरागी ॥ अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ करणी करम कराए ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाए ॥२॥ सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥३॥ सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥४॥१६॥ प्रभाती महला १ ॥ संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥१॥ जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ हरि जपि जापु जपउ जप माली गुरमुखि आवै सादु मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेस साचु सुखु जाकउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऐ ॥ २ ॥ चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ निरालंबु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहज समावै ॥ ४ ॥ सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥५॥१७॥

रागु प्रभाती महला ३ चउपदे

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ नामि रते सदा सुखु

पावै साचि रहै लिव लाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥
गुरप्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥ १ ॥
रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥
सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥ २ ॥ सुखु
सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ अखुट भंडार
भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥ ३ ॥ आपे करता
जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू
सतिगुरि दीआ दिखाई ॥४॥१॥ प्रभाती महला ३ ॥ निरगुणीआरे
कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ तू बिअंतु तेरा अंतु न
पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥
तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरिनामो देहि वडिआई ॥ पूरे
गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥ २ ॥ तेरै भाणै भगति जे
तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि
तृसना अगनि बुझाई ॥३॥ जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा
जाई ॥ नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥ ४ ॥ २ ॥
प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि सालाहिआ जिना तिन सलाहि हरि
जाता ॥ विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥ १ ॥ हरि
जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई
॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अंमृतु सारु
॥ सदा मीठा कदे न फीका गुरसबदी वीचारु ॥ २ ॥ जिनि मीठा
लाइआ सोई जाणै तिस विटहु बलि जाई ॥ सबदि सलाही सदा
सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥३॥ सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो
इछै सो फलु पाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुरसबदी सचु
पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन
तू राखन जोगु ॥ तुधु जेवडु मैं अवरु न सूझै ना को होआ न होगु
॥ १ ॥ हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु मेरे
सुआमी एह तेरी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जौ तेरी सरणाई

हरि जीउ तिन का करहि प्रतिपाल ॥ आपि कृपा करि राखहु हरि जीउ
पोहि न सकै जमकालु ॥ २ ॥ तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै
न जाइ ॥ जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ ॥३॥
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ नानक नामु
सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ३ ॥
गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ गुरसबदी
मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी
केरा हरि कै नामि समान ॥१॥ मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरिका
नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मूलु पछाणनि
तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु
परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ सभना महि एको सचु वरतै विरला
बूझै कोई ॥ २ ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अंमृतु ततु वखानै ॥
हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मनही मनु मानै ॥ सद बलिहारी
गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥ ३ ॥ मानस जनमि
सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नदरि करे तां सतिगुर
मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि
धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ३॥ आपे भांति बणाए बहुरंगी
सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि वेखै करे कराए सरब जीआ
नो रिजकु दीआ ॥१॥ कलीकाल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि
रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ गुपता
नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु रतनु
तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥२॥ इंद्री पंच पंचे
वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ सो धनु धनु हरिजनु
वड पूरा जो वैरागि हरिगुण गावै ॥ ३ ॥ गुर ते मुहु फेरे जे
कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउ संचै जो
किछु करै सु नरकि परै ॥ ४ ॥ एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु
ते उतपति चलै ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि
जाइ रलै ॥ ५ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा

सालाहि ॥ पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ अंमृत नामु भोजनु हरि देइ ॥ कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥ १ ॥ गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ दुखु अंन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ आपे साचा लए मिलाइ ॥ २ ॥ गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ आपे देवै सिरजनहारु ॥ ३ ॥ सचा मनाए अपणा भाणा ॥ सोई भगतु सुघड़ु सुोजाणा ॥ नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥४॥७॥१७॥७॥२४॥

प्रभाती महला ४ बिभास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ अंमृतु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥ १ ॥ हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरिमंतु दीओ हरि कान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मोकउ करहु उपदेसु हरि दान ॥ २ ॥ सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥ ३ ॥ गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि सम्हालहि हरि गाल ॥ हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥ १ ॥ मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ हरि हरि नामु हड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥ २ ॥ सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ हरिनामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥ ३ ॥ हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ इकु

खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ हरिजन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥ २ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥ ३ ॥ घटि घटि रमईआ रमत रामराइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ अगम दइआल क्रिपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ पतित पावन हरिनामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ दीन दइआलु दुख भंजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥ २ ॥ जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ जिउ मृग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिओ झार गहे ॥ ३ ॥ तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ४ ॥ मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ कृपफा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरिनामा मनि तनि बसफा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि वसिओ घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ हलति पलति जन भए सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥ २ ॥ अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उरधारिओ गुरि निमखफा ॥ कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥ ३ ॥ तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ हरि हरि आपु धरिओ हरिजन महि जन

नानकु हरि प्रभु इकफा ॥४॥५॥ प्रभाती महला ४ ॥ गुर सतिगुरि नामु दृड़ाइओ हरि हरि हम मुए जीवे हरि जपिआ ॥ धनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिआ ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु अराधिआ ॥ उपजंपि उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभिआ ॥१॥ रहाउ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसिआ ॥ लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उरधारिओ गुरि हरिआ ॥ २ ॥ हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिआ ॥ तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूंभर भरिआ ॥ ३ ॥ तुमरे गुन तुमही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनिआ ॥ जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनिआ ॥४॥६॥ छका १

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ जपिमन हरिहरि नामु निधान ॥हरि दरगह पावहि मान ॥ जिनि जपिआ ते पारि परान ॥१॥ रहाउ ॥ सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥ १ ॥ जपि मन परमेसुरु परधानु ॥ खिन खोवै पाप कोटान ॥ मिलु नानक हरि भगवान ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

प्रभाती महला ५ बिभास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥ १ ॥ मन सतिगुरु सेवि होइ परमगते ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ॥१॥ रहाउ ॥ कापड़ भोग रस अनिक भुंचाए ॥ मात पिता कुटंब सगल बनाए ॥ रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ सो हरि सेवहु नीता नीत ॥ २ ॥ तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ दाति करै नही पछोतावै ॥ एका बखस फिरि बहुरि न बुलावै॥३॥किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ साध संगति

महि बसे गुपाल ॥ गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥ जन नानक दरसनु
देहु मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ प्रभ की सेवा जन की सोभा
॥ काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ गुन
गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥ १ ॥ तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥
काटि जेवरी जन लीए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो जनु राता प्रभ कै रंगि
॥ तिन सुखु पाइआ प्रभ कै संगि ॥ जिसु रसु आइआ सोई जानै ॥
पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥२॥ सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ जा
कै हृदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ सोई निहचलु आवै न जाइ ॥ अनदिनु प्रभ
के हरि गुण गाइ ॥ ३ ॥ ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ जा कै मनि
पूरनु निरंकारु ॥ करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ नानकु उधरै जन की
सेवा ॥ ४ ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुन गावत मनि होइ अनंद ॥
आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ तिसु
गुर की हम चरनी पाहि ॥ १ ॥ सुमति देवहु संत पिआरे ॥ सिमरउ
नामु मोहि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा
॥ सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ तिसु गुर कै सदा
बलि जाईऐ ॥ हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥ २ ॥ बूडत
प्रानी जिनि गुरहि तराइआ ॥ जिसु प्रसादि मोहै नही माइआ
॥ हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ तिसु गुर ऊपरि
सदा हउ वारिआ ॥ ३ ॥ महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥
गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ वडै भागि
पाईऐ हरि सेव ॥ ४ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सगले दूख
मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ करि किरपा अपनी
सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ हम बारिक सरनि प्रभ
दइआल ॥ अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर
गोपालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भए
क्रिपाल गुसाई ॥ सास सास पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै
बलि जाई ॥ २ ॥ अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ताका अंतु न पाईऐ
॥ लाहा खाटि होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर

पारब्रहमु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रहमु गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभ नासे ॥ सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ सेवक सेवि सदा सोहंते ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ कोटि जनम के गए कलेस ॥ जो तिसु भावै सो भल होस ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बल जाई ॥ जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ जिसु मिलते राम लिव लागी ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ आठ पहर अपुनी लिव लाइ ॥ जनु नानकु प्रभ की सरनाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ हरि का नामु जपन कउ दीए ॥ आठ पहर गुन गाइ गुबिंद ॥ भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ सदा सदा प्रभ जीअ कै संगि ॥ उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ प्रभ मिलन का मारगु जानां ॥ भाइ भगति हरि सिउ मनु मानां ॥ ३ ॥ सुणि सजन संत मीत सुहेले ॥ नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ से धनवंत सेई सचु साहा ॥ हरि की दरगह नामु विसाहा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥ २ ॥ सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥३॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥ ४ ॥ ७ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु पूरा पूरी ताकी कला ॥ गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ गुर की बाणी

जिसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ताका नसै ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतो साधू धूरी नावै ॥१॥रहाउ॥ गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि सरना ॥ २ ॥ अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥ ३ ॥ संत साजन सिख भए सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥ १ ॥ नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥ २ ॥ घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ संगि सहाई जह हउ जाई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ करी अरदासि ॥ सदा जपे नानकु गुणतासु ॥ ४ ॥ ९ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ नामु अराधन होआ जोगु ॥ साधसंगि होआ परगासु ॥ चरन कमल मन माहि निवासु ॥ १ ॥ जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ पूरन करम ताके आचार ॥ २ ॥ गुण गावै नित नित नित नवे ॥ लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ ईहां ऊहां चरण पूजारे ॥ मुखु ऊजल साचे दरबारे ॥ ३ ॥ जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ कोटि मधे को विरला दासु ॥ जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ नानक उधरसि तिसु जन को धूरि ॥ ४ ॥ १० ॥ प्रभाती महला ५ ॥ कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंमृत बाणी सुणत निहाल ॥ बिनसि गए बिखिआ जंजाल ॥ १ ॥ साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥ २ ॥ नामु

जपत होआ परगासु ॥ गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥ ३ ॥ गुर
समरथ सदा दइआल ॥ हरि जपि जपि नानक भए निहाल ॥ ४ ॥
११ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ दीन
दइआल भए किरपाला अपणा नामु आपि जपाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
संत संगति मिलि भइआ प्रगास ॥ हरि हरि जपत पूरन भई आस
॥ १ ॥ सरब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ हरिगुण गाए गुर नानक
तूठे ॥ २ ॥ १२ ॥

प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अवरु न दूजा ठाउ ॥ नाही बिनु हरि
नाउ ॥ सरब सिधि कलिआन ॥ पूरन होहि सगल काम ॥ १ ॥ हरि
को नामु जपीऐ नीत ॥ काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै एकै पीति ॥
१ ॥ रहाउ ॥ नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ सतिगुरु भेटै
जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥ २ ॥ रैनि दिनसु धिआइ हरि
हरि तजहु मन के भरम ॥ साध संगति हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥
३ ॥ जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ मात पिता मीत
भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रम राम राम राम जाप ॥ कलि कलेस
लोभ मोह बिनसि जाइ अहंताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि संत
चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥ १ ॥ नानकु बारिकु कछू न जानै
राखन कउ प्रभु माई बाप ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ प्रभाती महला ५ ॥
चरन कमल सरनि टेक ॥ ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक
॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥ १ ॥
नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ संत रेनु करउ मजनु
नानक पावै सुख अनेक ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥
झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥
सतिगुरि राखे नामु दृड़ाइआ ॥ १ ॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥
जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउसागरु तरै ॥ १ ॥ रहाउ
॥ माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ माइआ साथि न चलै पिआरी ॥
माइआ ममता है बहु रंगी ॥ बिनु नावै को साथि न संगी ॥२॥ जिउ
मनु देखहि परमनु तैसा ॥ जैसी मनसा तैसी दसा ॥ जैसा करमु तैसी
लिव लावै ॥ सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥ ३ ॥ रागि नादि मनु
दूजै भाइ ॥ अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥
सचै नामि रहै लिव लाइ ॥ ४ ॥ सचै सबदि सचु कमावै ॥ सची बाणी
हरिगुण गावै ॥ निजघरि वासु अमरपदु पावै ॥ ता दरि साचै सोभा
पावै ॥ ५ ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ अनेक जतन करै जे कोई
॥ हउमै मेरा सबदे खोई ॥ निरमल नामु वसै मनि सोई ॥६॥ इसु जग
महि सबदु करणी है सारु ॥ बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ सबदे नामु
रखै उरिधारि ॥ सबदे गति मति मोखदुआरु ॥ ७ ॥ अवरु नाही करि
देखणहारो ॥ साचा आपि अनूपु अपारो ॥ राम नाम ऊतम गति होई॥
नानक खोजि लहै जनु कोई॥८॥१॥ प्रभाती महला १ ॥ माइआ मोहि
सगल जगु छाइआ ॥ कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ सुत कंचन सिउ
हेतु वधाइआ ॥ सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥ १ ॥ ऐसा
जापु जपउ जपमाली ॥ दुख सुख परहरि भगति निराली ॥ १ ॥
रहाउ ॥ गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ साच सबदि तुझ माहि
समाइआ ॥ आवागउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ सेई भगत जिन सचि
चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ बिनु
सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ सगल सरोवर जोति समाणी ॥ आनद
रूप विटहु कुरबाणी ॥ ३ ॥ भाउ भगति गुरमती पाए ॥ हउमै
विचहु सबदि जलाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सचा नामु
मंनि वसाए ॥ ४ ॥ बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ गुरमति

मानिआ एक लिव लागी ॥ देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ सो बूझै होवै वडभागी ॥५॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ एको जाणै अवरु न कोइ ॥ सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥६॥ सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ सची रहत सचा सुखु पाए ॥ ७ ॥ सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ अवरु न सूझसि बीजीकारा ॥ तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ प्रभाती महला १ ॥ निवली करम भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुंभ करै ॥ बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥१॥ खटु करम नामु निरंजनु सोई ॥ तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥२॥ झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥३॥ ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ आवहि जांहि मरहि मरि जाई ॥ ४ ॥ एहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ इस नो विआपै सोग संतापु ॥ सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥ ५ ॥ जह जह देखा तह तह सोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥६ ॥ दुबिधा चूकै ता सबदु पछाणु ॥ घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ एहा मति सबदु है सारु ॥ विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥ ७ ॥ करणी कीरति गुरमति सारु ॥ संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ नानक नदरी नदरि पछाणु ॥ ८ ॥ ३ ॥ प्रभाती महला १ दखणी ॥ गोतमु तपा अहलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ सहस सरीर चिहन

भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥ १ ॥ कोई जाणै न भूलै भाई ॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ तिनि हरीचंदि पृथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ अवगणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥२॥ करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै ॥ किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥ ३ ॥ राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पढ़ाइआ ॥ तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥ गणत न गणीं हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ जो किछु वरतै तुधै सलाहीं सभ तेरी वडिआई ॥५॥ गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥६॥ आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥ ७ ॥ भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥८॥४॥ प्रभाती महला १ ॥ आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ धुरि हूकमु लिखिआ तां कहीऐ कासु ॥ गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ नाम बिहूना मुकति न होई ॥ २ ॥ भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ बिनु गुर बूझै जम की फासी ॥ इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥ ३ ॥ आपे सदे ढिल न होइ ॥ सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ आपे करै करावै सोइ ॥ ४ ॥ झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ सचु करणी करि कार कमावै ॥ ५ ॥ अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ सबदी धोवै विरला कोइ ॥ गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ आवणु जाणा ठाकि रहावै ॥ ६ ॥ भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ हरि जन संगति पावै पारु ॥ सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ गुर का सबदु

करणी है सारु ॥ ७ ॥ हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ काम क्रोध
अगनी महि भूंजा ॥ हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ प्रणवति
नानकु अवरु न दूजा ॥ ८ ॥ ५ ॥ प्रभाती महला १ ॥ राम नामु जपि
अंतरि पूजा ॥ गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥ १ ॥ एको रवि
रहिआ सभ ठाई ॥ अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि
॥ २ ॥ सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥
३ ॥ करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥ नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥४॥
सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ तीनि समाए एक कृतारथ ॥ ५ ॥
सतिगुर दीए मुकति धिआनां ॥ हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥ ६ ॥
मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई
॥७॥ कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ नाम बिना गति किनै न पाई
॥८॥६॥ प्रभाती महला १ ॥ इकि धुरि बखसि लए गुरि पूरै सची बणत
बणाई ॥ हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥ १ ॥
झूठी दुरमति की चतुराई ॥ बिनसत बार न लागै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ सुख दुख
दाता गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥२॥ मनमुख ते अभ भगति
न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभि पइआली जब
लगि सबद न जाने ॥३॥ भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु
सतिगुर पाए ॥ सहजै सहजु मिलै सुखु पाईऐ दरगह पैधा जाए ॥ ४ ॥
दरगह दाना बीना इकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ आपे सुरता सचु
वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥५॥ जलु तरंग अगनी पवनै फुनि
त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी
ठाकि रहाइआ ॥६॥ ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ
॥ जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥ ७ ॥ नामि रते
तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ नानकु तिन के चरन
पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥८॥७॥

प्रभाती महला ३ बिभास

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥ १ ॥ मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥ २ ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ धुरि लेखु लिखाइआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ सबदु चीनि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ हरिमंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥४॥ हरिमंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥५॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥६॥ हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ गुरपरसादी चीनिआ हरि राखिआ उरिधारि ॥ ७ ॥ गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ ८ ॥ हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥ ९ ॥ हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥ १० ॥ हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥ ११ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ३ ॥ भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ हरिनामा हरि मनि वसै सहजे हरिगुण गाइ ॥ २ ॥ गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥ ३ ॥ हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ मनमुख

दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥४॥ धृगु खाणा धृगु पैन्हणा
जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि
होहि खुआरु ॥५॥ जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ
॥ तिनकी संगति मिलि रहां सचे सचि समाउ ॥६॥ पूरै भागि गुरु पाईऐ
उपाइ कितै न पाइआ जाइ॥सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ
॥७॥ हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ नानक नाम न
वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥८॥२॥७॥२॥९॥

बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ चूगहि
चोग अनंद सिउ जुगता ॥ उरझि परिओ मन मीठ मोहारा ॥ गुन
गाहक मेरे प्रान आधारा ॥१॥ एकु हमारा अंतरजामी ॥ धर एका मैं
टिक एकसु की सिरि साहा वडपुरखु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ छल नागनि
सिउ मेरी टूटनि होई ॥ गुरि कहिआ इह झूठी धोही ॥ मुखि मीठी खाई
कउराइ ॥ अंमृत नामि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ लोभ मोह सिउ गई
विखोटि ॥ गुरि कृपालि मोहि कीनी छोटि ॥ इह ठगवारी बहुतु घर
गाले ॥ हम गुरि राखि लीए किरपाले ॥ ३ ॥ काम क्रोध सिउ ठाटु
न बनिआ ॥ गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ जह देखउ तह महा
चंडाल ॥ राखि लीए अपुनै गुरि गोपाल ॥ ४ ॥ दस नारी मैं करी
दुहागनि ॥ गुरि कहिआ एह रसहि बिखागनि ॥ इन सनबंधी रसातलि
जाइ ॥ हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥ ५ ॥ अहंमेव सिउ मसलति
छोडी ॥ गुरि कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥
हम गुरि राखि लीए लिव लाए ॥ ६ ॥ इन लोगन सिउ हम
भए बैराई ॥ एक गृह महि दुइ न खटांई ॥ आए प्रभ
पहि अंचरि लागि ॥ करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥ ७ ॥
प्रभ हसि बोले कीए निआएं ॥ सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥
तूं ठाकुरु इहु गृहु सभु तेरा ॥ कहु नानक गुरि कीआ
निबेरा ॥ ८ ॥ १ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ मन महि क्रोधु महा
अहंकारा ॥ पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ करि इसनानु

तनि चक्र बणाए ॥ अंतर की मलु कबही न जाए ॥ १ ॥ इतु संजमि
प्रभु किनही न पाइआ ॥ भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥ १ ॥
रहाउ ॥ पाप करहि पंचा के बसि रे ॥ तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥
बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ जमपुरि बांधि खरे कालंक ॥ २ ॥
घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ वरमी
मारी सापु न मूआ ॥ प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥ ३ ॥
पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ गृह ते नसता ॥ देसु
छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥ ४ ॥ कान
फराइ हिराए टूका ॥ घरि घरि मांगै तृपतावन ते चूका ॥ बनिता
छोडि बद नदरि परनारी ॥ वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥ ५ ॥
बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ अंन ते
रहता दुखु देही सहता ॥ हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥ ६ ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाई परमगते ॥ पूछहु सगल बेद सिम्रते ॥
मनमुख करम करै अजाई ॥ जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥ ७ ॥
जिसनो भए गुोबिंद दइआला ॥ गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला
॥ कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ नानकु तिनकै संगि तराइआ ॥ ८
॥ जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ ॥१॥
रहाउ दूजा ॥ २ ॥ प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि
काटे ॥ धरमराइ के कागर फाटे ॥ साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ
॥ पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ॥ १ ॥ राम रमत हरि हरि सुखु
पाइआ ॥ तेरे दास चरन सरनाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चूका गउणु
मिटिआ अंधिआरु ॥ गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ हरि प्रेम
भगति मनु तनु सद राता ॥ प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥ २ ॥ घटि
घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ बैर बिरोध
छेदे भै भरमां ॥ प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥ ३ ॥ महा तरंग ते
कांढै लागा ॥ जनम जनम का टूटा गांढा ॥ जपु तपु संजमु नामु
सम्हालिआ ॥ अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥ ४ ॥ मंगल सूख
कलिआन तिथाईं ॥ जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ प्रभ सुप्रसंन भए

गोपाल ॥ जनम जनम के मिटे बिताल ॥५॥ होम जग उरध तप पूजा
॥ कोटि तीरथ इसनानु करीजा ॥ चरन कमल निमख रिदै धारे ॥
गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥६॥ ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ हरिजन
लावहि सहजि धिआनु ॥ दास दासन की बांछउ धूरि ॥ सरब कला
प्रीतम भरपूरि ॥७॥ मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ मीत साजन भरवासा
तेरा ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ जपि जीवै नानक गुणतास ॥८॥३॥

बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मरन जीवन की संका नासी ॥ आपन
रंगि सहज परगासी ॥ १ ॥ प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ राम
रतनु पाइआ करत बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ जह अनंदु दुखु दूरि पइआना
॥ मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥२॥ जो किछु होआ सु तेरा भाणा
॥ जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु किलबिख गए
खीणा ॥ मनु भइआ जगजीवन लीणा ॥४॥१॥ प्रभाती ॥ अलहु एकु
मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ हिंदू मूरति नाम निवासी
दुह महि ततु न हेरा ॥ १ ॥ अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि
मिहरामति साई ॥१॥ रहाउ ॥ दखन देस हरी का बासा पछिमि अलह
मुकामा ॥ दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥२॥
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ गिआरह मास
पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥३॥ कहा उडीसे मजनु कीआ किआ
मसीति सिरु नांएं ॥ दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै
जांएं ॥४॥ एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥ कबीरु पूंगरा
राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥५॥ कहतु कबीरु सुनहु नर
नरवै परहु एक की सरना ॥ केवल नाम जपहु रे प्रानी तब ही निहचै
तरना ॥६॥२॥ प्रभाती ॥ अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति
के सभ बंदे ॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को
मंदे ॥ १ ॥ लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ खालिकु खलक

खलक महि खालिकु पूरि रहिओ सब ठांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी एक
अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥ ना कछु पोच माटी के भांडे ना
कछु पोच कुंभारै ॥ २ ॥ सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु
कछु होई ॥ हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥ ३ ॥ अलहु
अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ कहि कबीर मेरी संका
नासी सरब निरंजनु डीठा ॥४॥३॥ प्रभाती ॥ बेद कतेब कहहु मत झूठे
झूठा जो न बिचारै ॥ जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ
मुरगी मारै ॥ १ ॥ मुलां कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरमु न
जाई ॥१॥रहाउ॥ पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि
कीआ ॥ जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥ २ ॥
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ जउ
दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ॥३॥तूं नापाकु
पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ कहि कबीर भिसति
ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥४॥४॥प्रभाती॥ सुंन संधिआ तेरी
देव देवा कर अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अंतु नही पाइआ
लागि रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती हो पुरख निरंजनु सतिगुर पूजहु
भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥रहाउ॥
ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस
जगाइआ बूझै बूझनहारा॥२॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी
॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मन की बिरथा मनु ही जानै
कै बूझल आगै कहीऐ ॥ अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहाऐ
॥ १ ॥ बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई
॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ मानै
बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥ २ ॥ गुर कै सबदि
एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ सभो हुकमु
हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥ ३ ॥ जो जन

जानि भजहि पुरखोतमु ताची अबिगतु बाणी ॥ नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी॥४॥१॥प्रभाती ॥ आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ताका अंतु न जानिआ ॥ सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥ गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ आनद रूपी मेरो रामईआ॥१॥रहाउ ॥ बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥२॥ तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥ तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥३॥२॥ प्रभाती ॥ अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥ घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥१॥ जीअ की जोति न जानै कोई ॥ तै मैं कीआ सु मालूमु होई ॥१॥ रउाउ ॥ जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेउ ॥ आप ही करता बीठुलु देउ ॥२॥ जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥३॥ प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ अमरु होइ सद आकुल रहै ॥४॥३॥

प्रभाती भगत बेणी जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

॥ तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥ ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ देखि बैसनो प्रानमुख भागा ॥१॥ कलि भगवत बंद चिरांमं ॥ क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित प्रति इसनानु सरीरं ॥ दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥ परदरबु हिरन की बानी ॥२॥ सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ पग नाचसि चितु अकरमं ॥ ए लंपट नाच अधरमं ॥३॥ मृग आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ रे लंपट कृसनु अभाखं ॥ ४ ॥ जिनि आतम ततु न चीनिआ ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ ५ ॥ १ ॥

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

रागु जैजावंती महला ९ ॥

राम सिमर राम सिमर इहै तेरै काजि है ॥ माइआ को संगु तिआगि प्रभ जू की सरनि लाग ॥ जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु ॥ काहे पर करत मानु ॥ बारू की भीत जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥ नानक जन कहत बात बिनसि जै है तेरो गात ॥ छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥ १ ॥ जैजावंती महला ९ ॥ राम भजु राम भजु जनमु सिरातु है ॥ कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ बिनसत नहलगै बार ओरे सम गातु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल भरम डारि देह गोबिंद को नाम लेह ॥ अंति बार संगि तेरे इहै एक जातु है ॥ १ ॥ बिखिआ बिख जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धार ॥ नानक जन कहि पुकार अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥ जैजावंती महला ९ ॥ रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ इह जग मै राम नामु सों तउ नही सुनिओ कान ॥ बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानस को जनमु लीन सिमरनु नह निमख कीन ॥ दारा सुख भइओ दीन पगहु परी बेरी ॥१॥ नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जगु पसारि ॥ सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जाकी चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥ जैजावंती महला ९ ॥ बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाज रे ॥

निस दिन सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ काल तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ किउ न हरि को नामु लेह मूरख निलाज रे ॥ १ ॥ राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इह बखान जग मै बिराजु रे ॥ २ ॥ ४ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोक सहसकृती महला १

॥ पढ़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ त्रै पाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलक लिलाटं ॥ दोइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ सभ फोकट निसचै करमं ॥ कहु नानक निसचौ ध्यावै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ १ ॥ निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारस्य गुरपरसादी तरहि के ॥ करणकारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराकृतह ॥ सरब सबदं एक सबदं जेको जानसि भेउ ॥ नानक ताको दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ३ ॥ एक कृस्नं त सरबदेवा देव देवा त आतमह ॥ आतमं स्री बास्व देवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ नानक ताको दासु है सोई निरंजन देव ॥ ४ ॥

सलोक सहसकृती महला ५

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटंब्यते ॥

कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ रहंत संग भगवान
सिमरण नानक लबध्यं अचुत तनह ।।१।। धृगंत मात पिता सनेहं धृग
सनेहं भ्रात बांधवह ॥ धृग स्नेहं बनिता विलास सुतह ॥ धृग स्नेहं
गृहारथकह ॥ साध संग स्नेह सत्यं ॥ सुखयं बसंति नानकह ॥ २ ॥
मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं ॥ बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ अत्यंत
आसा आथित्य भवनं ॥ गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ पतंति मोह कूप
दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक।।गोबिंदगोबिंदगोबिंद गोपाल कृपा।।३।।
काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रकत चरमणह ॥ नवंत दुआरं भीत रहितं
बाइ रूपं असथंभनह ॥ गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति
असथिरं ॥ दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ हरि हरि हरि हरि
हरि हरे जपंति ।।४।। सुभंत तुयं अचुत गुनज्ञं पूरनं बहु लोक्यो पाला ॥
गंभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ भृतिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ अनाथ
नाथे नानक सरणं ।।५।। मृगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥
अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ।।६।। बहु जतन करता
बलवंतकारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ बिखम थान बसंत ऊचह नह
सिमरंत मरणं कदांचह ॥ होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक
कीटी सास अकरखते ।।७।। सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम
कृतुआ ॥ मिटंति तत्रागत भरम मोहं ॥ भगवान रमणं सरबत्र थान्यं ॥
दृसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ हरि हरि हरि हरे नानक
प्रिअं जापु जपना ॥ ८ ॥ घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर
नख्यत्र गगनं ॥ घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ घटंत ललना सुत
भ्रात हीतं ॥ घटंतकनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ नह घटंत केवल
गोपाल अचुत ॥ असथिरं नानक साध जन ॥ ९ ॥ नह बिलंब
धरमं बिलंब पापं ॥ दृड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ सरणि संतं
किलबिख नासं ॥ प्रापतं धरम लख्यण ॥ नानक जिह सुप्रसंन
माधवह ॥ १० ॥ मिरत मोहं अलप बुध्यं रचंति बनिता
बिनोद साहं ॥ जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ बचित्र
मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ ब्यापितं ॥ हे अचुत

सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥ ११ ॥ जनमं त मरणं हरखं
त सोगं भोगं त रोगं ॥ ऊचंत नीचं नान्हा सुमूचं ॥ राजं त मानं
अभिमानंत हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति बिनाससं ॥ गोबिंद
भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥१२॥ किरपंत
हरीअं मति ततु गिआनं ॥ बिगसीध्य बुधा कुसल थानं ॥ बस्यंत
रिखिअं तिआगि मानं ॥ सीतलंत रिदयं दृड़ु संत गिआनं ॥ रहंत
जनमं हरि दरस लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणां ॥ १३ ॥ कहंत
बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ दृड़ंत सुबिदिआ
हरि हरि कृपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर
गोपाला ॥ १४ ॥ नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु
लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ
सनबंधनह ॥ दइआल एक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ
प्रतिपालकह ॥ १५ ॥ अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा
बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अहं बंधं भरम माइआ मलनं बिकारं
॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद
करत मइआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥ १६ ॥ गिरंत गिरि
पतित पातालं जलंत देदीप्प बैस्वांतरह ॥ बहंति अगाह तोयं तरंगं
दुखंत ग्रह चिंता जनमंत मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक ॥
असथंभं असथंभं असथंभं सबद साध स्वजनह ॥ १७ ॥ घोर दुख्यं
अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत सगल सिमरंत
हरिनाम नानक ॥ जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥ १८ ॥ अंधकार
सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद बसंति भै भीत दूतह करम
करत महा निरमलह ॥ जनम मरण रहंत स्रोता सुख समूह अमोघ
दरसनह॥सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥१९॥
पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह॥निरधन भयं धनवंतह रोगीअं
रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रहम
पुरख दातारह॥नानक गुर सेवा किंन लभ्यते ॥२०॥ अधरं धरं धारणह
निरधनं धन नाम नरहरह॥ अनाथ नाथ गोबिंदय बलहीण बल केसवह ॥

सरब भूत दयाल अचुत दीन बांधव दामोदरह ॥ सरबज्ञ पूरन पुरख भगवानह भगति वछल करुणामयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचंति नानक कृपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥ २१ ॥ नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतम ॥ तव प्रसादि सिमरते नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरं ॥ २२ ॥ भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ सृजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ वरतंति सुख आनंद प्रसादह ॥ सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोहते ॥२३॥ दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥ २४ ॥ बृथा अनुग्रहं गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ आरोग्यं महारोग्यं बिसिमृते करुणामयह ॥२५॥ रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ अमृत नामु नाराइण नानक पीवतं संत न तृप्यते ॥ २६ ॥ सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ नानक भाजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिसटते ॥ २७ ॥ तिरसकार नह भवंति नह भवंत मान भंगनह ॥ सोभा हीन नह भवंति नह पोहंति संसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥ २८ ॥ सैना साध समूह सूर अजितं संनाहं तनि निंम्रताह ॥ आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ बिचरते निरभयं सत्रु सैना धायंते गुोपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥ २९ ॥ मृग तृसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटंब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥ ३० ॥ नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणज्ञ नाम कीरतनह ॥ नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक साध संगि खल पंडितह ॥ ३१ ॥ कंठ रमणीय राम राम मालां हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणिजो उतम सलोक उधरणं नैन नंदनी ॥ ३२ ॥ गुरमंत्र हीणस्य जो प्राणी धृगंत जनम

भ्रसटणह ॥ कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपन तुलि खलह ॥ ३३ ॥
चरणार बिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥ कीरतनं साध संगेण नानक
नह द्रसटंति जमदूतनह ॥३४॥ नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वरग
राजनह ॥ नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अंबरह ॥ नच
दुरलभं सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभं बनिता बिलासह॥नच दुरलभं
बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ दुरलभं एक भगवान
नामह नानक लबध्यिं साध संगि क्रिपा प्रभं ॥ ३५ ॥ जत कतह ततह
द्रसटं स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप
छेप न लिप्यते ॥ ३६ ॥ बिखया भयंति अंमृतं द्रुसटां सखा स्वजनह
॥ दुखं भयंति सुख्यं भै भीतं त निरभयह ॥ थान बिहून बिस्राम
नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरह ॥ ३७ ॥ सरब सील
ममं सीलं सरब पांवन मम पांवनह ॥ सरब करतब ममं
करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३८ ॥ नह सीतलं चंद्र देवह नह
सीतलं बांवन चंदनह ॥ नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध
स्वजनह ॥ ३९ ॥ मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ज्ञानं
सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ
पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल
कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर
निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण
पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥ ४० ॥ अजा भोगंत
कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ तत्र गते संसारह नानक
सोग हरखं बिआपते ॥ ४१ ॥ छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं
किलबिख मलं ॥ भरम मोहं मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥
मृत्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ निरमलं
साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ रमंति गुण गोबिंद नितप्रतह
॥४२॥ तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह॥करण कारण समरथह
दानु देत प्रभु पूरनह ॥ निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥
गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥ ४३ ॥

दुरगमस्थान सुगमं महा दूख सरब सूखणह ॥ दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ अस्थितं सोग हरखं भै खीणंत निरभवह ॥ भै अटवीअं महानगर बासं ॥धरम लख्यण प्रभ मइआ ॥साध संगम राम राम रमणं ॥ सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥ ४४ ॥ हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥४५॥हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह ॥४६ ॥ हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ बिखियंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति॥४७॥हे लोभा लंपट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भांति बहु डोलते ॥ नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ अकरणं करोति अखाद्य खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिज्ञाप्ति नानक हरि नरहरह ॥ ४८ ॥ हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥ मित्रं तजंति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ आवंत जावंत थकंत जीआदुख सुख बहु भोगणह ॥ भ्रम भयान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥ ४९ ॥ हे प्राण नाथ गोबिंदह कृपा निधान जगदगुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग दयालह दीनानाथ मया करो ॥ सरीर स्वस्थ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥ ५० ॥ चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥ ५१ ॥ सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख

बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥ ५२ ॥ जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ जेन कला ससि सूर नख्यत्र जोत्यं सासं सरीर धारणं ॥ जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जठर रोगणह ॥ तेन कला असथंभं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥ ५३ ॥ गुसांई गरिस्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ लबध्य संत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥ ५४ ॥ मसकंभ गनंत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ सागरं लंघंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ साध संगेणि सिमरंत गोबिंद ॥ सरणि नानक हरि हरि हरे ॥ ५५ ॥ तिलक हीणं जथा बिप्रा ॥ अमर हीणं जथा राजनह ॥ आवध हीणं जथा सूरा ॥ नानक धरम हीणं तथा बैसनवह ॥ ५६ ॥ न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ अस्चरज रूपं रहंत जनम ॥ नेत नेत कथंति बेदा ॥ ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ बसंति साध रिदयं अचुत ॥ बुझंति नानक बडभागीअह ॥ ५७ ॥ उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ बिखम स्थान मन मोह मदिरं महां असाध पंच तसकरह ॥ हीत मोह भै भरम भ्रमणं अहं फांस तीख्यण कठिनह ॥ पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लंघनह ॥ भजु साध संगि गुोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण क्रिपा ॥ ५८ ॥ क्रिपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥ ५९ ॥ सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्वजनह ॥ ६० ॥ अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नितप्रते॥ छिजंत महा सुंदरी कांइआ काल कंनिआ ग्रासते॥रचंति पुरह कुटंब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणामयह ॥ ६१ ॥ हे जिहबे हे रसगे मधुर प्रिअ तुयं ॥ सत हतं परम बादं अवरत एथह सुध अछरणह॥गोबिंद दामोदर माधवे॥६२॥ गरबंति नारी मदोन मतं ॥ बलवंत बलातकारणह ॥ चरन कमल नह भजंत तृण समानि धिगु जनमनह ॥ हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ नानक

अनिक बार नमो नमह ॥ ६३ ॥ तृणंत मेरं सहकंत हरीअं ॥ बूडंत तरीअं ऊणंत भरीअं ॥ अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ बिनवंत नानक हरि गुर दयारं ॥६४॥ ब्रहमणह संगि उधरणं ब्रहम करम जि पूरणह ॥ आतम रतं संसार गहंते नर नानक निहफलह ॥६५॥ परदरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ लउ लई तृसना अतिपति मन माए करम करत स सूकरह ॥६६॥ मतेसमेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणं नानक साधसंगम न संसयह ॥६७॥

महला ५ गाथा

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहं मलीणं ॥ मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥१॥ परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥ २ ॥ जाणो सति होवंतो मरणो द्रिसटेण मिथिआ ॥ कीरति साथि चलंथो भणंति नानक साध संगेण ॥३॥ माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बांधवह ॥ लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥४॥ मैलागर संगेण निमु बिरखसि चंदनह ॥ निकटि बसंतो बांसो नानक अहंबुधि न बोहते ॥५॥ गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥६॥ बचन साध सुख पंथा लहंथा बड करमणह ॥ रहंता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥ ७ ॥ पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीयं पेड संपता ॥ नाम बिहूण बिखमता नानक बहंति जोनि बासरोरैणी ॥ ८ ॥ भावनी साध संगेण लभंतं वडभागणह ॥ हरिनाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥ ९ ॥ गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥ १० ॥ सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥ ११ ॥ सुंदर मंदर सैणह ॥ जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह ॥ नानक लबध्यं बड भागणह ॥ १२ ॥ हरि

लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का अस्थलु तोलु अमितो ॥ सोई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥१३॥ अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ सिमरतब्य रिदै गुरमंत्रणह ॥ प्रीतम भगवान अचुत ॥ नानक संसार सागर तारणह ॥१४॥ मरणं बिसरणं गोबिदह ॥ जीवणं हरिनाम ध्यावणह ॥ लभणं साध संगेण ॥ नानक हरि पूरबि लिखणह ॥१५॥ दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ ब्याधि उपाड़ण संतं नानक लबध करमणह ॥१६॥ जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ तथ लगणं प्रेम नानक परसादं गुर दरसनह ॥ १७ ॥ चरणारबिंद मन बिध्यं सिध्यं सरब कुसलणह ॥ गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥१८॥ सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरण ॥ संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥१९॥ बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ एकंकार नाम उरधारं ॥ कुलह समूह सगल उधारं ॥ बडभागी नानक को तारं ॥२०॥ सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह॥ लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥ २१ ॥ सरब दोख परंतिआगी सरब धरम दृड़ंतणः॥ लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥ २२ ॥ होयो है होवंतो हरण भरण संपूरणः ॥ साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥ २३ ॥ सुखेण बैण रतनं रचनं कसुंभ रंगणः ॥ रोग सोग बिओगं नानक सुखु न सुपनह ॥२४॥

फुनहे महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ हाथि कलंम अगंम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ संत सभा महि बैस कि कीरति मै कहां ॥ अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ हरिहां मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥ २ ॥ सखी काजल हार तंबोल सभै किछु साजिआ ॥ सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ हरिहां कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा

जाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ तिसु बणिआ
हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ
॥ हरिहां जा घरि आइआ कंतु त सभ किछु पाईआ ॥ ४ ॥ आसा
इती आस कि आस पुराईऐ ॥ सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ मै
तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ हरिहां सतिगुर भए दइआल
त मनु ठहराइआ ॥ ५ ॥ कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ दुतरु
इहु संसारु सतिगुरू तराइआ ॥ मिटिआ आवागउणु जां पूरा पाइआ
॥ हरिहां अंमृतु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥ ६ ॥ मेरै हाथि
पदमु आगनि सुख बासना ॥ सखी मोरै कंठि रतंनु पेखि दुखु नासना
॥ बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ हरिहां रिधि सिधि
नवनिधि बसहि जिसु सदा करि ॥ ७ ॥ परत्रिअ रावणि जाहि सेई ता
लाजीअहि ॥ नितप्रति हिरहि परदरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरिगुण
रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहमु
बीचारई ॥ ८ ॥ ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ दहदिस चमकै
बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥
हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥ ९ ॥ डिठे सभे थाव
नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥ वसदी
सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहां नानक कसमल जाइ नाइऐ
रामदास सर ॥ १० ॥ चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ जिसु
संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ बनु बनु फिरत उदास बूंद जल
कारणे ॥ हरिहां तिउ हरिजन मांगै नामु नानक बलिहारणे ॥ ११ ॥
मित का चितु अनूपु मरंमु न जानीऐ ॥ गाहक गुनी अपार सु ततु
पछानीऐ ॥ चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ हरिहां चंचल
चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥ १२ ॥ सुपनै ऊभी भई गहिओ
की न अंचला ॥ सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥
खोजउ ताके चरण कहहु कत पाईऐ ॥ हरिहां सोई जतंनु बताइ
सखी प्रिउ पाईऐ ॥ १३ ॥ नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥
करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु

तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ हरिहां जब बिसरै गोबिद राइ दिनो दिनु
घटीऐ ॥१४॥ पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ अंग संग उरझाइ
बिसरते सुंफिआ ॥ है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि ॥ नानक
इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥१५॥ धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ
कारणे ॥ पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण बाण चलाइ
नामु प्रभ धाईऐ ॥ हरिहां महा बिखादी घात पूरन गुरु पाईऐ ॥ १६ ॥
सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि
छुटई ॥ अंमृतु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा अराधि
कदे न जांहि मरि ॥ १७ ॥ जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥
सगले होए सुख हरिनामु धिआवणा ॥ जीअ करनि जैकारु निंदक
मुए पचि ॥ साजन मनि आनंदु नानक नामु जपि ॥ १८ ॥ पावन
पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥ झूठै रंगि खुआरु कहां लगु खेवीऐ ॥
हरि चंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिंन जि
दरगहि जानिआ ॥ १९ ॥ कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥
महा द्रुगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह
जानई ॥ हरिहां हरि चंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥ २० ॥ जिस की
पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदक अनिक उपाव कहां लउ भाखई
॥ एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ हरिहां बिनु नावै तनु छारु
बृथा सभु जावई ॥ २१ ॥ अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥
मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति होइ तिसै
ही पावणे ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिन जि हरिरंगु रावणे ॥ २२ ॥
वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ अउखद आए रासि विचि आपि
खलोइआ ॥ जो जो ओना करम सु करम होइ पसरिआ ॥ हरिहां दूख
रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥ २३ ॥

चउबोले महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ संमन जउ इस प्रेम की
दम क्यिहु होती साट ॥ रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने
काटि ॥ १ ॥ प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई

होत ॥ चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संजोग ॥२॥ सागर मेर उदिआन बन नवखंड बसुधा भरम ॥ मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ एक करि करम ॥३॥ मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइ ॥ बीधे बांधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥ ४ ॥ जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥५॥ मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ प्रेम पिरंम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥६॥ घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥७॥ जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रहम के आन न कतहू जाहि ॥ ८ ॥ लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निम्रत घनी करनी कमल जमाल ॥९॥ कमल नैन अंजन सिआम चंद्रबदन चित चार ॥ मूसन मगन मरम सिउ खंड खंड करि हार ॥१०॥ मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥ ११ ॥

सलोक भगत कबीर जीउ के ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ताको सुखु बिस्रामु ॥ १ ॥ कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥२॥ कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥ ३ ॥ कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन मनि नाही नाउ ॥४॥ कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥५॥ कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥ मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गुोबिंदु ॥६॥ कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥७॥ कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥ ८ ॥ कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ॥भलो भला सभु को कहै बुरो न मानै कोइ॥९॥

कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥ लै फाहे उठि धावते सि
जानि मारे भगवंत ॥१०॥ कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक
पलास ॥ ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥११॥ कबीर बांसु
बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥ चंदन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न
होइ ॥ १२ ॥ कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥
पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथ ॥ १३ ॥ कबीर जह जह हउ
फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भांइ
॥ १४ ॥ कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ आगि
लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥ १५ ॥ कबीर संत मूए
किआ रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट
बिकाइ ॥ १६ ॥ कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ कोने
बैठे खाईऐ परगट होइ निदान ॥ १७ ॥ कबीर माइआ डोलनी पवनु
झकोलनहारु ॥ संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥१८॥ कबीर
माइआ डोलनी पवनु वहै हिवधार ॥ जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ
अवर बिलोवनहार ॥ १९ ॥ कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै
हाटि ॥ एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥ २० ॥ कबीर
सूखु न एंह जुग करहि जु बहुतै मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते
सुखु पावहि नीत ॥ २१ ॥ कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मन
आनंदु ॥ मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ २२ ॥ राम पदारथु
पाइकै कबीरा गांठि न खोल्ह ॥ नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही
मोलु ॥ २३ ॥ कबीर तासिउ प्रीति करि जाको ठाकुरु रामु ॥ पंडित
राजे भूपती आवहि कउने काम ॥ २४ ॥ कबीर प्रीति इक सिउ कीए
आन दुबिधा जाइ ॥ भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥ २५ ॥
कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ हउ बलिहारी
तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥ २६ ॥ कबीर इहु तनु
जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ नांगे पावहु ते गए जिन के लाख
करोरि ॥ २७ ॥ कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ कै
संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥ २८ ॥ कबीर मरता

मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥ ऐसे मरने जो मरै बहुरि
न मरना होइ ॥ २९ ॥ कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारैबार ॥
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥ ३० ॥ कबीरा
तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले
तजहि सरीरु ॥ ३१ ॥ कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥
करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥ ३२ ॥ कबीर कसउटी राम
की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥
३३ ॥ कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ एकस हरि के
नाम बिनु बाधे जमपुरि जांहि ॥ ३४ ॥ कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक
हजार ॥ हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥३५॥ कबीर हाड
जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ इहु जगु जरता देखि कै भइओ
कबीरु उदासु ॥ ३६ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ हैवर
ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥ ३७ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ
ऊचा देखि अवासु ॥ आजु काल्हि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥ ३८
॥ कबीर गरबु न कीजिऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥ अजहु सु नाउ समुद्र
महि किआ जानउ किआ होइ ॥ ३९ ॥ कबीर गरबु न कीजीऐ देही
देखि सुरंग ॥ आजु कालि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥ ४० ॥
कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ फिरि पाछै पछुताहुगे
प्रान जाहिंगे छूटि ॥ ४१ ॥ कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपने घर
लावै आगि ॥ पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥ ४२ ॥
को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ साझा करै कबीर सिउ हरि
संगि बनजु करेइ ॥ ४३ ॥ कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥
॥ पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुडु लै खाहि ॥ ४४ ॥ कबीर मैं
जानिओ पड़िबो भला पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ भगति न छाडउ राम
की भावै निंदउ लोगु ॥ ४५ ॥ कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि
नाही गिआनु ॥ राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥ ४६ ॥
कबीर परदेसी कै घाघरै चहुदिसि लागी आगि ॥ खिंथा जलि
कोइला भई तागे आंच न लाग ॥ ४७ ॥ कबीर खिंथा जलि

कोइला भई खापरु फूटम फूट ॥ जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥४८॥ कबीर थोरै जलि माछुली झीवर मेलिओ जालु ॥ इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥ ४९ ॥ कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥५०॥ कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥५१॥ कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ ओहु नित सुनै हनिराम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥ ५२ ॥ कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥ ५३ ॥ कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥ ५४ ॥ कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥ ५५ ॥ कबीर हरदी पीअरी चूंनां ऊजल भाइ ॥ राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥ ५६ ॥ कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥ ५७ ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ ॥५८॥ कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥५९॥ कबीर ना मोुहि छानि न छापरी ना मोुहि घरु नही गाउ ॥ मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥ ६० ॥ कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥ ६१ ॥ कबीर न हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥ ६२ ॥ कबीर सुपनै हू बरड़ाइकै जिह मुख निकसै रामु ॥ ताके पग की पानही मेरे तन को चामु ॥६३॥ कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिउ नाउ ॥ चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥६४॥ कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥ ६५ ॥ कबीर जिह दर आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु

ऐसा होइ ॥६६॥ कबीर डूबा थापै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥
जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥ ६७ ॥
कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चंदनु परहरै
जह बिगंध तह जाइ ॥ ६८ ॥ कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु
संसारु ॥ एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥६९॥ कबीर रामु
न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हांडी काठ की न ओहु चर्है
बहोरि ॥ ७० ॥ कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ मरने ते
किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥ ७१ ॥ कबीर रस को गांडो
चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ
॥ ७२ ॥ कबीर गागरि जल भरी आजु कालिह जैहै फूटि ॥ गुरु जु न
चेतहि आपनो अधमाझ लीजहिगे लूटि ॥ ७३ ॥ कबीर कूकरु राम को
मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥ ७४ ॥
कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतही
इह जपनी किआ होइ ॥७५॥ कबीर बिरहु भुयंगमु मन बसै मंतु न मानै
कोइ ॥ राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥७६॥ कबीर पारस
चंदनै तिन है एक सुगंध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ
निरगंध ॥७७॥ कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥
एकु जु साधू मुोहि मिलिओ तिन्ह लीआ अंचलि लाइ ॥ ७८ ॥ कबीर
बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ इह तउ बसतु गुपाल की जब
भावै लेइ खसि ॥७९॥ कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥
नदी नाम संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥ ८० ॥ कबीर सात
समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ
करउ हरिजसु लिखनु न जाइ ॥ ८१ ॥ कबीर जाति जुलाहा किआ
करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कंठ मिलु चूकहि सरब
जंजाल ॥ ८२ ॥ कबीर ऐसा को नही मंदर देइ जराइ ॥ पांचउ
लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥ ८३ ॥ कबीर ऐसा को नही
इह तन देवै फूकि ॥ अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि
॥ ८४ ॥ कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनुहो बीर

मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान ॥ ८५ ॥
कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दहदिस जाइ॥ जो जैसी संगति मिलै
सो तैसो फलु खाइ ॥ ८६ ॥ कबीर जाकउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥
सोई फिरि कै तू भइआ जाकउ कहता अउरु ॥ ८७ ॥ कबीर मारी मरउ
कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न
हेरि ॥ ८८ ॥ कबीर भार पराई सिर चरै चलिओ चाहै बाट ॥ अपने
भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥८९॥ कबीर बन की दाधी लाकरी
ठाढी करै पुकार ॥ मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥ ९० ॥
कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि ॥ चारि मरंतह छह मूए
चारि पुरख दुइ नारि ॥ ९१ ॥ कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूँ न
पाइआ ठौरु ॥ जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥
९२॥ कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ साकत संगु न
कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥ ९३ ॥ कबीर जग महि चेतिओ जानि
कै जग महि रहिओ समाइ ॥ जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि
जनमें आइ ॥ ९४ ॥ कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास
॥ नरकि परहि ते मानई जो हरिनाम उदास ॥ ९५ ॥ कबीर सिख
साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ चाले थे हरि मिलन कउ बीचै
अटकिओ चीतु ॥ ९६ ॥ कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न
करै सहाइ ॥ जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥ ९७ ॥
कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ रासि बिरानी राखते
खाया घर का खेतु ॥ ९८ ॥ कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी
खाउ ॥ होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ ॥ ९९ ॥ कबीर
संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ साकत कारी कांबरी धोए होइ
न सेतु ॥१००॥ कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ ॥ जो
किछु कीआ मु मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ ॥ १०१ ॥ कबीर रामु
न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ चरन कमल चितु बेधिआ रामहि
नामि समाउ ॥ १०२ ॥ कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ
तार ॥ जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥१०३॥ कबीर माइ

मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥ आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥ १०४ ॥ कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ परगट भए निदान सभ जब पूछे धरमराइ ॥ १०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटंबु ॥ धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥ १०६ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥ सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥ १०७ ॥ कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥ १०८ ॥ कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥ १०९ ॥ कबीर सोई मुखु धंनि है जा मुख कहीऐ राम ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥ ११० ॥ कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न उपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥ १११ ॥ कबीर है गइ बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥ ११२ ॥ कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ ॥ कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥ ११३ ॥ मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ॥ ११४ ॥ बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥ हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥ ११५ ॥ कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥ ११६ ॥ कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥ ११७ ॥ कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ अजहु जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥ ११८ ॥ कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥ ११९ ॥ कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥ १२० ॥ कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥ १२१ ॥ कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को

पतीआइ ॥ हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ ॥१२२॥ कबीर
चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ जैसे बचरहि कूंज मन
माइआ ममता रे ॥ १२३ ॥ कबीर अंबर घनहरु छाइआ बरखि भरे
सरताल ॥ चातृक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥ १२४ ॥
कबीर चकई जिउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ जो नर बिछुरे
राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥ १२५ ॥ कबीर रैनाइर बिछोरिआ
रहु रे संख मझूरि ॥ देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥ १२६ ॥
कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ जा का बासा गोर महि
सो किउ सोवै सुख ॥ १२७ ॥ कबीर सूता किआ करहि उठि कि न
जपहि मुरारि ॥ इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥ १२८ ॥
कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ जाके संग से बीछुरा
ताही के संग लागु ॥ १२९ ॥ कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि
लागा जाउ ॥ पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ॥ १३० ॥
कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ बासनु कारो
परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥ १३१ ॥ कबीरा रामु न चेतिओ जरा
पहूँचिओ आइ ॥ लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइ
॥१३२॥ कबीर कारनु सो भइओ जो कीनो करतार ॥ तिस बिनु दूसर
को नही एकै सिरजनहारु ॥ १३३ ॥ कबीर फल लागे फलनि पाकन
लागे आंब ॥ जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब॥१३४॥
कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मन हठ तीरथ जाहि ॥ देखा देखी स्वांगु
धरि भूले भटका खाहि ॥ १३५ ॥ कबीर पाहन परमेसुरु कीआ पूजै
सभु संसारु ॥ इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥ १३६ ॥ कबीर
कागद की ओबरी मसु के करम कपाट ॥ पाहन बोरी पिरथमी पंडित
पाड़ी बाट ॥ १३७ ॥ कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता
सुइताल ॥ पाछै कछू न होइगा जउ सिर पर आवै कालु ॥ १३८ ॥
कबीर ऐसा जंतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ दीसै चंचलु बहु गुना
मतिहीना नापाक॥१३९॥कबीरमेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार॥जिनि
इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥ १४०॥ कबीरु कसतूरी

भइआ भवर भए सभ दास ॥ जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम
निवास ॥ १४१ ॥ कबीर गहगचि परिओ कुटंब कै कांठै रहि गइओ
रामु ॥ आइ परे धरमराइ के बीचहि धूमा धाम ॥१४२॥ कबीर साकत
ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ
न लैहै नाउ ॥ १४३ ॥ कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख
करोरि ॥ चलती बार न कछु मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥ १४४ ॥
कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ बाहरि कंचनु
बारहा भीतरि भरी भंगार ॥१४५॥ कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि
मन का अभिमानु ॥ ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥१४६॥
कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ ऐसा तेरा दासु
है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७॥ कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ जौ
उडि लागै अंग ॥ हरिजनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥ १४८ ॥
कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ हरिजनु ऐसा
चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥ १४९ ॥ ऊच भवन कनकामनी सिखरि
धजा फहराइ ॥ ता ते भली मधूकरी संत संग गुन गाइ ॥ १५० ॥
कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ राम सनेही बाहरा
जम पुरु मेरे भांइ ॥ १५१ ॥ कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के
घाट ॥ तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥ १५२ ॥ कबीर
जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ हीरा किस का बापुरा
पुजहि न रतन करोड़ि ॥ १५३ ॥ कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा
हाट बिकाइ ॥ बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥ १५४ ॥ कबीरा
जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ जहा लोभु तह कालु
है जहा खिमा तह आपि ॥ १५५ ॥ कबीर माइआ तजी त किआ
भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ॥ मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै
कउ खाइ ॥ १५६ ॥ कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु
बाहिआ एकु ॥ लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु
॥१५७॥ कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अंधे
एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक ॥ १५८ ॥ कबीर है गै

बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनिहारि ॥ १५९ ॥ कबीर नृप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कौ मानु ॥ ओहु मांग सवारै बिख कउ ओहु सिमरै हरि नामु ॥ १६० ॥ कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥ १६१ ॥ कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट ॥ जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥ १६२ ॥ कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरापुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥ १६३ ॥ कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥ १६४ ॥ कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥ १६५ ॥ कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥१६६॥ कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि॥पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥ १६७ ॥ कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥ १६८ ॥ कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥ १६९ ॥ कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु॥ भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥१७०॥ कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥१७१॥ कबीर कोठी काठ की दहदिसि लागी आगि ॥ पंडित पंडित जल मूए मूरख उबरे भागि ॥ १७२ ॥ कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥ १७३ ॥ कबीर संत न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥ १७४ ॥ कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥ १७५ ॥ कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥ १७६ ॥ कबीर भली भई जौ भउ परिआ दिसा

गईं सब भूलि ॥ ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि
॥ १७७ ॥ कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥ दिवस चारि
को पेखना अंति खेह की खेह ॥ १७८ ॥ कबीर सूरज चांद कै उदै
भई सभ देह ॥ गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥
१७९ ॥ जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ कहिओ
कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥ १८० ॥ कबीर जिनहु
किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ हमहु जु बूझा बूझना
पूरी परी बलाइ ॥ १८१ ॥ कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै
अउर ॥ लागी चोट मरंम की रहिओ कबीरा ठउर ॥ १८२ ॥ कबीर
चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ चोट सहारै सबद की तासु
गुरू मै दास ॥ १८३ ॥ कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा
होइ ॥ जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥ १८४ ॥ सेख
सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ कबीर जा की दिल साबति नही
ताकउ कहां खुदाइ ॥ १८५ ॥ कबीर अलह की करि बंदगी जिह
सिमरत दुखु जाइ ॥ दिल महि सांई परगटै बुझै बलंती नांइ ॥ १८६ ॥
कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ दफतरि लेखा
मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥ १८७ ॥ कबीर खूबु खाना
खीचरी जामहि अंम्रितु लोनु ॥ हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु
॥ १८८ ॥ कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ हरख
सोग दाझै नही तब हरि आपहि आप ॥ १८९ ॥ कबीर राम कहन
महि भेदु है तामहि एकु बिचारु॥ सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार
॥ १९० ॥ कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ एकु अनेकहि
मिलि गइआ एक समाना एक ॥ १९१ ॥ कबीर जा घर साध
न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ ते घर मरहट सारखे भूत बसहि
तिन माहि ॥ १९२ ॥ कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ
कान ॥ पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥ १९३ ॥
कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ लागत ही भुइ
गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥ १९४ ॥ कबीर निरमल बूंद

अकास की परि गई भूमि बिकार ॥ बिनु संगति इउ मांनई होइ गई भठ छार ॥१९५॥ कबीर निरमल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइ ॥ अनिक सिआने पचि गए न निरवारी जाइ ॥ १९६ ॥ कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥ सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किनि फुरमाई गाइ ॥ १९७ ॥ कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥ सांई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥१९८॥ कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ दफतरु दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु ॥ १९९ ॥ कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥ दफतर लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥ २०० ॥ कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥ २०१ ॥ कबीर धरती अरु आकास महि दोइ तूंबरी अबध ॥ खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥ २०२ ॥ कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥ २०३ ॥ कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूँ ॥ जब आपा पर का मिटि गइआ जत तेखउ तत तू ॥ २०४ ॥ कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥ २०५ ॥ कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥ २०६ ॥ कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीए छडाइ ॥ परा पूरबली भावनी पगगटु होई आइ ॥२०७॥ कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढंतउ जाइ ॥ ना हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहूंचो आइ ॥ २०८ ॥ महल ५ ॥ कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइ ॥ करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥ २०९ ॥ महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥२१०॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरमराइ ॥ २११ ॥ नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ काहे छीपहु छाइलै राम न

लावहु चीतु ॥ २१२ ॥ नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥ २१३ ॥ महला ५ ॥
कबीरा हमरा को नही हम किसहू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ
तिस ही माहि समाहि ॥ २१४ ॥ कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ
किछू न आइओ हाथ ॥ पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ
॥२१५॥ कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ काहे की
कुसलात हाथ दीपु कूए परै॥२१६॥कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै
लोगु अजानु ॥ ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥ २१७ ॥
कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ कारजु साढे तीनि हथ
घनी त पउने चारि ॥ २१८ ॥ कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे
चितवे होइ ॥ अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चित न होइ ॥ २१९
॥ म० ३ ॥ चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ नानक
सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥ २२० ॥ म० ५ ॥ कबीर रामु न
चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी
खिन माहि ॥ २२१ ॥ कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु
॥ साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥ २२२ ॥ कबीर
केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ राति दिवस के कूकने कबहू के
सुनै पुकार ॥ २२३ ॥ कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु
मयमंतु ॥ अंकसु ज्ञानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥२२४॥ कबीर राम
रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ कोई आइ मिलैगो गाहकी
लेगो महगे मोलि ॥२२५॥ कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ
कटकु कुटंबु ॥ धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न बंब ॥ २२६ ॥
कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ मनु जंजालु न छोडई
जम दीआ दमामा आइ ॥ २२७ ॥ कबीर तरवरु रूपी रामु है
फल रूपी बैरागु ॥ छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ
बादु बिबादु ॥ २२८ ॥ कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास
फलंत ॥ सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥ २२९ ॥
कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ पंखी चले

दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥ २३० ॥ कबीर साधू संगु परापती
लिखिआ होइ लिलाट ॥ मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट
॥२३१॥ कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ भगतन सेती
गोसटे जो कीने सो लाभ ॥२३२॥ कबीर भांग माछुली सुरापानि जो
जो प्रानी खांहि ॥ तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातल जांहि ॥२३३॥
नीचे लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ सभ रस खेलउ पीअ सउ
किसी लखावउ नाहि ॥ २३४ ॥ आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत
रहै जीउ ॥ नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥ २३५ ॥ सुनु
सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ जीउ पीउ बूझउ
नही घट महि जीउ कि पीउ ॥ २३६ ॥ कबीर बामनु गुरू है जगत का
भगतन का गुरु नाहि ॥ अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि
॥२३७॥ हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ कहि
कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥ २३८ ॥ कबीर जउ तुहि
साध पिरंम की सीसु काटि करि गोइ ॥ खेलत खेलत हाल करि जो
किछु होइ त होइ ॥ २३९ ॥ कबीर जउ तुहि साध पिरंम की पाके सेती
खेलु ॥ काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥ २४० ॥ ढूंढत
डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ कहि नामा किउ पाईऐ बिनु
भगतहु भगवंतु ॥ २४१ ॥ हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस
॥ ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥ २४२ ॥ कबीर जउ गृहु
करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ बैरागी बंधनु करै ताको बडो
अभागु ॥ २४३ ॥

सलोक सेख फरीद के

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जितु दिहाड़ै धनवरी साहे लए लिखाइ
॥ मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ जिंदु निमाणी कढीऐ
हडा कू कड़काइ ॥ साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥ जिंदु
वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ॥ आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै
धाइ॥वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणीआइ ॥ फरीदा किड़ी पवंदीई
खड़ा न आपु मुहाइ॥१॥फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति॥

बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥२॥ किछु न बुझै किछु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हंभी दझां आहि ॥३॥ फरीदा जे जांणां तिल थोड़ड़े संमलि बुकु भरी ॥ जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥ ४ ॥ जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥ फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेखु ॥ आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥६॥ फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिना न मारे घुंमि ॥ आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिना दे चुंमि ॥७॥ फरीदा जां तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ॥ मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥८॥ देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥ देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥१०॥ फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥ साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥११॥ फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥ करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥१२॥ म० ३ ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥१३॥ फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥१४॥ फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥ जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥ १५ ॥ फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ जे सांई लोड़हि सभु ॥ इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥ १६ ॥ फरीदा खाक न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥ जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥ १७ ॥ फरीदा जा लबु त नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥ १८ ॥ फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥ १९ ॥ फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥ अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥ २० ॥ फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि

उठनि पास ॥ धिगु तिना दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥ २१ ॥
फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआं ॥ हेड़ा जलै मजीठ जिउ
उपरि अंगारा ॥ २२ ॥ फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै
जटु ॥ हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥ फरीदा गलीए चिकड़ु
दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु
॥ २४ ॥ भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥ जाइ मिला तिना
सजणा तुटउ नाही नेहु ॥ २५ ॥ फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली
होइ जाइ ॥ गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥ २६ ॥ फरीदा
सकर खंडु निवात गुड़ु माखिउ मांझा दुधु ॥ सभे वसतू मिठीआं रब न
पुजनि तुधु ॥ २७ ॥ फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥ २८ ॥ रुखी सुखी खाइ कै
ठंडा पाणी पीउ ॥ फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥२९॥
अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ जाइ पुछहु डोहागणी
तुम किउ रैणि विहाइ ॥ ३० ॥ साहुरै ढोई न लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
पिर वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥ ३१ ॥ साहुरै पेईऐ कंत की
कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक सो सोहागणी जु भावै बे परवाह ॥ ३२ ॥
नाती धोती संबही सुती आइ न चिंदु ॥ फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी
गई कथूरी गंधु ॥ ३३ ॥ जोबन जांदे न डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥ फरीदा चिंत
खटोला वाणु दुखु बिरह विछावण लेफु ॥ एहु हमारा जीवणा तू साहिब
सचे वेखु ॥ ३५ ॥ बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ फरीदा
जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ ३६ ॥ फरीदा
ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥ इकि राहेदे रहि गए
इकि राधी गए उजाड़ि ॥ ३७ ॥ फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै
चारि गवाइआ संमि ॥ लेखा रबु मगेसीआ तू आंहो केहें कंमि ॥
३८ ॥ फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ॥ ३९ ॥ घड़ीए
घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ सो हेड़ा घड़ीआल जिउ

डुखी रैणि विहाइ ॥ ४० ॥ बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह
॥ जे सउ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥ ४१ ॥ फरीदा बारि
पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥ जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि
॥ ४२ ॥ कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ फरीदा हउ
लोड़ी सहु आपना तू लोड़हि अंगिआर ॥ ४३ ॥ फरीदा इकना आटा
अगला इकना नाही लोणु ॥ अगै गए सिंञापसनि चोटां खासी कउणु
॥ ४४ ॥ पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ जाइ सुते जीराण
महि थीए अतीमा गड ॥ ४५ ॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे
भी गए ॥ कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥४६॥ फरीदा खिंथड़ि
मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ वारी आपो आपणी चले मसाइक
सेख ॥ ४७ ॥ फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ गड़ु
लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥ ४८ ॥ फरीदा वेखु कपाहै
जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ कमादै अरु कागदै कुंने
कोइलिआह ॥ मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥४९॥ फरीदा
कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ बाहरि दिसै चानणा
दिलि अंधिआरी राति ॥५०॥ फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै
कोइ ॥ जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥५१॥ म० ३॥ इहु
तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सह रते आपणे तितु तनि
लोभु रतु न होइ ॥ भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥
नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥ ५२ ॥ फरीदा सोई
सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै
हथु ॥५३॥ फरीदा नंढी कंतु न राविओ वडी थी मुईआसु॥ धन कूकेंदी
गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥ ५४ ॥ फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली
मुछां भी पलीआं॥ रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआं ॥५५॥
फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ जो दिह लधे
गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥ ५६ ॥ फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ
एतु न लाए चितु ॥ मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥ ५७ ॥

फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंजणा ॥ ५८ ॥ फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥ मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥ ५९ ॥ फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥ दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥ ६० ॥ फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥ ६१ ॥ तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ॥ ६२ ॥ जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥ फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥ ६३ ॥ कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥ चिंजू बोड़नि न पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥ हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥ गहला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥६५॥ चलि चलि गईआं पंखीआ जिनी वसाए तल ॥ फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥ ६६ ॥ फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥६७॥ फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥ अजराईलु फरेसता कैं घरि नाठी अजु ॥ ६८ ॥ फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥ जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु॥६९॥फरीदा बेनिवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥७०॥ उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥ ७१ ॥ जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥ कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥७२॥ फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥ तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि॥७३॥फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥७४॥ महला ५ ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि॥मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि॥७५॥फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ पवनि न इती मामले सहां न इती दुख ॥७६॥ चबण चलण रतंन से सुणीअर बहि गए॥हेड़े मुतीधाह से जानी चलि गए॥७७॥फरीदा बुरे दा भला

करि गुसा मनि न हढाइ ॥ देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥ ७८ ॥ फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥ फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ जिंन्हा नैण नींद्रावले तिंन्हा मिलणु कुआउ ॥ ८० ॥ फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥ ८१ ॥ महला ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ जो जन पीरि निवाजिआ तिंन्हा अंच न लाग ॥ ८२ ॥ महला ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअनि जिंन्हा पिआरे नेह ॥८३॥ कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥८४॥ फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलां सेती राति ॥ खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥ ८५ ॥ लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६ ॥ फरीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहां ॥ धुखां जिउ मांलीह कारणि तिंन्हा मा पिरी ॥ ८७ ॥ फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥ ८८ ॥ फरीदा रब खजूरी पकीआ माखिअ नई वहंनि ॥ जो जो वंञै डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥ ८९ ॥ फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥ अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥ ९० ॥ कागा करंग ढंडोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥ ९१ ॥ कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि॥९२॥ फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥ ९३ ॥ एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ फरीदा लोकां आपो आपणी मैं आपणी पई ॥ ९४ ॥ आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ ९५ ॥ कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥ फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥ ९६ ॥ फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥

गोरां से निमाणीआ बहमनि रूहां मलि ॥ आखीं सेखां बंदगी चलणु
अजु कि कलि ॥ ९७ ॥ फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै
ढाहा ॥ अगै दोजक तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ इकना नो सभ
सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ अमल जि कीतिआ दुनी विचि से
दरगह ओगाहा ॥ ९८ ॥ फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे
॥ केल करेदे हंझनो अचिंते बाज पए ॥ बाज पए तिसु रब दे केलां
विसरीआं ॥ जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥ ९९ ॥
साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ आइओ बंदा दुनी विचि वति
आसूणी बंनि ॥ मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ तिन्हा
पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंनि॥ वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ
दै कंन्हि ॥ फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥
१००॥ फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिन्हा वासु॥ ककरु
चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥ १०१ ॥ फरीदा रुति फिरी
वणु कंबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ चारे कुंडा ढूढीआं रहणु किथाऊ
नाहि ॥१०२॥ फरीदा पाड़ि पटोला धजकरी कंबलड़ी पहिरेउ ॥ जिनी
वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥ १०३ ॥ म० ३ ॥ काइ पटोला पाड़ती
कंबलड़ी पहिरेइ ॥ नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि
करेइ ॥१०४॥ म० ५ ॥ फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि
आगाह ॥ खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥ १०५ ॥ फरीदा
तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ ऐथै दुख घणेरिआ अगै
ठउर न ठाउ ॥ १०६ ॥ फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो
मुइओहि ॥ जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥१०७॥ म०
५ ॥ फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ अलह सेती रतिआ एहु
सचावां साजु ॥ १०८ ॥ म० ५ ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते
लाहि विकारु॥अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥१०९॥ म० ५॥
फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ सोई जीउ न वजदा
जिसु अलहु करदा सार ॥ ११० ॥ म० ५ ॥ फरीदा दिलु रता
इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कंमि ॥ मिसल फकीरां गाखड़ी सु

पाईऐ पूर करंमि ॥ १११ ॥ पहिले पहिरै फुलड़ा फलु भी पछा राति
॥ जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥ ११२ ॥ दाती साहिब
संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा
सुतिआ देइ उठालि ॥ ११३ ॥ ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर
॥ जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हां झाक न होर ॥ ११४ ॥ सबर मंझ
कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ सबर संदा बाणु खालकु खता न करी
॥ ११५ ॥ सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ होनि नजीकि
खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥ ११६ ॥ सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा
दिड़ु करहि ॥ वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७ ॥
फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी
रीति ॥ ११८ ॥ तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि ॥ पैरी थकां
सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥ ११९ ॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ
बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि
॥ १२० ॥ हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ नानक अलखु न
लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥ १२१ ॥ हंसा देखि तरंदिआ बगा
आइआ चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ १२२ ॥
मै जाणिआ वडहंसु है तां मै कीता संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि
न भेड़ी अंगु ॥ १२३ ॥ किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे
॥ जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥ १२४ ॥ सरवर पंखी हेकड़ो
फाहीवाल पचास ॥ इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥ १२५
॥ कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ कवणु सु वेसो
हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥ १२६ ॥ निवणु सु अखरु खवणु
गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु
॥ १२७ ॥ मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताणा ॥
अणहोदे आपु वंडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥ १२८ ॥ इकु फिका
ना गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ
अमोलवे ॥ १२९ ॥ सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कहीदा ॥ १३० ॥

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

सवये स्री मुख वाक्य महला ५

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ सरब रहिओ भरपूरि
सगल घट रहिओ बिआपे ॥ ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी
गति सरब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ अबिनासी अबिगत आपे
आपि उतपति ॥ एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ हरि अंतु
नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को
अधारु ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ
बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ १ ॥
अंमृत प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर
अपार परि ॥ आपनो भावनु करि मंत्रि न दूसरो धरि ओपति
परलौ एकै निमखतु घरि ॥ आन नाही समसरि उजीआरो
निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ जनु नानकु
भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि

बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ २ ॥ सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ स्रब महि आपि है निरारे ॥ हरिगुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥ आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ३ ॥ सरब गुण निधानं कीमति न ज्ञानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं ॥ कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकलकला है प्रभ सरब को धानं ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥४॥ निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ जाकउ होंहि कृपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह कृपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरन दुह थे रहिओ ॥ ५ ॥ सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ अंमृतु हरि को नामु लैंत मनि सभ सुख पाए ॥ जेह रसन चाखिओ तेह जन तृपति अघाए ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसंनु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ तिन्ह सभ कुल कीओ उधारु ॥ ६ ॥ सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ सचि सिरज्यउ संसारु आपि अभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह कृपालु होयउ गुोबिंदु सरब सुख तिन हू पाए ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥ ७ ॥ कवन जोगु कउनु ज्ञानु ध्यानु कवन बिधि उसतति करीऐ ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ अगहु गहिओ नही जाइ पूरि स्रब रहिओ समाए ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ हरि गुरु

नानकु जिन्ह परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥ ८ ॥ प्रभ दातउ दातार
पर्यिउ जाचकु इकु सरना ॥ मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना
॥ बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ देहु दरसु मनि चाउ
भगति इहु मनु ठहरावै ॥ बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी
इक नाम धरम॥प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहम॥९॥

सवये स्री मुख बाक्य महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ काची देह मोह फुनि बांधी सठ कठोर
कुचील कुगिआनी ॥ धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रहम की गति
नही जानी ॥ जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ
अभिमानी ॥ परधन पर अपवाद नारि निंदा यह मीठी जीअ माहि
हितानी ॥ बल बंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतर जामी ॥
सील धरम दया सुच नास्ति आइओ सरनि जीअ के दानी ॥ कारण
करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥१॥ कीरति करन
सरन मन मोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ हरि तारन तरन समथ
सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ चित चेति अचेत जानि सत
संगति भरम अंधेर मोहिओ कत धंउ ॥ मूरत घरी चसा पलु सिमरन
राम नाम रसना संग लउ ॥ होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जनंम
कहा दुख भंउ ॥ सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ
रंउ ॥ २ ॥ रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥
खान पान सोंधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ मात पिता भाई
अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ बरधमान होवत दिनप्रत नित
आवत निकटि बिखंम जरी ॥ रे गुन हीन दीन माइआ कृम
सिमरि सुआमी एक घरी ॥ करु गहि लेहु कृपाल कृपानिधि
नानक काटि भरंम भरी ॥ ३ ॥ रे मन मूस बिला महि गरबत
करतब करत महां मुघनां ॥ संपत दोल झोल संग झूलत माइआ
मगन भ्रमत घुघनां ॥ सुत बनिता साजन सुख बंधप तासिउ
मोहु बढिओ सु घना ॥ बोइओ बीजु अहं मम अंकरु बीतत अउध

करत अघनां ॥ मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भूख भुखना ॥ सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक जगु जानत सुपना ॥४॥ देहन गेहन नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ रथ न अस्वन गज सिंघासन छिन महि तिआगत नांग सिधारहु ॥ सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रसटि निहारहु ॥ कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छांरहु ॥ दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ स्री पति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥ ५ ॥ प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ करम धरम संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी ॥ खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीनानाथ प्रान पति सारी ॥ खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥६॥ ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ताको मरमु न पावत ॥ प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत॥रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥ ७ ॥ माइआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ हैं ॥ एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रमि उदरु भरिओं है ॥ दहदिस धाइ महा बिखिआ कउ परधन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ जमदूतन डंनु मिरतु मरिओ है ॥ अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ प्रेम भगति उधरहि से नानक कार किरपा संतु आपि करिओ है ॥८॥ गुण

समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ अउखध मंत्र तंत्र परदुख हर सरब रोग खंडण गुणकारी ॥ काम क्रोध मद मतसर तृसना बिनसि जाहि हरिनामु उचारी ॥ इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥ ९ ॥ आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ दावनि बंधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लगि ॥ नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथ पगि ॥ नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥१॥१०॥ उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ भसम लगाइ तीरथ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ पूजा चक्र करत सोम पाका अनिक भांति थाटहि करि थटूआ ॥२॥११॥२०॥

सवईए महले पहिले के १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ संत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥ १ ॥ गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ गावहि इंद्राद भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ २ ॥ गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ३ ॥ गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरंपर अवतार वरो ॥ गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ उधौ अक्रूरु

बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ
गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ४ ॥ गावहि गुण बरन चारि
खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ गावै गुण सेसु सहस जिहबा
रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि
धिआन निरंतरि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु
जोगु जिनि माणिओ ॥ ५ ॥ राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु
रिदंतरि ॥ सृसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥ गुण गावहि
सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु
सकयथु भलौ जगि ॥ पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ
॥ हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥ ६ ॥ सतजुगि
तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥ त्रेतै तै माणिओ रामु
रघुवंसु कहाइओ ॥ दुआपुरि कृसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ कलिजुगि प्रमाणु नानक
गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि
पुरखि फुरमाइओ ॥७॥ गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥
नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ भगतु बेणि गुण रवै
सहजि आतम रंगु माणै॥जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु
न जाणै ॥ सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ कबि
कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥ ८ ॥ गुण गावहि
पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति
जंगम ॥ गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिआ॥ ब्रहमा
गुण उचरै जिनि हुकमि सभ सृसटि सवारीअ ॥ ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु
गुण निरगुण सम जाणिओ ॥ जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु
जिनि माणिओ ॥९॥ गुण गावहि नव नाथ धनि गुरु साचि समाइओ
॥ मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ गुण गावै बलि राउ सपत
पातालि बसंतौ ॥ भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रहंतौ ॥ दूरबा
परूरउ अंगर गुरै नानक जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर
घटि घटि सहजि समाइओ ॥ १० ॥

सवईए महले दूजे के २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सोई पुरखु धंनु करता कारण
करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ
जिनि हथो ॥ त धरिओ मसतकि हथु सहजि ॥ अमिउ वुठउ छजि सुरि
नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु
लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ जगु जीतउ
गुरदुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ कहु
कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥
१ ॥ जाकी दृसटि अंमृतधार कालुख खनि उतार तिमर अज्ञान जाहि
दरस दुआर ॥ ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर
भव उतारि कीए निरभार ॥ सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि
निंमरीभूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप
मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ २ ॥ तैं तउ दृड़िओ नामु
अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥
तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम
बीचार ॥ कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि
तेरै एक लिवतार ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा
जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ३ ॥ तैं ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ
गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ हरि हरि दरस
समान आतमा वंत गिआन जाणीअ अकलगति गुर परवान ॥
जाकी दृसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु
सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार
लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ४ ॥ दृसटि धरत तम
हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवंत काम
अरु क्रोध बिनासन ॥ लोभ मौह वसि करण सरण जाचिक
प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अंम्रित कल ढालण
॥ सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु
जगत फिरण सीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥ ५ ॥ सदा

अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ द्रुम सपूर जिउ निवै खवै
कसु बिमल बीचारह ॥ इहै ततु जाणिओ सरबगति अलखु बिडाणी ॥
॥ सहज भाइ संचिओ किरणि अंमृत कल बाणी ॥ गुर गमि प्रमाणु तैं
पाइओ सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ हरि परसिओ कलु समुलवै जन
दरसनु लहणे भयौ ॥६॥ मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ
॥ गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीओ ॥ रिदि बिगासु
जागिओ अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ सतिगुरु सहज समाधि रविओ
सामानि निरंतरि ॥ उदारउचित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन
॥सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जंपउ लहणे रसन ॥७॥ नामु अवखधु
नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ रंगि
रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै॥ नाम परसु जिनि पाइओ सतु
प्रगटिओ रवि लोइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥८॥
सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥
सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ जिसु सचु संजमु वरतु
सचु कबि जन कल वखाणु॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु
॥ ९ ॥ अमिअ दृसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध
अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह
खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ सु कहु टल
गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम
मरण दुखु जाइ ॥ १० ॥

सवईए महले तीजे के ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सोई पुरखु सिवरि साचा
जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ जिनि भगत भवजल तारे
सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिओ
जेन स्रब सिधी ॥ कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरीया
॥ कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ उतरि
दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जैकारु जपंथि नरा ॥ हरि नामु रसनि

गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ १ ॥ सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारनु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ २ ॥ सोई नामु सिवरि नवनाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ चवरासीह सिध बुध जितु राते अंबरीक भवजलु तरिआ ॥ उधउ अक्रूरु त्रिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भवतारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ३ ॥ तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपी सुर मनि वसिआ ॥ सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अंमृत रसिआ ॥ तितु नामि गुरू गंभीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भवतारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ४ ॥ नाम किति संसारि किरणि रवि सुर तर साखह ॥ उतरि दखिणि पुबि देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर धाइअउ ॥ सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइओ ॥ ५ ॥ नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ जह नामु सामाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ सोई नामु पदारथु अमरगुर तुसि दीओ करतारि ॥ ६ ॥ सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥ ७ ॥ नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिस्ट बाणी ॥ धनि सतिगुरु सेविओ जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ कुल संबूह समुधरे पायउ नाम निवासु ॥ सकयथु जनमु कल्युचरै गुर परस्यिउ

अमर प्रगासु ॥ ८ ॥ बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥
रिधि बसै बांवांगि जु तीनि लोकांतर मोहै ॥ रिदै बसै अकहीउ सोइ
रसु तिनही जातउ ॥ मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥
मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि करि ध्याइअउ ॥ परसिअउ
गुरू सतिगुर तिलकु सरब इछ तिनि पाइअउ ॥९॥ चरण त परसकयथ
चरन गुर अमर पवालिरय ॥ हथ त परसकयथ हथ लगहि गुर अमर
पय ॥ जीह त परसकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ नैण त परसकयथ
नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ स्रवण त परसकयथ स्रवणि गुरु अमरु
सुणिजै ॥ सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत
पित ॥ सकयथ सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥
१ ॥ १० ॥ ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ ति
नर सोकु नहु हूऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ ति नर सेव नहु करहि
ति नर सय सहस समपहि ॥ ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि
बिथपहि ॥ सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह
॥ सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसंनु जिह ॥ २ ॥
११ ॥ तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ ॥
नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांइ न जाणिओ ॥ सुपनि इकु
परतखि इकु इकस महि लीणउ ॥ तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस
न खीणउ ॥ इकहु जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि
वरनिअउ ॥ गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ
॥ ३ ॥ १२ ॥ जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥ जि
मति त्रिलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥ रुकमांगद करतूति
रामु जंपहु नित भाई ॥ अंमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति
पाई ॥ तै लोभु क्रोधु तृसना तजी सुमति जल्य जाणी जुगति ॥
गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥ ४ ॥ १३ ॥
गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ
सिध साधिक आसासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ
पउ मुकिहि ॥ गुर अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि

॥ इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जासु मंत्रि मानवहि लहि ॥ जालपा पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥५॥१४॥ सचु नामु करतारु सुद्रिड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ ताते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥ १ ॥ १५ ॥ आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निंमलु अवतरिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ २ ॥ १६ ॥ जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ ३ ॥ १७ ॥ चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साध संगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ भिखे के ॥ गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीउ ॥ गुरु मिलियउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥ १ ॥ १९ ॥ रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥ कहतिअह

कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ॥हरिनामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के
गुण हउ किआ कहउ ॥ गुर दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि
तिव रहउ ॥ २ ॥ २० ॥ पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि
चड़िअउ ॥ ध्रंम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ भै
निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥ काम क्रोध लोभ
मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥ भलउ भूहालु तेजो तना नृपति नाथु
नानक बरि ॥ गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु
करि ॥१॥२१॥ घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न
आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥ भले
अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥१॥२२॥९॥१९॥६०॥

सवईए महले चउथे के ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ इक मनि पुरखु निरंजनु
धिआवउ ॥ गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ गुन गावत मनि होइ
बिगासा ॥ सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु
पायउ ॥ अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ तिसु भेटे दारिद्रु न चंपै ॥
कल्यसहारु तासु गुण जंपै ॥ जंपउ गुण बिमल सुजन जन केरे
अमिअ नामु जाकउ फुरिआ ॥ इनि सतिगुरु सेवि सबद रसु पाया
नामु निरंजन उरिधरिआ ॥ हरिनाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु
तत समत सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर
भरे ॥ १ ॥ छुटत परवाह अमिअ अमरापद अमृत सरोवर सद भरिआ
॥ ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ तिन
भउ निवारि अन भै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ कवि कल्य
ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ २ ॥ सतगुर मति
गूड़ बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ जाग्या मनु कवलु

सहजि परकास्या अभै निरंजनु घरहि लहा ॥ सतगुरि दयालि हरि नामु द्रड़ाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ३ ॥ अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ मेटिआ जनमांतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ४ ॥ अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिओ ॥ दुख भंजनु आतम प्रबोध मनि ततु बीचारिओ ॥ सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥ ५ ॥ संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ मिलत सांति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ संजमु सतु संतोखु सील संनाहुमफुटै ॥ सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥ ६ ॥ जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु द्रड़ायउ ॥ नवनिधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु द्रड़ाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तैं हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥ ७ ॥ प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटह ॥ सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटह ॥ मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ आजोनी संभविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ अबिगत अगोचरु अपर परु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥ ८ ॥ जगत उधारणु नव निधानु भगतह भवतारणु ॥ अमृत बूंद हरिनामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ सहज तरोवर फलिओ गिआन अमृत फल लागे ॥ गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन बडभागे ॥ ते मुकते भए सतिगुर सबदि

मनि गुर परचा पाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु
बजाइअउ ॥ ९ ॥ सेज सधा सहजु छावाणु संतोखु सराइचउ सदा सील
संनाहु सोहै ॥ गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक संगादि बोहै ॥
आजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ गुर रामदास कल्युचरै
तुअ सहज सरोवरि बासु ॥ १० ॥ गुरु जिन कउ सु प्रसंनु नामु हरि
रिदै निवासै ॥ जिन कउ गुरु सु प्रसंनु दुरतु दुरंतरि नासै ॥ गुरु जिन्ह
कउ सु प्रसंनु मानु अभिमानु निवारै ॥ जिन कउ गुरु सु प्रसनु सबदि
लगि भवजलु तारै ॥ परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु
जगि ॥ स्री गुरू सरणि भजु कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि
॥ ११ ॥ सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ अनभउ नेजा
नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि
संगि समाणे ॥ इहु राज जोग गुर रामदास तुम हू रसु जाणे ॥ १२ ॥
जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ सतु संतोखु समाचरे
अभरा सरु भरिआ ॥ अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै ॥
इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणिआवै ॥ १३ ॥ सतिगुर नामु
एक लिव मनि जपै दृड़ु तिन्ह जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥
तारण तरण खिन मात्र जाकउ दृस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु
खोवै जीउ ॥ जीअन सभन दाता अगम ज्ञान बिख्याता अहि निसि
ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ जाकउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो
निधानु पावै गुरमुखि ज्ञानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ सतिगुर नामु
एक लिव मनि जपै दृड़ु तिन जन दुख पाप कहु कत होवै जीउ ॥ १ ॥
धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ जाकी सेवा सिध साध मुनि
जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक लिव लाई है ॥ फुनि जानै
को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥
भरम भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति
ध्याई है ॥ मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धरम करम
पूरै सतिगुरु पाई है ॥ २ ॥ हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम
पर ॥ कवन उपमा देउ कवन सेवा सरेउ एक मुख रसना रसहु

जुग जोरि कर ॥ फुनि मन बच क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अनतर ॥ जाके देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥३॥ राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आनंदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुग राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ सभ बिधि मान्यिउ मनु सब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ ४ ॥ रड ॥ जिसहि धार्यउ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥ सोई एकु नामु हरिनामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥ १ ॥ ५ ॥ कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ बिखु ते अंमृतु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइआ ॥२॥६॥ जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारवु दिजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ जामि गुरू होइ वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ जो गुरू नामु रिद महि धरैं सो जनम मरण दुह थे रहै ॥ ३ ॥ ७ ॥ गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ गुरु करु सबद सपुंन अघन कटहि सभ तेरे ॥ गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नलय कहि ॥ जिनि गुरू न देखिउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥ ४ ॥ ८ ॥ गुरू गुरू गुरु करु

मन मेरे ॥ तारण तरण समथु कलजुगि सुनत समाधि सब्द जिसु केरे ॥ फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ ५ ॥ ६ ॥ गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायौ ॥ हुती जु पिआस पिऊस पिवंन की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहंदिसि धायउ ॥ गोबिंदवालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ ६ ॥ १० ॥ समरथ गुरू सिरि हथु धरि्अउ ॥ गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरंन अघंन हर्यउ ॥ निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्यउ ॥ भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्यउ ॥ रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ ७ ॥ ११ ॥ अब राखहु दास भाट की लाज ॥ जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढ़त पूरे तिह काज ॥ स्री सतिगुर सुप्रसंन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥८॥१२॥ झोलना ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ सबदु हरि हरि जपै नामु नवनिधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अंन मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ जउत सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ १ ॥ १३ ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सब्द रसि करत द्रिड़ु भगति हरि ॥ मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू

गुरू जपु सति करि ॥ २ ॥ १४ ॥ गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ उदधि गुरु गहिर गंभीर बेअंतु हरिनाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ अमृत परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ज्ञान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ ३ ॥ १५ ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ जाकी सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कंन रे ॥ फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जंन रे ॥ तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अंन रे ॥ दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ २९ ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि करी क्रिपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ स्री प्रहलाद भगत उधरीअं हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ साधिक सिध सगल सरणाई ॥ गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ लहणै पंथु धरम का कीआ ॥ अमरदास भले कउ दीआ ॥ तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअं ॥ परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जाकी स्री रामदासु तारण तरणं ॥ १ ॥ जिह अंमृत बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ ॥ आनंदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरिजन सिव गुर ज्ञानि रते ॥ रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि मुनि बंछहि जाका सरणं ॥

सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥
२ ॥ संसारु अगम सागरु तुलहा हरिनामु गुरू मुखि पाया ॥ जगि
जनम मरणु भगाइह आई हीऐ परतीति ॥ परतीति हीऐ आई जिन
जन कै तिन कउ पदवी उच भाई॥ तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु
काम क्रोध की बृथा गई ॥ अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिब्य
दृस्टि कारण करणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जाकी स्री रामदासु
तारण तरणं ॥ ३ ॥ परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया
जसु जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥
इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ कंचनु
तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ जगजीवनु
जगंनाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ सतिगुरु गुरु
सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥४॥ जिनहु बात
निस्चल ध्रूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ तिन्ह तरिओ समुद्रु
रुद्रु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुंडलनी सुरझी
सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि
मन बच क्रंम सेवीऐ सचा ॥ ५ ॥ वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि
जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद
जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग
भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ काल कलम हुकमु
हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बंम्हु ज्ञानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ
॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू
वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ १ ॥ ६ ॥ राम नाम परम धाम सुध बुध
निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु
धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम
आपि आपु कीओ छदम अपरंपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ ॥
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू
वाहि जीउ ॥ २ ॥ ७ ॥ पीतबसन कुंद दसन प्रिआ सहित कंठ माल
मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ॥ बे वजीर बडे धीर धरम अंग अलख

अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ साहन कै साहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ ३ ॥ ८ ॥ सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलंक वजी डंक चढ़ू दल रविंद जीउ ॥ राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परमगति जीउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साध संगि रति जीउ ॥ देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ दृड़ता करु मति जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ ५ ॥ १० ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कदका ॥ ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मदका ॥ चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभहू कउ तदका ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ १ ॥ ११ ॥ वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ आपे जलु आपे थलु थंम्हनु आपे कीआ घटिघटि बासा॥आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ २ ॥ १२ ॥ कीआ खेलु वड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अंमृत ते मीठे जा के बचना ॥ मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ गुरप्रसादि पाईऐ परमारथु सत संगति सेती मनु खचना ॥

कीआ खेलु बडमेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥ ३ ॥ १३ ॥
४२ ॥ अगमु अनंतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ सिव बिरंचि
धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरंकारु निरवैरु अवरु नही
दूसर कोई ॥ भंजन गढ़ण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार
जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ स्री सतिनामु करता पुरखु गुर
रामदास चितह बसै ॥ १ ॥ गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि
सुमति सम्हारन कउ ॥ फुनि ध्रंम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग
निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू
न बिचारन कउ ॥ हरिनामु बोहिथु बडौ कलि मै भवसागर पारि
उतारन कउ ॥ २ ॥ संतत ही सत संगति संग सुरंग रते जसु
गावत है ॥ ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि
न धावत है ॥ मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इंछत ही फल पावत
है ॥ रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरंन गुरू चितु लावत है
॥३॥ निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥
गहिर गंभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ संत
मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ दुख कागरु ॥ कलजुग
दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥४॥ जा कउ मुनि
ध्यानु धरै फिरत सकल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥
बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात
कबिलास कंउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट
भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि सतिगुरि सुखि भाइ क्रिपा धारी
जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥ ५ ॥ नामु निधानु
धिआन अंतर गति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ देखत दरसु
भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक
सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥
बिद्यमान गुरि आपि थपप्उ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै ॥६॥ तार्यउ
संसारु माया मद मोहित अंमृत नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवंत
सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ दानि बडौ अति

वंतु महां बलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥ ७ ॥ ४६ ॥ तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी संभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ १ ॥ सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अंगदि अनंत मूरति निज धारी अगम ज्ञानि रसि रसयउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ २ ॥ नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ अंबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ३ ॥ मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ बाचा करि सिमरंति तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटियउ जु खिणं ॥ करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परमपदु पाइयउ ॥४॥ जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥ ५ ॥ ५४ ॥ जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ ताते गउहरु ज्ञान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥ १ ॥

जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ ताते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ ध्रू ॥ प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥ २ ॥ नानकि नामु निरंजन जान्यो कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ ताते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति कीनी वरखाई ॥ गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ सोढी सृस्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥ ३ ॥ हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंमृतु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥ ४ ॥ ५८ ॥ मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़ियउ ॥ क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़यउ ॥ जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मंनै ॥ भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सु प्रसंनै॥ सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥१॥ तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥ अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ अघ अंतक बदै न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥ २ ॥ ६० ॥

सवईए महले पंजवे के ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ सतिगुर चरण कवल रिदि धारं ॥ गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ गुर रामदास घरि

कीअउ प्रगासा ॥ सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ तै जनमत गुरमति
ब्रहमु पछाणिओ ॥ कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिओ ॥ भगति जोग
कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन
बसायउ ॥ गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ गुरु
अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥ १ ॥ बडभागी उन
मानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु
दृडायउ ॥ अगमु अगोचरु पारब्रहमु सतिगुरि दरसायउ ॥ गुरु
अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥ २ ॥ जनक राजु
बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु
पतीणा ॥ गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरंपरु बीणा ॥ ३ ॥ खेलु गूड़उ
कीअउ हरि राइ संतोखि समाचर्यओ बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥
आजोनी संभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ गुरि
नानकि अंगदु वर्यउ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ गुरि रामदास अरजुनु
वर्यउ पारसु परसु प्रमाणु ॥ ४ ॥ सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी
संभउ ॥ भय भंजनु परदुख निवारु अपारु अनंभउ ॥ अगह गहणु भ्रमु
भ्रांति दहणु सीतलु सुखदातउ ॥ आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन
बिधातउ ॥ नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ
॥ धनु धंनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ
॥५॥ जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता
॥ गुरु पूरा पायउ बडभागी लिवलागी मेदनि भरु सहता ॥
भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्यसहारु तोहि जसु बकता ॥
कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥ ६ ॥
ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ सबद सारु हरि सम
उदारु अहंमेव निवारणु ॥ महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न
हुटै ॥ सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नवनिधि न निखुटै ॥ गुर रामदास तनु
सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै राज
जोग रसु जाणिअउ ॥ ७ ॥ भै निरभउ माणिअउ लाख महि

अलखु लखायउ॥ अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ॥ गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥ ८ ॥ अमिउ रसना बदनि बरदाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवार्यउ ॥ पंचाहरुनि दलिअउ सुंन सहजि निज घरि सहार्यउ ॥ हरिनामि लागि जग उधर्यउ सतिगुरु रिदै बसाइअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै जन कह कलसु दीपाइअइ ॥ ९ ॥ सोरठे ॥ गुरु अरजुन पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥ १ ॥ भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ तुअ सतिगुर संहेतु नामि लागि जगु उधर्यउ ॥ २ ॥ जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥ ३ ॥ १२ ॥ जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ ताते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अंमृत बयण ॥ मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥१॥ सति रूपु सतिनामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥ कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल सृस्टि लगि बितरहु ॥ २ ॥ तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जाको हितु नाम सिउ ॥ परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ अपर परंपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ मथुरा को प्रभु सब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥ ३ ॥ अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महासिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिरंचि

बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यउ एक घरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति सृस्टि निहालु करी ॥ रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥४॥ जग अउरु न याहि महातम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अंमृत नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥५॥ जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहु मिटिहै नही रे पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥६॥ कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जौति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ ७ ॥ १६ ॥ अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रहमा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अंमृतु मुखि लीउ ॥ गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरि बंस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥ १ ॥ देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि ॥ काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥ छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥ २ ॥ २१ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १० ॥ १० ॥ २२ ॥ ६० ॥ १२२ ॥

१ओंसतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

सलोक वारां ते वधीक ॥ महला १ ॥ उतंगी पैओहरी गहिरी गंभीरी ॥ ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥ १ ॥ सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥ पहिला वसतु सिञाणि कै तां कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्रां कूं जैकारु ॥ जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधु वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ तिस सिउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु॥ नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥२॥ जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़ंन्ह कल ॥ ताहू खरे सुजाण वंञा एनी कपरी ॥ ३ ॥ झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥ ४ ॥ नानक दुनीआ कैसी होई ॥ सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ भाई बंधी हेतु चुकाइआ ॥ दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥ ५ ॥ है है करि कै ओहि करेनि ॥ गला पिटनि सिरु खोहेनि ॥ नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ नानक तिन बलिहारै जाइ ॥ ६ ॥ रे मन डीगि न डोलीए सीधै मारगि धाउ ॥ पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ सहसै जीअरा परि रहिओ माकउ अवरु न ढंगु ॥ नानक गुरमुखि छुटीए हरि प्रीतम सिउ संगु ॥ ७ ॥ बाघु मरै मनु मारीए जिसु सतिगुर दीखिआ

होइ ॥ आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥ कीचड़ हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥ ८ ॥ अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुरनिधि जलु नाहि ॥ जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥ ९ ॥ कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ॥ मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधीआइ ॥ सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ निरमलु नावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥ १० ॥ जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥ पैधा खाधा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥ वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥ ११ ॥ हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥ १२ ॥ नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥१३॥ भाडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ॥ भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥ परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥१४॥ मनहु जि अंधे घूघ कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ इक कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥ इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥ १५ ॥ सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ सील संतोख का रखै धरमु ॥ बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥१६॥ खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुंन दान का करै सरीरु ॥ खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥ लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ अपणा कीता आपे पावै ॥१७॥ तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ

अंदरि पिरी सम्हालि ॥ १८ ॥ सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न
कोइ ॥ नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥ १९ ॥ जउ
तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु
मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ २० ॥ नालि किराड़ा
दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥ २१
॥ गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ अंध वरतावा भाउ दूजा ॥ २२ ॥
गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सच बिनु साखी मूलो न बाकी
॥ २३ ॥ माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥ २४ ॥ रामु
झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ बंतर की सैना सेवीऐ मनि
तनि जुझु अपारु ॥ सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥
नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥ २५ ॥ मन महि
झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवंतरु आराधिआ आइआ करि
संजोगु ॥ भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु
सो किरतु न मिटई राम ॥ २६ ॥ लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु
॥ २७ ॥ महला ३ ॥ लाहौर सहरु अंम्रितसरु सिफती दा घरु ॥ २८ ॥
महला १ ॥ उदो सा है किआ नीसानी तोटि न आवै अंनी ॥ उदोसीअ
घरे ही वुठी कुड़िईं रंनी धंमी ॥ सती रंनी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी
कंमी ॥ जो लेवै सो देवै नाही खटे दंम सहंमी ॥ २९ ॥ पबर तूं
हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ
देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ जाणा पाणी ना लहां जै सेती मेरा संगु ॥
जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वंनु ॥ ३० ॥ रजि न कोई
जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही
पति होइ ॥ सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ नानक किस नो
आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥ ३१ ॥ दोसु न देअहु राइ नो मति चलै
जां बुढा होवै ॥ गलां करे घणेरीआ तां अंन्हे पवणा खाती टोवै ॥
३२ ॥ पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ नानक
गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥ ३३ ॥

सलोक महला ३

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥१॥ अभै निरंजन परम पदु ताका भीखकु होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥२॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥ ३ ॥ ब्रहमण कैली धातु कंञका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभमानु ॥ पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥ ४ ॥ माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिन्हा वेलि न तूंबड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ मनमुख बंनि चलाईअहि न मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतिगुर भाइ ॥६॥ सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥७॥ नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥८॥ दूख विसारणु सबदु है ॥ जे मंनि वसाइ कोइ ॥ गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥९॥ नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख॥सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख॥१०॥जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातसाह ॥११॥ जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ तिउ बाणी भगत सलाहदे हरिनामै चितु लाइ ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ भै भगती भगत बहु लोचदेप्रभ लोचा पूरि मिलाइ॥हरि प्रभु वे परवाहु है कितु खाधै तिपताइ॥

सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरिगुण गाइ ॥ धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥ १२ ॥ सतिगुरू न सेविओ सबदु न रखिओ उरधारि ॥ धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ गुरमती भउ मनि पवै तां हरि रसि लगै पिआरि ॥ नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥ १३ ॥ माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ गिआन खड़ग पंच दूत सघारे गुरमति जागै सोइ ॥ नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ नाम हीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ १४ ॥ गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥ हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु॥नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥१५॥ गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंमृत नामु सुख वासु ॥ नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतमराम प्रगासु ॥ १६ ॥ काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आए पाइ ॥ इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि हुकमे आवै जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥ १७ ॥ जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ सतिगुरि मिले उलटी भई मरिजीविआ सहजि सुभाइ ॥ नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १८ ॥ मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ कीता करतिआ बिरथा गइआ इकु तिलु थाइ न पाई ॥ पुंन दानु जो बीजदे सभ धरमराइ कै जाई ॥ बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ जोबनु जांदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई॥ नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई॥ १९॥ मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ॥ आतमारामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥

नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥२०॥ मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ ओना आपनो अंदरि सुधि नही गुरबचनि न करहि विसासु ॥ गिआनीआ अंदरि गुरसबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥२१॥ माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ बिखु का मारणु हरिनामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ मिलि सतिगुर निरमलु होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥२२॥ सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ निरवैरै नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ ॥ अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ॥ बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ॥ जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २३ ॥ नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जमपुरि जांहि ॥ नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि ॥ २४ ॥ चिंता धावत रहि गए तां मनि भइआ अनंदु ॥ गुरप्रसादी बुझीऐ साधन सुती निचिंद ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु ॥२५॥ सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरिनामु रखहि उरधारि ॥ ऐथै ओथै मंनीअनि हरिनामि लगे वापारि ॥ गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ जमकालु नेड़ि न आवई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥ २६ ॥ जन की

टेक हरिनामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥ २७ ॥ लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंतीवार ॥ बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरिधारि ॥ २८ ॥ असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ लेखै वारा न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ गुरु तुठै हरिप्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु॥२६॥विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ॥गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंनि॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंनि ॥३०॥ मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु॥जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घरवासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरिधारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥ ३१ ॥ सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥ ३२ ॥ हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊचीहू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ अंतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ॥ नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥ ३३ ॥ माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ मेरा मेरा करदे पचि मुए

हउमै करत विहाइ ॥ मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभ देखिआ ब्रहमु सुभाइ ॥ नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लंघाइ ॥ ३४ ॥ बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरिनामु देइ आधारु ॥ गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरिधारि ॥ तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥ ३५ ॥ बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥३६॥ होम जग सभि तीरथा पढ़ि पंडित थके पुराण ॥ बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥ ३७ ॥ माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ वडभागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ हरिनामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥ ३८ ॥ बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥३६॥ लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ॥अंतिकालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरिगुन गाइ ॥ ४० ॥ धुरि हरि प्रभु करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिसदा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥ ४१ ॥ मन आवण जाणु न सुझई न सुझै दरबारु॥माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु॥तब नरु सुता

जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ गुरमुखां करां उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि ओहि उधरे सभ कुटंब तरे परवार ॥४२॥ सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुरपरसादी हरि रसि ध्रापै ॥ हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥ हरिनामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ नानक करता करे सु होइ ॥ ४३ ॥ गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरिगुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥ ४४ ॥ मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिना अंतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै करम कमावदे सभ धरमराइ कै जांही ॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ नानक गुरमुख मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ ॥ ४५ ॥ बुरा करे सु केहा सिझै ॥ आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥ ४६ ॥ जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ ओइ मानस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुए बिकार महि मरि जंमहि वारोवार ॥ जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उरधारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ ४७ ॥ हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥ हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥ ४८ ॥ मनमुख दहदिसि फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार॥ माइआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारोवार ॥ सतिगुर सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥ ४९ ॥ हरि हरि नामु

धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमल विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥५०॥ धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावां भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै ता पाइ ॥ इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ ॥ संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥ ५१ ॥ से दाड़ीआं सचीआ जि गुर चरनी लगंन्हि ॥ अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंन्हि ॥ ५२ ॥ मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर मांहि समांहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम पदवी पांहि ॥ सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जांहि ॥ ५३ ॥ बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरिधारि ॥ ५४ ॥ बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै रजाइ ॥ चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइ ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥५५॥ बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥ सभ किछु

तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ झिमि झिमि अंमृतु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥ ५६ ॥ धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ इंदु वरसै दइआ करि गूढ़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ॥ अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिवलाइ ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥ ५७ ॥ बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ नानक घटि घटि एकों वरतदा सबदि करे परगास ॥५८॥ नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइ ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥५९॥ सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥ ६० ॥ नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥ ६१ ॥ वडड़ै झालि झलुंभलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ नाउ लईऐ परमेसरै भंनण घड़ण समरथु ॥ ६२ ॥ हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि तां सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ वणु तृणु त्रिभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ नदरि करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ॥ नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥ ६३ ॥ जोगि न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ नानक

घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥ ६४ ॥ चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोखदुआर ॥ ६५ ॥ नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चलचित ॥ मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ जंमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित ॥ ६६ ॥ भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ नानक नदरी बाहरी करणपलाह करे ॥ ६७ ॥

सलोक महला ४

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरिराइ ॥ अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥१॥ वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सतिपुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु दृड़ाए सोइ ॥ नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ हरिप्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु॥ वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ ३ ॥ मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ हउ ढूडेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥ ४ ॥ हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवए ॥ को आणि मिलावै अजु मै पिरु मेलि मिलावए ॥ हउ जीउ करी तिस विटउ चउखंनीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ नानक हरि होइ दइआलु तां गुरु पूरा मेलावए ॥ ५ ॥ अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै

जाइ ॥ सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥
नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ सतिगुर का दरसनु
सफलु है जो इछै सो फलु पाइ ॥ जिनी सतिगुरु मंनिआं हउ तिन के
लागउ पाइ ॥ नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥६॥
जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ तृपतीऐ ॥ नानक मिले सुभाइ
गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥ ७ ॥ जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर
बाहरे ॥ जा सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥ ८ ॥ जिना
गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ राती अतै डेहु नानक
प्रेमि समाइआ ॥ ९ ॥ गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ
॥ अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥ १० ॥ सचा प्रेम
पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ कबहू न होवै भंगु नानक हरिगुण गाईऐ
॥११॥ जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ॥गुरमुखि
मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥१२॥ जिन कउ प्रेम पिआरु तउ
आपे लाइआ करमु करि ॥ नानक लेहु मिलाइ मै जाचक दीजै नामु
हरि ॥ १३ ॥ गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ जि गुरमुखि करे साई
भगति होवै ॥ गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ गुरमुखि नानक पावै
पारु ॥१४॥ जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ तिन के
मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ तिन बहदिआ उठदिआ कदे न
विसरै जि आपि बखसे करतारि॥ नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि
मेले सिरजणहार ॥१५॥ गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ॥
नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥ सतिगुर की सेवै
लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक
बीचारु ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥
१६ ॥ मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है
माइआ मोहु वधाइ ॥ दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ
॥ बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ नानक गुरमुखि
नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥ १७ ॥
गुरमुखि हुकमु मने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥

हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए॥ हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ नानक कृपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाए ॥ १८ ॥ मनमुखि हुकमु न बुझे बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाए ॥ नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाए ॥१९॥ गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ मंनीऐ सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥२०॥ जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥ २१ ॥ जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिवलाइ ॥ गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥ २२ ॥ मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥ २३ ॥ सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ सभ किछु तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥ २४ ॥ सतिगुर विचि अंमृत नामु है अंमृतु कहै कहाइ ॥ गुरमती नामु निरमलो निरमल नामु धिआइ ॥ अंमृत बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ हिरदै

कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सतिगुरु तिन कउ
मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥ २५ ॥ अंदरि तिसना
अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ मोहु कुटंबु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ
लपटाइ ॥ अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ जंमणु मरणु न
चुकई हउमै करम कमाइ ॥ गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥२६॥
सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ सत संगति
सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु
बोहिथु नामि तराइ ॥ गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ
॥ गुरसिखां की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पांहि ॥ धुरि मसतकि
हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ जम कंकर मारि
बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ गुर सिखा नो साबासि है हरि
तुठा मेलि मिलाइ ॥२७॥ गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ जिनि विचहु
भरमु चुकाइआ॥ राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ
॥ हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु
जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो
भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नाउ लए तां जीवै बिनु नावै खिनु
मरि जाइआ ॥२८॥ मन अंतरि हउमै रोगु भ्रम भूले हउमै साकत
दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥ २९ ॥
गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि
रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥
गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जन नानकु
हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥३०॥

सलोक महला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ॥ रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही
सिञाता साई ॥ झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥१
॥ धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥ धूड़ी विचि लुडंदड़ी

सोहां नानक तै सह नाले ॥ २ ॥ गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि
बैरागु ॥ जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥ ३ ॥ जां
मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ बामणु बिरथा गइओ
जनंमु जिनि कीते सो विसरे ॥ ४ ॥ सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न
फीका होइ ॥ नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ
॥ ५ ॥ जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ अंदरि नामु
निधानु सदा गुण सारई ॥ एका टेक अगंम मनि नि प्रभु धारई ॥
लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ गुरमुखि हरिगुण गाइ सहजि
सुखु सारई ॥ नानक नामु निधानु रिदै उरिहारई ॥ ६ ॥ करे सु चंगा
मानि दुयी गणत लाहि ॥ अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥
जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु
सोई सभ कमाइ ॥ सभ कछु तिसदै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ नानक
सुख अनद भए प्रभ की मनि रजाइ ॥ ७ ॥ गुरु पूरा जिनि सिमरिआ
सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥ ८ ॥
पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ ॥ नानक जिउ मथनि माधाणीआ
तिउ मथे ध्रमराइ ॥९॥ नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥
नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥ १० ॥ खुभड़ी कुथाइ
मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥
११ ॥ सुतड़े सुखी सवंन्हि जो रते सह आपणै ॥ प्रेम विछोहा धणी
सउ अठे पहर लवंन्हि ॥ १२ ॥ सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥
नानक से जागन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥ १३ ॥ मृग तिसना
पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ जिनी सचु अराधिआ नानक मनि
तनि फब ॥ १४ ॥ पतित उधारण पारब्रहमु संम्रथ पुरखु अपारु ॥
जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥ १५ ॥ दूजी छोडि
कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ दूजै भावीं नानका वहणि लुढ़ंदड़ी
जाइ ॥ १६ ॥ तिहटड़े बाजार सउदा करणि वणजारिआ ॥ सचु
वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥ १७ ॥ पंथा प्रेम न जाणई
भूली फिरै गवारि ॥ नानक हरि विसराइ कै पउदे नरकि

अंध्यार ॥१८॥ माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमा दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥ १९ ॥ तिचरु मूलि न थुड़ींदो जिचरु आपि कृपालु ॥ सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥ २० ॥ खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि ॥ तंनि जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥२१॥ सजणु सचा पातिसाहु सिरि सांहां दै साहु ॥ जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभना दा वेसाहु ॥२२॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक महला ९ ॥ गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिहि बिधि जल कौ मीन ॥१॥ बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदास ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥ तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भज हरि मना अउध जातु है बीति ॥ ३ ॥ बिरध भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आन ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवान ॥ ४ ॥ धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मैं कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथ ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥ तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥ सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पाईऐ तिहि भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥ पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मान ॥ ११ ॥ घटि घटि मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥ १२ ॥ सुखु दुखु जिह परसै नही लोभ मोह अभिमानु ॥ कहु नानक सुन रे

मना सो मूरत भगवान ॥१३॥ उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ हरख सोग जा कै नही बैरी मीत समान ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जान ॥१५॥ भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुन रे मना तिह नर माथै भाग ॥१७॥ जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदास ॥ कहु नानक सुन रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥ जिहि प्रानी हउमै तजी करता राम पछान ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मान ॥१९॥ भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नाम ॥ निस दिनि जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नाम ॥ कहु नानक सुन रे मना परहि न जम कै धाम ॥ २१ ॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥ निसि दिनि माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइन जिह चीति ॥ २४ ॥ जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ॥ २५ ॥ प्रानी कछू न चेतई मद माइआ कै अंध ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥ जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुन रे मना दुरलभ मानुख देह ॥ २७ ॥ माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजनि बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ जो प्रानी निसि दिनि भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नाम ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥ प्रानी राम न चेतई मदि माइआ कै अंध ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥ ३१ ॥ सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु

मना अंति सहाई होइ ॥३२॥ जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥ जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवानि ॥३४॥ बाल जुआनी अरु बिरध फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मान ॥३५॥ करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥ मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिनि मीत ॥नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहनि मीत ॥३७॥ नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुन रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥ जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता राम ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥ झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जान ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखान ॥४१॥ गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीति ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥ जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मन ॥ जैसे सूकरु सुआन नानक मानो ताहि तन ॥४४॥ सुआमी को गृहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मन हुइ इकि चित ॥ ४५ ॥ तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिहि जिउ कुंचर इसनानु ॥ ४६ ॥ सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रस लीन ॥ ४७ ॥ निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥ ४८ ॥ जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीत ॥ ४९ ॥ राम गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवार ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ

संसारि ॥ ५० ॥ चिंता ताकी कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इह मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥ जो उपजिओ सो बिनसिहै परो आजु के काल॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥दोहरा॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गजि जिउ होहु सहाइ ॥ ५३ ॥ बलु होआ बंधन छुटे सभ किछु होत उपाइ ॥ नानक सभ किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ संग सखा सभ तजि गए कोऊ न निबहिओ साथ ॥ कहु नानक इह बिपत मै टेक एक रघनाथ ॥५५॥ नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुर गोबिंद ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुरमंतु ॥ ५६ ॥ राम नामु उरि मै गहिओ जाकै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

मुंदावणी महला ५

॥ थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो॥अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरिधारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥ सलोक महला ५ ॥ तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई॥मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुर सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥ राग माला ॥ राग एक संगि पंच बरंगन ॥ संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुंनिआ की गावहि बंगली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख

सुनावहि ॥ बंगालम मधु माधव गावहि ॥ १ ॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भांति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥ १ ॥ दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोडकरी अरु देव गंधारी ॥ गंधारी सी हुती उचारीं ॥ धंनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संग लाई ॥ मारू मसतअंग मेवारा ॥ प्रबल चंड कउसक उभारा ॥ खउ खट अउ भउरानद गाए ॥ असट माल कउसक संग लाए ॥ १ ॥ पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥ १ ॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ संग लाई पांचउ आरजा ॥ सुरमानंद भासकर आए ॥ चंद्र बिंब मंगलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥ १ ॥ कछेली पट मंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी संग दीपक के थापि ॥ १ ॥ कालंका कुंतल अउ रामा ॥ कमल कुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥ १ ॥ सभ मिलि सिरी राग वै गावहि ॥ पांचउ संग बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरी राग सिउ पांचउ थापी ॥ १ ॥ सालू सारग सागरा अउर गोड गंभीर ॥ असट पुत्र स्री राग के गुंड कुंभ हमीर ॥ १ ॥ खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाचउ चीनी ॥ १ ॥ बैराधर गजधर केदारा ॥ जबली धर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥ १ ॥ खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागंन के अठारह दस बीस ॥ १ ॥ १ ॥